



बिहार माल और सेवा कर अधिनियम, 2017

संकलनकर्ता



वाणिज्य कर विभाग, बिहार।

सहयोगकर्ता



NTN

नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद।

email : ntnalerts@gmail.com

website : www.gstlawsindia.com

अस्वीकरण:

यहाँ प्रस्तुत जानकारी केवल सामान्य संदर्भ हेतु है। कानूनी या आधिकारिक प्रयोजन के लिए कृपया मूल राजपत्र अधिसूचना से जानकारी का सत्यापन अवश्य करें।



GOVERNMENT OF BIHAR

Commercial Taxes Department
Bihar,
'Kar Bhawan'
Birchand Patel Path, East
Gardiner Road
Patna, Bihar – 800001

Sanjay Kumar Singh, IAS

Commissioner-cum-secretary
Commercial Taxes Department
Bihar, Patna

MESSAGE

The GST was implemented on 1st July, 2017. Being a truly federal legislation, all the elements of CGST Act and Rules and amendments thereof, get reflected as mirror image in the corresponding state enactments. Slight, yet crucial, variations remain due to difference in administrative structures and processes.

GST is dynamic, always trying to find sync with evolving business methods and models. Amendments, therefore, are frequent. The updated and compiled versions of the extant CGST Act and Rules alongwith all past history are available, but not that of Bihar GST Act and Rules.

This long due work has been successfully completed by the officers of Commercial Taxes Department, Bihar. I acknowledge the special contribution of **Mr. Pankaj Kumar Prasad, Special Commissioner, Mr. Aditya Narayan, Additional Commissioner, Mr. Ajitabh Mishra, Joint Commissioner and Mr. Anup Kumar, Joint Commissioner** who have burnt midnight oil in collecting, cleaning, gleaning, sorting and sequencing texts to give a sleek and updated shape to an otherwise labyrinthine document.

I hope the compiled and updated form of Bihar GST Act and Rules will help all stakeholders, inter alia the taxpayers, officers, Chartered Accountants and lawyers.

Sanjay Kumar Singh
Commissioner-cum-secretary
Commercial Taxes Department

Bihar, Patna

7th of November 2025

बिहार माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2017)		
अध्याय 1 प्रारंभिक		
धारा 1	संक्षिप्त नाम, प्रारंभ और विस्तार	01
धारा 2	परिभाषाएं.—	01
	(1) अनुयोज्य दावे	01
	(2) परिदान का पता	01
	(3) अभिलेख पर पता	01
	(4) न्यायनिर्णयन प्राधिकारी	01
	(5) अभिकर्ता	02
	(6) संकलित आवर्त	02
	(7) कृषक	02
	(8) अपील प्राधिकारी	02
	(9) अपील अधिकरण	02
	(10) नियत तारीख	02
	(11) निर्धारण	02
	(12) सहयुक्त उद्यमों	02
	(13) संपरीक्षा	02



	(14) प्राधिकृत बैंक	02
	(15) प्राधिकृत प्रतिनिधि	02
	(16) बोर्ड	02
	(17) कारबार	03
	(18) कारबार शीर्षका [विलोपित]	03
	(19) पूंजी माल	03
	(20) नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति	03
	(21) केन्द्रीय कर	04
	(22) उपकर	04
	(23) चार्टर्ड अकाउंटेंट	04
	(24) आयुक्त	04
	(25) बोर्ड में आयुक्त	04
	(26) सामान्य पोर्टल	04
	(27) सामान्य कार्य दिवस	04
	(28) कंपनी सचिव	04
	(29) सक्षम प्राधिकारी	04
	(30) संयुक्त प्रदाय	04
	(31) प्रतिफल	04



	(32) माल का निरंतर प्रदाय	04
	(33) सेवाओं का निरंतर प्रदाय	05
	(34) प्रवहरण	05
	(35) लागत लेखापाल	05
	(36) परिषद्	05
	(37) जमापत्र	05
	(38) नामे नोट	05
	(39) समझा गया निर्यात	05
	(40) अभिहित प्राधिकारी	05
	(41) दस्तावेज	05
	(42) चुंगी वापसी	05
	(43) इलेक्ट्रॉनिक नकद खाते	05
	(44) इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य	05
	(45) इलेक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक	05
	(46) इलेक्ट्रानिक जमा खाते	05
	(47) छूट प्राप्त पूर्ति	05
	(48) विद्यमान विधि	05
	(49) कुटुंब	06



	(50) नियत स्थापन	06
	(51) निधि	06
	(52) माल	06
	(53) सरकार	06
	(54) माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम	06
	(55) माल और सेवा कर व्यवसायी	06
	(56) भारत	06
	(57) एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम	06
	(58) एकीकृत कर	06
	(59) निवेश	06
	(60) इनपुट सेवा	06
	(61) इनपुट सेवा वितरक	06
	(62) इनपुट कर	07
	(63) इनपुट कर प्रत्यय	07
	(64) माल का राज्यान्तर्गत प्रदाय	07
	(65) सेवाओं का राज्यान्तर्गत अंतरराज्यिक प्रदाय	07
	(66) बीजक या कर बीजक	07
	(67) आवक प्रदाय	07



	(68) छुटपुट कार्य	07
	(69) स्थानीय प्राधिकारी	07
	(70) सेवाओं के प्राप्तिकर्ता का अवस्थान	08
	(71) सेवाओं के प्रदायकर्ता का अवस्थान	08
	(72) विनिर्माण	08
	(73) बाजार मूल्य	09
	(74) मिश्रित प्रदाय	09
	(75) धन	09
	(76) मोटर यान	09
	(77) अनिवासी कराधेय व्यक्ति	09
	(78) गैर—कराधेय प्रदाय	09
	(79) गैर—कराधेय राज्यक्षेत्र	09
	(80) अधिसूचना	09
	(80क) ऑनलाइन गेम खेलना	09
	(80ख) ऑनलाइन धनीय गेम खेलना	09
	(81) अन्य राज्यक्षेत्र	09
	(82) आउटपुट कर	10
	(83) जावक प्रदाय	10



	(84) व्यक्ति	10
	(85) कारबार के स्थान	10
	(86) प्रदाय का स्थान	10
	(87) विहित	11
	(88) प्रधान	11
	(89) कारबार का मुख्य स्थान	11
	(90) मुख्य प्रदाय	11
	(91) उचित अधिकारी	11
	(92) तिमाही	11
	(93) प्राप्तिकर्ता	11
	(94) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति	11
	(95) विनियम	11
	(96) हटाए जाने	11
	(97) विवरणी	11
	(98) प्रतिलोम प्रभार	11
	(99) पुनरीक्षण प्राधिकारी	11
	(100) अनुसूची	11
	(101) प्रतिभूति	12



	(102) सेवाओं	12
	(102क) विनिर्दिष्ट अनुयोज्य दाव	12
	(103) राज्य	12
	(104) राज्य कर	12
	(105) प्रदायकर्ता	12
	(106) कर अवधि	12
	(107) कराधेय व्यक्ति	12
	(108) कराधेय प्रदाय	13
	(109) कराधेय राज्यक्षेत्र	13
	(110) दूर-संचार सेवा	13
	(111) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम	13
	(112) राज्य में आवर्त	13
	(113) प्रायिक निवास स्थान	13
	(114) संघ राज्यक्षेत्र	13
	(115) संघ राज्यक्षेत्र कर	13
	(116) संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम	13
	(116क) विशिष्ट पहचान चिह्नांकन	14
	(117) विधिमान्य विवरणी	14



	(117क) आभासी डिजिटल आस्ति	14
	(118) वाऊचर	14
	(119) कार्य संविदा	14
	(120) शब्दों और पदों का प्रयोग	14
अध्याय 2 प्रशासन		
धारा 3	इस अधिनियम के अधीन अधिकारी	15
धारा 4	अधिकारियों की नियुक्ति	15
धारा 5	अधिकारियों की शक्तियां	15
धारा 6	कतिपय परिस्थितियों में केन्द्रीय कर अधिकारियों का समुचित प्राधिकारी के रूप में प्राधिकरण	16
अध्याय 3 कर का उद्ग्रहण और संग्रहण		
धारा 7	प्रदाय की परिधि	17
धारा 8	संयुक्त और मिश्रित प्रदायों पर कर का दायित्व	18
धारा 9	उद्ग्रहण और संग्रहण	18
धारा 10	प्रशमन उद्ग्रहण	19
धारा 11	कर से छूट देने की शक्ति	22
धारा 11क	साधारण पद्धति के परिणामस्वरूप उद्ग्रहीत नहीं किए गए या कम उद्ग्रहीत किए गए माल और सेवा कर की वसूली न करने की शक्ति	22



अध्याय 4 प्रदाय का समय और मूल्य		
धारा 12	माल के प्रदाय का समय	24
धारा 13	सेवाओं के प्रदाय का समय	25
धारा 14	माल या सेवाओं के प्रदाय के संबंध में कर की दर में परिवर्तन	26
धारा 15	कराधेय प्रदाय का मूल्य	27
अध्याय 5 इनपुट कर प्रत्यय		
धारा 16	इनपुट कर प्रत्यय लेने के लिए पात्रता और शर्तें	29
धारा 17	प्रत्यय का प्रभाजन और निरुद्ध प्रत्यय	31
धारा 18	विशेष परिस्थितियों में प्रत्यय की उपलब्धता	34
धारा 19	छुटपुट काम के लिए भेजे गए निवेशों और भेजे गए पूंजी माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का लिया जाना	36
धारा 20	इनपुट सेवा वितरक द्वारा प्रत्यय के वितरण की रीति	36
धारा 21	आधिक्य में वितरित प्रत्यय के वसूली की रीति	38
अध्याय 6 रजिस्ट्रीकरण		
धारा 22	रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी व्यक्ति	39
धारा 23	व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं है	40



धारा 24	कतिपय मामलों में अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण	40
धारा 25	रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रक्रिया	41
धारा 26	रजिस्ट्रीकरण समझा जाना	43
धारा 27	आकस्मिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति से संबंधित विशिष्ट उपबंध	43
धारा 28	रजिस्ट्रीकरण का संशोधन	44
धारा 29	रजिस्ट्रीकरण का रद्दकरण या निलंबन	44
धारा 30	रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण	46
अध्याय 7 कर बीजक, जमा पत्र और नामे पत्र		
धारा 31	कर बीजक	48
धारा 31क	प्राप्तिकर्ता को डिजिटल संदाय की सुविधा	50
धारा 32	कर के अप्राधिकृत संग्रहण का प्रतिषेध	50
धारा 33	कर बीजक और अन्य दस्तावेजों में कर की रकम का उपदर्शन	50
धारा 34	जमा और नामे पत्र	50
अध्याय 8 लेखे और अभिलेख		
धारा 35	लेखे और अन्य अभिलेख	52
धारा 36	लेखों के प्रतिधारण की अवधि	53



अध्याय 9 विवरणियां		
धारा 37	जावक प्रदायों के ब्यौरे देना	54
धारा 38	आवक पूर्तियों और इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरों की संसूचना	55
धारा 39	विवरणियां देना	57
धारा 40	प्रथम विवरणी	60
धारा 41	इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग	60
धारा 42	इनपुट कर प्रत्यय का मिलान, उलटाव और वापस लेना [विलोपित]	61
धारा 43	आउटपुट कर दायित्व का मिलान, प्रतिलोम और प्रतिदाय [विलोपित]	61
धारा 43क	विवरणी प्रस्तुत करने और इनपुट कर प्रत्यय के प्राप्यता के लिए प्रक्रिया [विलोपित]	61
धारा 44	वार्षिक विवरणी	63
धारा 45	अंतिम विवरणी	64
धारा 46	विवरणी व्यतिक्रमियों को सूचना	64
धारा 47	विलंब फीस का उद्ग्रहण	64
धारा 48	माल और सेवा कर व्यवसायी	65
अध्याय 10 कर संदाय		



धारा 49	कर, ब्याज, शास्ति और अन्य रकमों का संदाय	66
धारा 49क	कतिपय शर्तों के अधीन रहते हुए इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग	68
धारा 49ख	इनपुट कर प्रत्यय के उपयोग का आदेश	68
धारा 50	आस्थगित कर संदाय पर ब्याज	68
धारा 51	स्रोत पर कर कटौती	69
धारा 52	स्रोत पर कर का संग्रहण	70
धारा 53	इनपुट कर प्रत्यय का अंतरण	73
धारा 53क	कतिपय रकमों का अंतरण	73
अध्याय 11 प्रतिदाय		
धारा 54	कर प्रतिदाय	74
धारा 55	कतिपय मामलों में प्रतिदाय	78
धारा 56	विलंबित प्रतिदाय पर ब्याज	78
धारा 57	उपभोक्ता कल्याण निधि	78
धारा 58	निधि का उपयोग	79
अध्याय 12 कर निर्धारण		
धारा 59	स्वतः निर्धारण	80
धारा 60	अनंतिम निर्धारण	80



धारा 61	विवरणियों की संवीक्षा	80
धारा 62	विवरणियों को फाइल नहीं करने वाले का निर्धारण	81
धारा 63	अरजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का निर्धारण	81
धारा 64	कतिपय विशेष मामलों में त्वरित निर्धारण	82
अध्याय 13 लेखापरीक्षा		
धारा 65	कर प्राधिकारियों द्वारा लेखापरीक्षा	83
धारा 66	विशेष लेखापरीक्षा	83
अध्याय 14 निरीक्षण, तलाशी, अभिग्रहण और गिरफ्तारी		
धारा 67	निरीक्षण, तलाशी और अभिग्रहण की शक्ति	85
धारा 68	संचलन में मालों का निरीक्षण	86
धारा 69	गिरफ्तार करने की शक्ति	87
धारा 70	व्यक्तियों को साक्ष्य देने और दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए समन करने की शक्ति	87
धारा 71	कारबार परिसरों तक पहुंच	87
धारा 72	समुचित अधिकारियों की सहायता के लिए अधिकारी	88
अध्याय 15 मांग और वसूली		
धारा 73	कपट या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाने से	89



	भिन्न किसी अन्य कारण से वित्तीय वर्ष 2023–24 तक की अवधि से संबंधित असंदत्त कर या कम संदत्त करया त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण	
धारा 74	कपट या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाने के कारण से वित्तीय वर्ष 2023–24 तक की अवधि से संबंधित असंदत्त कर या कम संदत्त करया त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण	90
धारा 74क	74क. वित्तीय वर्ष 2024–25 से तथा आगे किसी कारण से असंदत्त या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण	92
धारा 75	कर अवधारण के संबंध में साधारण उपबंध	94
धारा 76	संगृहित किंतु सरकार को संदत्त न किया गया कर	96
धारा 77	गलती से संगृहित किया गया और केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार को संदत्त किया गया कर	96
धारा 78	वसूली कार्यवाहियों का आरंभ किया जाना	97
धारा 79	कर की वसूली	97
धारा 80	कर और अन्य रकम का किस्तों में संदाय	99
धारा 81	कतिपय मामलों में संपत्ति अंतरण का शून्य होना	99
धारा 82	कर का संपत्ति पर पहला प्रभार होना	99
धारा 83	कतिपय मामलों में राजस्व के संरक्षण के लिए अनंतिम कुर्की	99
धारा 84	कतिपय वसूली कार्यवाहियों का जारी रहना और विधिमान्यकरण	100



अध्याय 16 कतिपय मामलों में संदाय करने का दायित्व		
धारा 85	कारबार के अंतरण की दशा में दायित्व	101
धारा 86	अभिकर्ता और प्रधान व्यक्ति का दायित्व	101
धारा 87	कंपनियों के समामेलन या विलयन की दशा में दायित्व	101
धारा 88	परिसमापन के अधीन कंपनियों की दशा में दायित्व	101
धारा 89	प्राइवेट कंपनियों के निदेशकों का दायित्व	102
धारा 90	फर्म के भागीदारों का कर का संदाय करने के लिए दायित्व	102
धारा 91	अभिरक्षों, न्यासियों आदि का दायित्व	102
धारा 92	प्रतिपाल्य अधिकरण	102
धारा 93	कतिपय मामलों में कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायित्व के संबंध में विशेष उपबंध	103
धारा 94	अन्य मामलों में दायित्व	104
अध्याय 17 अग्रिम विनिर्णय		
धारा 95	परिभाषाएं	105
	(क) अग्रिम विनिर्णय	105
	(ख) अपील प्राधिकरण	105
	(ग) आवेदक	105
	(घ) आवेदन	105



	(ड़) प्राधिकरण	105
	(च) राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण	105
धारा 96	अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण का गठन	105
धारा 97	अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन	105
धारा 98	आवेदन की प्राप्ति की प्रक्रिया	106
धारा 99	अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण का गठन	107
धारा 100	अपील प्राधिकरण को अपील	107
धारा 101	अपील प्राधिकारी के आदेश	107
धारा 101क	राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण का गठन	107
धारा 101ख	राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण का अपील	107
धारा 101ग	राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण का आदेश	108
धारा 102	अग्रिम विनिर्णय की परिशुद्धि	108
धारा 103	अग्रिम विनिर्णय का लागू होना	109
धारा 104	कतिपय परिस्थितियों में अग्रिम विनिर्णय का शून्य होना	109
धारा 105	प्राधिकरण, अपील प्राधिकरण और राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण की शक्तियां	110
धारा 106	प्राधिकरण, अपील प्राधिकरण और राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण की प्रक्रिया	110
अध्याय 18 अपील और पुनरीक्षण		



धारा 107	अपील प्राधिकारी को अपीलें	111
धारा 108	पुनरीक्षण प्राधिकारी की शक्तियां	113
धारा 109	अपीलीय न्यायाधिकरणों और उनकी पीठों का गठन	114
धारा 110	अपील अधिकरण के अध्यक्ष और सदस्य, उनकी अर्हताएं, नियुक्ति, सेवा की शर्तें आदि [विलोपित]	114
धारा 111	अपील अधिकरण के समक्ष प्रक्रिया	114
धारा 112	अपील अधिकरण को अपील	115
धारा 113	अपील अधिकरण के आदेश	117
धारा 114	राज्य अध्यक्ष की वित्तीय और प्रशासनिक शक्तिया [विलोपित]	117
धारा 115	अपील के दाखिल करने के लिए संदत्त रकम की वापसी पर ब्याज	118
धारा 116	प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा हाजिरी	118
धारा 117	उच्च न्यायालय को अपील	119
धारा 118	उच्चतम न्यायालय को अपील	120
धारा 119	राशि जो अपील आदि के होने के बाद भी संदत्त किए जाने है	120
धारा 120	कतिपय मामलों में अपील फाइल नहीं की जा सकेगी	120
धारा 121	अपील न किए जाने वाले विनिश्चय और आदेश	121
अध्याय 19 अपराध और शास्तियां		



धारा 122	कतिपय अपराधों के लिए शास्ति	122
धारा 122क	माल के विनिर्माण में प्रयुक्त कतिपय मशीनों को विशेष प्रक्रिया के अनुसार रजिस्टर करने में असफलता के लिए शास्ति	124
धारा 122ख	खोज और अनुसरण क्रियाविधि के अनुपालन में असफल होने पर शास्ति	125
धारा 123	सूचना विवरणी देने में असफल रहने पर शास्ति	125
धारा 124	आंकड़े देने में असमर्थ रहने पर जुर्माना	125
धारा 125	साधारण शास्ति	125
धारा 126	शास्ति से संबंधित साधारण विधाएं	125
धारा 127	कतिपय मामलों में शास्ति अधिरोपित करने की शक्ति	126
धारा 128	शास्ति या शुल्क या दोनों के अधित्यजन करने की शक्ति	126
धारा 129	अभिरक्षा, अभिग्रहण और माल की निर्मुक्ति तथा अभिवहन में प्रवहण	127
धारा 130	माल या प्रवहरण की जब्ती और शास्ति का उद्ग्रहण	129
धारा 131	जब्ती या शास्ति अन्य दंडों से व्यतिरेक नहीं करेगा	130
धारा 132	कतिपय अपराधों के लिए दंड	130
धारा 133	अधिकारियों और कतिपय अन्य व्यक्तियों का दायित्व	132
धारा 134	अपराध का संज्ञान	133
धारा 135	आपराधिक मानसिक दशा का अनुमान	133
धारा 136	कतिपय परिस्थितियों के अधीन कथनो की सुसंगतता	133



धारा 137	कंपनियों द्वारा अपराध	133
धारा 138	अपराधों का प्रशमन	134
अध्याय 20 संक्रमणकालीन उपबंध		
धारा 139	विद्यमान करदाताओं का प्रवर्जन	136
धारा 140	निवेश प्रतिदेय कर के लिए संक्रमणकालीन व्यवस्थाएं	136
धारा 141	फुटकर काम के संबंध में संक्रमणकालीन उपबंध	138
धारा 142	प्रकीर्ण संक्रमण कालीन उपबंध	139
अध्याय 21 प्रकीर्ण		
धारा 143	छुटपुट कार्य की प्रक्रिया	144
धारा 144	कतिपय मामलों में दस्तावेजों के लिए उपधारणा छूट प्राप्त करना	145
धारा 145	दस्तावेज के रूप में और साक्ष्य के रूप में दस्तावेजों और कम्प्युटर प्रिंट आउट की माईक्रो फिल्म, प्रतिकृति प्रतियों की ग्राह्यता	145
धारा 146	सामान्य पोर्टल	146
धारा 147	निर्यात समझा जाना	146
धारा 148	कतिपय प्रक्रियाओं के लिए विशेष पद्धति	146
धारा 148क	कतिपय मामलों के लिए खोज और अनुसरण क्रियाविधि	146
धारा 149	माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग	147



धारा 150	सूचना विवरणी प्रस्तुत करने की बाध्यता	147
धारा 151	सूचना मांगने की शक्ति	148
धारा 152	सूचना के प्रकटन पर वर्जन	148
धारा 153	किसी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त करना	149
धारा 154	नमूनों को प्राप्त करने की शक्ति	149
धारा 155	सबूत का भार	149
धारा 156	व्यक्ति लोकसेवक समझा जायेगा	149
धारा 157	इस अधिनियम के अधीन की गई कार्रवाई का संरक्षण	149
धारा 158	लोक सेवक द्वारा सूचना का प्रकट किया जाना	149
धारा 158क	कराधेय व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना को सम्मति के आधार पर साझा करना	151
धारा 159	कतिपय मामलों में व्यक्ति के विषय में सूचना का प्रकाशन	151
धारा 160	कतिपय बिन्दुओं पर निर्धारण कार्यवाहियां आदि का अविधिमान्य न किया जाना	152
धारा 161	अभिलेख पर प्रकट त्रुटि का परिशोधन	152
धारा 162	सिविल न्यायालय की अधिकारिता पर वर्जन	152
धारा 163	फीस उदग्रहण	152
धारा 164	नियमों को बनाने की सरकार की शक्ति	152
धारा 165	विनियम बनाने की शक्ति	153



धारा 166	नियमों, विनियमों और अधिसूचनाओं का रखा जाना	153
धारा 167	शक्तियों का प्रत्यायोजन	153
धारा 168	अनुदेशों या निदेशों को जारी करने की शक्ति	153
धारा 168क	विशेष परिस्थितियों में समय-सीमा के विस्तार हेतु सरकार की शक्तियाँ	153
धारा 169	कतिपय मामलों में नोटिस की तामील	154
धारा 170	कर का पूर्णांकन आदि	154
धारा 171	मुनाफाखोरी निरोध उपाय	155
धारा 172	कठिनाइयों को दूर करना	155
धारा 173	निरसन	156
धारा 174	व्यावृत्ति	156
अनुसूची 1	प्रतिफल के बिना किये गए क्रियाकलाप जिन्हें प्रदाय माना जायेगा यदि बिना विचार के किया	158
अनुसूची 2	क्रियाकलापों या संव्यवहार को माल के प्रदाय या सेवाओं के प्रदाय के रूप में माना जाना	159
अनुसूची 3	क्रियाकलाप या संव्यवहार जिन्हें न तो माल का प्रदाय माना जाएगा न ही सेवाओं का प्रदाय माना जायेगा	162



बिहार माल और सेवा कर अधिनियम, 2017

[बिहार अधिनियम – 12, 2017]¹

बिहार माल और सेवा कर अधिनियम, 2017

बिहार सरकार द्वारा माल या सेवाओं या दोनों के अंतः राज्यीय प्रदाय पर कर के उद्ग्रहण और संग्रहण के लिए और उससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने के लिए विधेयक

भारत गणराज्य के अड़सठवें वर्ष में बिहार के राज्य विधान-मंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:-

अध्याय 1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम, प्रारंभ और विस्तार—

- (1) यह अधिनियम बिहार माल और सेवा कर अधिनियम 2017 कहा जा सकेगा।
- (2) इसका विस्तार संपूर्ण बिहार राज्य में होगा है।
- (3) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगा, जो बिहार सरकार, राजपत्र में, अधिसूचना द्वारा, नियत करे :
परंतु इस अधिनियम के भिन्न-भिन्न उपबंधों के लिए भिन्न-भिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी और ऐसे किसी उपबंध में इस अधिनियम के प्रारंभ के प्रति किसी निर्देश का यह अर्थ लगाया जाएगा कि वह उस उपबंध के प्रवृत्त होने के प्रतिनिर्देश है।

2. परिभाषाएं—

इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो,—

- (1) “अनुयोज्य दावे” का वही अर्थ होगा, जो संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 की धारा 3 में उसका है;
- (2) “परिदान का पता” से माल या सेवाओं या दोनों के पाने वाले का ऐसा पता अभिप्रेत है, जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के परिदान के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कर बीजक पर उपदर्शित है;
- (3) “अभिलेख पर पता” से पाने वाले का वह पता अभिप्रेत है, जो प्रदायकर्ता के अभिलेखों में उपलब्ध है;
- (4) “न्यायनिर्णयन प्राधिकारी” से अधिनियम के अधीन कोई आदेश या विनिश्चय देने के लिए नियुक्त या प्राधिकृत कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है, किंतु इसके अंतर्गत आयुक्त, पुनरीक्षण प्राधिकारी, अग्रिम विनिर्णय प्राधिकारी, अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकारी, [राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण]², [अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण और धारा 171 की उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी]³ नहीं है;

1. बिहार विधानमंडल द्वारा पारित और राज्यपाल द्वारा 3 मई, 2017 को स्वीकृत, बिहार राजपत्र असाधारण में अधिसूचना संख्या 378 दिनांक 8 मई, 2017 के अंतर्गत प्रकाशित।

2. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

3. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा “अपील प्राधिकारी और अपील अधिकरण” के स्थान पर प्रतिस्थापित।



- (5) “अभिकर्ता” से फैक्टर, दलाल, कमीशन अभिकर्ता, आढ़तिया, प्रत्यायक अभिकर्ता (डेल क्रेडर एजेंट), नीलामकर्ता या कोई अन्य वाणिज्यिक अभिकर्ता, चाहे जिस नाम से ज्ञात हो, सहित कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो किसी अन्य व्यक्ति की ओर से माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय या प्राप्ति का कारबार करता है;
- (6) “संकलित आवर्त” से अखिल भारतीय आधार पर संगणित सामान स्थायी खाता संख्यांक वाले व्यक्तियों के सभी कराधेय प्रदायों (ऐसे आवक प्रदायों के मूल्य को अपवर्जित करके, जिस पर किसी व्यक्ति द्वारा विपरीत प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है), छूट प्राप्त प्रदायों, माल या सेवाओं या दोनों के निर्यातों और अंतरराज्यिक प्रदाय का संकलित मूल्य अभिप्रेत है, किंतु इसमें केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर अपवर्जित है;
- (7) “कृषक” से ऐसा कोई व्यक्ति या कोई हिंदू अविभक्त कुटुंब अभिप्रेत है, जो, –
- (क) स्वयं के श्रम द्वारा; या
- (ख) कुटुंब के श्रम द्वारा; या
- (ग) नकद या वस्तु के रूप में संदेय मजदूरी पर सेवकों द्वारा या व्यक्तिगत पर्यवेक्षण के अधीन या कुटुंब के किसी सदस्य के व्यक्तिगत पर्यवेक्षण के अधीन भाड़े के मजदूरों द्वारा, भूमि पर खेती करता है;
- (8) “अपील प्राधिकारी” से अपीलों की सुनवाई के लिए नियुक्त या प्राधिकृत धारा 107 में यथानिर्दिष्ट कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है;
- (9) “अपील अधिकरण” से धारा 109 के अधीन गठित माल और सेवा कर अपील अधिकरण अभिप्रेत है;
- (10) “नियत तारीख” से वह तारीख अभिप्रेत है जिसको इस अधिनियम के उपबंध प्रवृत्त होंगे;
- (11) “निर्धारण” से इस अधिनियम के अधीन कर के दायित्व का अवधारण अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत स्वतः निर्धारण, पुनः निर्धारण, अनंतिम निर्धारण, संक्षिप्त निर्धारण और सर्वोत्तम विवेक बुद्धि के अनुसार निर्धारण भी है;
- (12) “सहयुक्त उद्यमों” का वही अर्थ होगा, जो आय कर अधिनियम, 1961⁴ की धारा 92क में उसका है;
- (13) “संपरीक्षा” से इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा अनुरक्षित या दिए गए अभिलेखों, विवरणियों और अन्य दस्तावेजों की, घोषित आवर्त, संदत्त करों, दावाकृत प्रतिदाय और उपभोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय की शुद्धता को और इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुरूप उसके अनुपालन को सत्यापित करने के लिए परीक्षा अभिप्रेत है;
- (14) “प्राधिकृत बैंक” से इस अधिनियम के अधीन संदेय कर या किसी अन्य रकम का संग्रहण करने के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्राधिकृत कोई बैंक या किसी बैंक की कोई शाखा अभिप्रेत है;
- (15) “प्राधिकृत प्रतिनिधि” से धारा 116 के अधीन यथा निर्दिष्ट प्रतिनिधि अभिप्रेत है;
- (16) “बोर्ड” से केन्द्रीय राजस्व बोर्ड अधिनियम, 1963⁵ के अधीन गठित [केन्द्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड]⁶ अभिप्रेत है ;

4. अधिनियम संख्या 43 सन् 1961

5. अधिनियम संख्या 54 सन् 1963

6. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा “केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और सीमा शुल्क बोर्ड” के स्थान पर प्रतिस्थापित।



(17) "कारबार" में निम्नलिखित सम्मिलित है,—

(क) कोई व्यापार, वाणिज्य, विनिर्माण, वृत्ति, व्यवसाय, प्रोद्यम, पद्यम् या उसी प्रकार का कोई अन्य क्रियाकलाप, चाहे वह किसी धनीय फायदे के लिए हो या न हो;

(ख) उपखंड (क) के संबंध में या उसके आनुषंगिक या प्रासंगिक कोई क्रियाकलाप या संव्यवहार;

(ग) उपखंड (क) की प्रकृति का कोई क्रियाकलाप या संव्यवहार, चाहे ऐसे संव्यवहार का कोई परिमाण, आवृत्ति, निरंतरता या नियमितता हो या न हो;

(घ) कारबार के प्रारंभ या उसकी बंदी के संबंध में पूंजी माल सहित माल और सेवाओं का प्रदाय या अर्जन;

(ङ) किसी क्लब, संगम, सोसाइटी या वैसी ही किसी निकाय द्वारा किसी अभिदान या किसी अन्य प्रतिफल के लिए उसके सदस्यों के लिए सुविधाओं या फायदों वाले कोई व्यवस्था;

(च) किसी परिसर में किसी प्रतिफलार्थ व्यक्तियों का प्रवेश;

(छ) किसी व्यक्ति द्वारा ऐसे पदधारक के रूप में, जो उसने अपने व्यापार, वृत्ति या व्यवसाय के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए स्वीकार किया है, प्रदाय की गई सेवाएं;

[ज) किसी घुड़दौड़ क्लब द्वारा योगक या अनुज्ञप्ति के माध्यम से बुक मेकर को उपलब्ध करायी गयी सेवायें या किसी अनुज्ञप्ति धारी बुक मेकर की ऐसे क्लब की सेवायें; और]⁷

(झ) केन्द्रीय सरकार, किसी राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकार द्वारा किया गया कोई ऐसा क्रियाकलाप या संव्यवहार, जिसमें वे लोक प्राधिकारियों के रूप में लगे हुए हैं;

(18) [***]⁸

(19) "पूंजी माल" से ऐसा माल अभिप्रेत है, जिनका मूल्य इनपुट कर प्रत्यय का दावा करने वाले व्यक्ति की लेखा पुस्तकों में पूंजीकृत है और जिनका कारबार दौरान या उसे अग्रसर करने में उपयोग किया जाता है या उपयोग किया जाना आशयित है;

(20) "नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो किसी ऐसे कराधेय क्षेत्र में जहां उसके कारबार का निश्चित स्थान नहीं है, प्रधान, अभिकर्ता या किसी अन्य हैसियत में कारबार के दौरान या

7. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपखण्ड निम्नलिखित था :-

(ज) किसी घुड़दौड़ क्लब द्वारा, योगक के माध्यम से उपलब्ध कराई गई सेवाएं या ऐसे क्लब में बुक.मेकर की अनुज्ञप्ति; और

8. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खण्ड निम्न प्रकार था :-

(18) "कारबार शीर्षका" से किसी ऐसे उदयम् का विशिष्ट संघटक अभिप्रेत है, जो ऐसे पृथक-पृथक माल या सेवाओं के या ऐसे संबंधित माल या सेवाओं के प्रदाय में लगा हुआ है, जो ऐसे जोखिम और प्रत्यागमके अध्यधीन है, जो उसके अन्य कारबार शीर्षकाओं से भिन्न है;

स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजनों के लिए, ऐसे कारक, जिन पर यह अवधारण करने के लिए विचार किया जाना चाहिए कि क्या माल या सेवाएं संबंधित हैं, उसमें निम्नलिखित सम्मिलित है, —

(क) माल या सेवाओं की प्रकृति;

(ख) उत्पादन प्रक्रियाओं की प्रकृति;

(ग) माल या सेवाओं के ग्राहकों के प्रकार या वर्ग;

(घ) माल के वितरण या सेवाओं के प्रदाय में प्रयुक्त पद्धतियां; और

(ङ) विनियामक पर्यावरण की प्रकृति (जहां भी लागू हो), इसके अंतर्गत बैंककारी, बीमा या लोक उपयोगिताएं हैं;

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



उसे अग्रसर करने में यदा कदा ऐसे संव्यवहार करता है, जिनमें माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अंतर्वलित है;

(21) “केन्द्रीय कर” से केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 9 के अधीन उद्ग्रहीत केन्द्रीय माल और सेवा कर अभिप्रेत है;

(22) “उपकर” का वही अर्थ हो, जो माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम में उसका है;

(23) “चार्टर्ड एकाउंटेंट” से चार्टर्ड एकाउंटेंट अधिनियम, 1949 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ख) में यथापरिभाषित चार्टर्ड एकाउंटेंट अभिप्रेत है;

(24) “आयुक्त” से धारा 3 के अधीन नियुक्त राज्य कर आयुक्त अभिप्रेत है और इसमें धारा 3 के अधीन नियुक्त राज्य कर का प्रधान आयुक्त और मुख्य आयुक्त भी सम्मिलित हैं;

(25) “बोर्ड में आयुक्त” से केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 168 में निर्दिष्ट आयुक्त अभिप्रेत है;

(26) “सामान्य पोर्टल” से धारा 146 में निर्दिष्ट सामान्य माल और सेवा कर इलैक्ट्रानिक पोर्टल अभिप्रेत है;

(27) “सामान्य कार्य दिवस” से लगातार ऐसे दिन अभिप्रेत हैं, जिन्हें केन्द्रीय सरकार या बिहार सरकार द्वारा राजपत्रित छुट्टी घोषित नहीं किया गया है;

(28) “कंपनी सचिव” से कंपनी सचिव अधिनियम, 1980 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ग) में यथापरिभाषित कंपनी सचिव अभिप्रेत है;

(29) “सक्षम प्राधिकारी” से ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है, जिसे सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाए;

(30) “संयुक्त प्रदाय” से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी प्राप्तिकर्ता को किया गया कोई ऐसा प्रदाय अभिप्रेत है, जो माल या सेवाओं या दोनों के दो या अधिक कराधेय प्रदायों से मिलकर बना है या उनका कोई समुच्चय है, जिन्हें कारबार के साधारण अनुक्रम में एक दूसरे के साथ संयोजन में प्रकृतितः बांधा गया है और प्रदाय किया गया है, जिनमें एक मूल प्रदाय है;

दृष्टांत : जहां माल का बीमा के साथ पैक और परिवहन किया जाता है, वहां माल का, पैकिंग सामग्री का, परिवहन का और बीमा का प्रदाय संयुक्त प्रदाय होगा और माल का प्रदाय मुख्य प्रदाय होगा।

(31) माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में “प्रतिफल” के अंतर्गत निम्नलिखित भी है, —

(क) प्राप्तिकर्ता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में, उनके प्रत्युत्तर में या उनके प्रलोभन के लिए, चाहे धन के रूप में या अन्यथा किया गया या किया जाने वाला कोई संदाय, किंतु इसमें केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा दी गई कोई सहायिकी सम्मिलित नहीं होगी;

(ख) प्राप्तिकर्ता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में, उनके प्रत्युत्तर में या उनके प्रलोभन के लिए, किसी कार्य या संयमित रहने का धनीय मूल्य, किंतु इसमें केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा दी गई कोई सहायिकी सम्मिलित नहीं होगी :

परंतु माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में दिए गए निक्षेप को ऐसे प्रदाय के लिए किए गए संदाय के रूप में नहीं समझा जाएगा, जब तक कि प्रदायकर्ता ऐसे निक्षेप का, उक्त प्रदाय के लिए प्रतिफल के रूप में उपयोग न करे;

(32) “माल का निरंतर प्रदाय” से माल का ऐसा प्रदाय अभिप्रेत है, जो किसी संविदा के अधीन तार, केबल पाइपलाइन या अन्य नलिका के माध्यम से या अन्यथा, निरंतर रूप से या आवर्ती आधार पर उपलब्ध कराई जाए या उपलब्ध कराने के लिए करार पाई जाए और जिसके लिए नियमित या आवधिक आधार पर प्रदायकर्ता, प्राप्तिकर्ता के लिए बीजक बनाता है और इसके अंतर्गत ऐसे माल, जो सरकार ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो वह अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, का प्रदाय भी है;



- (33) "सेवाओं का निरंतर प्रदाय" से सेवाओं का ऐसा प्रदाय अभिप्रेत है, जो किसी संविदा के अधीन आवधिक संदाय की बाध्यताओं के साथ तीन मास से अधिक की अवधि के लिए निरंतर रूप से या आवर्ती आधार पर उपलब्ध कराई जाए या उपलब्ध कराने के लिए करार पाई जाए और इसके अंतर्गत ऐसी सेवाओं का, जो सरकार ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो वह अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, प्रदाय भी है;
- (34) "प्रवहरण" के अंतर्गत कोई जलयान, वायुयान और यान भी है;
- (35) "लागत लेखापाल" से लागत और संकर्म लेखापाल अधिनियम, 1959⁹ की धारा 2 की उपधारा (1) के [खंड (ख)]¹⁰ में यथापरिभाषित कोई लागत लेखापाल अभिप्रेत है;
- (36) "परिषद्" से संविधान के अनुच्छेद 279क के अधीन स्थापित माल और सेवा कर परिषद् अभिप्रेत है;
- (37) "जमापत्र" से धारा 34 की उपधारा (1) के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कोई दस्तावेज अभिप्रेत है;
- (38) "नामे नोट" से धारा 34 की उपधारा (3) के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा जारी कोई दस्तावेज अभिप्रेत है;
- (39) "समझा गया निर्यात" से माल का ऐसा प्रदाय अभिप्रेत है, जिसे धारा 147 के अधीन अधिसूचित किया जाए;
- (40) "अभिहित प्राधिकारी" से ऐसा प्राधिकारी अभिप्रेत है, जिसे आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया जाए;
- (41) "दस्तावेज" के अंतर्गत किसी प्रकार का लिखित या मुद्रित अभिलेख तथा सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 की धारा 2 के खंड (न) में यथापरिभाषित इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख भी है;
- (42) भारत में विनिर्मित और निर्यात किए गए किसी माल के संबंध में "चुंगी वापसी" से ऐसे माल के विनिर्माण में प्रयुक्त किसी आयातित निवेश पर या किसी घरेलू निवेशों या इनपुट सेवाओं पर प्रभार्य शुल्क, कर या उपकर का रिबेट अभिप्रेत है;
- (43) "इलेक्ट्रॉनिक नकद खाते" से धारा 49 की उपधारा (1) में निर्दिष्ट इलेक्ट्रॉनिक नकद खाता अभिप्रेत है;
- (44) "इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य" से डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क के माध्यम से डिजिटल उत्पाद सहित माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अभिप्रेत है;
- (45) "इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य प्रचालक" से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है, जो इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य के लिए डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक सुविधा या प्लेटफार्म पर स्वामित्व रखता हो, उसका प्रचालन या प्रबंध करता हो;
- (46) "इलेक्ट्रॉनिक जमा खाते" से धारा 49 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट इलेक्ट्रॉनिक जमा खाता अभिप्रेत है;
- (47) "छूट प्राप्त प्रदाय" से ऐसे किसी माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अभिप्रेत है, जिसकी, धारा 11 या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 6 के अधीन, कर की दर शून्य हो या कर से पूरी छूट दी गई है;
- (48) "विद्यमान विधि" से माल या सेवाओं या दोनों पर शुल्क या कर के उद्ग्रहण और संग्रहण से संबंधित कोई ऐसी विधि, अधिसूचना, आदेश, नियम या विनियम अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के प्रारंभ

9. अधिनियम संख्या-23 सन् 1959

10. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "खंड (ग)" के स्थान पर प्रतिस्थापित।



से पहले ऐसी विधि, अधिसूचना, आदेश, नियम या विनियम बनाने की शक्ति रखने वाली विधायिका या किसी प्राधिकारी या व्यक्ति द्वारा पारित किया गया है या बनाया गया है;

(49) “कुटुंब” से अभिप्रेत है, —

(i) व्यक्ति का पति या पत्नी और बच्चे; और

(ii) व्यक्ति के माता-पिता, पितामह — पितामही, मातामह—मातामही, भाई और बहन, यदि वे पूर्ण रूप से या मुख्य रूप से उक्त व्यक्ति पर आश्रित हैं

(50) “नियत स्थापन” से (कारबार के रजिस्ट्रीकृत स्थान से भिन्न) कोई ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जिसकी अपनी स्वयं की आवश्यकताओं के लिए सेवाओं का प्रदाय करने या सेवाएं प्राप्त करने और उनका उपयोग करने के लिए जो पर्याप्त डिग्री के स्थायित्व और मानव और तकनीकी संसाधनों के उपयुक्त संरचना की विशिष्टता से वर्णित है;

(51) “निधि” से धारा 57 के अधीन स्थापित उपभोक्ता कल्याण निधि अभिप्रेत है;

(52) “माल” से मुद्रा और प्रतिभूतियों से भिन्न प्रत्येक प्रकार की जंगम संपत्ति अभिप्रेत है, किंतु इसमें अनुयोज्य दावे, उगती फसलें, घास और भूमि से जुड़ी हुई या उसके भागरूप ऐसी वस्तुएं सम्मिलित हैं जिसका प्रदाय के पूर्व या प्रदाय की संविदा के अधीन पृथक किए जाने का करार किया गया है;

(53) “सरकार” से बिहार सरकार अभिप्रेत है;

(54) “माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम” से माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है;

(55) “माल और सेवा कर व्यवसायी” से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसका धारा 48 के अधीन ऐसे व्यवसायी के रूप में कार्य करने के लिए अनुमोदन किया गया है;

(56) “भारत” से संविधान के अनुच्छेद 1 में यथानिर्दिष्ट भारत का राज्यक्षेत्र, राज्यक्षेत्रीय सागर—खंड, महाद्वीपीय मग्नतट भूमि, अनन्य आर्थिक क्षेत्र तथा अन्य सामुद्रिक क्षेत्र अधिनियम, 1976¹¹ में यथानिर्दिष्ट उसका राज्यक्षेत्रीय सागर—खंड, ऐसे राज्यक्षेत्रीय सागर—खंड का समुद्रतल तथा उसकी अधोभूमि, महाद्वीपीय मग्नतट भूमि, अनन्य आर्थिक क्षेत्र और अन्य सामुद्रिक क्षेत्र और उसके राज्यक्षेत्र और राज्यक्षेत्रीय सागर—खंडों के ऊपर का आकाशी क्षेत्र अभिप्रेत है;

(57) “एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम” से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है;

(58) “एकीकृत कर” से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन उदगृहीत एकीकृत माल और सेवा कर अभिप्रेत है;

(59) “निवेश” से कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी प्रदायकर्ता द्वारा उपयोग किए गए या उपयोग किए जाने के लिए आशयित पूंजी माल से भिन्न कोई माल अभिप्रेत है;

(60) “इनपुट सेवा” से कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी प्रदायकर्ता द्वारा उपयोग की गई या उपयोग किए जाने के लिए आशयित कोई सेवा अभिप्रेत है;

[(61) “इनपुट सेवा वितरक” से माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे पूर्तिकार का कार्यालय अभिप्रेत है, जो इनपुट सेवाओं की प्राप्ति के मद्दे, जिसके अन्तर्गत [इस अधिनियम की धारा 9 या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 5 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन]¹² की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन कर से दायी सेवाओं के संबंध में बीजक सम्मिलित हैं या धारा 25 में निर्दिष्ट

¹¹ 1976 का 80

¹² बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द एवं अंक “धारा 9” प्रतिस्थापित।



सुभिन्न व्यक्तियों के निमित्त कर बीजक प्राप्त करता है और धारा 20 में उपबंधित रीति में ऐसे बीजकों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय वितरित करने के लिए दायी है।¹³

(62) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में “इनपुट कर” से माल या सेवाओं या दोनों के किसी प्रदाय पर प्रभारित केन्द्रीय कर, राज्य कर, एकीकृत कर या संघ राज्यक्षेत्र संबंधी कर अभिप्रेत हैं और इसके अंतर्गत निम्नलिखित भी हैं,—

(क) माल के आयात पर प्रभारित एकीकृत माल और सेवा कर;

(ख) धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर;

(ग) एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 5 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर;

(घ) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन संदेय कर;

किंतु इसमें उद्ग्रहण के प्रशमन के अधीन संदत्त कर सम्मिलित नहीं है;

(63) “इनपुट कर प्रत्यय” से इनपुट कर का प्रत्यय अभिप्रेत है;

(64) “माल का राज्यान्तर्गत प्रदाय” का वही अर्थ होगा, जो एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 8 में उसका है;

(65) “सेवाओं का राज्यान्तर्गत अंतरराज्यिक प्रदाय” का वही अर्थ होगा, जो एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 8 में उसका है;

(66) “बीजक” या “कर बीजक” से धारा 31 में निर्दिष्ट कर बीजक अभिप्रेत है;

(67) किसी व्यक्ति के संबंध में “आवक प्रदाय” से क्रय, अर्जन या किसी अन्य साधन द्वारा प्रतिफल के साथ या उसके बिना माल या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति अभिप्रेत है;

(68) “छुटपुट कार्य” से किसी अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के माल पर किसी व्यक्ति द्वारा किया गया कोई उपचार या की गई प्रक्रिया अभिप्रेत है और छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा;

(69) “स्थानीय प्राधिकारी” से निम्न अभिप्रेत हैं,—

(क) संविधान के अनुच्छेद 243 के खंड (घ) में यथा परिभाषित कोई पंचायत;

(ख) संविधान के अनुच्छेद 243त के खंड (ड) में यथा परिभाषित कोई नगरपालिका;

(ग) कोई नगरपालिका समिति और कोई जिला परिषद्, जिला बोर्ड और कोई अन्य प्राधिकारी, जो [नगरपालिका निधि या स्थानीय निधि]¹⁴ के नियंत्रण या प्रबंध करने का कानूनी रूप से हकदार है या जिसे केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा ऐसे नगरपालिका या स्थानीय निधि का नियंत्रण या प्रबंध सौंपा गया है;

13. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 15 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 736 पटना : दिनांक : 06 अगस्त, 2024 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्न प्रकार था :—

(61) “इनपुट सेवा वितरक” से माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे प्रदायकर्ता का कार्यालय अभिप्रेत है, जो इनपुट सेवाओं की प्राप्ति के मद्दे धारा 31 के अधीन जारी कर बीजक प्राप्त करता है और उक्त कार्यालय के समान स्थायी खाता संख्यांक वाले कराधेय माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे प्रदायकर्ता को उक्त सेवाओं पर संदत्त केन्द्रीय कर, राज्य कर, एकीकृत कर या संघ राज्यक्षेत्र संबंधी कर के प्रत्यय का वितरण करने के प्रयोजनों के लिए कोई विहित दस्तावेज जारी करता है;

14. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द “नगरपालिका या स्थानीय निधि” प्रतिस्थापित।



[स्पष्टीकरण — इस उपखंड के प्रयोजनों के लिए, (क) "स्थानीय निधि से किसी पंचायत क्षेत्र के संबंध में, लोक कृत्यों के निर्वहन करने के लिए, और किसी कर, शुल्क, टोल, उपकर या फीस, चाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हो का उद्ग्रहण, संग्रहण और विनियोजित करने के लिए, शक्तियों वाली विधि द्वारा निहित स्थापित स्थानीय स्वशासन के किसी प्राधिकारी के नियंत्रण या प्रबंध के अधीन कोई निधि अभिप्रेत है;

(ख) "नगरपालिका निधि से किसी महानगर क्षेत्र या नगरपालिका क्षेत्र के संबंध में, लोक कृत्यों का निर्वहन करने के लिए और किसी कर, शुल्क, टोल, उपकर या फीस, चाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हो, का उद्ग्रहण संग्रहण और विनियोजन करने के लिए, शक्तियों वाली विधि द्वारा निहित स्थापित स्थानीय स्वशासन किसी प्राधिकारी के नियंत्रण या प्रबंध के अधीन कोई निधि अभिप्रेत है;]¹⁵

(घ) छावनी अधिनियम, 2006 की धारा 3 में यथा परिभाषित छावनी बोर्ड;

(ङ) संविधान की छठी अनुसूची के अधीन गठित कोई प्रादेशिक परिषद् या कोई जिला परिषद्;

(च) संविधान के अनुच्छेद 371 [और अनुच्छेद 371ज]¹⁶ के अधीन गठित कोई विकास बोर्ड ; या

(छ) संविधान के अनुच्छेद 371क के अधीन गठित कोई प्रादेशिक परिषद्;

(70) "सेवाओं के प्राप्तिकर्ता का अवस्थान" से,—

(क) जहां प्रदाय कारबार के ऐसे स्थान पर प्राप्त किया जाता है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है, वहां कारबार के ऐसे स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है;

(ख) जहां प्रदाय कारबार के उस स्थान से भिन्न किसी अन्य ऐसे स्थान पर प्राप्त किया जाता है जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है (अन्यत्र नियत स्थापन), वहां ऐसे नियत स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है;

(ग) जहां प्रदाय एक से अधिक स्थापनों पर प्राप्त किया जाता है, चाहे वह कारबार का स्थान हो या नियत स्थापन, वहां प्रदाय की प्राप्ति से सर्वाधिक सीधे संबंधित स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है;

(घ) ऐसे स्थानों के अभाव में प्राप्तिकर्ता के प्रायिक निवास स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है;

(71) "सेवाओं के प्रदायकर्ता का अवस्थान" से,—

(क) जहां प्रदाय कारबार के ऐसे स्थान से किया जाता है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है, वहां कारबार के ऐसे स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है;

(ख) जहां प्रदाय कारबार के उस स्थान से भिन्न किसी अन्य ऐसे स्थान से किया जाता है, जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त किया गया है (अन्यत्र नियत स्थापन), वहां ऐसे नियत स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है;

(ग) जहां प्रदाय एक से अधिक स्थापनों से किया जाता है, चाहे वह कारबार का स्थान हो या नियत स्थापन है, वहां प्रदाय की व्यवस्था से सर्वाधिक सीधे संबंधित स्थापन का अवस्थान अभिप्रेत है;

(घ) ऐसे स्थानों के अभाव में प्रदायकर्ता के प्रायिक निवास स्थान का अवस्थान अभिप्रेत है;

(72) "विनिर्माण" से कच्ची सामग्री या निवेश का ऐसी रीति से प्रसंस्करण अभिप्रेत है, जिसके परिणामस्वरूप सुभिन्न नाम, स्वरूप और उपयोग वाले एक नए उत्पाद का अविर्भाव होता है और "विनिर्माता" पद का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा;

15. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

16. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "और अनुच्छेद 371ज" बढ़ाया गया।



(73) “बाजार मूल्य” से ऐसी पूरी रकम अभिप्रेत होगी, जिसकी प्रदाय के प्राप्तिकर्ता से, वैसे ही प्रकार और क्वालिटी के माल या सेवाओं या दोनों को, उसी समय पर या उसके आसपास और जहां प्राप्तिकर्ता और प्रदायकर्ता संबंधित नहीं हैं, वहां उसी वाणिज्यिक स्तर पर अभिप्राप्त करने के लिए, संदाय किए जाने की अपेक्षा होती है;

(74) “मिश्रित प्रदाय” से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा, किसी एकल कीमत के लिए माल या सेवाओं का या उसके किसी ऐसे समुच्चय का, जो परस्पर सहयोजन से बनाया गया है, दो या अधिक पृथक-पृथक प्रदाय अभिप्रेत हैं, जहां ऐसा प्रदाय कोई संयुक्त प्रदाय नहीं है।

दृष्टांत : डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों, मिठाई, चाकलेट, केक, मेवा, वातित पेय और फल के जूस को मिलाकर बनाए गए पैकेज का प्रदाय, जब वह किसी एकल कीमत के लिए किया गया है, तो वह प्रदाय मिश्रित प्रदाय होगा। इन मदों में से प्रत्येक मद का अलग-अलग भी प्रदाय किया जा सकता है और वह किसी अन्य पर निर्भर नहीं होगा। यदि इन मदों का अलग-अलग प्रदाय किया जाता है तो वह मिश्रित प्रदाय नहीं होगा;

(75) “धन” से भारतीय विधिमान्य मुद्रा या कोई विदेशी करेंसी, चैक, वचनपत्र, विनिमय पत्र, साख पत्र, ड्राफ्ट, संदाय आदेश, यात्री चैक, मनी आर्डर, डाक या इलैक्ट्रॉनिक विप्रेषणादेश या भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मान्यताप्राप्त कोई अन्य लेख पत्र अभिप्रेत है, जब उसका उपयोग किसी बाध्यता के परिनिर्धारण के लिए या किसी अन्य अंकित मूल्य की भारतीय विधिमान्य मुद्रा से विनिमय के प्रतिफल के रूप में किया जाता है, किंतु इसमें कोई ऐसी करेंसी सम्मिलित नहीं होगी, जिसका अपना मुद्रा विधा मूल्य है;

(76) “मोटर यान” का वही अर्थ होगा, जो मोटर यान अधिनियम, 1988 की धारा 2 के खंड (28) में उसका है;

(77) “अनिवासी कराधेय व्यक्ति” से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो यदा कदा, प्रधान या अभिकर्ता के रूप में या किसी अन्य हैसियत में ऐसे संव्यवहार करता है जिनमें माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अंतर्वलित है, किंतु जिसका भारत में कारबार का कोई नियत स्थान या कोई निवास स्थान नहीं है;

(78) “गैर-कराधेय प्रदाय” से माल या सेवाओं या दोनों का ऐसा प्रदाय अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कर से उदग्राह्य नहीं है;

(79) “गैर-कराधेय क्षेत्र” से ऐसा क्षेत्र अभिप्रेत है, जो कराधेय क्षेत्र से बाहर है;

(80) “अधिसूचना” से राजपत्र में प्रकाशित कोई अधिसूचना अभिप्रेत है और “अधिसूचित करना” और “अधिसूचित” पदों का तदनुसार अर्थ लगाया जाएगा;

[(80क) “ऑनलाइन गेम खेलना” से इंटरनेट या इलैक्ट्रॉनिक नेटवर्क पर गेम की प्रस्थापना अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत ऑनलाइन धनीय गेम खेलना भी है;

(80ख) “ऑनलाइन धनीय गेम खेलना” से ऐसा ऑनलाइन गेम खेलना अभिप्रेत है, जिसमें खिलाड़ी किसी आयोजन में, जिसमें गेम, स्कीम, प्रतिस्पर्धा या कोई अन्य क्रियाकलाप या प्रक्रिया भी है, धन या धन के मूल्य, जिसके अंतर्गत आभासी डिजिटल आस्तियां भी हैं, को जीतने की प्रत्याशा में, धन या धन के मूल्य का संदाय या जमा करता है, जिसके अंतर्गत आभासी डिजिटल आस्तियां भी हैं, चाहे इसका परिणाम या निष्पादन कौशल, अवसर या दोनों पर आधारित हो या नहीं, तथा चाहे वह तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन अनुज्ञेय हो या नहीं;]¹⁷

(81) “अन्य राज्यक्षेत्र” में ऐसे राज्यक्षेत्रों से भिन्न राज्यक्षेत्र सम्मिलित हैं, जो किसी राज्य में समाविष्ट हैं और जो खंड (114) के उपखंड (क) से उपखंड (ड) में निर्दिष्ट हैं;

17. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



(82) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में “आउटपुट कर” से उसके द्वारा या उसके अभिकर्ता द्वारा किया गया माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय पर इस अधिनियम के अधीन प्रभार्य कर अभिप्रेत है, किंतु इसमें विपरीत प्रभार के आधार पर उसके द्वारा संदेय कर को अपवर्जित किया गया है;

(83) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में “जावक प्रदाय” से किसी व्यक्ति द्वारा कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किया गया या किए जाने के लिए करार पाया गया माल या सेवाओं या दोनों का, विक्रय, अंतरण, वस्तु-विनिमय, विनिमय, अनुज्ञप्ति, भाटक, पट्टा या निपटान या किसी भी अन्य रीति से किया गया प्रदाय अभिप्रेत है;

(84) “व्यक्ति” के अंतर्गत निम्नलिखित हैं, –

(क) कोई व्यक्ति;

(ख) कोई हिंदू अविभक्त कुटुंब;

(ग) कोई कंपनी;

(घ) कोई फर्म;

(ङ) कोई सीमित दायित्व भागीदारी;

(च) कोई व्यक्ति संगम या व्यक्ति निकाय, चाहे भारत में या भारत के बाहर निगमित हो या न हो;

(छ) किसी केन्द्रीय अधिनियम या राज्य अधिनियम या प्रांतीय अधिनियम द्वारा या उसके अधीन स्थापित कोई निगम या कंपनी अधिनियम, 2013¹⁸ की धारा 2 के खंड (45) में यथापरिभाषित कोई सरकारी कंपनी;

(ज) भारत के बाहर किसी देश की विधि द्वारा या उसके अधीन निगमित कोई निगमित निकाय;

(झ) सहकारी सोसाइटियों से संबंधित किसी विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई सहकारी सोसाइटी;

(ञ) कोई स्थानीय प्राधिकारी;

(ट) केन्द्रीय सरकार या कोई राज्य सरकार;

(ठ) सोसाइटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1860¹⁹ के अधीन यथा परिभाषित सोसाइटी;

(ड) न्यास; और

(ढ) प्रत्येक ऐसा कृत्रिम विधिक व्यक्ति, जो उपरोक्त किसी में नहीं आता है;

(85) “कारबार के स्थान” के अंतर्गत निम्नलिखित हैं,—

(क) वह स्थान, जहां से सामान्य तौर से कारबार किया जाता और इसके अंतर्गत कोई भांडागार, गोदाम या कोई अन्य स्थान भी है, जहां कराधेय व्यक्ति अपने माल का भंडारण करता है, माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय करता है या प्राप्त करता है; या

(ख) वह स्थान, जहां कराधेय व्यक्ति अपनी लेखा पुस्तकों को अनुरक्षित रखता है; या

(ग) वह स्थान, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, किसी अभिकर्ता के माध्यम से, चाहे वह किसी नाम से ज्ञात हो, कारबार में लगा हुआ है;

(86) “प्रदाय का स्थान” से एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अध्याय 5 में यथानिर्दिष्ट प्रदाय का स्थान अभिप्रेत है;

¹⁸. 2013 का 18

¹⁹ 1860 का 21



(87) "विहित" से परिषद् की सिफारिशों पर इस अधिनियम के अधीन बना गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है;

(88) "प्रधान" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसकी ओर से कोई अभिकर्ता माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय या प्राप्ति का कारबार करता है;

(89) "कारबार का मुख्य स्थान" से रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में कारबार के मुख्य स्थान के रूप में विनिर्दिष्ट कारबार का स्थान अभिप्रेत है;

(90) "मुख्य प्रदाय" से ऐसे माल या सेवाओं का प्रदाय अभिप्रेत है, जो किसी संयुक्त प्रदाय का प्रबल तत्व है और जिसके लिए उस संयुक्त प्रदाय के भागरूप कोई अन्य प्रदाय आनुषंगिक है;

(91) इस अधिनियम के अधीन पालन किए जाने वाले किसी कृत्य के संबंध में "उचित अधिकारी" से राज्य कर का आयुक्त या ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे आयुक्त द्वारा वह कृत्य सौंपा गया है;

(92) "तिमाही" से ऐसी अवधि अभिप्रेत है, जिसमें किसी कलेंडर वर्ष के मार्च, जून, सितंबर और दिसंबर के अंतिम दिन को समाप्त होने वाले तीन क्रमवर्ती कलेंडर मास समाविष्ट हों;

(93) माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के "प्राप्तिकर्ता" से, —

(क) जहां माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के लिए कोई प्रतिफल संदेय है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो उस प्रतिफल के संदाय का दायी है;

(ख) जहां माल के प्रदाय के लिए कोई प्रतिफल संदेय नहीं है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसको माल प्रदत्त किया गया है या उपलब्ध कराया गया है या जिसे माल का कब्जा या उपयोग के लिए दिया गया है या उपलब्ध कराया गया है;

(ग) जहां किसी सेवा के प्रदाय के लिए प्रतिफल का संदाय नहीं किया गया है, वहां ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जिसे सेवाएं दी जाती हैं,

और किसी ऐसे व्यक्ति के प्रतिनिर्देश का, जिसे प्रदाय किया गया है, प्रदाय के प्राप्तिकर्ता के प्रतिनिर्देश के रूप में अर्थ लगाया जाएगा और इसके अंतर्गत प्रदाय किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में प्राप्तिकर्ता की ओर से उस रूप में कार्य करने वाला कोई अभिकर्ता भी होगा;

(94) "रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, किंतु इसमें विशिष्ट पहचान संख्यांक वाला कोई व्यक्ति सम्मिलित नहीं है;

(95) "विनियम" से सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिश पर इस अधिनियम के अधीन बनाए गए विनियम अभिप्रेत हैं;

(96) माल के संबंध में "हटाए जाने" से, —

(क) उसके प्रदायकर्ता द्वारा या ऐसे प्रदायकर्ता की ओर से कार्य करने वाले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा परिदान के लिए माल का प्रेषण अभिप्रेत है; या

(ख) उसके प्राप्तिकर्ता द्वारा या ऐसे प्राप्तिकर्ता की ओर से कार्य करने वाले किसी अन्य व्यक्ति द्वारा माल का संग्रहण अभिप्रेत है;

(97) "विवरणी" से इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों द्वारा या उनके अधीन दिए जाने के लिए विहित या उससे अन्यथा अपेक्षित कोई विवरणी अभिप्रेत है;

(98) "विपरीत प्रभार" से धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम की धारा 5 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदायकर्ता के बजाय माल या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता द्वारा कर संदाय का दायित्व अभिप्रेत है;

(99) "पुनरीक्षण प्राधिकारी" से धारा 108 में यथानिर्दिष्ट विनिश्चय या आदेशों के पुनरीक्षण के लिए नियुक्त या प्राधिकृत कोई प्राधिकारी अभिप्रेत है;

(100) "अनुसूची" से इस अधिनियम से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है;



(101) "प्रतिभूति" का वही अर्थ होगा, जो प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956 की धारा 2 के खंड (ज) में उसका है;

(102) "सेवाओं" से माल, धन और प्रतिभूतियों से भिन्न कुछ भी अभिप्रेत है, किंतु इसमें धन का उपयोग या नकद या किसी अन्य रीति से एक करेंसी या अंकित मूल्य का किसी अन्य रूप, करेंसी या अंकित मूल्य में उसका ऐसा संपरिवर्तन, जिसके लिए पृथक प्रतिफल प्रभारित हो, से संबंधित क्रियाकलाप सम्मिलित हैं ;

[स्पष्टीकरण.—शंकाओं के निवारण के लिये यह स्पष्ट किया जाता है कि "सेवा" पद में प्रतिभूतियों में संबन्धनों को सुकर बनाना या प्रबन्ध करना सम्मिलित है।]²⁰

(102क) "विनिर्दिष्ट अनुयोज्य दावे" से,—

(i) दांव लगाने;

(ii) कैसिनो;

(iii) द्यूतक्रीड़ा;

(iv) घुड़दौड़;

(v) लाटरी; या

(vi) ऑनलाइन धनीय गेम खेलना,"

में अंतर्वलित या उनके माध्यम से अनुयोज्य दावा अभिप्रेत है।²¹

(103) "राज्य" से बिहार राज्य अभिप्रेत है;

(104) "राज्य कर" से इस अधिनियम के अधीन उदगृहीत कर अभिप्रेत है;

(105) माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में "प्रदायकर्ता" से उक्त माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय करने वाला व्यक्ति अभिप्रेत होगा और इसमें प्रदाय किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में ऐसे प्रदायकर्ता की ओर से उस रूप में कार्य करने वाला कोई अभिकर्ता सम्मिलित होगा;

[परंतु कोई व्यक्ति, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, विनिर्दिष्ट अनुयोज्य दावों की पूर्ति की व्यवस्था या ठहराव करता है, जिसके अंतर्गत वह व्यक्ति भी है, जो ऐसी पूर्ति के लिए डिजिटल या इलैक्ट्रॉनिक प्लेटफार्म का स्वामी है या उसका प्रचालन या प्रबंधन करता है, ऐसे अनुयोज्य दावों का पूर्तिकार समझा जाएगा, चाहे ऐसे अनुयोज्य दावे, उसके द्वारा या उसके माध्यम से पूर्ति किए जाते हों और चाहे ऐसे अनुयोज्य दावों की पूर्ति के लिए धन या धन के मूल्य, जिसके अंतर्गत आभासी डिजिटल आस्तियां भी हैं, में प्रतिफल, उसको या उसके माध्यम से संदत्त या सूचित किए जाते हैं या किसी भी रीति में उसको दिए जाते हैं, और इस विधेयक के सभी उपबंध विनिर्दिष्ट अनुयोज्य दावों के ऐसे पूर्तिकार को लागू होंगे, मानो वह ऐसे अनुयोज्य दावों की पूर्ति करने के संबंध में कर का संदाय करने के लिए दायी पूर्तिकार हो।]²²

(106) "कर अवधि" से ऐसी अवधि अभिप्रेत है, जिसके लिए विवरणी देने की अपेक्षा है;

(107) "कराधेय व्यक्ति" से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है या रजिस्ट्रीकृत किए जाने का दायी है;

20. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

21. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा अन्तःस्थापित।

22. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा अन्तःस्थापित।



(108) "कराधेय प्रदाय" से ऐसे माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अभिप्रेत है, जिस पर इस अधिनियम के अधीन कर से उदग्राह्य है;

(109) "कराधेय राज्यक्षेत्र" से ऐसा राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है, जिसको इस अधिनियम के उपबंध लागू होते हैं;

(110) "दूर संचार सेवा" से किसी प्रकार की ऐसी सेवा अभिप्रेत है, (जिसके अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक मेल, वायस मेल, डाटा सर्विस, आडियो टेक्स्ट सर्विस, वीडियो टैक्सी सर्विस, रेडियो पेजिंग और सेल्युलर मोबाइल टेलीफोन सेवाएं भी हैं) जो उपयोक्ता को किसी संकेत, सिग्नल, लेख, आकृति और ध्वनि के पारेषण या ग्रहण करने या किसी प्रकार की आसूचना के माध्यम से तार, रेडियो, दृश्य या अन्य इलैक्ट्रो मैग्नेटिक साधनों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है;

(111) "केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम" से केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है;

(112) "राज्य में आवर्त" या "संघ राज्यक्षेत्र में आवर्त" से किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र के भीतर किए गए (ऐसे आवक प्रदायों के मूल्य को अपवर्जित करते हुए, जिस पर किसी व्यक्ति द्वारा विपरीत प्रभार के आधार पर कर संदेय है) सभी कराधेय प्रदायों और छूट प्राप्त प्रदायों, उक्त कराधेय व्यक्ति द्वारा राज्य या संघ राज्यक्षेत्र से माल या सेवाओं या दोनों के निर्यात और अंतरराज्यिक प्रदाय का संकलित मूल्य अभिप्रेत है, किंतु इसमें केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर अपवर्जित हैं;

(113) "प्राथिक निवास स्थान" से,—

(क) किसी व्यक्ति की दशा में ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जहां वह सामान्य तौर पर निवास करता है;

(ख) अन्य दशाओं में ऐसा स्थान अभिप्रेत है, जहां व्यष्टि निगमित है या अन्यथा विधिक रूप से गठित है;

(114) "संघ राज्यक्षेत्र" से,—

(क) अंदमान और निकोबार द्वीप;

(ख) लक्षद्वीप ;

[ग) दादरा और नागर हवेली और दमन एवं दीव ;

(घ) लद्दाख²³

(ङ) चंडीगढ़ ; और

(च) अन्य राज्यक्षेत्र,

का राज्यक्षेत्र अभिप्रेत है;

स्पष्टीकरण — इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, उपखंड (क) से उपखंड (च) में विनिर्दिष्ट राज्यक्षेत्र में से प्रत्येक को एक पृथक संघ राज्यक्षेत्र समझा जाएगा;

(115) "संघ राज्यक्षेत्र कर" से संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन उदगृहीत संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अभिप्रेत है;

(116) "संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम" से संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 अभिप्रेत है;

²³. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा उपखंड "(ग) दादरा और नागर हवेली ; (घ) दमन और दीव ;" प्रतिस्थापित।



[(116क) "विशिष्ट पहचान चिह्नकन" से धारा 148क की उपधारा (2) के खंड (ख) में निर्दिष्ट विशिष्ट पहचान चिह्नकन अभिप्रेत है और जिसमें डिजिटल मुहर, डिजिटल चिह्न या अन्य उसी प्रकार का चिह्नकन, जो विशिष्ट सुरक्षित और न हटाया जा सकने योग्य हो, भी सम्मिलित है।²⁴

(117) "विधिमान्य विवरणी" से धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन दी गई कोई ऐसी विवरणी अभिप्रेत है, जिस पर स्वतः निर्धारण कर का पूर्ण रूप से संदाय किया गया है;

(117क) "आभासी डिजिटल आस्ति" का वही अर्थ होगा, जो आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 2 के खंड (47क) में उसका है।²⁵

(118) "वाऊचर" से कोई ऐसी लिखत अभिप्रेत है, जहां उसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के लिए प्रतिफल के रूप में या भागिक प्रतिफल के रूप में स्वीकार करने की बाध्यता है और जहां प्रदाय किए जाने वाला माल या सेवाओं या दोनों या उनके संभावी प्रदायकर्ताओं की पहचान या तो लिखत पर ही उपदर्शित है या संबद्ध दस्तावेजीकरण में उपदर्शित है, जिसमें ऐसी लिखत के उपयोग के निबंधन और शर्तें भी हैं;

(119) "कार्य संविदा" से किसी स्थावर संपत्ति का निर्माण, सन्निर्माण, रचना करने, पूरा करने, परिनिर्माण, संस्थापन, सज्जित करने, सुधारने, उपांतरण करने, मरम्मत करने, अनुरक्षण करने, नवीकरण करने, परिवर्तन करने या बनाने के लिए ऐसी संविदा के निष्पादन में माल के रूप में संपत्ति का हस्तांतरण (चाहे वह माल या किसी अन्य रूप में हो) कोई संविदा अभिप्रेत है;

(120) उन शब्दों और पदों के, जो इस अधिनियम में प्रयुक्त हैं और परिभाषित नहीं हैं, किंतु एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगे जो उनके उन अधिनियमों में हैं।

24. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

25. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 2

प्रशासन

3. इस अधिनियम के अधीन अधिकारी—

सरकार, अधिसूचना द्वारा, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, निम्नलिखित अधिकारियों के वर्ग नियुक्त करेगी, अर्थात्:—

- (क) राज्य कर प्रधान आयुक्त या राज्य का मुख्य आयुक्त;
- (ख) राज्य कर विशेष आयुक्त;
- (ग) राज्य कर अपर आयुक्त;
- (घ) राज्य कर संयुक्त आयुक्त;
- (ङ) राज्य कर उपायुक्त;
- (च) राज्य कर सहायक आयुक्त; और
- (छ) अधिकारियों का कोई अन्य वर्ग, जो वह ठीक समझे :

परंतु बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 के अधीन नियुक्त अधिकारियों को इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन नियुक्त अधिकारी समझा जाएगा।

4. अधिकारियों की नियुक्ति—

- (1) राज्य सरकार, धारा 3 के अधीन यथाअधिसूचित अधिकारियों के अतिरिक्त ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति कर सकेगा, जिन्हें वह इस अधिनियम के अधीन अधिकारी के रूप में ठीक समझे।
- (2) आयुक्त का क्षेत्राधिकार संपूर्ण राज्य होगा, विशेष आयुक्त तथा अपर आयुक्त का क्षेत्राधिकार उन्हें सौंपे गये सभी या किसी कृत्य के बावत संपूर्ण राज्य या, राज्य सरकार द्वारा यथा निदेशित, राज्य का कोई स्थानीय क्षेत्र होगा तथा, निर्दिष्ट किये गये शर्तों के अधीन, अन्य सभी अधिकारियों का क्षेत्राधिकार संपूर्ण राज्य या राज्य का ऐसा स्थानीय क्षेत्र होगा जैसा कि आयुक्त आदेश द्वारा निर्दिष्ट करे।

5. अधिकारियों की शक्तियां—

- (1) राज्य कर अधिकारी, ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए, जो आयुक्त अधिरोपित करे, इस अधिनियम के अधीन उसे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और उस पर अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेगा।
- (2) राज्य कर अधिकारी, किसी अन्य ऐसे राज्य कर अधिकारी को, जो उसके अधीनस्थ है, इस अधिनियम के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेगा।
- (3) आयुक्त, ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए, जो उसके द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट की जाए, अपनी शक्तियों का, उसके अधीनस्थ किसी अन्य अधिकारी को प्रत्यायोजन कर सकेगा।
- (4) इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, कोई अपील प्राधिकारी, किसी अन्य राज्य कर अधिकारी को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और उस पर अधिरोपित कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करेगा।



6. कतिपय परिस्थितियों में केन्द्रीय कर अधिकारियों का समुचित प्राधिकारी के रूप में प्राधिकरण—

(1) इस अधिनियम के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त अधिकारी, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो सरकार, अधिसूचना द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर विनिर्दिष्ट करेगी, उचित अधिकारी के रूप में प्राधिकृत होंगे।

(2) उपधारा (1) के अधीन जारी अधिसूचना में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन रहते हुए,—

(क) जहां कोई उचित अधिकारी, इस अधिनियम के अधीन कोई आदेश देता है, वहां वह केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन, भी उस अधिनियम द्वारा यथा प्राधिकृत आदेश, केन्द्रीय कर के अधिकारिता अधिकारी की प्रज्ञापना के अधीन, आदेश देगा,;

(ख) जहां केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई उचित अधिकारी किसी विषय-वस्तु पर कोई कार्यवाहियां आरंभ करता है, वहां इस अधिनियम के अधीन उचित अधिकारी उसी विषय वस्तु पर कोई कार्यवाहियां आरंभ नहीं करेगा।

(3) इस अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी द्वारा पारित आदेश की परिशुद्धि, अपील और पुनरीक्षण, जहां-जहां लागू हों, के लिए कोई कार्यवाही केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी के समक्ष नहीं होगी।



अध्याय 3

कर का उद्ग्रहण और संग्रहण

7. प्रदाय की परिधि—

(1) इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, “प्रदाय” पद में निम्नलिखित सम्मिलित हैं, —

(क) किसी व्यक्ति द्वारा कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में किसी प्रतिफल के लिए किया गया या किए जाने के लिए करार पाया गया विक्रय, अंतरण, वस्तु-विनिमय, विनिमय, अनुज्ञप्ति, भाटक, पट्टा या निपटान जैसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के सभी प्ररूप;

[(कक) किसी व्यक्ति, जो किसी व्यक्ति से भिन्न है, द्वारा उसके सदस्यों या घटकों या विपर्यय से नकद, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए क्रियाकलाप या संव्यवहार:”।

स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजनों के लिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि या किसी न्यायालय, अभिकरण या प्राधिकरण के किसी निर्णय, डिक्री या आदेश में अतिर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, व्यक्ति और उसके सदस्यों या घटकों को दो पृथक् व्यक्ति समझा जाएगा और क्रियाकलापों का प्रदाय या संव्यवहार, परस्पर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति द्वारा किए गए समझे जाएंगे।²⁶

(ख) किसी प्रतिफल के लिए सेवाओं का आयात, चाहे वह कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए हो या नहीं; [और]²⁷

(ग) किसी प्रतिफल के बिना किए गए या किए जाने के लिए करार पाए गए अनुसूची 1 में विनिर्दिष्ट क्रियाकलाप; [***]²⁸

(घ) [***]²⁹

[(1क) जहां कतिपय कार्यकलाप या संव्यवहार उपधारा (1) के उपबन्धों के अनुसार कोई पूर्ति है, उन्हें अनुसूची 2 में यथानिर्दिष्ट माल की पूर्ति या सेवा की पूर्ति माना जायेगा।]³⁰

(2) उपधारा (1) में अतिर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी,—

(क) अनुसूची 3 में विनिर्दिष्ट क्रियाकलापों या संव्यवहारों को, या

(ख) केन्द्रीय सरकार, किसी राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी द्वारा लोक प्राधिकारियों के रूप में किए गए ऐसे क्रियाकलापों या संव्यवहारों को, जिन्हें सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए,

न तो माल के प्रदाय के रूप में और न ही सेवाओं के प्रदाय के रूप में माना जाएगा।

26. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।

27. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा बढ़ाया गया एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।

28. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द “और” लोप दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।

29. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा निरसित। (1.7.2017 से प्रभावी)। निरसन से पूर्व खण्ड (घ) इस प्रकार था :

“ माल के प्रदाय या सेवाओं के प्रदाय के रूप में माने गए अनुसूची 2 में यथानिर्दिष्ट क्रियाकलाप। ”

30. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित। (1.7.2017 से प्रभावी)



(3) [उपधारा (1), उपधारा (1क) और उपधारा (2)]³¹ के उपबंधों के अधीन रहते हुए, सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसे संव्यवहारों को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिन्हें,—

(क) माल के प्रदाय के रूप में, न कि सेवाओं के प्रदाय के रूप में; या

(ख) सेवाओं के प्रदाय के रूप में, न कि माल के प्रदाय के रूप में, माना जाएगा।

8. संयुक्त और मिश्रित प्रदायों पर कर का दायित्व—

किसी संयुक्त या मिश्रित प्रदाय पर कर के दायित्व का अवधारण निम्नलिखित रीति से किया जाएगा, अर्थात् :—

(क) दो या अधिक प्रदायों को समाविष्ट करके किए गए किसी संयुक्त प्रदाय को, जिसमें से एक मुख्य प्रदाय है, ऐसे मुख्य प्रदाय की आपूर्ति के रूप में माना जाएगा; और

(ख) दो या अधिक प्रदायों को समाविष्ट करके किए गए मिश्रित प्रदाय को उस विशिष्ट प्रदाय की आपूर्ति के रूप में माना जाएगा, जिसके कर की दर उच्चतम है।

9. उद्ग्रहण और संग्रहण—

(1) उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, मानवीय उपभोग के लिए मादक शराब [और विकृत अतिरिक्त निष्प्रभावी एल्कोहल या परिशोधित स्पिरिट, जो मानवीय उपभोग के लिए अल्कोहलिक लिकर के विनिर्माण हेतु प्रयुक्त किया जाता है]³² के प्रदाय को छोड़कर, माल या सेवाओं या दोनों के सभी राज्यान्तर्गत प्रदायों पर धारा 15 के अधीन अवधारित मूल्य पर और बीस प्रतिशत से अनधिक ऐसी दरों पर, जो सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाए, बिहार राज्य माल और सेवा कर नामक कर का, उद्ग्रहण और ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, संग्रहण किया जाएगा और जो कराधेय व्यक्ति द्वारा संदत्त किया जाएगा।

(2) अपरिष्कृत पेट्रोलियम, हाई स्पीड डीजल, मोटर स्प्रीट (जिसे आमतौर पर पेट्रोल कहा जाता है), प्राकृतिक गैस और विमानन टर्बाइन ईंधन के प्रदाय पर राज्य कर का उद्ग्रहण उस तारीख से किया जाएगा, जो सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाए।

(3) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के ऐसे प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिस पर कर का संदाय, ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता द्वारा विपरीत प्रभार के आधार पर किया जाएगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा व्यक्ति है जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में कर के संदाय का दायी है।

[4] सरकार परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के एक वर्ग को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जो किसी अरजिस्ट्रीकृत पूर्तिकर्ता से प्राप्त माल या सेवाओं या दोनों के विनिर्दिष्ट प्रवर्गों की पूर्ति के सम्बन्ध में ऐसे माल या सेवा या दोनों के प्राप्तिकर्ता के रूप प्रतिलोम प्रभार के आधार पर कर का संदाय करेंगे तथा इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को लागू होंगे मानो वह माल या सेवा या दोनों की ऐसी पूर्ति के सम्बन्ध में कर का संदाय करने के लिए दायी व्यक्ति है।³³

31. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों, कोष्ठकों और अंकों "उपधारा (1) और उपधारा (2)" के स्थान पर प्रतिस्थापित। (1.7.2017 से प्रभावी)

32. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

33. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा (4) इस प्रकार थी :

“(4) किसी ऐसे प्रदायकर्ता द्वारा, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को कराधेय माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में राज्य कर, ऐसे व्यक्ति द्वारा प्राप्तिकर्ता के रूप में विपरीत प्रभार के आधार पर संदत्त किया

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित

(5) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, सेवाओं के प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिसके राज्यान्तर्गत प्रदायों पर कर, इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक द्वारा संदत्त किया जाएगा, यदि सेवाओं का प्रदाय उसके माध्यम से किया जाता है, और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा व्यक्ति है जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में कर के संदाय का दायी है :

परंतु यदि कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक की भौतिक रूप से उपस्थिति नहीं है तो कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी प्रयोजन के लिए ऐसे इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई व्यक्ति कर संदाय करने का दायी होगा :

परंतु यह और कि कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक की भौतिक रूप से उपस्थिति नहीं है और उक्त राज्यक्षेत्र में उसका कोई प्रतिनिधि भी नहीं है, वहां ऐसा इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक, कर संदाय के प्रयोजन के लिए कराधेय राज्यक्षेत्र में किसी व्यक्ति को नियुक्त करेगा और ऐसा व्यक्ति कर संदाय करने का दायी होगा।

10. प्रशमन उद्ग्रहण—

(1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी तत्प्रतिकूल बात के होते हुए भी, किंतु धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसका पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में संकलित आवर्त पचास लाख रूपए से अधिक नहीं है, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, [धारा 9 की उपधारा (1) के अधीन उसके द्वारा संदेय कर के बदले ऐसी दर पर]³⁴, जो विहित की जाए, किंतु जो,—

(क) किसी विनिर्माता की दशा में, राज्य में आवर्त के एक प्रतिशत से अधिक नहीं होगी;

(ख) अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट प्रदाय करने में लगे व्यक्तियों की दशा में, राज्य में आवर्त के ढाई प्रतिशत से अधिक नहीं होगी; और

(ग) अन्य प्रदायकर्ताओं की दशा में, राज्य में आवर्त के आधे प्रतिशत से अधिक नहीं होगी,

संगणित रकम के संदाय का विकल्प चुन सकेगा :

परंतु सरकार, अधिसूचना द्वारा, पचास लाख रूपए की उक्त सीमा को [एक करोड़ पचास लाख रूपए]³⁵ से अनधिक की ऐसी सीमा तक बढ़ा सकेगी, जिसकी परिषद् द्वारा सिफारिश की जाए :

[परंतु यह और कि कोई व्यक्ति, जो खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन कर का संदाय करने का विकल्प लेता है, किसी राज्य में पूर्ववर्ती वित्त वर्ष में कारबार के दस प्रतिशत से अनधिक मूल्य की सेवा (अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में निर्दिष्ट से भिन्न) या पांच लाख रूपए, जो भी अधिक हो, की पूर्ति कर सकेगा।]³⁶

जाएगा और इस अधिनियम के सभी उपबंध ऐसे प्राप्तिकर्ता को इस प्रकार लागू होंगे, मानो वह ऐसा व्यक्ति है जो ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में कर के संदाय का दायी है।

34. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों "उसके द्वारा संदेय कर के स्थान पर, ऐसी दर पर" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

35. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द "एक करोड़ रूपए" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

36. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।



[स्पष्टीकरण – दूसरे परंतुक के प्रयोजनों के लिए, जहां तक प्रतिफल को ब्याज या बट्टे के रूप में प्रदशित किया जाता है, निक्षेपों, ऋणों या अग्रिमों को विस्तारित करके छूट प्राप्त सेवाओं की पूर्ति के मूल्य को, राज्य में आवर्त के मूल्य के अवधारण के लिए गणना में नहीं लिया जाएगा।]³⁷

(2) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उपधारा (1) के अधीन विकल्प चुनने का पात्र होगा, यदि, –

[(क) उपधारा (1) में यथा उपबंधित के सिवाय, वह सेवा की पूर्ति में नहीं लगा हुआ है;]³⁸

(ख) वह ऐसे किसी माल [या सेवाओ]³⁹ का प्रदाय करने में लगा हुआ है, जिस पर अधिनियम के अधीन कर उदग्राह्य नहीं है;

(ग) वह माल [या सेवाओ]⁴⁰ के किसी अंतरराज्यिक जावक प्रदाय करने में नहीं लगा है;

(घ) वह किसी ऐसे इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक के माध्यम से, जिससे धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर के संग्रहण की अपेक्षा है, किसी [***]⁴¹ [सेवाओ]⁴² का प्रदाय करने में नहीं लगा है;

(ङ) वह ऐसे माल का विनिर्माता नहीं है, जिसे सरकार द्वारा, परिषद् की सिफारिशों पर, [अधिसूचित किया जाए, और]⁴³

[(च) वह न तो कोई नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति है और न ही कोई अनिवासी कराधेय व्यक्ति है;]⁴⁴

परंतु जहां एक से अधिक रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का (आय कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी) स्थायी खाता संख्यांक एक ही है, वहां ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उपधारा (1) के अधीन तब तक स्कीम के लिए विकल्प का चुनाव करने का पात्र नहीं होगा जब तक ऐसे सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उस उपधारा के अधीन कर के संदाय के विकल्प का चुनाव नहीं करते हैं।

[(2क) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, किन्तु धारा 9 की उपधारा (3) और उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो उपधारा (1) और उपधारा (2) के अधीन कर के संदाय का विकल्प लेने के लिए पात्र नहीं है और जिसका पूर्व वित्तीय वर्ष में सकल आवर्त पचास लाख रुपए से अधिक नहीं है, उसके द्वारा धारा 9 की उपधारा (1) के अधीन संदेय कर के स्थान पर, विहित की जाने वाली दर पर, जो राज्य में उसकी आवर्त के तीन प्रतिशत से अधिक नहीं होगी, संगणित कर की रकम का निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए संदाय करने का विकल्प ले सकेगा, यदि वह, –

37. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

38. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खण्ड (क) इस प्रकार था :

(क) वह अनुसूची 2 के पैरा 6 के खंड (ख) में निर्दिष्ट प्रदायों से भिन्न सेवाओं के प्रदाय में लगा हुआ है;

39. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा अंतःस्थापित।

40. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा अंतःस्थापित।

41. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द “माल या” विलोपित।

42. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा अंतःस्थापित।

43. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

44. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “अधिसूचित किया जाए” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।



(क) किसी ऐसे माल या सेवाओं की पूर्ति करने में नहीं लगा है, जो इस अधिनियम के अधीन कर लगाने योग्य नहीं है;

(ख) माल या सेवाओं की अंतरराज्यीय जावक पूर्ति करने में नहीं लगा है;

(ग) किसी ऐसे इलैक्ट्रॉनिक वाणिज्यिक प्रचालक के माध्यम से [***]⁴⁵ सेवाओं की ऐसी पूर्ति में नहीं लगा है, जिससे धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर का संग्रहण करना अपेक्षित है;

(घ) ऐसे माल का विनिर्माता या ऐसी सेवाओं का पूर्तिकार नहीं है, जो सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाएं; और

(ङ) न तो कोई नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति है और न ही कोई अनिवासी कराधेय व्यक्ति है : परंतु जहां एक से अधिक रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का आयकर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी स्थायी खाता संख्यांक एक ही है, वहां ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस उपधारा के अधीन तब तक स्कीम के लिए विकल्प का चुनाव करने का पात्र नहीं होगा, जब तक ऐसे सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस उपधारा के अधीन कर का संदाय करने के विकल्प का चुनाव नहीं करते हैं।⁴⁶

(3) [यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2क)]⁴⁷ के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपयोग किया गया विकल्प उस दिन से, जिसको वित्तीय वर्ष के दौरान उसका संकलित आवर्त [यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2क)]⁴⁸ के अधीन विनिर्दिष्ट सीमा से अधिक हो जाता है, व्यपगत हो जाएगा।

(4) कोई ऐसा कराधेय व्यक्ति, जिसको [यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2क)]⁴⁹ के उपबंध लागू होते हैं, उसके द्वारा किए गए प्रदायों पर प्राप्तकर्ता से किसी कर का संग्रहण नहीं करेगा और न ही वह किसी इनपुट कर प्रत्यय का हकदार होगा।

(5) यदि उचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि किसी कराधेय व्यक्ति ने पात्र न होते हुए भी, [यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2क)]⁵⁰ के अधीन कर संदत्त कर दिया है तो ऐसा व्यक्ति, किसी ऐसे कर के अतिरिक्त, जो इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध के अधीन उसके द्वारा संदेय हो, शास्ति का दायी होगा और धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]⁵¹ के उपबंध यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित कर और शास्ति के अवधारण के लिए लागू होंगे।

[“स्पष्टीकरण 1— इस धारा के अधीन किसी व्यक्ति की कर संदाय करने की पात्रता का अवधारण करने के लिए इसके संकलित आवर्त की संगणना करने के प्रयोजनों के लिए, “संकलित आवर्त” पद के अंतर्गत किसी वित्तीय वर्ष के 1 अप्रैल से उस तारीख तक की पूर्तियां सम्मिलित होंगी, जिसको वह इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का दायी बन जाता है, किन्तु जहां तक प्रतिफल को ब्याज या बट्टे के

45. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द “माल या” विलोपित।

46. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “अधिसूचित किया जाए” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।

47. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “उपधारा (1)” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।

48. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “उपधारा (1)” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।

49. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “उपधारा (1)” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।

50. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा “उपधारा (1)” के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया।

51. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



रूप में प्रदर्शित किया जाता है, निक्षेपों, ऋणों या अग्रिमों को विस्तारित करके छूट प्राप्त सेवाओं की पूर्ति का मूल्य सम्मिलित नहीं होगा।

स्पष्टीकरण 2 – इस धारा के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा संदेय कर का अवधारण करने के प्रयोजनों के लिए, “राज्य में आवर्त” में निम्नलिखित पूर्तियों का मूल्य सम्मिलित नहीं होगा, अर्थात् :-

(i) किसी वित्तीय वर्ष के 1 अप्रैल से उस तारीख तक की पूर्तियां, जिसको वह इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का दायी बन जाता है; और

(ii) जहां तक प्रतिफल को ब्याज या बट्टे के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, निक्षेपों, ऋणों या अग्रिमों को विस्तारित करके छूट प्राप्त सेवाओं की पूर्ति।⁵²

11. कर से छूट देने की शक्ति—

(1) जहां सरकार का यह समाधान हो जाता है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है, वहां वह, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, साधारणतया, या तो पूर्ण रूप से या ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो उसमें विनिर्दिष्ट की जाएं, उस तारीख से, जो ऐसी अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाए, किसी विनिर्दिष्ट विवरण के माल या सेवाओं या दोनों को उस पर उद्ग्रहणीय संपूर्ण कर से या उसके किसी भाग से छूट दे सकेगी।

(2) जहां सरकार का यह समाधान हो जाता है कि लोक हित में ऐसा करना आवश्यक है, वहां वह, परिषद् की सिफारिशों पर, प्रत्येक मामले में विशेष आदेश द्वारा, ऐसे आदेश में कथित अपवादिक प्रकृति की परिस्थितियों के अधीन ऐसे किसी माल या सेवाओं या दोनों को, जिन पर कर उद्ग्रहणीय है, कर के संदाय से छूट दे सकेगी।

(3) सरकार, यदि वह उपधारा (1) के अधीन जारी किसी अधिसूचना की या उपधारा (2) के अधीन जारी आदेश की परिधि या प्रयोज्यता को स्पष्ट करने के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक या समीचीन समझती है तो, उपधारा (1) के अधीन अधिसूचना या उपधारा (2) के अधीन आदेश जारी होने के एक वर्ष के भीतर किसी समय अधिसूचना द्वारा, यथास्थिति, ऐसी अधिसूचना या ऐसे आदेश में स्पष्टीकरण अंतःस्थापित कर सकेगी और ऐसे प्रत्येक स्पष्टीकरण का वही प्रभाव होगा मानों वह, सदैव, यथास्थिति, ऐसी पहली अधिसूचना या आदेश का भाग था।

(4) केन्द्रीय सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर केन्द्रीय माल और सेवाकर अधिनियम की धारा 11 की उपधारा (1) के अधीन जारी किसी अधिसूचना या उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन जारी किसी आदेश को यथास्थिति इस अधिनियम के अधीन जारी अधिसूचना या आदेश समझा जाएगा।

स्पष्टीकरण – इस धारा के प्रयोजनों के लिए, जहां किसी माल या सेवा या दोनों के संबंध में, उस पर उद्ग्रहणीय संपूर्ण कर से या उसके किसी भाग से पूर्ण रूप से छूट दी गई है, वहां ऐसे माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय पर प्रभावी दर से अधिक कर का संग्रहण नहीं करेगा।

[11क. साधारण पद्धति के परिणामस्वरूप उद्ग्रहीत नहीं किए गए या कम उद्ग्रहीत किए गए माल और सेवा कर की वसूली न करने की शक्ति—

(1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, यदि सरकार का यह समाधान हो जाता है कि, —

(क) माल या सेवाओं या दोनों की किसी पूर्ति पर राज्य कर के उद्ग्रहण (उसके गैर उद्ग्रहण सहित) के संबंध में कोई पद्धति साधारणतया प्रचलन में थी या है; और

(ख) ऐसी पूर्तियां, जो निम्नलिखित के लिए दायी थीं या हैं—

⁵². बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



- (i) उन मामलों में, जहां उक्त पद्धति के अनुसार, राज्य कर उद्ग्रहीत नहीं किया गया था या उद्ग्रहीत नहीं किया जा रहा है, राज्य कर; या
- (ii) राज्य कर की ऐसी रकम, जिसे उक्त पद्धति के अनुसार उद्ग्रहीत किया जा रहा था या किया जा रहा है, से उच्चतर रकम है,

तो सरकार, परिपद की सिफारिश पर, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा यह निदेश दे सकेगी कि यथास्थिति, ऐसी पूर्तियों पर संदेय संपूर्ण राज्य कर या ऐसी पूर्तियों पर संदेय राज्य कर के आधिक्य में राज्य कर, यदि उक्त पद्धति नहीं होती तो, उन पूर्तियों के संबंध में संदत्त किया जाना अपेक्षित नहीं होगा, जिन पर राज्य कर, उक्त पद्धति के अनुसार, उद्ग्रहीत नहीं किया जा रहा था या उद्ग्रहीत नहीं किया जा रहा है या कम उद्ग्रहीत किया जा रहा था या कम उद्ग्रहीत किया जा रहा है ॥⁵³

53. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 4

प्रदाय का समय और मूल्य

12. माल के प्रदाय का समय—

(1) माल पर कर के संदाय का दायित्व, इस धारा के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित प्रदाय के समय उद्भूत होगा।

(2) माल के प्रदाय का समय निम्नलिखित तारीखों में से पूर्वतर होगा, अर्थात् :—

(क) बीजक जारी किए जाने की तारीख या धारा 31 [***]⁵⁴ के अधीन प्रदायकर्ता द्वारा ऐसी अंतिम तारीख, जिसको उससे प्रदाय की बाबत बीजक जारी करने की अपेक्षा है; या

(ख) वह तारीख, जिसको प्रदायकर्ता प्रदाय की बाबत संदाय प्राप्त करता है :

परंतु जहां कराधेय माल का प्रदायकर्ता, कर बीजक में उपदर्शित रकम से एक हजार रूपए अधिक तक की कोई राशि प्राप्त करता है, वहां प्रदाय का समय, ऐसी आधिक्य रकम के विस्तार तक, उक्त प्रदायकर्ता के विकल्प पर, ऐसी आधिक्य रकम के संबंध में बीजक जारी किए जाने की तारीख होगा।

स्पष्टीकरण 1—खंड (क) और खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए, “प्रदाय” को उस विस्तार तक किया गया समझा जाएगा, जहां तक वह, यथास्थिति, बीजक या संदाय के अंतर्गत आता है।

स्पष्टीकरण 2—खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए, ऐसी तारीख, जिसको प्रदायकर्ता संदाय प्राप्त करता है, वह तारीख होगी, जिसको उसकी लेखा-पुस्तकों में संदाय की प्रविष्टि की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो।

(3) ऐसे प्रदायों की दशा में, जिनके संबंध में, विपरीत प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है या कर संदेय है, प्रदाय का समय निम्नलिखित तारीखों में से पूर्वतर होगा, अर्थात् :—

(क) माल प्राप्ति की तारीख; या

(ख) संदाय की तारीख, जो प्राप्तिकर्ता की लेखा — पुस्तकों में प्रविष्टि है या वह तारीख, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय का विकलन किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो; या

(ग) प्रदायकर्ता द्वारा बीजक या उसके बजाए कोई अन्य दस्तावेज, चाहे वह जिस नाम से ज्ञात हो, जारी किए जाने की तारीख से तीस दिन के ठीक पश्चात्तर्ती तारीख :

परंतु जहां खंड (क), खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन प्रदाय के समय का अवधारण संभव नहीं है, वहां प्रदाय का समय प्रदाय के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख होगी।

(4) [***]⁵⁵

(5) जहां उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन प्रदाय के समय का अवधारण करना संभव नहीं है, वहां प्रदाय का समय, —

54. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द कोष्ठक और अंक “की उपधारा (1)” निरसित (1.2.2019 से प्रभावी)।

55. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नवत् थी :—

(4) किसी प्रदायकर्ता द्वारा वाऊचरों के प्रदाय की दशा में प्रदाय का समय, —

(क) वाऊचर जारी करने की तारीख होगा, यदि प्रदाय उस बिंदु पर पहचान योग्य है; या

(ख) अन्य सभी मामलों में, वाऊचर के मोचन की तारीख होगा।



(क) उस दशा में, जहां कोई आवधिक विवरणी फाइल की जानी है, वहां वह तारीख होगा, जिसको ऐसी विवरणी फाइल की जानी है; या

(ख) किसी अन्य दशा में, वह तारीख होगा, जिसको कर का संदाय किया जाता है।

(6) उस सीमा तक, जिस तक उसका संबंध किसी प्रतिफल के देर से संदाय के लिए ब्याज, विलंब फीस या शास्ति को प्रदाय के मूल्य में जोड़े जाने का है, प्रदाय का समय वह तारीख होगा, जिसको प्रदायकर्ता ऐसा अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करता है।

13. सेवाओं के प्रदाय का समय—

(1) सेवाओं पर कर के संदाय का दायित्व, इस धारा के उपबंधों के अनुसार यथा अवधारित प्रदाय के समय उदभूत होगा।

(2) सेवाओं के प्रदाय का समय निम्नलिखित तारीखों में से पूर्वतर होगा, अर्थात् :-

(क) प्रदायकर्ता द्वारा बीजक जारी किए जाने की तारीख, यदि बीजक धारा 31 [***]56 के अधीन विहित अवधि के भीतर जारी किया जाता है या संदाय प्राप्त करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो; या

(ख) सेवा उपलब्ध कराने की तारीख, यदि धारा 31 [***]57 के अधीन विहित अवधि के भीतर बीजक जारी नहीं किया जाता है या संदाय प्राप्त करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो; या

(ग) वह तारीख, जिसको प्राप्तकर्ता अपनी लेखा-पुस्तकों में सेवाओं की प्राप्ति दर्शित करता है, उस मामले में, जहां खंड (क) या खंड (ख) के उपबंध लागू नहीं होते हैं :

परंतु जहां कराधेय सेवा का प्रदायकर्ता, कर बीजक में उपदर्शित रकम से एक हजार रूपए अधिक तक की कोई राशि प्राप्त करता है, वहां प्रदाय का समय, ऐसी आधिक्य रकम के विस्तार तक, उक्त प्रदायकर्ता के विकल्प पर, ऐसी आधिक्य रकम के संबंध में बीजक जारी करने की तारीख होगा।

स्पष्टीकरण—खंड (क) और खंड (ख) के प्रयोजनों के लिए, —

(i) प्रदाय को उस सीमा तक किया गया समझा जाएगा, जिस तक वह, यथास्थिति, बीजक या संदाय के अंतर्गत आता है;

(ii) “संदाय प्राप्त करने की तारीख” वह तारीख होगी, जिसको संदाय की प्रविष्टि प्रदायकर्ता की लेखा-पुस्तकों में की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो।

(3) ऐसे प्रदायों की दशा में, जिनके संबंध में, विपरीत प्रभार के आधार पर कर का संदाय किया जाता है या कर संदेय है, प्रदाय का समय निम्नलिखित तारीखों में से पूर्वतर होगा, अर्थात् :-

(क) संदाय की तारीख, जो प्राप्तकर्ता की लेखा - पुस्तकों में प्रविष्ट है या वह तारीख, जिसको उसके बैंक खाते से संदाय का विकलन किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो; या

(ख) [उन मामलों में, जहां बीजक पूर्तिकार द्वारा जारी किया जाना अपेक्षित है, पूर्तिकार द्वारा बीजक या उसके बजाए]58 कोई अन्य दस्तावेज, चाहे जिस नाम से ज्ञात हो, जारी किए जाने की तारीख से साठ दिन के ठीक पश्चात्तर्ती तारीख :

56. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “की उपधारा (2)” निरसित।

57. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “की उपधारा (2)” निरसित।

58. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द “प्रदायकर्ता द्वारा बीजक या उसके बजाए” प्रतिस्थापित।



[(ग) उन मामलों में, जहां बीजक, पूर्तिकार द्वारा जारी किया जाना है, वहां प्राप्तकर्ता द्वारा बीजक जारी किए जाने की तारीख :]⁵⁹

परंतु जहां खंड (क) या खंड (ख) [या खंड (ग)]⁶⁰ के अधीन प्रदाय के समय का अवधारण संभव नहीं है, वहां प्रदाय का समय, प्रदाय के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख होगी :

परंतु यह और कि सहयुक्त उद्यमों द्वारा प्रदाय की दशा में, जहां सेवा का प्रदायकर्ता भारत से बाहर स्थित है, वहां प्रदाय का समय, प्रदाय के प्राप्तिकर्ता की लेखा-पुस्तकों में प्रविष्टि की तारीख या संदाय की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा।

(4) [***]⁶¹

(5) जहां उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन प्रदाय के समय का अवधारण करना संभव नहीं है, वहां प्रदाय का समय, —

(क) उस दशा में, जहां कोई आवधिक विवरणी फाइल की जानी है, वहां वह तारीख होगा, जिसको ऐसी विवरणी फाइल की जानी है; या

(ख) किसी अन्य दशा में, वह तारीख होगा, जिसको कर का संदाय किया जाता है।

(6) उस सीमा तक, जिस तक उसका संबंध किसी प्रतिफल के देर से संदाय के लिए ब्याज, विलंब फीस या शास्ति को प्रदाय के मूल्य में जोड़े जाने का है, प्रदाय का समय वह तारीख होगा, जिसको प्रदायकर्ता ऐसा अतिरिक्त मूल्य प्राप्त करता है।

14. माल या सेवाओं के प्रदाय के संबंध में कर की दर में परिवर्तन—

धारा 12 या धारा 13 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में कर की दर में कोई परिवर्तन होता है, वहां प्रदाय के समय का अवधारण निम्नलिखित रीति से किया जाएगा, अर्थात् :—

(क) यदि कर की दर में परिवर्तन से पूर्व माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय किया गया है, उस दशा में,—

(i) जहां उसके लिए बीजक जारी किया गया है और संदाय भी कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, वहां प्रदाय का समय संदाय प्राप्ति की तारीख या बीजक जारी करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा;

(ii) जहां बीजक कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व जारी कर दिया गया है, किंतु संदाय कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, वहां प्रदाय का समय बीजक जारी करने की तारीख होगा; या

59. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

60. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

61. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नवत् थी :—

(4) किसी प्रदायकर्ता द्वारा वाऊचरों के प्रदाय की दशा में प्रदाय का समय,—

(क) वाऊचर जारी करने की तारीख होगा, यदि प्रदाय उस बिंदु पर पहचान योग्य है; या

(ख) अन्य सभी मामलों में, वाऊचर के मोचन की तारीख होगा।



(iii) जहां संदाय कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व प्राप्त हो गया है, किंतु उसके लिए बीजक कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् जारी किया जाता है, वहां प्रदाय का समय संदाय की प्राप्ति की तारीख होगा; या

(ख) कर की दर में परिवर्तन के पश्चात् माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय किए जाने की दशा में,—

(i) जहां संदाय, कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् प्राप्त होता है, किंतु बीजक कर की दर में परिवर्तन के पहले जारी कर दिया गया है, वहां प्रदाय का समय संदाय प्राप्ति की तारीख होगा;

(ii) जहां कर की दर में परिवर्तन होने से पूर्व बीजक जारी कर दिया गया है और संदाय भी प्राप्त हो जाता है, वहां प्रदाय का समय संदाय प्राप्ति की तारीख या बीजक जारी करने की तारीख, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, होगा; या

(iii) जहां कर की दर में परिवर्तन होने के पश्चात् बीजक जारी किया गया है, किंतु संदाय, कर की दर में परिवर्तन होने के पूर्व प्राप्त हो जाता है, वहां प्रदाय का समय, बीजक जारी करने की तारीख होगा :

परंतु संदाय प्राप्त होने की तारीख, बैंक खाते में जमा करने की तारीख होगी यदि बैंक खाते में ऐसी जमा कर की दर में परिवर्तन की तारीख से चार कार्य दिवस के पश्चात् की जाती है।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, “संदाय के प्राप्त होने की तारीख” वह तारीख होगी, जिसको प्रदायकर्ता की लेखा - पुस्तकों में संदाय की प्रविष्टि की जाती है या वह तारीख होगी, जिसको उसके बैंक खाते में संदाय जमा किया जाता है, इनमें से जो भी पूर्वतर हो।

15. कराधेय प्रदाय का मूल्य—

(1) जहां प्रदायकर्ता या प्रदाय का प्राप्तिकर्ता संबंधित नहीं है और प्रदाय के लिए एक मात्र आधार उसकी कीमत है, वहां माल या सेवाओं या दोनों के किसी प्रदाय का मूल्य ऐसा संव्यवहार मूल्य होगा, जो माल या सेवाओं या दोनों के उक्त प्रदाय के लिए वास्तविक रूप से संदत्त किया जाता है या संदेय है।

(2) प्रदाय के मूल्य में निम्नलिखित सम्मिलित होगा, —

(क) इस अधिनियम, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम से भिन्न तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उदगृहीत कोई कर, शुल्क, उपकर, फीस और प्रभार, यदि प्रदायकर्ता द्वारा पृथक रूप में प्रभारित किया गया है;

(ख) कोई ऐसी रकम, जिसका प्रदायकर्ता, ऐसे प्रदाय के संबंध में संदाय करने के लिए दायी है, किंतु जो प्रदाय के प्राप्तिकर्ता द्वारा उपगत की गई है और उसे माल या सेवाओं या दोनों के लिए वास्तविक रूप से संदत्त या संदेय कीमत में सम्मिलित नहीं किया गया है;

(ग) किसी प्रदाय के प्राप्तिकर्ता से प्रदायकर्ता द्वारा प्रभारित आनुषंगिक व्यय, जिसके अंतर्गत कमीशन और पैक करना भी है, और माल या सेवाओं के प्रदाय के समय या उसके पूर्व माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में प्रदायकर्ता द्वारा की गई किसी कृत्य के लिए प्रभारित कोई रकम;

(घ) किसी प्रदाय के लिए किसी प्रतिफल के विलंबित संदाय के लिए ब्याज या विलंब फीस या शास्ति; और

(ङ) केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सहायिकियों को अपवर्जित करते हुए कीमत से प्रत्यक्षतः जुड़ी हुई सहायिकियां।

स्पष्टीकरण— इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए, सहायिकी की रकम को सहायिकी प्राप्त करने वाले प्रदायकर्ता के, प्रदाय के मूल्य में सम्मिलित किया जाएगा।

(3) प्रदाय के मूल्य में कोई ऐसी छूट सम्मिलित नहीं होगी, जो, —



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



(क) प्रदाय के पूर्व या प्रदाय के समय दी जाती है, यदि ऐसी छूट को ऐसे प्रदाय के संबंध में जारी बीजक में सम्यक् रूप से अभिलिखित किया गया है; और

(ख) प्रदाय के प्रभावी होने के पश्चात् दी जाती है, यदि, —

(i) ऐसी छूट, ऐसे प्रदाय के समय या उसके पूर्व किए गए किसी करार के निबंधनानुसार स्थापित की जाती है और विनिर्दिष्ट रूप से सुसंगत बीजकों से जुड़ी हुई है; और

(ii) प्रदायकर्ता द्वारा जारी ऐसे दस्तावेज के आधार पर छूट के मद में मानी गई इनपुट कर प्रत्यय, जिसकी राशि को प्राप्तकर्ता द्वारा अधोमुख किया गया है।

(4) जहां उपधारा (1) के अधीन माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के मूल्य का अवधारण नहीं किया जा सकता है, वहां उसका अवधारण ऐसी रीति से किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(5) उपधारा (1) या उपधारा (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, ऐसे प्रदायों के, जिन्हें सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए, मूल्य का अवधारण ऐसी रीति से किया जाएगा, जो विहित की जाए।

स्पष्टीकरण—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, —

(क) ऐसे व्यक्तियों को “सम्बद्ध व्यक्ति” समझा जाएगा, यदि, —

(i) ऐसे व्यक्ति एक दूसरे के कारबार के अधिकारी या निदेशक हैं;

(ii) ऐसे व्यक्ति कारबार में विधिक रूप से मान्यताप्राप्त भागीदार हैं;

(iii) ऐसे व्यक्ति नियोजक और कर्मचारी हैं;

(iv) कोई व्यक्ति, जिसका प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से दोनों व्यक्तियों के परादेय मतदान स्टाक या शेयरों के पच्चीस प्रतिशत या अधिक पर स्वामित्व या नियंत्रण रखता या धारण करता है;

(v) उनमें से एक प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से अन्य पर नियंत्रण रखता है;

(vi) वे दोनों प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य व्यक्ति के नियंत्रण में हैं;

(vii) वे साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य व्यक्ति पर नियंत्रण रखते हैं; या

(viii) वे एक ही कुटुंब के सदस्य हैं;

(ख) “व्यक्ति” पद के अंतर्गत विधिक व्यक्ति भी है;

(ग) कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के कारबार से इस प्रकार सहबद्ध हैं, जिसमें वह दूसरे व्यक्ति का एक मात्र अभिकर्ता या एक मात्र वितरक या एक मात्र रियायतग्राही, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हो, है, संबद्ध व्यक्ति समझे जाएंगे।



अध्याय 5

इनपुट कर प्रत्यय

16. इनपुट कर प्रत्यय लेने के लिए पात्रता और शर्तें—

(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी निबंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, और धारा 49 में विनिर्दिष्ट रीति से उसको किए गए ऐसे माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय पर प्रभारित इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा, जिसका उसके कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने में उपयोग किया जाता है या उपयोग किया जाना आशयित है और उक्त रकम ऐसे व्यक्ति के इलैक्ट्रॉनिक जमा खाते में जमा की जाएगी।

(2) उक्त धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उसको किए गए किसी माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में कोई इनपुट कर का प्रत्यय प्राप्त करने का तब तक हकदार नहीं होगा, जब तक,—

(क) उसके कब्जे में इस अधिनियम के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत प्रदायकर्ता द्वारा जारी कोई कर बीजक या नामे नोट (डेबिट नोट) या कोई अन्य ऐसा कर संदाय दस्तावेज, जो विहित किया जाए, न हो;

[(कक) खंड (क) में निर्दिष्ट बीजक या नामे नोट के ब्यौरे पूर्तिकार द्वारा बर्हिगामी पूर्ति के विवरण में प्रस्तुत किए गए हैं और ऐसे ब्यौरे, धारा 37 के अधीन विनिर्दिष्ट रीति में ऐसे बीजक या नामे नोट के प्राप्तिकर्ता को संसूचित किए गए हैं।]⁶²

(ख) वह माल या सेवाओं या दोनों प्राप्त नहीं कर लेता है।

["स्पष्टीकरण—इस खंड के प्रयोजनों के लिए यह समझा जाएगा कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने, यथास्थिति, माल या सेवा को प्राप्त किया है—

(i) जहां माल का परिदान किसी प्रदायकर्ता द्वारा किसी प्राप्तिकर्ता को या किसी अन्य व्यक्ति को, चाहे वह अभिकर्ता के रूप में या अन्यथा कार्य कर रहा हो, माल के संचलन के पूर्व या दौरान ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निदेश पर माल के मालिकाना दस्तावेजों के अंतरण के माध्यम से या अन्यथा किया गया है,;

(ii) जहां सेवा का उपबंध प्रदायकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति को ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निदेश पर और उसके मद्दे किया जाता है।]⁶³

[(खक) धारा 38 के अधीन ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को संसूचित उक्त आपूर्ति के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरे निर्बंधित नहीं किए गए हों।]⁶⁴

62. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा अंतःस्थापित।

63. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व स्पष्टीकरण इस प्रकार था :

“ स्पष्टीकरण— इस खंड के प्रयोजन के लिए यह समझा जाएगा कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने माल प्राप्त कर लिया है, जहां प्रदायकर्ता द्वारा, किसी प्राप्तिकर्ता को या ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निदेश पर किसी अन्य व्यक्ति को, चाहे वह अभिकर्ता के रूप में कार्य कर रहा हो या नहीं, माल के संचलन पूर्व या उसके दौरान माल पर हक के दस्तावेजों के अंतरण द्वारा या अन्यथा, माल परिदत्त कर दिया जाता है;”

64. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



(ग) [धारा 41 [***]65]66 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, ऐसे प्रदाय के संबंध में प्रभारित कर का, नकद में या उक्त प्रदाय के संबंध में, अनुज्ञेय इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग करके, वास्तविक रूप से सरकार को संदाय न कर दिया जाए; और

(घ) वह धारा 39 के अधीन विवरणी न दे दे :

परंतु जहां माल, बीजक के विरुद्ध, लाट या किस्तों में प्राप्त होता है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अंतिम लाट या किस्त की प्राप्ति पर प्रत्यय लेने का हकदार होगा :

परंतु यह और कि जहां कोई प्राप्तिकर्ता, ऐसे प्रदायों से भिन्न, जिन पर विपरीत प्रभार के आधार पर कर संदेय है, माल या सेवाओं या दोनों के प्रदायकर्ता को प्रदाय के मूल्य के साथ उस पर संदेय कर के मद्दे रकम का, प्रदायकर्ता द्वारा बीजक जारी करने की तारीख से एक सौ अस्सी दिन की अवधि के पश्चात् भी संदाय करने में असफल रहता है, वहां प्राप्तिकर्ता द्वारा उपभोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय के बराबर रकम को, [धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज के साथ, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, उसके द्वारा संदत्त किया जाएगा]67

परंतु यह भी कि प्राप्तिकर्ता माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय मूल्य के साथ उस पर संदेय कर के मद्दे रकम का उसके द्वारा किए गए संदाय [उसके द्वारा आपूर्तिकर्ता को किए गए संदाय]68 पर इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग करने का हकदार होगा।

(3) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने आय कर अधिनियम, 1961⁶⁹ के उपबंधों के अधीन पूंजी माल और संयंत्र तथा मशीनरी की लागत के कर संघटक पर अवक्षयण का दावा किया है, वहां उक्त कर संघटक पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

(4) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उस वित्तीय वर्ष के, जिससे ऐसा बीजक या ऐसे नामे नोट [***]70 संबंधित है, अंत के अगले [30 नवंबर]71 के पश्चात् माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के लिए किसी बीजक या नामे नोट के संबंध में या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने के लिए, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार नहीं होगा।

[(5) उपधारा (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, वित्तीय वर्ष 2017-18, 2018-19, 2019-20 और 2020-21 से संबंधित माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के लिए किसी बीजक या नामे नोट के संबंध में, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, धारा 39 के अधीन किसी विवरणी में, जिसे 30 नवंबर, 2021 तक फाइल किया गया है, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा।

65. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा "या धारा 43क" शब्द, अंक और अक्षर विलोपित।

66. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों "धारा 41" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

67. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द " उस पर के ब्याज के साथ, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, उसके आउटपुट कर दायित्व में जोड़ दिया जाएगा" प्रतिस्थापित।

68. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

69. 1961 का 43

70. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "से संबंधित बीजक" विलोपित।

71. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी के दिए जाने की अंतिम तारीख" प्रतिस्थापित।



(6) जहां किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण, धारा 29 के अधीन रद्द किया जाता है और तत्पश्चात् या तो धारा 30 के अधीन किसी आदेश द्वारा या अपील प्राधिकारी अथवा अपील अधिकरण या न्यायालय द्वारा किए गए किसी आदेश के अनुसरण में, रजिस्ट्रीकरण का रद्दीकरण प्रतिसंहत किया जाता है और जहां बीजक या नामे नोट के संबंध में, इनपुट कर प्रत्यय का लाभ रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण के आदेश की तारीख को उपधारा (4) के अधीन निर्बंधित नहीं था, वहां उक्त व्यक्ति, धारा 39 के अधीन ऐसी विवरणी में माल या सेवाओं या दोनों की आपूर्ति के लिए ऐसे बीजक या नामे नोट के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा,—

(i) उस वित्तीय वर्ष के पश्चात् आने वाले 30 नवंबर, जिससे ऐसा बीजक या नामे नोट संबंधित है या सुसंगत वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने तक, इनमें जो भी पूर्वतर हो, दाखिल की जाती है; या

(ii) यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण की तारीख से या रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण की प्रभावी तारीख से उस अवधि के लिए, रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण के प्रतिसंहरण के आदेश की तारीख तक, जहां ऐसी विवरणी रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण के प्रतिसंहरण के आदेश की तारीख से तीस दिन के भीतर दाखिल की जाती है ;

इनमें जो भी पश्चातवर्ती हो।⁷²

17. प्रत्यय का प्रभाजन और निरुद्ध प्रत्यय—

(1) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों का उपयोग भागतः किसी कारबार के प्रयोजन के लिए किया जाता है और भागतः अन्य प्रयोजन के लिए किया जाता है, वहां प्रत्यय की रकम उसके कारबार के प्रयोजनों के लिए मानी गई सीमा तक निर्बंधित होगी।

(2) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा, माल या सेवाओं या दोनों का उपयोग भागतः इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन शून्य द प्रदायों सहित कराधेय प्रदायों को पूर्ण करने के लिए और भागतः उक्त अधिनियमों के अधीन छूट प्राप्त प्रदायों को पूर्ण करने के लिए किया जाता है, वहां प्रत्यय की उतनी रकम को, जिसे शून्य दर प्रदायों सहित उक्त कराधेय प्रदायों के लिए मानी गई सीमा तक निर्बंधित होगी।

(3) उपधारा (2) के अधीन छूट प्राप्त प्रदाय का मूल्य वह होगा, जो विहित किया जाए, और उसमें ऐसे प्रदाय, जिस पर प्राप्तिकर्ता विपरीत प्रभार के आधार पर कर संदाय का दायी है, प्रतिभूति संव्यवहारों, भूमि विक्रय और अनुसूची 2 के पैरा 5 के खंड (ख) के अधीन रहते हुए भवन का विक्रय सम्मिलित होगा।

[स्पष्टीकरण—स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए 'छूट प्राप्त प्रदाय का मूल्य' पद में

(i) अनुसूची 3 के पैरा 5 में विनिर्दिष्ट कार्यकलापों या संव्यवहारों का मूल्य ; और

(ii) अनुसूची 3 के पैरा 8 के खंड (क) के संबंध में ऐसे कार्यकलापों या संव्यवहारों का मूल्य, जो विहित किए जाए के सिवाय उस अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्यकलापों या संव्यवहारों का मूल्य सम्मिलित नहीं होगा।⁷³⁷⁴

(4) जहां कोई बैंकिंग कंपनी या कोई वित्तीय संस्थान, जिसके अंतर्गत ऐसी गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी भी है, जो निक्षेपों का प्रतिग्रहण करके, ऋणों या अग्रिम धन का विस्तार करके सेवाओं का प्रदाय करने में

⁷². बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित व दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।

⁷³. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "अनुसूची 3 के पैरा 5 में विनिर्दिष्ट के सिवाय उस अनुसूची में विनिर्दिष्ट कार्यकलापों या संव्यवहारों का मूल्य सम्मिलित नहीं होगा।" प्रतिस्थापित।

⁷⁴. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।



लगी हुई है, वहाँ उसे उपधारा (2) के उपबंधों का पालन करने का या हर माह उस मास के प्रत्ययों, पूंजी माल और इनपुट सेवाओं पर वरणीय इनपुट कर प्रत्यय के पचास प्रतिशत के बराबर रकम का उपभोग करने का विकल्प होगा और शेष व्यपगत हो जाएगा :

परंतु एक बार उपयोग किए गए विकल्प को वित्तीय वर्ष के शेष भाग के दौरान प्रत्याहृत नहीं किया जाएगा :

परंतु यह और कि पचास प्रतिशत का निर्बंधन एक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा समान स्थायी खाता संख्यांक वाले किसी अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को किए गए प्रदायों पर संदत्त कर को लागू नहीं होगा।

(5) धारा 16 की उपधारा (1) और धारा 18 की उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, निम्नलिखित के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध नहीं होगा, अर्थात् :-

["(क) तेरह से अनधिक (चालक सहित) बैठने की क्षमता रखने वाले व्यक्तियों के परिवहन के लिए मोटरयान, सिवाय तब जब उनका उपयोग निम्नलिखित कराधेय प्रदाय करने के लिए किया जाता है, अर्थात् :

(अ) ऐसे मोटरयान की और प्रदाय ; या

(आ) यात्रियों का परिवहन ; या

(इ) ऐसे मोटरयान को चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना;

(कक) जलयान और वायुयान, सिवाय तब जब उनका उपयोग—

(i) निम्नलिखित कराधेय प्रदाय करने के लिए किया जाता है, अर्थात्:-

(अ) ऐसे जलयान और वायुयान का और प्रदाय ; या

(आ) यात्रियों का परिवहन ; या

(इ) ऐसे जलयान चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना ; या

(ई) ऐसे वायुयान चलाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना;

(ii) माल के परिवहन के लिए :

(कख) साधारण बीमा, मोटरयानों की सर्विसिंग, मरम्मत और अनुरक्षण की सेवाएं, जहां उनका संबंध खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या वायुयान से है :

परंतु ऐसी सेवा के लिए इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा—

(i) जहां खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या वायुयान का उपयोग उसमें विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है

(ii) जहां किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा प्राप्त किया जाता है, जो—

(I) ऐसे मोटरयान, जलयान या वायुयान के विनिर्माण में लगा हुआ है ; या

(II) उसके द्वारा बीमाकृत ऐसे मोटरयान, जलयान या वायुयान के संबंध में साधारण बीमा सेवाओं के प्रदाय में लगा हुआ है :

(ख) माल या सेवा या दोनों का निम्नलिखित का प्रदाय —

(i) खाद्य और सुपेय, आउटडोर कैटरिंग, सौंदर्य उपचार, स्वास्थ्य सेवाएं, कास्मेटिक और प्लास्टिक शल्यक्रिया, खंड (क) या खंड (कक) में निर्दिष्ट मोटरयान, जलयान या वायुयान को किराया अथवा भाड़ा पर लिया जाना, सिवाय तब जब उनका उपयोग उनमें विनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए किया जाता है, जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा :

परंतु ऐसे माल या सेवा या दोनों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा जब ऐसे माल या सेवा या दोनों की आवक प्रदाय का उपयोग किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उसी प्रवर्ग के माल



या सेवा या दोनों की जावक कराधेय प्रदाय के लिए या कराधेय समिश्र प्रदाय या मिश्रित प्रदाय के एक तत्व के रूप में किया जाता है ;

(ii) किसी क्लब, स्वास्थ्य और फिटनेट केन्द्र की सदस्यता ; और

(iii) छुट्टी या गृह यात्रा रियायत, जैसे छुट्टियों पर कर्मचारियों को विस्तारित यात्रा फायदे :

परंतु ऐसे माल या सेवा या दोनों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय उपलब्ध होगा, जहां किसी नियोक्ता के लिए अपने कर्मचारियों को तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उपबंध करना बाध्यकर हो।⁷⁵

(ग) कार्य संविदा सेवाएं, जब उनका प्रदाय स्थावर संपत्ति संयंत्र और मशीनरी से भिन्न के सन्निर्माण के लिए किया जाता है, वहां के सिवाय जहां वह कार्य संविदा सेवा के आगे के प्रदाय के लिए कोई आवक सेवा है ;

(घ) किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा अपने खाते में, किसी स्थावर संपत्ति के संयंत्र और मशीनरी से भिन्न सन्निर्माण के लिए प्राप्त किया गया माल या सेवाएं या दोनों, जिसके अंतर्गत ऐसा माल या सेवाओं या दोनों भी हैं, जिनका उपयोग कारबार के दौरान या उसे अग्रसर करने के लिए किया जाता है।

स्पष्टीकरण 1— खंड (ग) और खंड (घ) के प्रयोजनों के लिए, "सन्निर्माण" पद के अंतर्गत उक्त स्थावर संपत्ति, का पूंजीकरण के विस्तार तक, पुनर्निर्माण, नवीकरण, परिवर्धन या परिवर्तन या मरम्मत भी है;

[स्पष्टीकरण 2—खंड (घ) के प्रयोजनों के लिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि किसी न्यायालय, अधिकरण या किसी अन्य प्राधिकारी के किसी निर्णय, डिक्री या आदेश में अंतर्विष्ट तत्प्रतिकूल किसी बात के होते हुए भी, "संयंत्र या मशीनरी" के किसी प्रतिनिर्देश का अर्थ "संयंत्र और मशीनरी"

75. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खण्ड (क) और (ख) इस प्रकार था :

(क) मोटर यान और अन्य प्रवहरण, सिवाय तब के जब उनका उपयोग, —

(i) निम्नलिखित कराधेय प्रदायों को करने के लिए किया जाता है, अर्थात् :-

(अ) ऐसे यानों या प्रवहरणों के आगे के प्रदाय के लिए; या

(आ) यात्रियों के परिवहन के लिए; या

(इ) ऐसे यानों या प्रवहरणों के चालन उड़ान, नौपरिवहन का प्रशिक्षण देने के लिए;

(ii) माल के परिवहन के लिए;

(ख) माल या सेवाओं या दोनों के निम्नलिखित प्रदाय के लिए :-

(i) खाद्य और पेय पदार्थ, बाह्य खानपान, सौंदर्य उपचार, स्वास्थ्य सेवाएं, प्रसाधन और प्लास्टिक शल्य चिकित्सा, वहां के सिवाय, जहां किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के आवक प्रदाय का उपयोग वैसे ही प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के जावक कराधेय प्रदाय के लिए या कराधेय संयुक्त या मिश्रित प्रदाय के एक तत्व के रूप में किया जाता है;

(ii) किसी क्लब, स्वास्थ्य और फिटनेस केंद्र की सदस्यता ;

(iii) किराए की गाड़ी, जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा, वहां के सिवाय, जहां,—

(अ) सरकार ने ऐसी सेवाओं को अधिसूचित किया है, जिनका तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन किसी नियोजक के लिए उसके कर्मचारियों को उपलब्ध कराना बाध्यकर है; या

(आ) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों के ऐसे आवक प्रदाय का उपयोग उसी प्रवर्ग के माल या सेवाओं या दोनों का जावक कराधेय प्रदाय करने के लिए या कराधेय संयुक्त या मिश्रित प्रदाय के भागरूप किया जाता है; और

(iv) छुट्टी या गृह यात्रा रियायत जैसे प्रकाश पर कर्मचारियों के लिए विस्तारित यात्रा फायदे।

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



लगाया जाएगा तथा "संयंत्र और मशीनरी" के प्रतिनिर्देश के रूप में सदैव अर्थ लगाया गया समझा जाएगा।⁷⁶

(ङ) ऐसा माल या सेवाओं या दोनों, जिन पर धारा 10 के अधीन कर संदत्त कर दिया गया है ;

(च) किसी अनिवासी कराधेय व्यक्ति द्वारा, उसके द्वारा आयातित माल पर के सिवाय, प्राप्त माल या सेवाएं या दोनों ;

[(चक) कराधेय व्यक्ति द्वारा प्राप्त किए गए माल या सेवाओं या दोनों का, कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 135 में निर्दिष्ट निगम सामाजिक उत्तरदायित्व के अधीन उसकी बाध्यताओं से संबंधित कार्यकलापों के लिए उपयोग किया जाता है या उपयोग किए जाने के लिए आशयित हैं :]⁷⁷

(छ) व्यक्तिगत उपभोग के लिए प्रयुक्त माल या सेवाएं या दोनों ;

(ज) खोया हुआ, चोरी हुआ, नष्ट हुआ, अपलिखित हुआ या दान या निःशुल्क सैपल द्वारा व्ययनित माल ;

(झ) [वित्तीय वर्ष 2023-24 तक किसी वित्तीय वर्ष के संबंध में धारा 74]⁷⁸ संदत्त कोई कर।

(6) सरकार ऐसी रीति विहित कर सकेगी, जिसे उपधारा (1) और उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्रत्यय निर्धारित किया जा सकेगा।

स्पष्टीकरण – इस अध्याय और अध्याय 4 के प्रयोजनों के लिए, "संयंत्र और मशीनरी" पद से ऐसे साधित्र, उपस्कर और प्रतिष्ठापन या संरचनात्मक आलंब द्वारा भूमि पर स्थिर मशीनरी अभिप्रेत है, जिनका उपयोग माल या सेवाओं या दोनों का जावक प्रदाय करने के लिए किया जाता है और इसके अंतर्गत ऐसा प्रतिष्ठापन या संरचनात्मक आलंब भी हैं, किंतु इसमें निम्नलिखित अपवर्जित हैं,—

(i) भूमि, भवन या कोई अन्य सिविल सन्निर्माण ;

(ii) दूर – संचार टावर; और

(iii) कारखाना परिसर के बाहर बिछाई गई पाइप लाइनें।

18. विशेष परिस्थितियों में प्रत्यय की उपलब्धता—

(1) ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं,—

(क) कोई ऐसा व्यक्ति, जिसने इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी होने की तारीख से तीस दिन के भीतर आवेदन किया है, और उसे ऐसा रजिस्ट्रीकरण दे दिया गया है, उस तारीख से, जिससे वह इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर संदाय करने के लिए दायी हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को स्टाक में धारित निवेशों तथा स्टाक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ;

(ख) कोई व्यक्ति, जिसने धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त किया है, रजिस्ट्रीकरण अनुदत्त करने की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती दिन को स्टाक में धारित निवेशों और स्टाक में अंतर्विष्ट अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा ;

⁷⁶. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

⁷⁷. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

⁷⁸. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द और अंक "धारा 74, धारा 129 और धारा 130 के उपबंधों के अनुसार" प्रतिस्थापित।



(ग) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 10 के अधीन कर का संदाय करना बंद करता है, वहां वह उस तारीख से, जिससे वह धारा 9 के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को स्टाक में धारित निवेशों, स्टाक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा :

परंतु पूंजी माल पर प्रत्यय को ऐसे प्रतिशतता बिंदु तक कम कर दिया जाएगा, जो विहित किया जाए ;

(घ) जहां किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा माल या सेवाओं या दोनों का छूट प्राप्त प्रदाय कराधेय प्रदाय हो गया है, वहां ऐसा व्यक्ति उस तारीख से, जिसको ऐसा प्रदाय कराधेय हुआ है, ठीक पूर्ववर्ती दिन को ऐसे छूट प्राप्त प्रदाय के लिए अनन्य रूप से संबंधित स्टाक में धारित निवेशों और स्टाक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा :

परंतु पूंजी माल पर प्रत्यय को ऐसे प्रतिशतता के बिंदु तक कम कर दिया जाएगा, जो विहित किया जाए।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे प्रदाय से संबंधित कर बीजक जारी किए जाने की तारीख से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात् उसे प्रदाय किए गए माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में उपधारा (1) के अधीन इनपुट कर प्रत्यय प्राप्त करने का हकदार नहीं होगा।

(3) जहां किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के गठन में, दायित्व अंतरण के विशिष्ट उपबंधों के साथ, कारबार के विक्रय, विलयन, निर्विलयन, समामेलन, पट्टा या अंतरण के कारण कोई परिवर्तन होता है, वहां उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को ऐसे विक्रीत, विलीन, निर्विलीन, समामेलित, पट्टे पर दिए गए या अंतरित कारबार के उसके इलैक्ट्रानिक निवेश खाते में अनुपयोजित इनपुट कर प्रत्यय का अंतरण विहित रीति से अनुज्ञात होगा, जो ऐसी रीति में, जो विहित की जाए,

(4) जहां इनपुट कर प्रत्यय को उपभोग करने वाला कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने धारा 10 के अधीन कर का संदाय करने के विकल्प का उपयोग किया है या जहां उसके द्वारा प्रदाय किए गए माल या सेवाओं या दोनों पूर्ण रूप से छूट प्राप्त हो गए हैं, वहां वह इलैक्ट्रानिक निवेश खाते या इलैक्ट्रानिक नकद खाते में, विकलन द्वारा ऐसी रकम का संदाय करेगा, जो यथास्थिति, ऐसे विकल्प का प्रयोग करने या ऐसी छूट की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती तारीख को स्टाक में धारित निवेशों और स्टाक में धारित अर्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल पर, ऐसी प्रतिशतता बिंदु को, जो विहित किया जाए, कम करके, इनपुट कर प्रत्यय के बराबर है :

परंतु ऐसी रकम का संदाय करने के पश्चात् उसके इलैक्ट्रानिक प्रत्यय खाते में पड़ा हुआ इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष, यदि कोई हो, व्यपगत हो जाएगा।

(5) उपधारा (1) के अधीन प्रत्यय की रकम और उपधारा (4) के अधीन संदेय रकम की संगणना ऐसी रीति से की जाएगी, जो विहित की जाए।

(6) ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के प्रदाय की दशा में, जिस पर इनपुट कर प्रत्यय लिया गया है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, उक्त पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी पर लिए गए इनपुट कर प्रत्यय ऐसे प्रतिशतता बिंदु को घटाकर, जो विहित किया जाए, के बराबर रकम का या धारा 15 के अधीन ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के संव्यवहार मूल्य पर कर का, इनमें से जो भी अधिक हो, संदाय करेगा :

परंतु जहां स्क्रेप के रूप में रिफैक्टरी ईटें, सांचे और डाई, जिम्स और फिक्चरों का प्रदाय किया जाता है, वहां कराधेय व्यक्ति धारा 15 के अधीन अवधारित ऐसे माल के संव्यवहार मूल्य पर कर का संदाय कर सकेगा।



19. छुटपुट काम के लिए भेजे गए निवेशों और भेजे गए पूंजी माल के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का लिया जाना—

(1) प्रधान को, ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, छुटपुट काम के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए निवेशों पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात करेगा।

(2) धारा 16 की उपधारा (2) के खंड (ख) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्रधान निवेशों को पहले उसके कारबार के स्थान पर लाए बिना छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे भेजे जाने पर भी, निवेशों पर, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा।

(3) जहां प्रधान को, छुटपुट कार्य के लिए भेजे गए निवेश भेजे जाने के एक वर्ष के भीतर, छुटपुट कार्य पूरा होने के पश्चात् या अन्यथा वापस प्राप्त नहीं होता है या छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति के कारबार के स्थान से धारा 143 की उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) के अनुसार उसका प्रदाय नहीं किया जाता है, वहां यह समझा जाएगा कि प्रधान द्वारा छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को ऐसे निवेशों का प्रदाय उस दिन किया गया था, जब उक्त निवेश भेजे गए थे :

परंतु जहां किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे निवेश भेजे जाते हैं, वहां किसी एक वर्ष की अवधि की संगणना छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा निवेशों के प्राप्त करने की तारीख से की जाएगी।

(4) प्रधान को, ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए पूंजी माल पर इनपुट कर प्रत्यय अनुज्ञात करेगा।

(5) धारा 16 की उपधारा (2) के खंड (ख) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, प्रधान पूंजी माल को पहले उसके कारबार के स्थान पर लाए बिना छुटपुट कार्य के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे भेजे जाने पर भी, पूंजी माल पर, इनपुट कर प्रत्यय लेने का हकदार होगा।

(6) जहां प्रधान को छुटपुट कार्य के लिए भेजा गया पूंजी माल, भेजे जाने के तीन वर्ष की अवधि के भीतर वापस प्राप्त नहीं होता है, वहां यह समझा जाएगा कि प्रधान द्वारा छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को ऐसे पूंजी माल का प्रदाय उस दिन किया गया था जब उक्त पूंजी माल भेजा गया था :

परंतु जहां किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को सीधे पूंजी माल भेजा जाता है, वहां तीन वर्ष की अवधि की संगणना छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा पूंजी माल के प्राप्त करने की तारीख से की जाएगी।

(7) उपधारा (3) या उपधारा (6) में अंतर्विष्ट कोई बात छुटपुट कार्य करने के लिए किसी छुटपुट कार्य करने वाले व्यक्ति को भेजे गए सांचे और डाई, जिम्स और फिक्चरों और औजारों को लागू नहीं होगी।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए, “प्रधान” से धारा 143 में निर्दिष्ट व्यक्ति अभिप्रेत है।

20. इनपुट सेवा वितरक द्वारा प्रत्यय के वितरण की रीति—

(1) माल या सेवाओं या दोनों के पूर्तिकार का कोई कार्यालय, जो इनपुट सेवाओं की प्राप्ति के मद्दे कर बीजक प्राप्त करता है, जिसके अन्तर्गत [इस अधिनियम की धारा 9 या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 5 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन]⁷⁹ कर से दायी सेवाओं के संबंध में बीजक सम्मिलित हैं या धारा 25 में निर्दिष्ट सुभिन्न व्यक्तियों के निमित्त कर बीजक प्राप्त करता है, से धारा 24 के खंड (viii) के अधीन इनपुट सेवा वितरक के रूप में रजिस्ट्रीकृत होने की अपेक्षा होगी और वह ऐसे बीजकों के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का वितरण करेगा।

(2) इनपुट सेवा वितरक उसके द्वारा प्राप्त बीजकों पर प्रभारित राज्य कर या एकीकृत कर प्रत्यय का, जिसके अन्तर्गत [इस अधिनियम की धारा 9 या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा

⁷⁹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द एवं अंक 66 “धारा 9” प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01.04.2025 से प्रभावी।



5 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन⁸⁰ उसी राज्य में रजिस्ट्रीकृत सुभिन्न व्यक्ति द्वारा संदत्त कर उदग्रहण के अधीन सेवाओं के संबंध में राज्य या एकीकृत कर के प्रत्यय को उक्त इनपुट सेवा वितरक के रूप में ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर तथा ऐसे निर्बंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, वितरण करेगा।

(3) राज्य कर के प्रत्यय का राज्य कर या एकीकृत कर के रूप में और एकीकृत कर का एकीकृत कर या राज्य कर के रूप में एक ऐसा दस्तावेज जारी करके, जिसमें इनपुट कर प्रत्यय की रकम अंतर्विष्ट होगी, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, वितरण किया जाएगा।⁸¹

80. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द एवं अंक 66 "धारा 9" प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01.04.2025 से प्रभावी।

81. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 15 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 736 पटना : दिनांक : 06 अगस्त, 2024 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी :-

20. इनपुट सेवा वितरक द्वारा प्रत्यय के वितरण की रीति-

(1) इनपुट सेवा वितरक, ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, कोई ऐसा दस्तावेज जारी करके, जिसमें वितरण किए जाने वाले इनपुट कर प्रत्यय की रकम अंतर्विष्ट हो, राज्य कर के प्रत्यय का राज्य कर या एकीकृत कर के रूप में और एकीकृत कर का एकीकृत कर या राज्य कर के रूप में वितरण करेगा।

(2) इनपुट सेवा वितरक, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, प्रत्यय का वितरण कर सकेगा, अर्थात् :-

(क) प्रत्यय के प्राप्तिकर्ताओं को किसी दस्तावेज के लिए, जिसमें ऐसे ब्यौरे अंतर्विष्ट हों, जो विहित किए जाएं, प्रत्यय का वितरण किया जा सकता है ;

(ख) वितरण किए गए प्रत्यय की रकम, वितरण के लिए उपलब्ध प्रत्यय की रकम से अधिक नहीं होगी ;

(ग) किसी प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता को उसके संबंध में मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर प्रत्यय का वितरण केवल उस प्राप्तिकर्ता को ही किया जाएगा ;

(घ) एक से अधिक प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता को उनके संबंध में मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर के प्रत्यय का वितरण ऐसे प्राप्तिकर्ताओं के बीच किया जाएगा, जिनके लिए इनपुट सेवा मानी जा सकती है, और ऐसा वितरण सुसंगत अवधि के दौरान ऐसे प्राप्तिकर्ता के राज्य में आवर्त या संघ राज्यक्षेत्र में आवर्त के आधार पर, ऐसे सभी प्राप्तिकर्ताओं के, जिनके संबंध में ऐसी इनपुट सेवा मानी गई है, आवर्त का संकलन के अनुपाततः होगा;

(ङ) प्रत्यय के सभी प्राप्तिकर्ताओं के लिए उनके संबंध में मानी गई इनपुट सेवाओं पर संदत्त कर प्रत्यय का ऐसे प्राप्तिकर्ताओं के बीच वितरण किया जाएगा और ऐसा वितरण ऐसे प्राप्तिकर्ता के राज्य में आवर्त या संघ राज्यक्षेत्र में आवर्त के आधार पर, सुसंगत अवधि के दौरान सभी प्राप्तिकर्ताओं जो उक्त सुसंगत अवधि के दौरान चालू वर्ष में संक्रियात्मक हैं, के आवर्त का संकलन के अनुपाततः होगा।

स्पष्टीकरण-इस धारा के प्रयोजनों के लिए, -

(क) "सुसंगत अवधि",-

(i) यदि प्रत्यय के प्राप्तिकर्ताओं का, उस वर्ष के पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, उनके राज्यों या संघ राज्यक्षेत्रों में आवर्त, है तो उक्त वित्तीय वर्ष होगी ;

(ii) यदि प्रत्यय के कुछ या सभी प्राप्तिकर्ताओं का, उस वर्ष के पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष में, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, उनके राज्यों या संघ राज्यक्षेत्रों में कोई आवर्त नहीं है तो उस मास के पहले का, जिसके दौरान प्रत्यय का वितरण किया जाना है, ऐसी अंतिम तिमाही होगी, जिसके लिए सभी प्राप्तिकर्ताओं के ऐसे आवर्त के ब्यौरे उपलब्ध हैं;

(ख) "प्रत्यय के प्राप्तिकर्ता" पद से उस माल या सेवाओं या दोनों का प्रदायकर्ता अभिप्रेत है जिनका तथा इनपुट सेवा वितरक स्थायी खाता संख्यांक समान है;

(ग) इस अधिनियम के अधीन कराधेय माल और ऐसे माल, जो कराधेय नहीं है, के प्रदाय में लगा हुआ किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में "आवर्त" से संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची 1 की प्रविष्टि 84 और प्रविष्टि 92क* और उक्त अनुसूची की सूची 2 की प्रविष्टि 51 और प्रविष्टि 54 के अधीन उदगृहीत किसी शुल्क या कर की रकम को आवर्त के का मूल्य से घटाकर अभिप्रेत है।

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



21. आधिक्य में वितरित प्रत्यय के वसूली की रीति—

जहां इनपुट सेवा कर वितरक, धारा 20 में अंतर्विष्ट उपबंधों के उल्लंघन में प्रत्यय का ऐसा वितरण करता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्यय के एक या अधिक प्राप्तिकर्ताओं को आधिक्य में प्रत्यय का वितरण हो जाता है वहां ऐसे प्राप्तिकर्ताओं से इस प्रकार वितरित आधिक्य प्रत्यय ब्याज के साथ वसूल किया जाएगा और यथास्थिति, धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]⁸² के उपबंध वसूल किए जाने वाली रकम के अवधारण के लिए यथा आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

*बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों "प्रविष्टि 84" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

82. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 6

रजिस्ट्रीकरण

22. रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी व्यक्ति—

(1) राज्य में मालों या सेवाओं या दोनों के कराधेय प्रदाय को करने वाला प्रत्येक प्रदाता इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने का दायी होगा, यदि किसी वित्तीय वर्ष में उसका संकलित आवर्त बीस लाख रूपए से अधिक है :

परंतु विशेष प्रवर्ग के राज्यों में से किसी राज्य से माल या सेवाओं या दोनों का कराधेय प्रदाय करने वाला व्यक्ति रजिस्ट्रीकृत किए जाने का दायी होगा, यदि किसी वित्तीय वर्ष में उसका संकलित आवर्त दस लाख रूपए से अधिक है।

[परंतु यह और कि जहाँ ऐसा व्यक्ति, विशेष प्रवर्ग के किसी राज्य से जिसके संदर्भ में केन्द्र सरकार द्वारा प्रथम परन्तुक में निर्दिष्ट संकलित आवर्त को बढ़ाया गया है, माल या सेवाओं या दोनों का कराधेय प्रदाय करता है, रजिस्ट्रीकृत किये जाने का दायी होगा, यदि एक वित्तीय वर्ष में उसका संकलित आवर्त ऐसे वर्द्धित आवर्त के समतुल्य राशि से अधिक है।⁸³

[परंतु यह भी कि सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, बीस लाख रूपए के संकलित आवर्त को ऐसी रकम तक बढ़ा सकेगी, जो किसी ऐसे पूर्तिकार की दशा में, जो माल की अनन्य पूर्ति में लगा है, चालीस लाख रूपए से अधिक नहीं होगी और यह ऐसी शर्तों और परिसीमाओं के अधीन रहते हुए किया जाएगा, जो अधिसूचित की जाए।

स्पष्टीकरण— इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए, किसी व्यक्ति के बारे में तब भी यह समझा जाएगा कि वह माल की अनन्य पूर्ति में लगा है, यदि वह निक्षेपों, ऋणों या अग्रिमों को विस्तारित करके छूट प्राप्त सेवाओं की पूर्ति में लगा हुआ है, जहां तक प्रतिफल को ब्याज या बट्टे के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।⁸⁴

(2) प्रत्येक व्यक्ति जो, नियत तारीख से ठीक पूर्ववर्ती दिन, विद्यमान विधि के अधीन रजिस्ट्रीकृत अनुज्ञापित धारण करता है, नियत तारीख से अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत है होने के लिए दायी होगा।

(3) जहां इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत कराधेय व्यक्ति द्वारा चलाया गया कारबार, किसी अन्य व्यक्ति को चालू समुत्थान के रूप में, चाहे उत्तराधिकार या अन्यथा अंतरित किया जाता है तो, यथास्थिति, अंतरित या उत्तराधिकारी, के कारण, ऐसे अंतरण या उत्तराधिकार की तारीख से रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी होगा।

(4) उपधारा (1) और उपधारा (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी किसी उच्च न्यायालय या किसी अधिकरण के आदेश के अनुसरण में या अन्यथा दो या अधिक कम्पनियों के किसी स्कीम की मंजूरी या किसी समामेलन या, यथास्थिति, निर्विलयन के अनुसरण किसी अंतरण की दशा में अंतरित ऐसी तारीख से जिससे उच्च न्यायालय या अधिकरण के ऐसे आदेश को प्रभाव देते हुए कंपनी रजिस्ट्रार निगमन का प्रमाणपत्र जारी करता है, रजिस्ट्रीकृत किए जाने के लिए दायी होगा

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए, —

(i) अभिव्यक्ति “संकलित व्यापारवर्त” में, कराधेय व्यक्ति द्वारा की गई सभी प्रदाय, चाहे उसके अपने लेखे या उसके सभी मालिकों की ओर से, सम्मिलित है ;

83. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

84. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



(ii) रजिस्ट्रीकृत फुटकर कर्मकार द्वारा फुटकर काम पूर्ण करने के पश्चात्, मालों की आपूर्ति, धारा 143 के निर्दिष्ट प्रधान द्वारा मालों की आपूर्ति मानी जाएगी और ऐसे मालों का मूल्य रजिस्ट्रीकृत फुटकर कर्मकार का संकलित व्यापारवर्त में सम्मिलित नहीं होगा;

(iii) अभिव्यक्ति "विशेष प्रवर्ग राज्यों से संविधान के अनुच्छेद 279क के खंड (4) के उपखंड (छ) में यथाविनिर्दिष्ट राज्य [जम्मू-कश्मीर राज्य और अरुणाचल प्रदेश, असम, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, सिक्किम और उत्तराखंड राज्य को छोड़कर,]⁸⁵ अभिप्रेत हैं।

23. व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं है—

(1) निम्नलिखित व्यक्ति रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं होंगे, अर्थात्:—

(क) कोई व्यक्ति जो अनन्य रूप से केवल ऐसे मालों या सेवाओं या दोनों के कारबार में लगा हुआ है जो इस अधिनियम के अधीन या एकीकृत माल या सेवा कर अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी नहीं है या कर से पूर्ण रूप से छूट प्राप्त है;

(ख) कृषक, भूमि पर खेती की उपज के प्रदाय के विस्तार तक।

[(2) धारा 22 की उपधारा (1) या धारा 24 में अंतर्विष्ट किसी तत्प्रतिकूल बात के होते हुये भी सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाय, उन व्यक्तियों की श्रेणी निर्दिष्ट कर सकती है, जिन्हें इस अधिनियम के तहत पंजीकरण प्राप्त करने से छूट हो।]⁸⁶

24. कतिपय मामलों में अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण—

धारा 22 की उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, व्यक्तियों के निम्नलिखित प्रवर्गों को इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किया जाना अपेक्षित होगा,—

(i) व्यक्ति जो अंतरराज्यिक कराधेय प्रदाय करते हैं ;

(ii) कराधेय प्रदाय करने वाले आकस्मिक कराधेय व्यक्ति ;

(iii) व्यक्ति जिससे विपरीत प्रभार के अधीन कर का संदाय करना अपेक्षित है ;

(iv) व्यक्ति जिससे धारा 9 की उपधारा (5) के अधीन कर का संदाय करना अपेक्षित है;

(v) कराधेय प्रदाय करने वाले अनिवासी कराधेय व्यक्ति ;

(vi) व्यक्ति जिससे धारा 51 के अधीन कर की कटौती करना अपेक्षित है चाहे इस अधिनियम के अधीन पृथक रूप से रजिस्ट्रीकृत हो या नहीं ;

(vii) व्यक्ति जो, चाहे अभिकर्ता के रूप में या अन्यथा, अन्य कराधेय व्यक्तियों की ओर से कराधेय मालों या सेवाओं अथवा दोनों का प्रदाय करते हैं;

(viii) इनपुट सेवा वितरक, चाहे इस अधिनियम के अधीन पृथक रूप से रजिस्ट्रीकृत है या नहीं ;

85. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

86. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :—

(2) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसे व्यक्तियों का प्रवर्ग जिन्हें इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने से छूट दी जा सकती है, विनिर्दिष्ट कर सकती है।



(ix) व्यक्ति जो की ऐसे इलेक्ट्रानिक वाणिज्य ऑपरेटर जिससे धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर एकत्र करना अपेक्षित है, के माध्यम से धारा 9 की उपधारा (5) के अधीन विनिर्दिष्ट प्रदाय से भिन्न मालों या सेवाओं अथवा दोनों का प्रदाय करता है ;

(x) प्रत्येक इलेक्ट्रानिक वाणिज्य ऑपरेटर [जिससे धारा 52 के अधीन कर का संग्रहण करने की अपेक्षा है]⁸⁷;

(xi) प्रत्येक व्यक्ति जो भारत से बाहर के स्थान से ऑन लाइन सूचना और डाटा आधार पहुंच या सुधार सेवाओं भारत में रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति को प्रदाय करता है ;

[(xi क) भारत से बाहर किसी स्थान से, भारत में किसी व्यक्ति को ऑनलाइन धनीय गेम खेलने की पूर्ति करने वाला प्रत्येक व्यक्ति; और]⁸⁸

(xii) ऐसे अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग जिन्हें सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए।

25. रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रक्रिया—

(1) प्रत्येक व्यक्ति जो धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी है, वह उस तारीख, जिसको वह रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी होता है, से तीस दिवस के भीतर, ऐसी रीति और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करेगा :

परंतु आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति कारबार प्रारंभ होने के कम से कम पांच दिवस पहले रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन कर सकेगा।

[“परंतु यह और कि विशेष आर्थिक जोन अधिनियम, 2005 में यथा परिभाषित किसी विशेष आर्थिक जोन विकासकर्ता या ऐसा कोई व्यक्ति जिसके पास, विशेष आर्थिक जोन के बाहर परंतु राज्य के अन्दर उसके कारबार के स्थान से सुभिन्न, विशेष आर्थिक जोन में कोई यूनिट है को, पृथक् रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करना होगा।”]⁸⁹

स्पष्टीकरण—प्रत्येक व्यक्ति, जो भारत के राज्यक्षेत्रीय सागर— खंड से प्रदाय करता है, ऐसे तटीय राज्य, जहां समुचित आधार रेखा का निकटतम बिन्दु अवस्थित है, में रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करेगा।

(2) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण चाहता है को राज्य में एकल रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया जाएगा :

[परंतु ऐसे किसी व्यक्ति को, जिसके पास किसी राज्य में कारबार के बहु स्थान हैं, वहां विहित की जाने वाली शर्तों के अधीन रहते हुए, कारबार के ऐसे प्रत्येक स्थान के लिए पृथक् रजिस्ट्रीकरण मंजूर किया जा सकेगा।]⁹⁰

87. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

88. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा अन्तःस्थापित।

89. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

90. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व निम्न परन्तुक इस प्रकार था :

“परंतु एक राज्य में बहुल कारबार वर्टिकल रखने वाले व्यक्ति को, ऐसी शर्तों, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए, प्रत्येक कारबार वर्टिकल के लिए पृथक् रजिस्ट्रीकरण मंजूर किया जा सकेगा।”



(3) प्रत्येक व्यक्ति जो धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी नहीं है वह स्वयं को स्वेच्छया रजिस्ट्रीकृत करा सकता है और इस अधिनियम के सभी उपबंध वैसे ही ऐसे व्यक्ति पर लागू होंगे जैसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति पर लागू होते हैं।

(4) एक व्यक्ति जिसने एक से अधिक रजिस्ट्रीकरण चाहे एक राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में अथवा एक से अधिक राज्यों अथवा संघ राज्यक्षेत्र में प्राप्त किया है या एक राज्य अथवा संघ राज्यक्षेत्र अथवा एक से अधिक राज्यों अथवा संघ राज्यक्षेत्र में रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करना अपेक्षित है, प्रत्येक रजिस्ट्रीकरण की बाबत इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए सुभिन्न व्यक्ति के रूप में माना जाएगा।

(5) जहां एक व्यक्ति जिसने एक स्थापना की बाबत राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में रजिस्ट्रीकरण प्राप्त किया है या जिससे ऐसा रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करना अपेक्षित है, के पास किसी अन्य राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में एक स्थापना है, तब ऐसे स्थापनाओं को इस अधिनियम के प्रयोजन के लिए सुभिन्न व्यक्तियों के स्थापनाओं के रूप में माना जाएगा।

(6) प्रत्येक व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण प्रदान किए जाने के लिए पात्र होने के लिए आय- कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी स्थायी खाता संख्या रखेगा :

परंतु व्यक्ति जिससे धारा 51 के अधीन कर की कटौती करना अपेक्षित है, स्थायी खाता संख्या के बजाय, रजिस्ट्रीकरण प्रदान करने के लिए पात्र होने के लिए उक्त अधिनियम के अधीन जारी कर कटौती और संग्रहण खाता संख्या रख सकेगा।

[6क) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, विहित किए जाने वाले प्ररूप और रीति तथा समय के भीतर सत्यापन कराएगा या आधार संख्यांक को धारित करने का सबूत प्रस्तुत करेगा :

परंतु यदि किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को आधार संख्यांक समनुदेशित नहीं किया गया है, तो ऐसे व्यक्ति को ऐसी रीति में, जो परिषद् की सिफारिशों पर, सरकार द्वारा अधिसूचित की जाए, पहचान का कोई वैकल्पिक और व्यवहार्य साधन प्रस्थापित किया जाएगा :

परंतु यह और कि सत्यापन कराने या आधार संख्यांक को धारित करने का सबूत प्रस्तुत करने या पहचान का कोई वैकल्पिक और व्यवहार्य साधन प्रस्तुत करने में असफल रहने की दशा में ऐसे व्यक्ति को आवंटित रजिस्ट्रीकरण अविधिमान्य समझा जाएगा और इस अधिनियम के अन्य उपबंध इस प्रकार लागू होंगे मानो ऐसे व्यक्ति के पास रजिस्ट्रीकरण नहीं है।

(6ख) अधिसूचित की जाने वाली तारीख को ही प्रत्येक व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण की मंजूरी के लिए पात्र बनने हेतु, परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाने वाली रीति में सत्यापन कराएगा या आधार संख्यांक को धारित करने का सबूत प्रस्तुत करेगा :

परंतु जहां किसी व्यक्ति को आधार संख्यांक समनुदेशित नहीं किया गया है, वहां ऐसे व्यक्ति को पहचान का कोई ऐसा वैकल्पिक और व्यवहार्य साधन प्रस्थापित किया जाएगा, जो परिषद् की सिफारिशों पर, सरकार द्वारा उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किया जाए।

(6ग) अधिसूचित की जाने वाली तारीख को ही, व्यक्ति से भिन्न प्रत्येक व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण की मंजूरी के लिए पात्र बनने हेतु, सत्यापन कराएगा या ऐसी रीति में, जो अधिसूचित की जाए, कर्ता, प्रबंध निदेशक, पूर्णकालिक निदेशक, ऐसे भागीदारों, यथास्थिति, संगम की प्रबंध समिति, न्यासी बोर्ड के सदस्यों, प्राधिकृत प्रतिनिधियों, प्राधिकृत हस्ताक्षरकर्ताओं और व्यक्तियों के ऐसे अन्य वर्गों द्वारा, ऐसी रीति में, जो परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाए, आधार संख्यांक को धारित करने का सबूत प्रस्तुत करेगा :

परंतु जहां ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के ऐसे अन्य वर्ग, जिन्हें आधार संख्यांक समनुदेशित नहीं किया गया है, उन्हें पहचान का कोई ऐसा वैकल्पिक और व्यवहार्य साधन प्रस्थापित किया जाएगा, जो परिषद् की सिफारिशों पर, सरकार द्वारा उक्त अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किया जाए।

(6घ) उपधारा (6क) या उपधारा (6ख) या उपधारा (6ग) के उपबंध ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के ऐसे वर्ग या वर्गों या राज्य के किसी ऐसे भाग पर लागू नहीं होंगे, जिसे परिषद् की सिफारिश पर सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाए।



स्पष्टीकरण— इस धारा के प्रयोजनों के लिए "आधार संख्यांक" पद का वही अर्थ होगा, जो आधार (वित्तीय और अन्य सहायिकियों, फायदों तथा सेवाओं का लक्ष्यित परिदान) अधिनियम, 2016 की धारा 2 के खंड (क) में उसका है।⁹¹

(7) उपधारा (6) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, एक अनिवासी कराधेय व्यक्ति को ऐसे अन्य दस्तावेजों जो विहित किए जाए के आधार पर उप धारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया जा सकता है।

(8) जहां एक व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किए जाने के लिए दायी है रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने में विफल होता है, उचित अधिकारी, कोई कार्रवाई जिसे इस अधिनियम के अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किया जा सकता है, पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसे व्यक्ति को ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकृत कर सकेगा।

(9) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी—

(क) संयुक्त राष्ट्र संगठन का कोई विशिष्ट अभिकरण या संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां), अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित बहुपार्श्व वित्तीय संस्था और संगठन, विदेशी देशों के कौंसल कार्यालय या राजदूतावास; और

(ख) ऐसे अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग, जो आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया जाए को,

ऐसी रीति और ऐसे प्रयोजनों, जिसके अंतर्गत उनके द्वारा प्राप्त मालों का सेवाओं अथवा दोनों की अधिसूचित प्रदाय पर शामिल है करों का प्रतिदाय, जैसा कि विहित किया जाए, विशिष्ट पहचान संख्या प्रदान किया जाएगा।

(10) रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या ऐसी रीति में सम्यक् सत्यापन के पश्चात् और ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, प्रदान किया जाएगा या खारिज किया जाएगा।

(11) रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र ऐसे प्ररूप में जारी किया जाएगा और ऐसी तारीख से लागू होगा, जो विहित किया जाए।

(12) एक रजिस्ट्रीकरण या एक विशिष्ट पहचान संख्या उप धारा (10) के अधीन विहित अवधि के समाप्त होने के पश्चात् प्रदान किया गया समझा जाएगा, यदि आवेदक को उस अवधि के भीतर कोई कमी संसूचित नहीं की जाती है।

26. रजिस्ट्रीकरण समझा जाना—

(1) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या का प्रदान किया जाना, इस शर्त के अधीन रहते हुए कि रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या के लिए आवेदन इस अधिनियम के अधीन, धारा 25 की उपधारा (10) में यथाविनिर्दिष्ट समय के भीतर खारिज नहीं किया गया है, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या का प्रदान किया जाना समझा जाएगा।

(2) धारा 25 की उपधारा (10) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण या विशिष्ट पहचान संख्या के लिए आवेदन का खारिज किया जाना, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन का खारिज किया जाना समझा जाएगा।

27. आकस्मिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति से संबंधित विशिष्ट उपबंध—

(1) आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति को जारी किया गया रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन में विनिर्दिष्ट अवधि के लिए या रजिस्ट्रीकरण के प्रभावी होने

⁹¹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अन्तःस्थापित।



की तारीख से नब्बे दिन की अवधि जो भी पहले हो, के लिए विधिमान्य होगा और ऐसा व्यक्ति केवल रजिस्ट्रीकरण, प्रमाणपत्र जारी करने के पश्चात् ही कराधेय प्रदाय करेगा :

परंतु उचित अधिकारी, पर्याप्त कारणों से जो उक्त कराधेय व्यक्ति द्वारा दर्शाए जाए, उक्त नब्बे दिन की अवधि को नब्बे दिन से अनधिक की और अवधि के लिए बढ़ा सकेगा।

(2) एक आकस्मिक कराधेय व्यक्ति या अनिवासी कराधेय व्यक्ति धारा 25 की उपधारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत करने के समय, ऐसी अवधि जिसके लिए रजिस्ट्रीकरण चाहा गया है, के लिए ऐसे व्यक्ति के प्राक्कलित कर दायित्व के समतुल्य रकम में कर का अग्रिम निक्षेप करेगा :

परंतु जहां उपधारा (1) के अधीन समय का कोई विस्तार चाहा गया है, ऐसा कराधेय व्यक्ति, ऐसी अवधि जिसके लिए विस्तार चाहा गया है, के लिए ऐसे व्यक्ति के प्राक्कलित कर दायित्व के समतुल्य कर की अतिरिक्त रकम निक्षेप करेगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन निक्षेप की गई रकम ऐसे व्यक्ति के इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते में जमा की जाएगी और धारा 49 के अधीन उपबंधित रीति से उपयोग किया जाएगा।

28 रजिस्ट्रीकरण का संशोधन –

(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति और ऐसा व्यक्ति जिसे विशिष्ट पहचान संख्या समनुदेशित की गई है, रजिस्ट्रेशन के समय या तत्पश्चात् दी गई सूचना में किसी परिवर्तन को ऐसे प्ररूप ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, उचित अधिकारी को सूचित करेगा।

(2) उचित अधिकारी, उपधारा (1) के अधीन दी गई या उसके द्वारा अभिनिश्चित की गई सूचना के आधार पर रजिस्ट्रीकरण विशिष्टियों में ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, संशोधनों का अनुमोदन करेगा या खारिज करेगा :

परंतु ऐसी विशिष्टियों जो विहित की जाएं, के संशोधन की बाबत समुचित अधिकारी का अनुमोदन अपेक्षित नहीं होगा :

परंतु यह और कि उचित अधिकारी रजिस्ट्रीकरण विशिष्टियों में संशोधन के लिए आवेदन को उस व्यक्ति को सुने जाने का अवसर दिए बिना खारिज नहीं करेगा।

(3) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन किसी अनुमोदन या संशोधनों का खारिज किया जाना या अनुमोदित किया जाना, इस अधिनियम के अधीन खारिज किया जाना या अनुमोदित किया जाना माना जाएगा।

29. रजिस्ट्रीकरण का रद्दीकरण [या निलंबन]⁹²—

(1) उचित अधिकारी या तो स्वप्रेरणा से या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, या ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाने की दशा में उसके विधिक वारिसों द्वारा दाखिल किए गए आवेदन पर, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, ऐसी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए रजिस्ट्रीकरण रद्द कर सकेगा, जहां,—

(क) कारबार किन्हीं कारणों से जिसके अंतर्गत स्वत्वधारी की मृत्यु, किसी अन्य विधिक सत्ता के साथ समामेलन, निर्विलयन या अन्यथा निपटान भी है, बंद कर दिया गया है, पूरी तरह से अंतरित कर दिया गया है;

(ख) कारबार के गठन में कोई परिवर्तन हुआ है;

[(ग) कराधेय व्यक्ति, धारा 22 या धारा 24 के अधीन अब रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं रहा है या उसका धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन स्वेच्छया रजिस्ट्रीकरण से बाहर निकलने का आशय रहा हो;]⁹³

⁹². बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।



[परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण के संबंध में फाइल की गई कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान, रजिस्ट्रीकरण को ऐसी अवधि के लिए और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, निलंबित किया जा सकेगा।]⁹⁴

(2) उचित अधिकारी, ऐसी तारीख, जिसके अंतर्गत किसी भूतलक्षी तारीख से जैसा वह उचित समझे, किसी व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण रद्द कर सकेगा, जहां—

(क) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के ऐसे उपबंधों का उल्लंघन किया है, जैसा विहित किया जाए; या

(ख) धारा 10 के अधीन कर अदा करने वाले व्यक्ति ने, [उक्त विवरणी प्रस्तुत करने के लिए नियत तारीख से तीन मास से परे किसी वित्तीय वर्ष के लिए विवरणी]⁹⁵ नहीं दी है; या

(ग) खंड (ख) में विनिर्दिष्ट व्यक्ति से भिन्न किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने [ऐसी लगातार कर अवधियों, जो विहित की जाए, के लिए]⁹⁶ विवरणी नहीं दी है; या

(घ) कोई व्यक्ति, जिसने धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन स्वैच्छया रजिस्ट्रीकरण कराया है, रजिस्ट्रीकरण की तारीख से छह मास के भीतर कारबार प्रारंभ नहीं किया है; या

(ङ) रजिस्ट्रीकरण कपट के साधनों से, जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों के छिपाने के द्वारा प्राप्त किया गया है :

परंतु उचित अधिकारी किसी व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए बिना रजिस्ट्रीकरण को रद्द नहीं करेगा।

[परंतु यह और कि रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण से संबंधित कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान, समुचित अधिकारी द्वारा रजिस्ट्रीकरण को ऐसी अवधि के लिए और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, निलंबित किया जा सकेगा।]⁹⁷

(3) इस धारा के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना, कराधेय व्यक्ति का इस अधिनियम के अधीन कर और अन्य शोध्य के भुगतान के दायित्व या इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन, रद्दीकरण की तारीख से पहले किसी अवधि के लिए, अवधारित कोई कर या अन्य शोध्य चाहे ऐसा कर और अन्य शोध्य, रद्दीकरण की तारीख से पहले या पश्चात् अवधारित किए जाते हैं, के भुगतान के दायित्व की किसी बाध्यता के निर्वहन पर प्रभाव नहीं डालेगा।

(4) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का रद्द किया जाना समझा जाएगा।

(5) प्रत्येक ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसका रजिस्ट्रीकरण रद्द कर दिया गया है इलेक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाता या इलेक्ट्रॉनिक नकद खाता में विकलन के माध्यम से, विहित रूप में संगणित ऐसी बीजक रकम का संदाय करेगा जो रद्दीकरण की तारीख से ठीक पूर्व दिन को स्टॉक में धारित निवेशों और स्टॉक में

93. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :—

(ग) धारा 25 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न कोई कराधेय व्यक्ति, धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं है।

94. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित (1.2.2019 से प्रभावी)।

95. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "तीन क्रमवर्ती कर अवधियों तक विवरणी" प्रतिस्थापित।

96. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "लगातार छह मास की अवधि के लिए" प्रतिस्थापित।

97. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।



धारित अर्द्ध परिरूपित या परिरूपित माल में अंतर्विष्ट निवेशों के संबंध में और पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय के समतुल्य राशि या प्रकल्पित ऐसे माल पर संदेय आउटपुट कर की राशि, दोनों में जो अधिक हो:

परंतु पूंजीमाल या संयंत्र और मशीनरी के मामले में कराधेय व्यक्ति उक्त पूंजीमाल या संयंत्र और मशीनरी पर लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के समान ऐसी रकम जो ऐसे प्रतिशतता बिन्दु जो विहित किए जाए, से घटाकर आये या धारा 15 के अधीन ऐसे पूंजी माल या संयंत्र और मशीनरी के संव्यवहार मूल्य पर कर, जो भी अधिक हो, संदत्त करेगा।

(6) उपधारा (5) के अधीन देय रकम ऐसी रीति जो विहित की जाए, से प्रकल्पित की जाएगी।

30. रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण—

(1) ऐसी शर्तों, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए, कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसका रजिस्ट्रीकरण उचित अधिकारी द्वारा स्वप्रेरणा पर रद्द किया गया है, [ऐसे तरीके एवं ऐसे समय और विहित शर्तों एवं प्रतिबंधों के अधीन]⁹⁸ से रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन कर सकेगा।

[विलोपित]⁹⁹

(2) उचित अधिकारी, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि में जो विहित की जाए, आदेश द्वारा या तो रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण कर सकेगा या आवेदन को खारिज कर सकेगा :

परंतु रजिस्ट्रीकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन आवेदक को सुनवाई का अवसर दिए बिना खारिज नहीं किया जाएगा।

[परंतु यह और कि ऐसे रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन होगा, जो विहित की जाएं।]¹⁰⁰

98. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "रद्दीकरण आदेश की तारीख से तीस दिन के भीतर ऐसे अधिकारी को विहित रीति" प्रतिस्थापित।

99. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा परंतुक विलोपित गया। विलोपिन से पूर्व परंतुक निम्न प्रकार था :—

[परंतु ऐसी अवधि दर्शित किए गए पर्याप्त कारण के आधार पर और लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से,—

(क) यथास्थिति, अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त द्वारा तीस दिन से अनधिक की अवधि के लिए; और

(ख) आयुक्त द्वारा खंड (क) में विनिर्दिष्ट अवधि से परे तीस दिन से अनधिक की और अवधि के लिए, बढ़ाई जा सकेगी।]*

* बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व परंतुक निम्नलिखित था :—

[परन्तु यह कि ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसे धारा 169 की उप-धारा (1) के खंड (ग) या खंड (घ) में यथा उपबधित रीति से धारा 29 की उप-धारा (2) के अधीन नोटिस तामील हुई थी और जो उक्त नोटिस का उत्तर नहीं दे सका है, जिसका परिणाम उसके रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र का रद्दकरण है, और इसलिए वह दिनांक 31.03.2019 तक पारित ऐसे आदेश के विरुद्ध अधिनियम की धारा 30 की उप-धारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन फाइल करने में असमर्थ हैं, को 22.07.2019 तक रजिस्ट्रीकरण रद्दकरण के प्रतिसंहरण के लिए आवेदन फाइल करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा।]**

**बिहार माल और सेवा कर (कठिनाइयों को दूर करना-पांचवां) आदेश, 2019 विज्ञप्ति संख्या— 600, पटना दिनांक 08 मई, 2019 द्वारा बढ़ाया गया।"

100. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



(3) केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के रद्दीकरण का प्रतिसंहरण माना जाएगा।



अध्याय 7

कर बीजक, जमा पत्र और नामे पत्र

31. कर बीजक—

(1) कराधेय मालों का प्रदाय करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे समय से पहले या उस समय पर, —

(क) प्राप्तिकर्ता का प्रदाय, जहां प्रदाय में मालों का संचलन अंतर्वलित है, के लिए माल को हटाए जाने; या

(ख) किसी अन्य मामले में, मालों के परिदान या प्राप्तिकर्ता को उन्हें उपलब्ध कराए जाने के समय या उससे पहले मालों का, वर्णन, मात्रा और मूल्य, उस पर भारित कर और ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं, दर्शाने वाला कर बीजक जारी करेगा :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश पर अधिसूचना द्वारा मालों या प्रदायों का प्रवर्गों को विनिर्दिष्ट कर सकेगी जिनकी बावत विहित समय में और रीति में कर बीजक जारी किया जाएगा।

(2) कराधेय सेवाओं का प्रदाय करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति सेवाओं के प्रदान के पूर्व या पश्चात् परंतु विहित अवधि के भीतर, वर्णन, मूल्य, उस पर भारित कर और ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं, दर्शाने वाला कर बीजक जारी करेगा :

[परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, —

(क) ऐसी सेवाओं या पूर्तियों के प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिनके संबंध में ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाएं, कर बीजक जारी किया जा सकेगा;

(ख) इसमें उल्लिखित ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, सेवाओं के ऐसे प्रवर्ग विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिनके संबंध में—

(i) पूर्ति के संबंध में जारी किसी अन्य दस्तावेज को कर बीजक समझा जाएगा; या

(ii) कर बीजक जारी नहीं किया जा सकेगा।¹⁰¹

(3) उपधारा (1) और उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी,—

(क) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख से एक मास के भीतर और ऐसी रीति में जो विहित की जाएं, रजिस्ट्रीकरण के प्रभावी होने की तारीख से प्रारंभ होने और उसे रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख तक की अवधि के दौरान पहले से जारी बीजक के विरुद्ध पुनरावलोकित बीजक जारी कर सकेगा ;

(ख) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी शर्तों और ऐसी रीति जो विहित की जाएं के अध्वधीन रहते हुए कर बीजक जारी करने के लिए बाध्य नहीं होगा यदि, मालों या सेवाओं या दोनों के प्रदाय का मूल्य दो सौ रूपए से कम है ;

(ग) छूट प्राप्त मालों और सेवाओं या दोनों का प्रदाय करने वाला या धारा 10 के उपबंधों के अधीन का संदाय करने वाला रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, कर बीजक के बजाय ऐसी विशिष्टिताएं अंतर्विष्ट करने वाला और ऐसी रीति में जो विहित की जाएं, एक प्रदाय का बिल जारी करेगा :

101. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व परंतुक निम्नलिखित था :—

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचना द्वारा और उसमें उल्लिखित शर्तों के अध्वधीन रहते हुए सेवाओं के प्रवर्गों को विनिर्दिष्ट करेगी, जिनकी बावत—

(क) प्रदाय के संबंध में जारी किया गया कोई अन्य दस्तावेज कर बीजक समझा जाएगा; या

(ख) कर बीजक जारी किया जाना अपेक्षित नहीं होगा।



परन्तु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, प्रदाय का बिल जारी करने के लिए बाध्य नहीं होगा, यदि प्रदाय किया गया माल या सेवाओं या दोनों का मूल्य दो सौ रूपए से कम है ;

(घ) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति माल या सेवा या दोनों के किसी प्रदाय की बाबत अग्रिम संदाय की प्राप्ति पर ऐसे संदाय का साक्ष्यस्वरूप ऐसी विशिष्टियों से अंतर्विष्ट, जो विहित की जाए कोई रसीद वाउचर या कोई अन्य दस्तावेज जारी करेगा ;

(ङ) जहां माल या सेवा या दोनों के प्रदाय के संबंध में अग्रिम की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति कोई रसीद वाउचर जारी करता है, परन्तु तत्पश्चात कोई प्रदाय नहीं की जाती है और उसके अनुसरण में कोई कर बीजक जारी नहीं किया जाता है, उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उस व्यक्ति को जिसने संदाय किया है, ऐसे संदाय के विरुद्ध कोई प्रतिदाय वाउचर जारी कर सकेगा ;

(च) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो [ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए]¹⁰² धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन कर संदत्त करने के लिए दायी है, उसके द्वारा किसी ऐसे प्रदाता से, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है, माल या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति की तारीख को माल या सेवाओं या दोनों के संबंध में एक बीजक जारी करेगा ;

(छ) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 9 की उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन कर संदत्त करने के लिए दायी है प्रदायकर्ता को संदाय करते समय एक संदाय वाउचर जारी करेगा।

स्पष्टीकरण— खंड (च) के प्रयोजनों के लिए, “पूर्तिकार, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है” पद के अन्तर्गत ऐसा पूर्तिकार भी होगा, जो केवल धारा 51 के अधीन कर की कटौती के प्रयोजन के लिए रजिस्ट्रीकृत है।¹⁰³

(4) माल के निरंतर प्रदाय की दशा में, जहां लेखाओं के क्रमवार विवरण या क्रमवार संदाय अंतर्वलित हैं, वहां बीजक, प्रत्येक ऐसे विवरण जारी करते समय या उससे पूर्व या, यथास्थिति, प्रत्येक ऐसा संदाय प्राप्त करते समय या उससे पूर्व, जारी किया जाएगा।

(5) उपधारा (3) के खंड (घ) के उपबंधों के अधीन सेवाओं की निरंतर प्रदाय की दशा में—

(क) जहां संदाय की नियत तारीख का संविदा से पता लगाया जा सकता है, वहां बीजक संदाय की नियत तारीख को या उससे पूर्व जारी किया जाएगा ;

(ख) जहां संदाय की नियत तारीख का संविदा से पता नहीं लगाया जा सकता है, वहां सेवाओं को प्रदायकर्ता संदाय द्वारा प्राप्त करने के समय या उससे पूर्व बीजक जारी किया जाएगा;

(ग) जहां संदाय को किसी घटना के पूरा होने से जोड़ा गया है, वहां बीजक उस घटना के पूरा होने की तारीख को या उससे पूर्व जारी किया जाएगा।

(6) किसी ऐसे मामले में जहां किसी संविदा के अधीन प्रदाय के पूरा होने से पूर्व सेवाओं का प्रदाय बंद हो जाता है, वहां बीजक ऐसे समय पर जारी किया जाएगा जब प्रदाय बंद होता है और ऐसा बीजक ऐसी बंदी से पूर्व किए गए प्रदाय की सीमा तक जारी किया जाएगा।

(7) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां विक्रय या वापसी के लिए अनुमोदन पर भेजा जा रहा या लिया जा रहा माल प्रदाय किए जाने से पूर्व हटाया जाता है, वहां बीजक, आप्रदाय के समय या उससे पूर्व अथवा हटाए जाने की तारीख से छह मास तक, जो भी पूर्वतर हो, जारी किया जाएगा।

102. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

103. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए “कर बीजक” पद के अंतर्गत पूर्व में की गई प्रदाय के बाबत प्रदायकर्ता द्वारा जारी कोई पुनरीक्षित बीजक शामिल होगा।

31क. प्राप्तिकर्ता को डिजिटल संदाय की सुविधा—

सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग को विहित कर सकेगी, जो उसके द्वारा की गई माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति के प्राप्तिकर्ता को इलैक्ट्रॉनिक संदाय का विहित ढंग उपलब्ध कराएगा और ऐसे प्राप्तिकर्ता को ऐसी रीति और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के, जो विहित किए जाएं, अधीन रहते हुए तदनुसार संदाय करने का विकल्प उपलब्ध कराएगा।¹⁰⁴

32. कर के अप्राधिकृत संग्रहण का प्रतिषेध—

(1) कोई व्यक्ति जो रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति नहीं है, माल और सेवाओं या दोनों के किसी प्रदाय के की बाबत इस अधिनियम के अधीन कर के रूप में कोई रकम संगृहीत नहीं करेगा।

(2) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार के सिवाय, कोई रजिस्ट्रीकृत त व्यक्ति कर का संग्रहण नहीं करेगा।

33. कर बीजक और अन्य दस्तावेजों में कर की रकम का उपदर्शन—

इस अधिनियम में या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जहां कोई प्रदाय किसी प्रतिफल के लिए किया जाता है, वहां प्रत्येक व्यक्ति जो ऐसे प्रदाय के लिए कर संदाय करने का दायी है निर्धारण से संबंधित सभी दस्तावेजों, कर बीजक और अन्य ऐसे अन्य दस्तावेज में कर की रकम जो उस मूल्य का भाग होगी जिस पर ऐसी प्रदाय की जाती है, प्रमुखतः उपदर्शित करेगा।

34. जमा और नामे पत्र—

(1) जहां किसी माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के लिए [एक या अधिक कर बीजक जारी किये गये हैं]¹⁰⁵ और उस कर बीजक में प्रभारित कर योग्य मूल्य या कर ऐसी प्रदाय के संबंध में कर योग्य मूल्य या संदेय कर से अधिक पाया जाता है या जहां प्रदायकर्ता द्वारा प्रदाय किए गए माल को वापस किया जाता है या जहां प्रदाय किए गए माल या सेवाओं या दोनों में कमी पाई जाती है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसमें ऐसे माल या सेवाएं या दोनों की प्रदाय की है, प्रदाय प्राप्तिकर्ता को ऐसी विशिष्टियों, जो विहित की जाएं, से अंतर्विष्ट [किसी वित्तीय वर्ष में की गयी पूर्तियों के लिए एक या अधिक जमा पत्र]¹⁰⁶ जारी कर सकेगा।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो माल या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के संबंध में कोई जमा पत्र जारी करता है, ऐसे जमा पत्र के ब्यौरे उस मास की विवरणी में घोषित करेगा जिसके दौरान ऐसा जमा पत्र जारी किया गया है परंतु उस वित्तीय वर्ष जिसमें ऐसी प्रदाय की गई थी, के अंत के पश्चात् [30 नवम्बर]¹⁰⁷ या सुसंगत वार्षिक विवरणी फाइल करने की तारीख, जो भी पूर्वतर हो से अपश्चात्, तथा कर दायित्व ऐसी रीति जो विहित की जाए, में समायोजित किया जाएगा :

[परंतु पूर्तिकार के आउटपुट कर दायित्व में कोई कटौति अनुज्ञात नहीं की जाएगी, यदि—

104. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अन्तःस्थापित।

105. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “कोई कर बीजक जारी किया गया है” के स्थान पर प्रतिस्थापित। (1.2.2019 से प्रभावी)।

106. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “जमापत्र” जारी के स्थान पर प्रतिस्थापित। (1.2.2019 से प्रभावी)।

107. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द “सितंबर मास” प्रतिस्थापित।



(i) जहां ऐसा प्राप्तकर्ता कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति है, वहां इनपुट कर प्रत्यय को ऐसे किसी जमापत्र के कारण से हुआ माना जा सकता है, यदि प्राप्तकर्ता द्वारा उसका उपभोग कर लिया गया हो और उसे वापस नहीं किया गया है या

(ii) अन्य मामलों में, ऐसी पूर्ति पर कर का भार किसी अन्य व्यक्ति को संक्रामण कर दिया गया है।¹⁰⁸

(3) जहां किसी माल या सेवाओं या दोनों की प्रदाय के लिए [एक या अधिक कर बीजक जारी किये गये हैं]¹⁰⁹ और उस कर बीजक में कर योग्य मूल्य या प्रभारित कर ऐसी प्रदाय के संबंध में कर योग्य मूल्य या संदेय कर से कम पाया जाता है, वहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने ऐसे माल या सेवाओं या दोनों की प्रदाय की है प्राप्त कर्ता को ऐसी विशिष्टियों जो विहित की जाए, से अंतर्विष्ट [किसी वित्तीय वर्ष में की गई पूर्तियों के लिए एक या अधिक नामे नोट]¹¹⁰ जारी करेगा।

(4) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो माल या सेवाओं या दोनों की प्रदाय के संबंध में कोई नामे पत्र जारी करता है, ऐसे नामेपत्र के ब्यौरे उस मास की विवरणी में, जिसके दौरान ऐसा नामे पत्र जारी किया गया है, घोषित करेगा और कर दायित्व, ऐसे रीति में जो विहित की जाए, समायोजित करेगा।

स्पष्टीकरण—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए “नामे पत्र” पद के अंतर्गत पूरक बीजक हैं।

108. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व परंतुक निम्न प्रकार था :—

परंतु यदि ऐसी प्रदाय पर कर और ब्याज का प्रभाव किसी अन्य व्यक्ति को पास किया गया है तो प्रदायकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में कोई कमी अनुज्ञात नहीं की जाएगी।

109. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “कोई कर बीजक जारी किया गया है” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

110. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्दों “नामे नोट जारी” के स्थान पर प्रतिस्थापित।



अध्याय 8

लेखे और अभिलेख

35. लेखे और अन्य अभिलेख—

(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अपने यथावर्णित कारबार के मूल स्थान पर रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र में,—

- (क) माल के उत्पादन और विनिर्माण ;
- (ख) माल या सेवाओं या दोनों की आवक और जावक प्रदाय;
- (ग) माल का स्टॉक ;
- (घ) प्राप्त किया गया इनपुट कर प्रत्यय;
- (ङ) संदेय और संदत्त आउटपुट कर; और
- (च) ऐसी अन्य विशिष्टियां जो विहित की जाएं,

की सत्य और शुद्ध लेखे रखेगा और अनुरक्षित करेगा :

परंतु जहां रजिस्ट्रीकरण के प्रमाणपत्र में एक से अधिक कारबार का स्थान विनिर्दिष्ट किया गया है, वहां कारबार के प्रत्येक स्थान से संबंधित लेखे कारबार के ऐसे स्थानों में रखे जाएंगे :

परंतु यह और कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे लेखे और अन्य विशिष्टियां इलेक्ट्रॉनिक रूप में ऐसी रीति में जो विहित की जाए, रख सकेगा और अनुरक्षित कर सकेगा।

(2) भांडागार या गोदाम या माल के भंडारण के लिए उपयोग में लाया गया किसी अन्य स्थान का प्रत्येक स्वामी या ऑपरेटर और प्रत्येक परिववाहक, चाहे वह रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति है या नहीं, प्रेषक, प्रेषिती और ऐसे माल के अन्य सुसंगत ब्यौरे जो विहित किए जाएं, के अभिलेख रखेगा।

(3) आयुक्त ऐसे प्रयोजन के लिए जो अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए जाएं, किसी कराधेय व्यक्तियों के वर्ग को के अतिरिक्त लेखे या दस्तावेज अनुरक्षित करने के लिए कर योग्य व्यक्तियों का वर्ग अधिसूचित कर सकेगा।

(4) जहां आयुक्त समझता है कि कर योग्य व्यक्तियों का कोई वर्ग इस धारा के उपबंधों के अनुसार लेखे रखने और अनुरक्षित करने की स्थिति में नहीं है, वहां वह कारणों को अभिलिखित करते हुए कर योग्य व्यक्तियों के ऐसे वर्ग को लेखों को ऐसी रीति में जो विहित की जाए अनुरक्षित करने के लिए अनुज्ञात कर सकेगा।

[***]¹¹¹

111. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसका आवर्त किसी वित्तीय वर्ष के दौरान विहित सीमा से अधिक होता है, अपने लेखे किसी चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार द्वारा संपरीक्षित करवाएगा और संपरीक्षित वार्षिक लेखों की एक प्रति धारा 44 की उपधारा (2) के अधीन समाधान विवरण और ऐसे अन्य दस्तावेज ऐसे प्ररूप और रीति में प्रस्तुत करेगा, जो विहित की जाए।

परंतु इस उपधारा में अंतर्विष्ट कोई बात, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के किसी विभाग या किसी स्थानीय प्राधिकार को लागू नहीं होगी, जिसकी लेखाबहियां, भारत के नियंत्रक — महालेखापरीक्षक या तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन किसी स्थानीय प्राधिकार के लेखाओं की संपरीक्षा के लिए नियुक्त किसी लेखापरीक्षक द्वारा संपरीक्षा किए जाने के अधीन हैं।*

*बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।



(6) धारा 17 की उपधारा (5) के खंड (ज) के उपबंधों के अधीन जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उपधारा (1) के अनुसार माल या सेवाओं या दोनों का लेखा देने में विफल रहता है, वहां उचित अधिकारी माल या सेवाओं या दोनों जिसका लेखा नहीं दिया गया है, पर संदेय कर की रकम अवधारित करेगा, मानो ऐसा माल या सेवाएं या दोनों की ऐसी व्यक्ति द्वारा प्रदाय की गई थी और यथास्थिति, धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹¹² के उपबंध ऐसे कर के अवधारण के लिए आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

36. लेखों के प्रतिधारण की अवधि—

धारा 35 की उपधारा (1) के अधीन लेखों की बहियों और अन्य अभिलेखों को रखने और अनुरक्षित करने के लिए अपेक्षित प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उनको ऐसे लेखों और अभिलेखों से संबंधित वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी फाइल करने की नियत तारीख से 72 मास की समाप्ति तक प्रतिधारण करेगा :

परंतु प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो किसी अपील प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के समक्ष किसी अपील या पुनरीक्षण या किसी अन्य कार्यवाही चाहे उसके द्वारा या आयुक्त द्वारा फाइल की गई हो, में कोई पक्षकार है, या अध्याय 19 के अधीन किसी अपराध के लिए अन्वेषणाधीन है, ऐसी अपील या पुनरीक्षण या कार्यवाही या अन्वेषण की विषयवस्तु से संबंधित लेखाबहियों और अन्य अभिलेखों को ऐसी अपील या पुनरीक्षण या कार्यवाही या अन्वेषण के अंतिम निपटान के पश्चात् एक वर्ष की अवधि के लिए या ऊपर विनिर्दिष्ट अवधि के लिए, जो भी पश्चात्पूर्ती हो, के लिए प्रतिधारित करेगा।

¹¹². बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 9

विवरणियां

37. जावक प्रदायों के ब्यौरे देना—

(1) किसी इनपुट सेवा वितरक, किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति और धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति [ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए इलैक्ट्रॉनिक रूप में और]¹¹³ ऐसे प्ररूप में और रीति में जो विहित की जाए, किसी कर अवधि के दौरान माल या सेवाओं या दोनों की की गई जावक प्रदायों के ब्यौरे उक्त कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 10वें दिन से पूर्व देगा और ऐसे ब्यौरे [ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए और ऐसे समय के भीतर उक्त पूर्तियों के प्राप्तिकर्ता को ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएं]¹¹⁴:

[***]¹¹⁵

[परंतु]¹¹⁶ आयुक्त कारणों को अभिलिखित करते हुए अधिसूचना द्वारा कर योग्य व्यक्ति के ऐसे वर्ग, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, के लिए ऐसे ब्यौरे देने के लिए समय सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

[परंतु यह और कि]¹¹⁷ केन्द्रीय कर के आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय सीमा का कोई विस्तार, आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।

[***]¹¹⁸

(3) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने किसी कर अवधि के लिए उपधारा (1) के अधीन ब्यौरे दिए हैं और [***]¹¹⁹ उसमें किसी त्रुटि या लोप का पता लगने पर ऐसी त्रुटि या लोप का ऐसी रीति में जो विहित

113. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "इलैक्ट्रॉनिक रूप में" प्रतिस्थापित।

114. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "उक्त प्रदायों के प्राप्तिकर्ता को ऐसी समयावधि के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे" प्रतिस्थापित।

115. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व परंतुक निम्न प्रकार था :-

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को अवधि के उत्तरवर्ती मास के 11वें दिन से 15वें दिन तक की अवधि के दौरान जावक प्रदायों के ब्यौरे देने के लिए अनुज्ञात नहीं होगा :

116. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "परंतु यह और कि" प्रतिस्थापित।

117. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "परंतु यह और भी कि" प्रतिस्थापित।

118. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

(2) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसको धारा 38 की उपधारा (3) के अधीन ब्यौरे या धारा 38 की उपधारा (4) के अधीन इनपुट सेवा वितरक की आवक प्रदायों से संबंधित ब्यौरे संसूचित किए गए हैं, 17वें दिन को या इससे पूर्व इस प्रकार संसूचित ब्यौरे को स्वीकार या अस्वीकार करेगा, परंतु कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 15वें दिन से पूर्व नहीं, तथा उसके द्वारा उपधारा (1) के अधीन दिए गए ब्यौरे तदनुसार संशोधित हो जाएंगे।

119. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "जो धारा 42 या धारा 43 के अधीन बे-मिलान रह गए हैं," विलोपित।



की जाए, ऐसी कर अवधि के लिए दी जाने वाली विवरणी में सुधार करेगा, तथा यदि ऐसी त्रुटि या लोप के कारण कर का कम संदाय हुआ है तो कर और ब्याज, यदि कोई हो, का संदाय करेगा:

परंतु उस वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे ब्यौरे संबंधित हैं, के अंत के पश्चात् [30 नवंबर के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी देने के पश्चात् या सुसंगत वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने के पश्चात्]¹²⁰ उपधारा (1) के अधीन दिए गए ब्यौरे के संबंध में त्रुटि या लोप का कोई सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—इस अध्याय के प्रयोजन के लिए, “जावक प्रदायों के ब्यौरे” पद के अंतर्गत किसी कर—अवधि के दौरान की गई जावक प्रदायों के संबंध में जारी बीजक, नामे पत्र, जमा पत्र और पुनरीक्षित बीजक के ब्यौरे हैं।

[4] किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्तियों के ब्यौरे किसी कर अवधि के लिए प्रस्तुत करना अनुज्ञात नहीं किया जाएगा यदि उसके द्वारा किन्हीं पूर्ववर्ती कर अवधियों के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए गए हैं :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी वर्ग को उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत करना तब भी अनुज्ञात कर सकेगी जब उसने एक या अधिक पूर्ववर्ती कर अवधियों के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत नहीं किए हैं।¹²¹

[5] किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन किसी कर अवधि के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे, उक्त ब्यौरे प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात्, प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो उस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के वर्ग को उपधारा (1) के अधीन किसी कर अवधि के लिए जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत करने के लिए उक्त ब्यौरों को प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात् भी अनुज्ञात कर सकेगी।¹²²

138. आवक पूर्तियों और इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरों की संसूचना—

(1) धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत जावक पूर्तियों तथा ऐसे अन्य पूर्तियों, जो विहित किए जाएं, के ब्यौरे तथा इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरे अंतर्विष्ट करने वाला [विवरण]¹²³ ऐसे प्ररूप और रीति में, ऐसे समय के भीतर और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, ऐसे पूर्तियों के प्राप्तकर्ताओं को इलैक्ट्रॉनिक ढंग से उपलब्ध करवाए जाएंगे।

(2) उपधारा (1) [में निर्दिष्ट विवरण]¹²⁴ निम्नलिखित से मिलकर बनेगा :-

(क) आवक पूर्तियों के ब्यौरे, जिनके संबंध में इनपुट कर का प्रत्यय प्राप्तकर्ता को उपलब्ध हो सकेगा, [***]¹²⁵

120. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द “सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी देने या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने, जो भी पूर्वतर है, के पश्चात्” प्रतिस्थापित।

121. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

122. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

123. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द “स्वतः जनित विवरण” प्रतिस्थापित।

124. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द “के अधीन स्वतः जनित विवरण” प्रतिस्थापित।



(ख) पूर्तियों के ब्यौरे जिनकी बावत प्राप्तकर्ता द्वारा, चाहे पूर्णतः या अंशतः, ऐसे प्रत्यय का लाभ नहीं लिया जा सकेगा, चूँकि अधिनियम की धारा 37 की उप-धारा (1) के अधीन उक्त ब्यौरे [सहित]¹²⁶,-

(i) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा रजिस्ट्रीकरण लेने की ऐसी अवधि, जो विहित की जाए, के भीतर प्रस्तुत किये गये हैं; या

(ii) कर के संदाय में व्यतिक्रम करने वाले किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं, और जहाँ ऐसा व्यतिक्रम ऐसी अवधि के लिए, जो विहित की जाए, निरंतर रहा है; या

(iii) किसी ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं जिसके द्वारा उक्त उपधारा के अधीन प्रस्तुत जावक पूर्तियों के विवरण के अनुसार विहित की जाने वाली अवधि हेतु संदेय आउटपुट कर उसी अवधि हेतु उसके द्वारा संदत्त आउटपुट कर से ऐसी सीमा से अधिक है जो विहित की जाय ; या

(iv) किसी ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं जिसने ऐसी अवधि के दौरान, जो विहित की जाए, उस रकम के इनपुट कर के प्रत्यय का लाभ लिया है जो खंड (क) के अनुसार उपलब्ध प्रत्यय से ऐसी सीमा तक अधिक है, जो विहित की जाए या

(v) किसी ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं जिसने, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन जो विहित किए जाएं, धारा 49 की उपधारा (12) के उपबंधों के अनुसार अपने कर दायित्व के निर्वहन में व्यतिक्रम किया है: या

(vi) ऐसे व्यक्तियों के अन्य वर्ग, जो विहित किए जाए, द्वारा प्रस्तुत किये गये हैं।¹²⁷

125. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द "और" विलोपित।

126. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

127. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी :-

38. आवक प्रदायों के ब्यौरे देना—

(1) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अपनी आवक प्रदायों और जमा या नामे पत्रों के ब्यौरे तैयार करने के लिए धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन संसूचित जावक प्रदायों और जमा या नामे पत्रों से संबंधित ब्यौरे सत्यापित करेगा, विधि मान्य करेगा, उपांतरित करेगा या हटाएगा, यदि अपेक्षित हो और उसमें ऐसी प्रदायों, जो धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन प्रदायकर्ता द्वारा घोषित नहीं की गई हैं, की बावत प्राप्त आवक प्रदायों और जमा या नामे पत्रों के ब्यौरे सम्मिलित कर सकेगा।

(2) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, इलैक्ट्रॉनिक रूप में किसी कर अवधि के दौरान कर योग्य माल या सेवाओं या दोनों की आवक प्रदायों जिसके अंतर्गत माल या सेवाओं या दोनों की ऐसी आवक प्रदायों, जिन पर इस अधिनियम के अधीन विपरीत आधार पर कर संदेय है तथा समन्वित माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन माल या सेवा या दोनों की आवक कराधेय प्रदायों या जिस पर सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन समन्वित माल और सेवा कर संदेय है, और ऐसी प्रदायों के संबंध में प्राप्त जमा या नामे पत्रों उक्त कर अवधि के उत्तरवर्ती मास के 10वें दिन के पश्चात् परंतु 15वें दिन से पूर्व ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए, के ब्यौरे देगा :

परंतु आयुक्त, कारणों को अभिलिखित करते हुए अधिसूचना द्वारा कर योग्य व्यक्ति, के ऐसे वर्ग जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं के लिए ऐसे ब्यौरे देने के लिए समय सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

परंतु यह और कि केन्द्रीय कर के आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा का कोई विस्तार आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।

(3) प्राप्तकर्ता द्वारा उपांतरित, हटाई गई या सम्मिलित की गई प्रदायों और उपधारा (2) के अधीन दिए गए ब्यौरे संबंधित प्रदायकर्ता को ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर, जो विहित की जाए, संसूचित किए जाएंगे।



[ग) ऐसे अन्य ब्यौरे, जो विहित किए जाएं]।¹²⁸

39. विवरणियां देना—

[(1) किसी इनपुट सेवा वितरक या अनिवासी कराधेय व्यक्ति या धारा 10 या धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर का संदाय करने वाले व्यक्ति से भिन्न प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक कलेंडर मास या उसके किसी भाग के लिए माल या सेवाओं या दोनों की आवक और जावक पूर्तियों, प्राप्त किए गए इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर, संदत्त कर और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए ऐसे प्ररूप, रीति [ऐसे समय के भीतर और ऐसी शर्तों और निबंधनों के अधीन रहते हुए]।¹²⁹, जो विहित किया जाए, इलैक्ट्रॉनिक रूप से विवरणी प्रस्तुत करेगा:

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश पर, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय वर्ग को अधिसूचित कर सकेगी, जो ऐसी शर्तों और निबंधनों के, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, अधीन रहते हुए, प्रत्येक तिमाही या उसके किसी भाग के लिए विवरणी प्रस्तुत करेगा।

(2) धारा 10 के उपबंधों के अधीन कर का संदाय करने वाला कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक वित्तीय वर्ष या उसके किसी भाग के लिए, राज्य में आवर्त, माल या सेवाओं या दोनों की आवक पूर्तियों, संदेय कर, संदत्त कर और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए ऐसे प्ररूप, रीति और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, इलैक्ट्रॉनिक रूप से विवरणी प्रस्तुत करेगा।¹³⁰

(4) धारा 39 की उपधारा (2) या उपधारा (4) के अधीन प्राप्तिकर्ता द्वारा दी गई विवरणी में उपांतरित हटाई गई या सम्मिलित की गई प्रदायकों के ब्यौरे संबंधित प्रदायकर्ता को ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए संसूचित कि जाएंगे।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने किसी कर अवधि के लिए उपधारा (2) के अधीन ब्यौरे दिए हैं और जो धारा 42 या धारा 43 के अधीन बे-मिलान रह गए हैं, उसमें किसी त्रुटि या लोप का पता लगने पर ऐसी त्रुटि या लोप का ऐसी रीति में जो विहित की जाए, ऐसी कर अवधि के लिए दी जाने वाली विवरणी में सुधार करेगा तथा यदि ऐसी त्रुटि लोप के कारण कर का कम संदाय हुआ है तो कर और ब्याज, यदि कोई हो, का संदाय करेगा :

परंतु उस वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे ब्यौरे संबंधित हैं, के अंत के पश्चात् सितंबर मास के लिए धारा 39 के अधीन विवरणी देने या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने, जो भी पूर्वतर है, के पश्चात् उपधारा (2) के अधीन दिए गए ब्यौरे के संबंध में त्रुटि या लोप का कोई सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

128. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

129. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द "और ऐसे समय के भीतर" प्रतिस्थापित।

130. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा (1) व उपधारा (2) निम्न प्रकार थीं—

(1) किसी इनपुट सेवा वितरक या किसी अनिवासी कर योग्य व्यक्ति या धारा 10, धारा 51 या धारा 52 के उपबंधों के अधीन कर संदत्त करने वाले किसी व्यक्ति से अन्यथा प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक कलेंडर मास या उसके किसी भाग के लिए इलेक्ट्रॉनिक रूप में माल या सेवा या दोनों की आवक और जावक प्रदायकां, प्राप्त इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर, संदत्त कर और अन्य ऐसी विशिष्टियां और [विलोपित]* या को [ऐसे प्ररूप, रीति में तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए]**, विवरणी देगा।

[परंतु सरकार परिषद् की सिफारिशों पर रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय ऐसे वर्गों को अधिसूचित कर सकेगी, जो ऐसी शर्तों और सुरक्षोपायों के, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, अधीन रहते हुए, प्रत्येक तिमाही या उसके भाग के लिए विवरणी प्रस्तुत करेंगे]***

(2) धारा 10 के उपबंधों के अधीन कर संदाय करने वाला कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति प्रत्येक तिमाही या उसके किसी भाग के लिए ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में जो विहित की जाए, कोई माल या सेवा या दोनों की आवक पूर्तियों, संदेय कर और संदत्त कर की विवरणी, प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के पश्चात् 18 दिन के भीतर इलेक्ट्रॉनिक रूप में संदत्त करेगा।



[(3) धारा 51 के अधीन, स्रोत पर कर कटौती के अपेक्षित प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक कलेंडर मास के लिए, ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित की जाए, मास के दौरान की गई कटौतियों की एक विवरणी इलैक्ट्रॉनिक रूप से प्रस्तुत करेगा :

परन्तु उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक कलेंडर मास के लिए एक विवरणी प्रस्तुत करेगा, चाहे उक्त मास के दौरान कोई कटौतियाँ की गई हों अथवा नहीं।¹³¹

(4) किसी इनपुट सेवा वितरक के रूप में रजिस्ट्रीकृत प्रत्येक कराधेय व्यक्ति प्रत्येक कलेंडर मास या उसके भाग के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए, ऐसे मास की समाप्ति के पश्चात् 13 दिन के भीतर इलैक्ट्रॉनिक रूप में विवरणी देगा।

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत अनिवासी कर योग्य व्यक्ति प्रत्येक कलेंडर मास या उसके किसी भाग के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में जो विहित की जाए कलेंडर मास के अंत के पश्चात् [तेरह]¹³² दिन के भीतर या धारा 27 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट रजिस्ट्रीकरण की अवधि के अंतिम दिन के पश्चात् सात दिन के भीतर जो भी पूर्वतर हो, इलैक्ट्रॉनिक रूप में विवरणी देगा।

(6) आयुक्त, कारणों को अभिलिखित करते हुए अधिसूचना द्वारा इस धारा के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग के लिए जो उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, विवरणियां देने के लिए समय-सीमा विस्तारित कर सकेगा :

परन्तु केन्द्रीय कर आयुक्त के द्वारा अधिसूचित समय-सीमा का कोई विस्तार आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।

[(7) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे उपधारा (1) के अधीन विवरणी प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है और जो ऐसे व्यक्ति से भिन्न है, जिसे उसके परंतुक या उपधारा (3) या उपधारा (5) में निर्दिष्ट किया गया है, सरकार को, ऐसी विवरणी के अनुसार शोध कर का संदाय उस तारीख से पूर्व करेगा, जिसको उसके द्वारा ऐसी विवरणी प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है :

[परन्तु प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो उपधारा (1) के परंतुक के अधीन विवरणी प्रस्तुत कर रहा है, सरकार को ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए –

(क) माल या सेवाओं या दोनों की आवक और जावक पूर्तियों को गणना में लेते हुए लाभ लिए गए इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर और मास के दौरान ऐसी अन्य विशिष्टियों के समतुल्य कर की रकम, या

* बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द "ऐसे कलेंडर मास या उसके किसी भाग के उत्तरवर्ती मास के 20वें दिन या इससे पूर्व" हटाया गया।

** बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द "ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

*** बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा बढ़ाया गया।

131. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

(3) धारा 51 के उपबंधों के अधीन स्रोत पर कर की कटौती करने के लिए अपेक्षित प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित की जाए, उस मास के लिए जिसमें ऐसी कटौती की गई है, ऐसे मास की समाप्ति के पश्चात् दस दिन के भीतर, इलैक्ट्रॉनिक रूप में विवरणी देगा।

132. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "बीस" प्रतिस्थापित।



(ख) खंड (क) में निर्दिष्ट रकम के स्थान पर ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्वधीन रहते हुए, जो विहित किये जाएं, अवधारित रकम का संदाय करेगा।¹³³

परंतु यह और कि उपधारा (2) के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने वाला प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, किसी तिमाही के दौरान, राज्य में आवर्त, माल या सेवाओं या दोनों की आवक पूर्तियों, संदेय कर और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए, ऐसे प्ररूप, रीति और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, सरकार को शोध्य कर का संदाय करेगा।¹³⁴

(8) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन कोई विवरणी देने की अपेक्षा की जाती है, प्रत्येक कर अवधि के लिए विवरणी देगा, चाहे माल या सेवा या दोनों की कोई प्रदाय ऐसी कर अवधि के दौरान की गई या नहीं।

(9) [जहां]¹³⁵ किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (4) या उपधारा (5) के अधीन विवरणी देने के पश्चात् कर प्राधिकारियों द्वारा संवीक्षा, संपरीक्षा, निरीक्षण या प्रवर्तन क्रियाकलाप के परिणामस्वरूप से अन्यथा, उसमें किसी लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का पता चलता है तो वह इस अधिनियम के अधीन ब्याज के संदाय के अध्वधीन, [ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित की जाए]¹³⁶ दी जाने वाली विवरणी में ऐसे लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का सुधार करेगा :

परंतु [ऐसे वित्तीय वर्ष, जिससे ऐसे ब्यौरे संबंधित हैं, की समाप्ति]¹³⁷ के पश्चात् [30 नवम्बर]¹³⁸ विवरणी देने की नियत तारीख के या सुसंगत वार्षिक विवरणी देने की वास्तविक तारीख, जो भी पूर्वतर हो, पश्चात् किसी लोप या अशुद्ध विशिष्टियों का ऐसा सुधार अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

133. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व परंतुक निम्नलिखित था :-

परंतु उपधारा (1) के परंतुक के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने वाला प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, किसी मास के दौरान, माल या सेवाओं या दोनों की आवक और जावक पूर्तियों, प्राप्त किए गए इनपुट कर प्रत्यय, संदेय कर और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ध्यान में रखते हुए, ऐसे प्ररूप रीति और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, सरकार को शोध्य कर का संदाय करेगा :

134. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

(7) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे उपधारा (1) या उपधारा (2) या उपधारा (3) या उपधारा (5) के अधीन कोई विवरणी देने की अपेक्षा की गई है, ऐसी विवरणी के अनुसार देय कर ऐसी विवरणी देने की अंतिम तारीख से अपश्चात् सरकार को संदत्त करेगा।

परंतु सरकार परिपद् की सिफारिशों पर रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय ऐसे वर्गों को अधिसूचित कर सकेगी, जो ऐसी शर्तों और सुरक्षोपायों के, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, अधीन रहते हुए, ऐसी विवरणी के अनुसार, ऐसी विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए उससे अपेक्षित अंतिम तारीख को या उससे पूर्व सरकार को, शोध्य कर या उसके किसी भाग का संदाय करेंगे।*

*बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अन्तःस्थापित।

135. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द और अंक "धारा 37 और धारा 38 के उपबंधों के अध्वधीन यदि" प्रतिस्थापित।

136. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "उस मास या तिमाही, जिसके दौरान ऐसा लोप या अशुद्ध विशिष्टियां ध्यान में आई हैं, के लिये" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

137. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "वित्तीय वर्ष की समाप्ति" के स्थान पर प्रतिस्थापित।



(10) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को किसी कर अवधि के लिए कोई विवरणी देने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा, यदि उसके द्वारा किसी पूर्ववर्ती कर अवधि के लिए [पूर्ववर्ती कर अवधि के लिए विवरणी या उक्त कर अवधि के लिए धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्ति के ब्योरे प्रस्तुत नहीं किए गए हैं:

परन्तु सरकार, परिषद् की सिफारिश पर अधिसूचना द्वारा और ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्यक्षीन रहते हुए, जो उसमें विनिर्दिष्ट किए जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के किसी वर्ग को विवरणी प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात कर सकेगी, यद्यपि उसने एक या अधिक पूर्व कर अवधियों के लिए विवरणियां प्रस्तुत नहीं की हों या उक्त कर अवधि के लिए धारा 37 की उपधारा (1) के अधीन जावक पूर्ति के ब्योरे प्रस्तुत नहीं किये हों।¹³⁹

[(11) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को, किसी कर अवधि के लिए विवरणी प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात्, उक्त विवरणी प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा :

परन्तु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो उस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के वर्ग को, किसी कर अवधि के लिए विवरणी प्रस्तुत करने के लिए, उक्त विवरणी को प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात् भी अनुज्ञात कर सकेगी।¹⁴⁰

40. प्रथम विवरणी—

प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने उस तारीख, जिसको वह रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी बना, से उस तारीख तक जिसको उसे रजिस्ट्रीकरण प्रदान किया गया, के मध्य अवधि में जावक प्रदाईयाँ की हैं, रजिस्ट्रीकरण प्रदान करने के पश्चात् उसके द्वारा दी गई प्रथम विवरणी में उसकी घोषणा करेगा।

41. इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग—

(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अध्यक्षीन रहते हुए, जो विहित किये जाएं, अपनी विवरणी में स्वनिर्धारिती के रूप में पात्र इनपुट कर के प्रत्यय का उपभोग करने का हकदार होगा और ऐसी रकम उसके इलैक्ट्रॉनिक जमा खाते में जमा की जाएगी।

माल या सेवाओं या दोनों की ऐसी पूर्ति की बाबत उपधारा (1) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपभोग किया गया इनपुट कर प्रत्यय, उस पर संदेय कर, पूर्तिकर्ता द्वारा संदत नहीं किया गया है, वह उक्त व्यक्ति द्वारा ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, लागू ब्याज के साथ रिवर्स करेगा :

(2) परन्तु जहां ऐसा पूर्तिकर्ता पूर्वोक्त पूर्ति की बाबत संदेय कर का भुगतान करता है, उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उसके द्वारा यथा पूर्वोक्त रिवर्स की गयी रकम ऐसी रीति में जो विहित की जाए, पुनः प्राप्त कर सकेगा।¹⁴¹

138. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "सितंबर मास के लिए या वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् दूसरी तिमाही के लिए" प्रतिस्थापित।

139. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "विवरणी नहीं दी गई है।" प्रतिस्थापित।

140. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

141. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी :-

41. इनपुट कर प्रत्यय का दावा और उसकी अनंतिम स्वीकृति—

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



42, 43 एवं 43क. [*]142**

(1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसी शर्तों और निबंधनों जो विहित किए जाएं, के अध्यक्षीन यथा स्वनिर्धारित पात्र इनपुट कर का अपनी विवरणी में प्रत्यय लेने का हकदार होगा और ऐसी रकम अनंतिम आधार पर उसकी इलेक्ट्रॉनिक खाते में जमा की जाएगी।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट जमा का उपयोग केवल उक्त उपधारा में निर्दिष्ट विवरणी के अनुसार स्व निर्धारित आउटपुट कर के संदाय के लिए किया जाएगा।

142. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व धाराएं निम्न प्रकार थी :-

42. इनपुट कर प्रत्यय का मिलान, उलटाव और वापस लेना-

(1) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'प्राप्तिकर्ता' कहा गया है) द्वारा किसी कर अवधि के लिए दिए गए प्रत्येक आवक प्रदाय के ब्यौरे का -

(क) तत्स्थानी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में 'प्रदायकर्ता' कहा गया है) द्वारा उसी कर अवधि या किसी पूर्ववर्ती कर अवधि के लिए उसकी विधिमान्य विवरणी में दी गई जावक प्रदाय के तत्स्थानी ब्यौरे के साथ ;

(ख) उसके द्वारा आयातित माल के संबंध में सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन संदत्त समन्वित माल और सेवा कर के साथ; और

(ग) इनपुट कर प्रत्यय के दावों के अनुलिपिकरण के लिए, ऐसी रीति में और ऐसी अवधि के भीतर जो विहित की जाए, मिलान किया जाएगा।

(2) इनपुट कर प्रत्यय का ऐसा दावा जिसके संबंध में आवक पूर्ति की बावत बीजकों या नामे पत्रा, जो तत्स्थानी जावक प्रदाय के ब्यौरों के साथ या सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3 के अधीन आयातित माल के संबंध में उसके द्वारा संदत्त समन्वित माल और सेवा कर के साथ मिलान होता है, अंतिम रूप से स्वीकृत किया जाएगा और ऐसी स्वीकृति प्राप्तिकर्ता को ऐसी रीति में जो विहित की जाए, संसूचित की जाएगी।

(3) जहां आवकप्रदाय के संबंध में किसी प्राप्तिकर्ता द्वारा दावाकृत इनपुट कर प्रत्यय उसी प्रदाय के लिए प्रदायकर्ता द्वारा घोषित कर से अधिक है या प्रदायकर्ता द्वारा अपनी विधिमान्य विवरणियों में जावक प्रदाय घोषित नहीं की गई है, वहां विसंगति दोनों ऐसे व्यक्तियों को ऐसी रीति में जो विहित की जाए संसूचित किया जाएगा।

(4) इनपुट कर जमा के दावों की अनुलिपि प्राप्तिकर्ता को ऐसी रीति में जो विहित की जाए, संसूचित की जाएगी।

(5) किसी ऐसी रकम, जिसके संबंध में उपधारा (3) के अधीन किसी विसंगति की संसूचना दी गई है और जिसको उस मास की विधिमान्य विवरणी में प्रदायकर्ता द्वारा ठीक नहीं किया गया है जिसमें विसंगति संसूचित की गई है, को उस मास के, जिसमें विसंगति की संसूचना दी गई है, के उत्तरवर्ती मास की विवरणी में प्राप्तिकर्ता के आउटपुट कर में ऐसी रीति में जोड़ा जाएगा, जो विहित की जाए।

(6) इनपुट कर प्रत्यय के रूप में दावा की गई रकम जो दावों की आवृत्ति के कारण आधिक्य पाई जाती है, को प्राप्तिकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास, जिसमें आवृत्ति संसूचित की जाती है, की विवरणी में जोड़ा जाएगा।

(7) प्राप्तिकर्ता अपने आउटपुट कर दायित्व से उपधारा (5) के अधीन जोड़ी गई रकम को घटाने का पात्र होगा, यदि प्रदायकर्ता धारा 39 की उपधारा (9) में विनिर्दिष्ट समय-सीमा के भीतर अपनी विधिमान्य विवरणी में बीजक या नामे नोट के ब्यौरों को घोषित करता है।

(8) कोई प्राप्तिकर्ता, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, प्रत्यय लेने की तारीख से उक्त उपधाराओं के अधीन तत्स्थानी वर्धन किए जाने तक इस प्रकार जोड़ी गई रकम पर धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

(9) जहां उपधारा (7) के अधीन आउटपुट कर दायित्व में किसी कटौती को स्वीकार किया गया है तो उपधारा (8) के अधीन संदत्त ब्याज का प्रतिदाय प्राप्तिकर्ता को उसकी इलेक्ट्रॉनिकी नकद खाते में तत्स्थानी शीर्ष में रकम का ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रत्यय करके किया जाएगा :

परंतु किसी भी दशा में प्रत्यय किए गए ब्याज की रकम प्रदायकर्ता द्वारा संदत्त ब्याज की रकम से अधिक नहीं होगी।

(10) उपधारा (7) के उपबंधों के उल्लंघन में आउटपुट कर दायित्व से घटाई गई रकम को प्राप्तिकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास की उसकी विवरणी में जोड़ा जाएगा, जिसमें ऐसा उल्लंघन होता है और प्राप्तिकर्ता इस प्रकार जोड़ी गई रकम पर धारा 50 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

43. आउटपुट कर दायित्व का मिलान, प्रतिलोम और प्रतिदाय-

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



(1) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'प्रदायकर्ता' कहा गया है) द्वारा किसी करावधि के लिए जावक प्रदाय के संबंध में के लिए प्रस्तुत प्रत्येक जमा पत्र के ब्यौरे का -

(क) तत्स्थानी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'प्राप्तिकर्ता' कहा गया है) द्वारा उसी करावधि या अन्य पश्चात्पूर्ती करावधि के लिए उसकी विधिमान्य विवरणी में इनपुट कर प्रत्यय में तत्स्थानी कटौती दावे के लिए; और

(ख) आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए दावों की आवृत्ति के लिए, ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, मिलान किया जाएगा।

(2) प्रदायकर्ता द्वारा आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए ऐसा दावा, जिसका प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय में तत्स्थानी दावे में कमी से मिलान हो जाता है, को अंतिम रूप से स्वीकृत की जाएगी तथा ऐसी स्वीकृति प्रदायकर्ता को रीति में, जो विहित की जाए, संसूचित की जाएगी।

(3) जहां जावक प्रदायों के संबंध में आउटपुट कर दायित्व में कमी इनपुट कर दावे में तत्स्थानी कमी से अधिक हो जाती है या तत्स्थानी जमा पत्र की प्राप्तिकर्ता द्वारा उसकी विधिमान्य विवरणियों में घोषणा नहीं की गई है तो इस विसंगति की संसूचना दोनों ऐसे व्यक्तियों को ऐसी रीति में दी जाएगी, जो विहित की जाए।

(4) आउटपुट कर दायित्व में कमी के लिए दावों के आवृत्ति की संसूचना प्रदायकर्ता को ऐसी रीति में दी जाएगी, जो विहित की जाए।

(5) वह रकम, जिसके संबंध में उपधारा (3) के अधीन कोई विसंगति संसूचित गई है और जिसको प्राप्तिकर्ता द्वारा उस मास की विवरणी, जिसमें ऐसी विसंगति संसूचित की गई है, की विधिमान्य विवरणी में ठीक नहीं किया गया है, को प्रदायकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास के पश्चात्पूर्ती मास, जिसमें विसंगति संसूचित की गई है, की विवरणी में उस रीति में जोड़ दिया जाएगा, जो विहित की जाए।

(6) आउटपुट कर दायित्व में किसी कटौती के संबंध में ऐसी रकम, जो दावों की आवृत्ति के लेखे पाई जाती है, को प्रदायकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास की विवरणी में जोड़ दिया जाएगा, जिसमें ऐसी आवृत्ति संसूचित की जाती है।

(7) प्रदायकर्ता अपने आउटपुट कर दायित्व से उपधारा (5) के अधीन जोड़ी गई रकम को घटाने का पात्र होगा यदि प्राप्तिकर्ता जमा पत्र के ब्यौरों को अपनी विधिमान्य विवरणी में धारा 39 की उपधारा (9) के अधीन विनिर्दिष्ट समय के भीतर घोषित कर देता है।

(8) कोई प्रदायकर्ता, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, इस प्रकार जोड़ी गई रकम के संबंध में आउटपुट कर दायित्व में कटौती के ऐसे दावे की तारीख से उक्त उपधाराओं के अधीन तत्स्थानी जोड़े जाने तक धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

(9) जहां उपधारा (7) के अधीन आउटपुट कर दायित्व में किसी कटौती को स्वीकार किया जाता है वहां उपधारा (8) के अधीन संदत्त ब्याज का प्रतिदाय प्रदायकर्ता को उसकी इलैक्ट्रॉनिकी नकद खाता में तत्स्थानी शीर्ष में ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, रकम का प्रत्यय करके किया जाएगा :

परंतु किसी भी दशा में प्रत्यय किए जाने वाले ब्याज की रकम प्राप्तिकर्ता द्वारा संदत्त ब्याज की रकम से अधिक नहीं होगी।

(10) उपधारा (7) के उपबंधों के उल्लंघन में आउटपुट कर दायित्व से घटाई गई रकम को प्रदायकर्ता के आउटपुट कर दायित्व में उस मास की उसकी विवरणी में जोड़ दिया जाएगा जिसमें ऐसा उल्लंघन होता है और ऐसा प्रदायकर्ता इस प्रकार जोड़ी गई रकम पर धारा 50 की उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट दर पर ब्याज का संदाय करने का दायी होगा।

[43क. विवरणी प्रस्तुत करने और इनपुट कर प्रत्यय के प्राप्यता के लिए प्रक्रिया -

(1) धारा 16 की उपधारा (2), धारा 37 या धारा 38 में किसी बात के होते हुए भी, प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन प्रस्तुत विवरणियों में, प्रदायकर्ताओं द्वारा किए गए प्रदायों के ब्यौरों का सत्यापन, विधिमान्यकरण, उसमें उपांतरण करेगा या उन्हें हटाएगा।

(2) धारा 41, धारा 42 या धारा 43 में किसी बात के होते हुए भी, प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय का फायदा लेने की प्रक्रिया और उसका सत्यापन उस प्रकार किया जाएगा, जो विहित किया जाए।

(3) प्राप्तिकर्ता द्वारा इनपुट कर प्रत्यय का फायदा लेने के प्रयोजनों के लिए, सामान्य पोर्टल पर प्रदायकर्ता द्वारा जावक पूर्तियों के ब्यौरे प्रस्तुत करने की प्रक्रिया वह होगी, जो विहित की जाए।

(4) ऐसे जावक प्रदायों जो उपधारा (3) के अधीन दाखिल नहीं किए गए हैं, के संबंध में इनपुट कर प्रत्यय का फायदा लेने की प्रक्रिया वह होगी, जो विहित की जाए और ऐसी प्रक्रिया में इनपुट कर प्रत्यय की अधिकतम रकम, जो उपलब्ध इनपुट कर प्रत्यय के 20 प्रतिशत से अनधिक हो, सम्मिलित हो सकेगी।



44. वार्षिक विवरणी—

(1)¹⁴³ किसी इनपुट सेवा वितरक से भिन्न प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, धारा 51 या धारा 52 के अधीन कर का संदाय करने वाला कोई व्यक्ति, नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति, इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए ऐसे समय के भीतर और ऐसे प्ररूप और रीति में, जिसे विहित किया जाए, संपरीक्षित वार्षिक वित्तीय विवरण के साथ एक वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करेगा जिसमें वित्तीय वर्ष के लिए प्रस्तुत की गई विवरणी में घोषित पूर्तियों के मूल्य के साथ सुमेलित करते हुए, एक स्वप्रमाणित सुमेलन विवरण सम्मिलित किया जा सकेगा:

परंतु आयुक्त, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के किसी वर्ग को इस धारा के अधीन वार्षिक विवरणी फाइल करने से छुट प्रदान कर सकेगा :

परंतु यह और कि इस धारा में की कोई बात, केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के किसी विभाग या किसी स्थानीय प्राधिकारी को, जिनकी लेखाबहियां भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक द्वारा संपरीक्षा के अधीन हैं या तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन स्थानीय प्राधिकारी के लेखाओं की संपरीक्षा के लिए नियुक्त किसी संपरीक्षक द्वारा की जाने वाली संपरीक्षा के अध्वधीन हैं, लागू नहीं होगी।¹⁴⁴

(5) ऐसी जावक प्रदायों में, जिसके लिए प्रदायकर्ता द्वारा उपधारा (3) के अधीन ब्यौरों को प्रस्तुत किया गया है, विनिर्दिष्ट कर की रकम को, अधिनियम के उपबंधों के अधीन उसके द्वारा संदेय कर के रूप में माना जाएगा।

(6) उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन प्रस्तुत किए गए ऐसे जावक प्रदायों के ब्यौरे जिनकी बावत विवरणी दाखिल नहीं की गयी है, के सम्बन्ध में कर या, यथास्थिति, लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के संदाय हेतु प्रदायकर्ता तथा प्राप्तकर्ता, संयुक्ततः और पृथकतः, दायी होंगे।

(7) उपधारा (6) के प्रयोजनों के लिए, वसूली ऐसी रीति में की जाएगी, जो विहित की जाए और ऐसी प्रक्रिया में गलती से प्राप्त की गई एक हजार रूपए से अनधिक कर या इनपुट कर प्रत्यय की रकम की वसूली न करने के लिए उपबंध हो सकेगा।

(8) (क) रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने के छह मास के भीतर; या

(ख) ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसने कर के संदाय में व्यतिक्रम किया है और जहाँ ऐसा व्यतिक्रम, व्यतिक्रम की रकम के संदाय की अंतिम तारीख से दो मास से अधिक की अवधि के लिए जारी रहता है—

द्वारा उपधारा (3) के अधीन अपेक्षित जावक प्रदायों के ब्यौरों को प्रस्तुत करने की प्रक्रिया, सुरक्षोपाय एवं कर राशि की अवसीमा वह होगी, जो विहित की जाए।*

*बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

143. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा पुनःसंख्यांकित।

144. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्नलिखित थी :-

(1) इनपुट सेवा वितरक, धारा 51 या धारा 52 के अधीन कर संदाय करने वाले व्यक्ति, नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति और अनिवासी कराधेय व्यक्ति से भिन्न प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, प्रत्येक वित्तीय वर्ष के लिए इलेक्ट्रॉनिकी रूप से ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसे वित्तीय वर्ष के पश्चात् 31 दिसंबर को या उससे पूर्व एक वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करेगा।

[परंतु आयुक्त, परिषद् की सिफारिशों पर और लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से अधिसूचना द्वारा रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग, जो उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, के लिए वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने की समय-सीमा को विस्तारित कर सकेगा:

परंतु यह और कि केन्द्रीय कर के आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा के किसी विस्तारण को आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।*]

(2) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे धारा 35 की उपधारा (5) के उपबंधों के अनुसार उसके लेखाओं की संपरीक्षा करवाने की अपेक्षा है, वार्षिक लेखाओं की संपरीक्षित प्रति और वित्तीय वर्ष के लिए प्रस्तुत वार्षिक विवरणी में घोषित प्रदायों के मूल्य को संपरीक्षित वार्षिक वित्तीय विवरण के साथ मिलाते हुए और ऐसी अन्य विशिष्टियों, जो विहित की जाए, के साथ एक समाधान विवरण के साथ इलेक्ट्रॉनिकी रूप में उपधारा (1) के अधीन वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करेगा।



(2) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन किसी वित्तीय वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात् उक्त वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा:

परंतु सरकार, परिपद की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो उस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाएं, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के वर्ग को उपधारा (1) के अधीन वित्तीय वर्ष के लिए वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने के लिए उक्त वार्षिक विवरणी को प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात् भी अनुज्ञात कर सकेगी।¹⁴⁵

[स्पष्टीकरण.—इस धारा के प्रयोजन के लिए यह घोषणा की जाती है कि 1 जुलाई, 2017 से 31 मार्च, 2018 की अवधि के लिए वार्षिक विवरणी [31 जनवरी, 2020]¹⁴⁶ को या उसके पहले प्रस्तुत की जायेगी और 1 अप्रैल, 2018 से 31 मार्च, 2019 की अवधि के लिए वार्षिक विवरणी 31 मार्च, 2020 को या उसके पहले प्रस्तुत की जायेगी।¹⁴⁷

45. अंतिम विवरणी—

प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिससे धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन विवरणी प्रस्तुत करना अपेक्षित है और जिसके रजिस्ट्रीकरण को रद्द कर दिया गया है, रद्द करने की तारीख या रद्द करने के आदेश की तारीख, जो भी पश्चात्पूर्ती हो, से तीन मास के भीतर ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित किया जाए, एक अंतिम विवरणी प्रस्तुत करेगा।

46. विवरणी व्यतिक्रमियों को सूचना—

जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 39, धारा 44 या धारा 45 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने में विफल रहता है तब वहां पन्द्रह दिन के भीतर विवरणी प्रस्तुत करने की अपेक्षा करते हुए ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित किया जाए, एक सूचना जारी की जाएगी।

47. विलंब फीस का उदग्रहण—

(1) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 37 [***]¹⁴⁸ के अधीन अपेक्षित जावक [***]¹⁴⁹ प्रदायों के ब्यौरे या धारा 39 या धारा 45 [या धारा 52]¹⁵⁰ के अधीन वांछित विवरणियाँ नियत तारीख तक प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो वह पांच हजार रूपए की अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए, प्रत्येक ऐसे दिन के लिए जिसके दौरान ऐसी असफलता जारी रहती है, सौ रूपए विलंब फीस का संदाय करेगा।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो सम्यक् तारीख तक धारा 44 के अधीन अपेक्षित विवरणी प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में उसके कारबार के एक चौथाई प्रतिशत पर संगणित

*बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

145. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

146. बिहार माल और सेवा कर (कठिनाईयों को दूर करना, दसवाँ) आदेश, 2019 अधिसूचना संख्या 1368 पटना : दिनांक : 31 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंक और शब्द "31 दिसंबर, 2019" प्रतिस्थापित।

147. बिहार माल और सेवा कर (कठिनाईयों को दूर करना, आठवाँ) आदेश, 2019 अधिसूचना संख्या 1294 पटना : दिनांक : 27 नवम्बर, 2019 द्वारा प्रतिस्थापित।

148. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "या धारा 38" विलोपित।

149. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "या आवक" विलोपित।

150. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए प्रत्येक दिन के लिए जिसके दौरान ऐसी असफलता जारी रहती है, सौ रूपए की विलंब फीस का संदाय करने का दायी होगा।

48. माल और सेवा कर व्यवसायी—

(1) माल और सेवा कर व्यवसायी के अनुमोदन की रीति, उनकी पात्रता शर्तें, कर्तव्य और बाध्यताएं, हटाने की रीति तथा उनके कार्य करने के लिए सुसंगत शर्तें अन्य, वे होंगी, जो विहित की जाएं।

(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति किसी अनुमोदित माल और सेवा कर व्यवसायी को धारा 37 के अधीन जावक प्रदायों के ब्यौरे [***]¹⁵¹ और धारा 39 या धारा 44 या धारा 45 के अधीन विवरणी को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रस्तुत करने के लिए [और ऐसे अन्य कृत्य करने के लिए]¹⁵² प्राधिकृत कर सकेगा।

(3) उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी माल और सेवा कर व्यवसायी द्वारा प्रस्तुत किसी विवरणी या फाइल किए गए अन्य ब्यौरों के सही होने का उत्तरदायित्व उस रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति पर होगा जिसके निमित्त ऐसी विवरणी और ब्यौरे प्रस्तुत किए गए हैं।

151. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "धारा 38 के अधीन जावक प्रदायों के ब्यौरे" विलोपित।

152. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द अंतःस्थापित।



अध्याय 10

कर संदाय

49. कर, ब्याज, शास्ति और अन्य रकमों का संदाय—

(1) किसी व्यक्ति द्वारा इंटरनेट बैंकिंग या क्रेडिट या डेबिट कार्ड या राष्ट्रीय इलैक्ट्रानिकी निधि अंतरण या वास्तविक समय समग्र निपटान या किसी ऐसे अन्य ढंग द्वारा कर, ब्याज, शास्ति, फीस या किसी अन्य रकम के लिए किया गया प्रत्येक जमा का ऐसी शर्तों तथा ऐसे निबंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, ऐसे व्यक्ति की संधारित इलैक्ट्रानिकी नकद खाता में प्रत्यय किया जाएगा।

(2) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की विवरणी में यथा स्व निर्धारित इनपुट कर प्रत्यय का उसकी संधारित इलैक्ट्रानिकी प्रत्यय खाते, में [धारा 41 [***]153]154 के अनुसरण में प्रत्यय किया जाएगा।

(3) इलैक्ट्रानिकी नकद खाते में उपलब्ध रकम का उपयोग इस अधिनियम या तदधीन न बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन संदेय कर, ब्याज, शास्ति, फीस या किसी अन्य रकम का संदाय करने के लिए ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, किया जा सकेगा।

(4) इलैक्ट्रानिकी प्रत्यय खाता में उपलब्ध रकम का उपयोग इस अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन आउटपुट कर दायित्व का संदाय करने के लिए ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों [और निबंधनों]155 के अधीन रहते हुए तथा ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, किया जा सकेगा।

(5) किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की इलैक्ट्रानिकी प्रत्यय खाता में उपलब्ध—

(क) एकीकृत कर के इनपुट कर प्रत्यय की रकम का पहले उपयोग एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, केन्द्रीय कर और राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का उस क्रम में संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

["परंतु राज्य कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग एकीकृत कर के संदाय के लिए केवल वहाँ किया जाएगा, जहाँ केन्द्रीय कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष एकीकृत कर के संदाय के लिए उपलब्ध नहीं है,":] 156

(ख) केन्द्रीय कर के इनपुट कर प्रत्यय की रकम का पहले उपयोग केन्द्रीय कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

(ग) राज्य कर के इनपुट कर प्रत्यय की रकम का पहले उपयोग, राज्य कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

153. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा "या धारा 43क" विलोपित।

154. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "धारा 41" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

155. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

156. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।



[“परंतु राज्य कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग एकीकृत कर के संदाय के लिए केवल वहाँ किया जाएगा, जहाँ केन्द्रीय कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष एकीकृत कर के संदाय के लिए उपलब्ध नहीं है;”] ¹⁵⁷

(घ) संघ राज्यक्षेत्र कर के इनपुट कर प्रत्यय की रकम का पहले उपयोग संघ राज्यक्षेत्र कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा और शेष रकम, यदि कोई हो, का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर का संदाय करने के लिए किया जाएगा ;

[परंतु संघ राज्यक्षेत्र कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग एकीकृत कर के संदाय के लिए केवल वहाँ किया जाएगा, जहाँ केन्द्रीय कर के मद्दे इनपुट कर प्रत्यय का अतिशेष एकीकृत कर के संदाय के लिए उपलब्ध नहीं है;] ¹⁵⁸

(ङ) केन्द्रीय कर के इनपुट कर प्रत्यय की रकम का उपयोग राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का संदाय करने के लिए नहीं किया जाएगा; और

(च) राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का उपयोग केन्द्रीय कर का संदाय करने के लिए नहीं किया जाएगा।

(6) इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय कर, ब्याज, शास्ति, फीस या संदेय किसी अन्य रकम का संदाय करने के पश्चात् इलैक्ट्रानिक नकद खाता या इलैक्ट्रानिक प्रत्यय खाता रकम में शेष का धारा 54 के उपबंधों के अनुसार प्रतिदाय किया जा सकेगा।

(7) इस अधिनियम के अधीन कराधेय व्यक्ति के सभी दायित्वों को इलैक्ट्रानिक देयता रजिस्टर में अभिलिखित किया जाएगा और उनका ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, अनुरक्षण किया जाएगा।

(8) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन अपने कर और अन्य शोध्यों का निम्नलिखित क्रम में निर्वहन करेगा, अर्थात् :-

(क) पूर्व कर कालावधियों से संबंधित विवरणियों के स्व निर्धारित कर और अन्य शोध;

(ख) चालू कर कालावधियों से संबंधित विवरणियों के स्व निर्धारित कर और अन्य शोध;

(ग) इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय कोई अन्य रकम, जिसके अंतर्गत धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क] ¹⁵⁹ के अधीन अवधारित मांग भी है।

(9) प्रत्येक व्यक्ति, जिसने इस अधिनियम के अधीन मालों या सेवाओं या दोनों पर कर संदत्त किया है, जब तक कि उसके द्वारा प्रतिकूल न साबित किया जाए, के बारे में यह समझा जाएगा कि उसने ऐसे कर की पूर्ण रकम को ऐसे मालों या सेवाओं या दोनों के प्राप्तिकर्ता को पास कर दिया है।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, —

(क) प्राधिकृत बैंक में सरकार के खाते में जमा की जाने की तारीख को इलैक्ट्रानिकी नकद खाता में जमा करने की तारीख समझा जाएगा ;

(ख) पद, —

(i) “कर बकाया” से इस अधिनियम के अधीन संदेय कर अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत ब्याज, फीस और शास्ति सम्मिलित नहीं है; और

157. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

158. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

159. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



(ii) 'अन्य शोध' से इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय ब्याज, शास्ति, फीस या कोई अन्य रकम अभिप्रेत है।

[(10) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो विहित किए जाएं, सामान्य पोर्टल पर, इस अधिनियम के अधीन इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते में उपलब्ध किसी कर, ब्याज, शास्ति, फीस की किसी रकम या किसी अन्य रकम को एकीकृत कर, केंद्रीय कर, राज्य कर या उपकर संबंधी इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते में अंतरित कर सकेगा और ऐसे अंतरण को इस अधिनियम के अधीन इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते से प्रतिसंदाय के रूप में समझा जाएगा।

(11) जहां किसी रकम को इस अधिनियम के अधीन इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते में अंतरित किया गया है, वहां उसे उपधारा (1) के उपबंधों के अनुसार उक्त खाते में जमा किया गया समझा जाएगा।¹⁶⁰

[(12) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, इस अधिनियम के अधीन, जावक कर दायित्व के ऐसे अधिकतम भाग को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के किसी वर्ग द्वारा ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, इलैक्ट्रॉनिक जमा खाते के माध्यम से चुकाया जा सकेगा।¹⁶¹

[49क. कतिपय शर्तों के अधीन रहते हुए इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग—

धारा 49 में किसी बात के होते हुए भी राज्य कर इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग, यथास्थिति, एकीकृत कर या राज्य कर के संदाय के मद्दे, केवल तब किया जाएगा, जब एकीकृत कर के मद्दे उपलब्ध इनपुट कर प्रत्यय का पहले ही ऐसे संदाय के प्रति पूर्णतया उपयोग कर लिया गया है।

49ख. इनपुट कर प्रत्यय के उपयोग का आदेश—

इस अध्याय में किसी बात के होते हुए भी और धारा 49 की उपधारा (5) के खंड (ड.) और खंड (च) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, सरकार परिषद् की सिफारिशों से, यथास्थिति, एकीकृत कर, केन्द्रीय कर, राज्य कर या संघ राज्यक्षेत्र कर का, ऐसे कर के संदाय के मद्दे उपयोग किए जाने के क्रम और रीति को विहित कर सकेगी।¹⁶²

50. आस्थगित कर संदाय पर ब्याज—

(1) प्रत्येक व्यक्ति, जो इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसरण में कर का संदाय करने का दायी है, किंतु सरकार को विहित अवधि के भीतर कर या उसके किसी भाग का संदाय करने में असफल रहता है, उस अवधि के लिए जिसके दौरान कर या उसका कोई भाग असंदत्त रहता है, स्वयं, अठारह प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए, पर ब्याज का संदाय करेगा।

[परंतु धारा 39 के उपबंधों के अनुसार, किसी कर अवधि के दौरान की गई पूर्तियों के संबंध में और शोध तारीख के पश्चात् उक्त अवधि के लिए प्रस्तुत विवरणी में घोषित संदेय कर पर ब्याज, सिवाय वहां के जहां ऐसी विवरणी उक्त अवधि के संबंध में धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁶³ के अधीन कोई

^{160.} बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

^{161.} बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

^{162.} बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

^{163.} बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



कार्यवाहियां आरंभ होने के पश्चात् प्रस्तुत की जाती है, कर के उस भाग के लिए संदेय होगा, जिसे इलेक्ट्रॉनिक नकद लेजर से विकलन करके संदत किया जाता है।¹⁶⁴

(2) उपधारा (1) के अधीन ब्याज की संगणना उस दिन, जिसको ऐसा कर संदाय किए जाने के लिए शोध्य था, के पश्चात्पूर्वी दिन से यथाविहित ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, की जाएगी।

[(3) जहां इनपुट कर प्रत्यय का गलत उपभोग और उपयोग किया गया है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, ऐसे गलत उपभोग और उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय पर, सरकार द्वारा, परिपद की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाने वाली चौबीस प्रतिशत से अनधिक दर पर ब्याज का संदाय करेगा और ब्याज की गणना ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, की जाएगी।¹⁶⁵

51. स्रोत पर कर कटौती—

(1) इस अधिनियम में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी सरकार,—

(क) केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के किसी विभाग या स्थापन को; या

(ख) स्थानीय प्राधिकारी को; या

(ग) सरकारी अभिकरणों को; या

(घ) ऐसे व्यक्तियों या व्यक्तियों के ऐसे प्रवर्ग को, जो सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित किया जाए,

(जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'कटौतीकर्ता' कहा गया है), प्रदायकर्ता (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'जिससे कटौती की गई है' कहा गया है) को कराधेय वस्तुओं या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के लिये किए गए संदाय या किए गए प्रत्यय से वहां, जहां ऐसा प्रदाय का कुल मूल्य किसी संविदा के अधीन दो लाख पचास हजार रूपए से अधिक है, के एक प्रतिशत की दर से कर कटौती करने का आदेश दे सकेगी :

परंतु कोई कटौती तब नहीं की जाएगी यदि आप्रदाय का स्थान और में प्रदायकर्ता का स्थान, किसी ऐसे राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में है जो, प्राप्तिकर्ता के रजिस्ट्रीकरण राज्य या कि यथास्थिति संघ राज्यक्षेत्र से भिन्न है।

164. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 वसे प्रभावी। प्रतिस्थापन से पूर्व परंतुक निम्नलिखित था:—

परंतु किसी कर अवधि के दौरान की गई पूर्तियों के संबंध में संदेय कर पर ब्याज को, जिसे धारा 39 के उपबंधों के अनुसार नियत तारीख के पश्चात् उक्त अवधि के लिए प्रस्तुत की गई विवरणी में घोषित किया गया है, सिवाय वहां के, जहां ऐसी विवरणी को उक्त अवधि के संबंध में धारा 73 या धारा 74 के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के प्रारंभ के पश्चात् प्रस्तुत किया जाता है, कर के उस भाग पर उद्गृहीत किया जाएगा, जिसका संदाय इलेक्ट्रॉनिक नकद खाते से राशि को निकालकर किया गया है।*

* बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

165. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित एवं दिनांक 1 जुलाई, 2017 से प्रभावी। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :—

(3) कोई कराधेय व्यक्ति, जो धारा 42 की उपधारा (10) के अधीन इनपुट कर प्रत्यय का अनुचित या आधिक्य का दावा करता है या धारा 43 की उपधारा (10) के अधीन आउटपुट कर दायित्व में अनुचित या आधिक्य कटौती का दावा करता है, तो वह, यथास्थिति, ऐसे अनुचित या आधिक्य दावे या ऐसी अनुचित या आधिक्य कटौती पर केन्द्रीय सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर यथा अधिसूचित चौबीस प्रतिशत से अनधिक दर पर ब्याज का संदाय करेगा।



स्पष्टीकरण—पूर्वोक्त विनिर्दिष्ट कर की कटौती के प्रयोजन के लिए आप्रदाय के मूल्य को बीजक में उपदर्शित केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर, एकीकृत कर और उपकर को विवर्जित करते हुए रकम के रूप में लिया जाएगा।

(2) इस धारा के अधीन कर के रूप में कटौती की गई रकम का कटौतीकर्ता द्वारा उस मास के अंत से दस दिन के भीतर, जिसमें ऐसी कटौती की गई है, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, सरकार को संदाय किया जाएगा।

[3] श्रोत पर कर की कटौती का प्रमाणपत्र ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में जारी किया जाएगा, जो विहित की जाए।¹⁶⁶

[***]¹⁶⁷

(5) जिससे कटौती की जा रही है वह अपने इलैक्ट्रानिक नकद खाता में कटौती किए गए और धारा 39 की उपधारा (3) के अधीन कटौतीकर्ता की विवरणी में उपदर्शित कर के प्रत्यय का दावा ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, प्रस्तुत करेगा।

(6) यदि कोई कटौतीकर्ता उपधारा (1) के अधीन कर के रूप में कटौती की गई रकम का सरकार को संदाय करने में असफल रहता है तो वह कटौती किए गए कर की रकम के अतिरिक्त धारा 50 की उपधारा (1) के उपबंधों के अनुसरण में ब्याज का संदाय करेगा।

(7) इस धारा के अधीन व्यतिक्रम की रकम का अवधारण धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁶⁸ में विनिर्दिष्ट रीति में किया जाएगा।

(8) आधिक्य या त्रुटिपूर्ण कटौती के मद्दे उदभूत कटौती के कटौतीकर्ता या जिससे कटौती की जा रही है, को प्रतिदाय धारा 54 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा :

परंतु कटौतीकर्ता को कोई प्रतिदाय अनुदत्त नहीं किया जाएगा यदि कटौती की गई रकम को, जिससे कटौती की जा रही है, के इलैक्ट्रानिकी नकद खाता में प्रत्यय कर दिया गया है।

52. स्रोत पर कर का संग्रहण—

(1) इस अधिनियम में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट प्रदायकर्ताओं किसी बात के होते हुए भी प्रत्येक इलैक्ट्रानिक वाणिज्य प्रचालक (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'प्रचालक' कहा गया है), जो अभिकर्ता नहीं है, के माध्यम से अन्य द्वारा की गयी ऐसे कराधेय प्रदायों जिनकी बावत प्रतिफल का संग्रहण प्रचालक द्वारा किया गया के शुद्ध मूल्य का एक प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर, जो परिषद की सिफारिशों पर सरकार अधिसूचित करे, से संगणित राशि का संग्रहण करेगा।

166. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(3) कटौती करने वाला, जिससे कटौती की जा रही है, को संविदा मूल्य, कटौती की दर, कटौती की गई रकम, सरकार को संदत्त रकम और ऐसी अन्य विशिष्टियों को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, वर्णित करते हुए एक प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा।

167. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(4) यदि कोई कटौतीकर्ता, जिससे कटौती की जा रही है, को स्रोत पर कर की कटौती करने के पश्चात् सरकार को इस प्रकार कटौती की गई रकम का प्रत्यय करने के पांच दिन के भीतर प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने में असफल रहता तो कटौतीकर्ता विलंब फीस के माध्यम से ऐसी पांच दिन की कालावधि के अवसान के पश्चात् प्रत्येक दिन के लिए जब तक कि ऐसी असफलता को ठीक नहीं कर लिया जाता है, पांच हजार रूपए की अधिकतम रकम के अधीन रहते हुए, सौ रूपए की राशि का संदाय करेगा।

168. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



स्पष्टीकरण— इस उपधारा के प्रयजनों के लिए अभिव्यक्ति “कराधेय प्रदायों का शुद्ध मूल्य” से किसी माह में प्रचालक के माध्यम से सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा, धारा 9 की उप-धारा (5) के अधीन अधिसूचित सेवाओं से भिन्न, मालों या सेवाओं या दोनों के कराधेय प्रदायों के संकलित मूल्य में से घटाये गये उक्त माह में प्रदायकर्ताओं को वापस किये गये कराधेय प्रदायों का संकलित मूल्य

(2) उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करने की शक्ति प्रचालक से किसी अन्य ढंग से वसूली को प्रतिकूल रूप से प्रभावित नहीं करेगी।

(3) उपधारा (1) के अधीन संग्रहित रकम का संदाय प्रचालक द्वारा सरकार को उस मास, जिसमें ऐसा संग्रह किया गया था, के अंत से दस दिन के भीतर ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, किया जाएगा।

(4) प्रत्येक प्रचालक, जो उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करता है, उसके माध्यम से किए जाने वाले मालो या सेवाओं या दोनों की जावक प्रदायों, जिनके अंतर्गत उसके माध्यम से वापस की गई मालों या सेवाओं या दोनों का प्रदाय है तथा मास के दौरान उपधारा (1) के अधीन संग्रहित रकम के ब्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए में ऐसे मास के अंत से दस दिन के पश्चात् इलैक्ट्रानिकी रूप में एक विवरण प्रस्तुत करेगा।

[परंतु आयुक्त, लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से, अधिसूचना द्वारा रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग के लिए, जो उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, विवरण प्रस्तुत करने की समय-सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

परंतु यह और कि केन्द्रीय कर के आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा के किसी विस्तारण को आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।¹⁶⁹

(5) प्रत्येक प्रचालक, जो उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट रकम का संग्रह करता है, उसके माध्यम से की जाने वाली मालो या सेवाओं या दोनों की जावक प्रदायों, जिसके अंतर्गत उसके माध्यम से वापस की गई मालों या सेवाओं या दोनों का प्रदाय है तथा वित्तीय वर्ष के दौरान उपधारा (1) के अधीन संग्रहित रकम के ब्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसे वित्त वर्ष के अंत के पश्चात् 31 दिसंबर से पूर्व इलैक्ट्रानिकी रूप में एक वार्षिक विवरण प्रस्तुत करेगा।

[परंतु आयुक्त, परिषद् की सिफारिशों पर और लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से, अधिसूचना द्वारा रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे वर्ग के लिए, जो उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, वार्षिक विवरण प्रस्तुत करने की समय-सीमा को विस्तारित कर सकेगा :

परंतु यह और कि केन्द्रीय कर के आयुक्त द्वारा अधिसूचित समय-सीमा के किसी विस्तारण को आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया समझा जाएगा।¹⁷⁰

(6) यदि कोई प्रचालक उपधारा (4) के अधीन विवरण प्रस्तुत करने के पश्चात् उसमें कोई लोप या गलत विशिष्टियां पाता है, जो कि संवीक्षा, संपरीक्षा, निरीक्षण या कर प्राधिकारियों के प्रवर्तन कार्यकलापों से भिन्न है तो वह ऐसे उस मास, जिसके दौरान ऐसा लोप या गलत विशिष्टियां ध्यान में आई है, के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले विवरण में लोप या गलत विशिष्टियों को धारा 50 की उपधारा (1) में यथाविनिर्दिष्ट ब्याज के संदाय के अधीन रहते हुए ठीक करेगा :

परंतु ऐसे लोप या गलत विशिष्टियों के ऐसे शुद्ध करने की अनुमतिवित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् [30 नवंबर]¹⁷¹ या सुसंगत वार्षिक विवरण प्रस्तुत करने की वास्तविक तारीख, जो भी पूर्वतर हो, के पश्चात् नहीं दी जाएगी।

¹⁶⁹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

¹⁷⁰. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

¹⁷¹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द “सितंबर मास का विवरण प्रस्तुत करने के लिए नीयत तारीख” प्रतिस्थापित।



(7) प्रदायकर्ता, जिसने प्रचालक के माध्यम से मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय की है, संगृहित रकम और उपधारा (4) के अधीन प्रस्तुत प्रचालक की विवरणी में उपदर्शित रकम का ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, अपनी इलैक्ट्रॉनिक नकद खाता में प्रत्यय का दावा करेगा।

(8) उपधारा (4) के अधीन प्रत्येक प्रचालक द्वारा प्रस्तुत प्रदाय के ब्यौरों का इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत संबंधित प्रदायकर्ता द्वारा प्रस्तुत जावक प्रदाय के तत्स्थानी ब्यौरों के साथ ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, मिलान किया जाएगा।

(9) जहां उपधारा (4) के अधीन प्रत्येक प्रचालक द्वारा प्रस्तुत जावक प्रदाय के ब्यौरे [धारा 37 या धारा 39]¹⁷² के अधीन प्रदायकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत तत्स्थानी ब्यौरों के साथ मिलान नहीं करते हैं तो इस विसंगति की संसूचनादोनों व्यक्तियों को ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, दी जाएगी।

(10) वह रकम, जिसके संबंध में उपधारा (9) के अधीन किसी विसंगति की संसूचना दी गई है और जिसको प्रदायकर्ताओं द्वारा विधिमान्य विवरणी में या प्रचालक द्वारा उस मास के विवरण में, जिसमें विसंगति की संसूचना दी गई थी, ठीक नहीं किया जाता है तो उसे उक्त प्रदायकर्ता के उस मास के पश्चात्पूर्वी मास की विवरणी में जिसमें विसंगति की सूचना दी गई थी के आउटपुट कर दायित्वमें ऐसी रीति से, जो विहित की जाए, जोड़ा जाएगा जहां प्रचालक द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी प्रदायों का मूल्य प्रदायकर्ता द्वारा प्रस्तुत बहिर्गामी प्रदायों के मूल्य से अधिक है।

(11) संबंधित प्रदायकर्ता, जिसके आउटपुट कर दायित्व में उपधारा (10) के अधीन कोई रकम जोड़ी गई है, वह ऐसा प्रदाय के संबंध में धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट दर से जोड़ी गई रकम पर उस तारीख से जब ऐसा कर भुगतेय था, से भुगतान की तारीख तक संगणित ब्याज सहित कर का संदाय करेगा।

(12) उपायुक्त से अन्यून श्रेणी का कोई प्राधिकारी इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों से पूर्व या उनके क्रम में प्रचालक को निम्नलिखित से संबंधित ऐसे ब्यौरे प्रस्तुत करने के लिए सूचना की तामील कर सकेगा—

(क) किसी कालावधि के दौरान ऐसे प्रचालक के माध्यम से की गई मालों या सेवाओं या दोनों का प्रदाय; या

(ख) ऐसे प्रचालक के माध्यम से प्रदाय कर रहे प्रदायकर्ताओं द्वारा गोदामों या भांडागारों, चाहे किसी भी नाम से वे ज्ञात हों, में रखे मालों का स्टॉक, जो प्रचालक द्वारा प्रबंधित हो और ऐसे प्रदायकर्ताओं ने जिसे कारबार के अतिरिक्त स्थान के रूप में घोषित किया है,

जो सूचना द्वारा विनिर्दिष्ट किए जाएं।

(13) प्रत्येक प्रचालक, जिस पर उपधारा (12) के अधीन सूचना की तामील की गई है, ऐसी सूचना की तामील की तारीख से पन्द्रह कार्य दिवस के भीतर अपेक्षित जानकारी प्रस्तुत करेगा।

(14) कोई व्यक्ति, जो उपधारा (12) के अधीन तामील की गई सूचना द्वारा अपेक्षित जानकारी प्रस्तुत करने में असफल रहता है, धारा 122 के अधीन की जा सकने वाली किसी कार्रवाई पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, शास्ति का दायी होगा, जो पच्चीस हजार रूपए तक हो सकेगी।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए “संबंधित प्रदायकर्ता” पद से प्रचालक के माध्यम से मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय करने वाला प्रदायकर्ता अभिप्रेत है।

[15] किसी प्रचालक को उपधारा (4) के अधीन विवरण प्रस्तुत करने की नियत तारीख से तीन वर्ष के अवसान के पश्चात् उक्त विवरण प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया जाएगा :

¹⁷². बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा “धारा 37” के स्थान पर प्रतिस्थापित।



परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, ऐसी शर्तों और निर्बंधनों के अधीन रहते हुए, जो उस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जाएं, किसी प्रचालक या प्रचालकों के वर्ग को उपधारा (4) के अधीन विवरण प्रस्तुत करने के लिए नियत तारीख से तीन वर्ष की अवधि के अवसान के पश्चात् भी उक्त विवरण प्रस्तुत करना अनुज्ञात कर सकेगी।¹⁷³

53. इनपुट कर प्रत्यय का अंतरण—

धारा 49 की उपधारा (5) के उपबंधों के अनुसरण में एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कर बकाया के संदाय के लिए इस अधिनियम के अधीन लिए गए इनपुट कर प्रत्यय के उपयोग, जो धारा 39 की उपधारा (1) के अधीन प्रस्तुत विधिमान्य विवरणी में उपदर्शित है, किये जाने पर राज्य कर के रूप में संगृहित रकम से इस प्रकार उपयोग किए गए प्रत्यय के बराबर रकम को घटा दिया जाएगा और राज्यसरकार राज्यकर लेखे से इस प्रकार घटाई गई रकम के समतुल्य रकम को एकीकृत कर लेखे में ऐसी रीति में और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, अंतरित करेगी।

53क. कतिपय रकमों का अंतरण—

जहां किसी रकम को इस अधिनियम के अधीन इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते से केन्द्रीय कर या एकीकृत कर या उपकर के अधीन इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते में अंतरित किया जाता है, वहां सरकार केन्द्रीय कर या एकीकृत कर या उपकर खाते को, इलैक्ट्रॉनिक नकद खाते से अंतरित की गई रकम के बराबर रकम का ऐसी रीति और ऐसे समय के भीतर, जो विहित किया जाए, अंतरण करेगी।¹⁷⁴

173. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

174. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 11

प्रतिदाय

54. कर प्रतिदाय—

(1) कोई व्यक्ति, जो किसी कर और ऐसे कर पर भुगतित ब्याज, यदि कोई हो तो, या उसके द्वारा भुगतित किसी रकम के प्रतिदाय का दावा करता है वह सुसंगत तारीख से दो वर्ष की समाप्ति से पूर्व ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, आवेदन कर सकेगा :

परंतु कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो धारा 49 की उपधारा (6) के उपबंधों के अनुसरण में इलैक्ट्रानिकी नकद खाता में किसी शेष के प्रतिदाय का दावा करता है वह [ऐसे प्रतिदाय का ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति]¹⁷⁵ में, जो विहित की जाए, दावा कर सकेगा।

(2) संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई विशेषीकृत अभिकरण या कोई अन्य बहुपक्षीय वित्तीय संस्था और संगठन, जो संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियां) अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित है, विदेशी राज्यों के कन्सुलेट या दूतावास या कोई अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग जो धारा 55 के अधीन अधिसूचित है, जो उसके द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों के आवक प्रदायों पर भुगतित कर के प्रतिदाय का पात्र है, ऐसे प्रतिदाय के लिए ऐसे प्ररूप और रीति में, जो विहित किया जाए, में उस तिमाही, जिसमें ऐसी प्रदाय प्राप्त की गई थी, के अंतिम दिन से [दो वर्ष]¹⁷⁶ की समाप्ति से पूर्व आवेदन कर सकेगा।

(3) उपधारा (10) के उपबंधों के अधीन रहते हुए कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति कर अवधि के अंत में ऐसे इनपुट कर प्रत्यय का, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, प्रतिदाय का दावा कर सकेगा :

परंतु निम्नलिखित से भिन्न मामलों में उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय के प्रतिदाय का कोई दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा—

(i) कर का भुगतान किए बिना की गई शून्य दर प्रदाय;

(ii) जहां इनपुट कर प्रत्यय के संचित होने का कारण इनपुट कर दर की तुलना में आउटपुट आपूर्ति कर दर का उच्चतर होना है (शून्य कर दर एवं पूर्णतः कर मुक्त मामलों को छोड़कर), सिवाय वैसे मालों एवं सेवाओं या दोनों की आपूर्ति जो परिषद की सिफारिश पर सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाय;

[***]¹⁷⁷

परंतु यह भी कि इनपुट कर प्रत्ययके किसी प्रतिदाय को स्वीकार नहीं किया जाएगा, यदि मालों या सेवाओं या दोनों का प्रदायकर्ता ऐसी प्रदायों पर भुगतित एकीकृत कर के प्रतिदाय का दावा करता है।

(4) आवेदन के साथ निम्नलिखित संलग्न होंगे—

(क) यह साबित करने के लिए ऐसे दस्तावेजी साक्ष्य कि आवेदक को प्रतिदाय देय है; और

175. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी में ऐसे प्रतिदाय का ऐसी रीति" प्रतिस्थापित।

176. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द "छह मास" प्रतिस्थापित।

177. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा विलोपित। विलोपन से पहले परंतुक निम्न प्रकार था :—

परंतु यह और कि इनपुट कर प्रत्यय, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, के प्रतिदाय को उन मामलों में स्वीकार नहीं किया जाएगा जहां भारत से निर्यात किए गए माल निर्यात शुल्क की शर्त के अधीन है :



(ख) ऐसे दस्तावेजी या अन्य साक्ष्य (धारा 33 में निर्दिष्ट दस्तावेज सहित) जैसा कि आवेदक यह साबित करने के लिए प्रस्तुत करे कि कर की रकम और ब्याज, यदि कोई है, का संदाय किया गया है या ऐसी किसी रकम का संदाय किया गया है जिसके संबंध में ऐसे प्रतिदाय का दावा किया गया है, उस रकम को उससे संग्रहित किया गया था या उसके द्वारा भुगतित किया गया था तथा ऐसे कर और ब्याज का भार किसी अन्य व्यक्ति को पास नहीं किया गया है :

परंतु जहां प्रतिदाय का दावा की गई रकम दो लाख रूपए से कम है, तो आवेदक के लिए कोई दस्तावेज और अन्य साक्ष्य प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं होगा किंतु वह उसके पास उपलब्ध दस्तावेज या अन्य साक्ष्यों के आधार पर यह प्रमाणित करते हुए एक घोषणा फाइल कर सकेगा कि ऐसे कर और ब्याज का भार किसी अन्य व्यक्ति को पास नहीं किया गया है।

(5) यदि किसी ऐसे आवेदन की प्राप्ति पर उचित अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि दावा किए गए प्रतिदाय की संपूर्ण रकम या उसके किसी भाग का प्रतिदाय किया जा सकता है तो वह तदनुसार आदेश करेगा और इस प्रकार अवधारित रकम का धारा 57 में निर्दिष्ट निधि में जमा करेगा।

(6) उपधारा (5) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी समुचित अधिकारी इस निमित्त परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा अधिसूचित किए जाने वाले रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के ऐसे प्रवर्ग से भिन्न रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों द्वारा शून्य दर वाले मालों या सेवाओं या दोनों के प्रतिदाय के दावे के किसी मामले में औपबधिक आधार पर दावा की गई रकम, [***]¹⁷⁸ के नब्बे प्रतिशत का प्रतिदाय ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों, परिसीमाओं और सुरक्षापायों के अधीन रहते हुए जैसा की विहित किया जाए, कर सकेगा तथा तत्पश्चात् उपधारा (5) के अधीन आवेदक द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के सम्यक् सत्यापन के पश्चात् प्रतिदाय के निपटान के लिए अंतिम आदेश करेगा।

(7) उचित अधिकारी उपधारा (5) के अधीन सभी परिप्रेक्ष्यों में संपूर्ण आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के भीतर आदेश जारी करेगा।

(8) उपधारा (5) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी प्रतिदेय रकम का निधि में जमा किए जाने के स्थान पर आवेदक को भुगतान किया जाएगा यदि ऐसी रकम निम्नलिखित से संबंधित है—

(क) शून्य-दरवालेमालों या सेवाओं या दोनों या इनपुट या इनपुट सेवाओं जिनका उपयोग ऐसी [निर्यातों]¹⁷⁹ के लिए किया गया है, पर संदत्त कर का प्रतिदाय ;

(ख) उपधारा (3) के अधीन इनपुट कर प्रत्यय, जिसका उपयोग नहीं किया गया है, का प्रतिदाय;

(ग) ऐसे प्रदाय पर भुगतित कर का प्रतिदाय, जिसको या तो पूर्णतः या अंशतः उपलब्ध नहीं कराया गया है और जिसके लिए बीजक जारी नहीं किया गया है या जहां कोई प्रतिदाय वाउचर जारी किया गया है ;

(घ) धारा 77 के अनुसरण में कर का प्रतिदाय;

(ङ) कर और ब्याज, यदि कोई हो, या आवेदक द्वारा भुगतित कोई रकम, यदि उसने ऐसे कर और ब्याज का भार किसी अन्य व्यक्ति को पास नहीं किया हो; या

(च) आवेदकों के ऐसे अन्य वर्ग, जैसा कि सरकार परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे, द्वारा चुकाया जाने वाला कर या ब्याज।

[8क] जहां केन्द्र सरकार ने राज्य कर के रिफंड को वितरित कर दिया है, सरकार रिफंड की गयी धनराशि के बराबर राशि केन्द्र सरकार को हस्तांतरित करेगी।¹⁸⁰

¹⁷⁸. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "जिसके अंतर्गत अंतिमतः स्वीकृत इनपुट कर प्रत्यय की रकम नहीं है," विलोपित।

¹⁷⁹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "शून्य अंकित पूर्तियों" के स्थान पर प्रतिस्थापित।



(9) अपील अधिकरण या किसी न्यायालय के निर्णय, डिक्री, आदेश या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल किसी बात के होते हुए भी सिवाय उपधारा (8) के उपबंधों के अनुसरण के, कोई प्रतिदाय नहीं किया जाएगा।

(10) जहां किसी ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को [***]¹⁸¹ कोई प्रतिदाय देय है, जिसने कोई विवरणी प्रस्तुत करने में चूक किया है या जिससे कोई कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान किए जाने की अपेक्षा है, जिस पर किसी न्यायालय, अधिकरण या अपील प्राधिकरण ने विनिर्दिष्ट तारीख तक कोई रोक नहीं लगाई है, उचित अधिकारी—

(क) उक्त व्यक्ति द्वारा विवरणी प्रस्तुत करने या यथास्थिति, कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान किए जाने तक देय प्रतिदाय के भुगतान को रोक सकेगा ;

(ख) देयप्रतिदाय में से किसी कर, ब्याज, शास्ति, फीस या किसी अन्य रकम की, जिसका भुगतान करने के लिए कराधेय व्यक्ति दायी है किंतु जो इस अधिनियम या विद्यमान विधि के अधीन अभुगतित रहती है, कटौती कर सकेगा। स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए “विनिर्दिष्ट तारीख” से इस अधिनियम के अधीन अपील फाइल करने की अंतिम तारीख अभिप्रेत है।

(11) जहां कोई आदेश जिससे प्रतिदाय उद्भूत हुआ है किसी अपील या अग्रतर कार्यवाहियों की विषय-वस्तु है या जहां इस अधिनियम के अधीन अन्य कार्यवाहियां लंबित हैं और आयुक्त का यह मत है कि ऐसा प्रतिदाय अनुदत्त करने से उक्त अपील या अन्य कार्यवाही में अपकरण या किए गए कपट के कारण राजस्व के प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने की संभावना है तो वह कराधेय व्यक्ति को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात् प्रतिदाय को उस समय तक, जैसा वह अवधारित करे, विधारित कर सकेगा।

(12) जहां उपधारा (11) के अधीन किसी प्रतिदाय को विधारित किया गया है तो धारा 56 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कराधेय व्यक्ति परिषद् की सिफारिशों पर यथा अधिसूचित छह प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर ब्याज का हकदार होगा यदि अपील या और कार्यवाहियों के परिणाम स्वरूप वह प्रतिदाय का हकदार हो जाता है।

(13) इस धारा में तत्प्रतिकूल किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी नैमित्तिक कराधेय व्यक्ति या धारा 27 की उपधारा (2) के अधीन अनिवासी कराधेय व्यक्ति द्वारा जमा की गई अग्रिम कर की रकम का तब तक प्रतिदाय नहीं किया जाएगा जब तक कि ऐसे व्यक्ति ने उस समस्त कालावधि के लिए, जिसके लिए उसे रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र अनुदत्त किया गया है, के प्रवृत्त रहने की अवधि के लिए धारा 39 के अधीन अपेक्षित सभी विवरणियां दाखिल न कर दी हो।

(14) इस धारा में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी उपधारा (5) या उपधारा (6) के अधीन किसी प्रतिदाय का आवेदक को संदाय नहीं किया जाएगा यदि रकम एक हजार रूपए से कम है।

[(15) इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, माल की पूर्ति की शून्य रेटेड के मद्दे अनुपयोजित इनपुट कर प्रत्यय या माल की शून्य रेटेड पूर्ति के मद्दे संदत्त एकीकृत कर का कोई प्रतिदाय अनुज्ञात नहीं किया जाएगा, जहां माल की ऐसी शून्य रेटेड पूर्ति निर्यात शुल्क के अध्वधीन है।]¹⁸²

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए, —

(1) ‘प्रतिदाय’ में शून्य-दर मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय या ऐसे शून्य दर प्रदायों को करने के लिए उपयोग किए गए इनपुटों या इनपुट सेवाओं के लिए कर का प्रतिदाय या समझे गए निर्यात के रूप

180. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

181. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा शब्द, कोष्ठक और अंक “उपधारा (3) के अधीन” विलोपित।

182. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



में मालों की प्रदाय पर कर प्रतिदाय या उपधारा (3) के अधीन यथाउपबंधित उपयोग न किया गया इनपुट कर प्रत्यय का प्रतिदाय सम्मिलित है।

(2) "सुसंगत तारीख" से निम्नलिखित अभिप्रेत है—

(क) भारत से निर्यात किए गए मालों की दशा में, यथास्थिति, जहां स्वयं ऐसे मालों के लिए या ऐसे मालों में उपयोग किए गए इनपुट या इनपुट सेवाओं के संबंध में भुगतित कर का प्रतिदाय उपलब्ध है, —

(i) यदि मालों का निर्यात समुद्र या वायु मार्ग द्वारा किया जाता है तो वह तारीख जिसको पोत या वह वायुयान, जिसमें ऐसे मालों की लदाई की जाती है, भारत छोड़ता है; या

(ii) यदि मालों का निर्यात भूमि मार्ग से किया जाता है तो वह तारीख जिसको ऐसे माल सीमा से गुजरते हैं; या

(iii) यदि मालों का निर्यात डाक द्वारा किया जाता है तो संबंधित डाकघर द्वारा भारत से बाहर स्थान को मालों के पारेषण की तारीख ;

(ख) मालों के प्रदाय को निर्यात समझे जाने की दशा में जहां भुगतित कर का प्रतिदाय मालों के संबंध में उपलब्ध है, वह तारीख जिसको ऐसे समझे गए निर्यातों के संबंध में विवरणी प्रस्तुत की गई है;

[(खक) विशेष आर्थिक जोन विकासकर्ता या विशेष आर्थिक जोन इकाई को शून्य दर पर माल या सेवाओं अथवा दोनों की पूर्ति की दशा में, जहां, यथास्थिति, उन्हें ऐसी पूर्ति या ऐसी पूर्ति में प्रयुक्त इनपुट या इनपुट सेवाओं की बाबत संदत्त कर का प्रतिदाय उपलब्ध है, ऐसी पूर्तियों की बाबत धारा 39 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने के लिए नियत तारीख]¹⁸³

(ग) भारत से बाहर सेवाओं के निर्यात की दशा में जहां भुगतित कर का प्रतिदाय, यथास्थिति, सेवाओं के लिए स्वयं या ऐसी सेवाओं में उपयोग किए गए इनपुट या इनपुट सेवाओं के संबंध में उपलब्ध है तो निम्नलिखित की तारीख—

(i) संपरिवर्तनीय विदेशी मुद्रा [या भारतीय रूपए में, जहाँ कहीं भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमति दी जाय]¹⁸⁴ में संदाय की रसीद, जहां सेवाओं की प्रदाय को ऐसे संदाय की प्राप्ति से पूर्व पूरा कर लिया गया है; या

(ii) बीजक जारी करना, जहां सेवाओं के लिए संदाय की बीजक जारी करने से पूर्व अग्रिम में प्राप्त कर लिया गया था;

(घ) उस दशा में जहां कर किसी अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या किसी न्यायालय के निर्णय, डिक्री, आदेश या निदेश के परिणामस्वरूप कर प्रतिदेय हो जाता है तो ऐसे निर्णय, डिक्री, आदेश या निदेश के संसूचनकी तारीख;

[(ड.) उपधारा (3) के पहले परंतुक के खंड (ii) के अधीन उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय के प्रतिदाय की दशा में, उस अवधि के लिए, जिसमें ऐसे प्रतिदाय के लिए दावा उत्पन्न होता है, धारा 39 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने की अंतिम तारीख]¹⁸⁵

183. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2022 (बिहार अधिनियम संख्या 01 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 03 पटना : दिनांक : 02 जनवरी, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

184. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

185. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा निम्नलिखित उपखंड के स्थान पर प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपखंड निम्नलिखित था :-



(घ) उस दशा में, जहां कर का अनंतिम रूप से इस अधिनियम या तद्वीन बनाए गए नियमों के अधीन भुगतान किया जाता है तो कर के अंतिम निर्धारण के पश्चात् समायोजन की तारीख ;

(छ) प्रदायकर्ता से भिन्न किसी व्यक्ति की दशा में ऐसे व्यक्ति द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों की प्राप्ति की तारीख; और

(ज) किसी और दशा में कर के भुगतान की तारीख।

55. कतिपय मामलों में प्रतिदाय—

सरकार परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई विशेषीकृत अभिकरण या कोई अन्य बहुपक्षीय वित्तीय संस्था और संगठन, जो संयुक्त राष्ट्र (विशेषाधिकार और उन्मुक्तियों) अधिनियम, 1947 के अधीन अधिसूचित है, विदेशी राज्यों के कन्सुलेट या दूतावास या कोई अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग, जो इस निमित्त विनिर्दिष्ट किए जाएं, जो कि ऐसे निबंधनों और शर्तों, जो विहित की जाएं के अधीन रहते हुए उनके द्वारा प्राप्त मालों या सेवाओं या दोनों की अधिसूचित प्रदाय पर भुगतित कर के प्रतिदाय का दावा करने का हकदार होंगे।

56. विलंबित प्रतिदाय पर ब्याज—

यदि किसी आवेदक को धारा 54 की उपधारा (5) के अधीन किसी कर के प्रतिदाय का आदेश किया गया है और उस धारा की उपधारा (1) के अधीन आवेदन की प्राप्ति की तारीख के साठ दिन के भीतर उसका प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर जारी अधिसूचना में यथाविनिर्दिष्ट छह प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर उक्त धारा के अधीन [आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिनों के पश्चात् की तारीख से हुए विलम्ब की अवधि के लिए, ऐसी रीति से एवं ऐसी शर्तों एवं निर्बंधनों के अधीन रहते हुए जो विहित की जाएं,]¹⁸⁶ ब्याज भुगतेय होगा :

परंतु जहां प्रतिदाय के लिए कोई दावा किसी न्यायनिर्णायक प्राधिकारी या अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय द्वारा पारित किसी आदेश, जो अंतिम आदेश है, से उद्भूत होता है और उसका ऐसे आदेश के परिणामस्वरूप पारित आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के भीतर प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो परिषद् की सिफारिशों पर अधिसूचित की जाने वाली नौ प्रतिशत से अनधिक ऐसी दर पर आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के समाप्ति के पश्चात् की तारीख से ऐसा प्रतिदाय करने की तारीख तक ब्याज भुगतेय होगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए जहां किसी अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या किसी न्यायालय द्वारा धारा 54 की उपधारा (5) के अधीन उचित अधिकारी के किसी आदेश के विरुद्ध प्रतिदाय का आदेश किया जाता है तो अपील प्राधिकारी, अपील अधिकरण या न्यायालय द्वारा पारित आदेश को उक्त उपधारा (5) के अधीन पारित आदेश माना जाएगा।

57. उपभोक्ता कल्याण निधि—

सरकार उपभोक्ता कल्याण निधि नामक एक निधि का गठन करेगी और उस निधि में निम्नलिखित को जमा किया जाएगा—

(क) धारा 54 की उपधारा (5) में निर्दिष्ट रकम ;

(ख) निधि में जमा की गई रकम के विनिधान से कोई आय; और

(ग) उसके द्वारा प्राप्त ऐसी अन्य धनराशियां।

(ड) उपधारा (3) के अधीन उपयोग न किए गए इनपुट कर प्रत्यय की दशा में उस वित्त वर्ष का अंत, जिसमें ऐसे प्रतिदाय का दावा उद्भूत होता है;

186. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "आवेदन की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के समाप्ति के पश्चात् की तारीख से ऐसे कर का प्रतिदाय करने की तारीख तक" प्रतिस्थापित।



58. निधि का उपयोग—

- (1) निधि में जमा की गई सभी राशियों का सरकार द्वारा उपयोग उपभोक्ताओं के कल्याण के लिए ऐसी रीति में किया जाएगा, जो विहित की जाए।
- (2) सरकार या उसके द्वारा विनिर्दिष्ट प्राधिकारी निधि के संबंध में उचित और पृथक लेखे तथा अन्य सुसंगत अभिलेख रखेगा तथा लेखाओं का एक वार्षिक विवरण भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के परामर्श से यथाविहित प्ररूप में तैयार करेगा।



अध्याय 12

कर निर्धारण

59. स्वतः निर्धारण—

प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन संदेय करों का स्वतः निर्धारण करेगा और धारा 39 के अधीन यथाविनिर्दिष्ट प्रत्येक करावधि के लिए विवरणी प्रस्तुत करेगा।

60. अनंतिम निर्धारण—

(1) उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए, जहां कराधेय व्यक्ति मालों या सेवाओं या दोनों के मूल्य का अवधारण करने में या उसको लागू कर की दर का अवधारण करने में असमर्थ है तो वह उचित अधिकारी को लिखित में औपबंधिक आधार पर कर के भुगतान के कारणों को देते हुए अनुरोध करेगा और उचित अधिकारी ऐसा अनुरोध प्राप्त होने की तारीख से नब्बे दिन से अपश्चात् अवधि के भीतर औपबंधिक आधार पर ऐसी दर पर या ऐसे मूल्य पर, जो उसके द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए, कर के भुगतान को अनुज्ञात करेगा।

(2) औपबंधिक आधार पर कर के भुगतान को अनुज्ञात किया जा सकेगा यदि कराधेय व्यक्ति विहित प्ररूप में एकबंध – पत्र और ऐसा प्रतिभू या ऐसी प्रतिभूति, जो उचित अधिकारी उचित समझे, जो कराधेय व्यक्ति को अंतिम रूप से निर्धारित कर और औपबंधिक रूप से निर्धारित कर की रकम के बीच के अंतर का भुगतान करने के लिए बाध्य करती हो, निष्पादित करता है।

(3) उचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन जारी आदेश की संसूचना की तारीख से छह मास से अनधिक अवधि के भीतर कर निर्धारण को अंतिम रूप देने के लिए यथा अपेक्षित ऐसी सूचना को विचार में लेने के पश्चात् अंतिम निर्धारण आदेश पारित करेगा :

परंतु इस उपधारा में विनिर्दिष्ट कालावधि को पर्याप्त कारण उपदर्शित करने पर और कारणों को लेखबद्ध करते हुए संयुक्त आयुक्त या अपर आयुक्त द्वारा छह मास से अनधिक की और अवधि के लिए तथा आयुक्त द्वारा चार वर्ष से अनधिक और अवधि के लिए विस्तारित किया जा सकेगा।

(4) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति मालों या सेवाओं की प्रदाय या दोनों पर औपबंधिक निर्धारण के अधीन संदेय कर, किंतु जिसका भुगतान धारा 39 की उपधारा (7) या तद्विन बनाए गए नियमों में विनिर्दिष्ट नियत तारीख तक नहीं किया गया है, पर धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन निर्दिष्ट दर पर मालों या सेवाओं या दोनों की उक्त प्रदाय के संबंध में कर का भुगतान करने की नियत तारीख के पश्चात् वास्तविक भुगतान की तारीख तक ब्याज का संदाय करने का दायी होगा चाहे ऐसी रकम का भुगतान अंतिम निर्धारण के लिए आदेश जारी करने से पूर्व या पश्चात् किया गया हो।

(5) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उपधारा (3) के अधीन अंतिम निर्धारण के आदेश के परिणामस्वरूप प्रतिदाय का हकदार हो जाता है तो धारा 54 की उपधारा (8) के उपबंधों के अधीन रहते हुए ऐसे प्रतिदाय पर धारा 56 में यथा उपबंधित ब्याज का भुगतान किया जाएगा।

61. विवरणियों की संवीक्षा—

(1) उचित अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत विवरणी और संबंधित विशिष्टियों के सही होने का सत्यापन करने के लिए संवीक्षा करेगा और ध्यान में आई विसंगतियों, यदि कोई हों, की ऐसी रीति, जो विहित की जाए में सूचना देगा तथा उस पर उसका स्पष्टीकरण प्राप्त करेगा।

(2) स्पष्टीकरण के स्वीकार्य पाए जाने की दशा में रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को तदनुसार सूचित किया जाएगा और इस संबंध में कोई और कार्रवाई नहीं की जाएगी।

(3) उचित अधिकारी द्वारा सूचित किए जाने के तीस दिन की कालावधि के भीतर या ऐसी और कालावधि, जो उसके द्वारा मंजूर की जाए में समाधानप्रद स्पष्टीकरण प्रस्तुत न किए जाने की दशा में या जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विसंगतियों को स्वीकार करने के पश्चात् उस मास की विवरणी में, जिसमें विसंगति स्वीकार की गई थी, सुधारकारी उपाय करने में असफल रहता है तो उचित अधिकारी समुचित



कार्रवाई आरंभ कर सकेगा, जिसके अंतर्गत धारा 65 या धारा 66 या धारा 67 के अधीन कार्रवाईयां हैं या धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁸⁷ के अधीन कर और अन्य बकाया का अवधारण करने के लिए अग्रसर होगा।

62. विवरणियों को फाइल नहीं करने वाले का निर्धारण—

(1) धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁸⁸ में तत्प्रतिकूल किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी जहां कोई व्यक्ति धारा 46 के अधीन सूचना की तामील के पश्चात् भी धारा 39 या धारा 45 के अधीन विवरणी प्रस्तुत करने में असफल रहता है तो उचित अधिकारी उपलब्ध तात्विक सामग्री या वह सामग्री, जिसको उसने एकत्रित किया है, को विचार में लेने के पश्चात् और अपनी सर्वोत्तम विवेक से उक्त व्यक्ति का कर निर्धारण करेगा तथा वित्त वर्ष, जिससे अभुगातित कर संबंधित है, की वार्षिक विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए धारा 44 के अधीन विनिर्दिष्ट तारीख से पांच वर्ष की अवधि के भीतर निर्धारण का आदेश जारी करेगा।

(2) जहां रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उपधारा (1) के अधीन निर्धारण आदेश की तामील से [साठ दिन]¹⁸⁹ के भीतर विधिमान्य विवरणी प्रस्तुत कर देता है तो उक्त निर्धारण आदेश का प्रतिसंहरण किया गया समझा जाएगा किंतु धारा 47 के अधीन विलंब फीस के भुगतान या धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन ब्याज का भुगतान करने का दायित्व जारी रहेगा।

[परंतु यह कि जहाँ निबंधित व्यक्ति उपधारा (1) के अधीन कर निर्धारण आदेश के संसूचन के साठ दिनों के अन्दर वैध विवरणी दाखिल करने में विफल रहा हो, वहाँ वह उक्त विवरणी उक्त निर्धारण के संसूचन के साठ दिनों के पश्चात् अगले साठ दिनों की अवधि तक ऐसे विलम्ब की अवधि हेतु एक सौ रुपये प्रतिदिन के अतिरिक्त विलम्ब शुल्क के साथ दाखिल कर सकेगा एवं यदि वह इस विस्तारित अवधि की समाप्ति के पूर्व वैध विवरणी दाखिल कर देता है तो उक्त कर निर्धारण आदेश को वापस लिया जाना माना जाएगा परंतु अधिनियम की धारा 50 की उपधारा (1) के अधीन ब्याज भुगतान करने अथवा अधिनियम की धारा 47 के अधीन विलम्ब शुल्क का दायित्व लागू रहेंगे।]¹⁹⁰

63. अरजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का निर्धारण—

धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁹¹ में तत्प्रतिकूल किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी जहां कोई कराधेय व्यक्ति रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी होते हुए भी रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त करने में असफल रहता है या जिसका रजिस्ट्रीकरण धारा 29 की उपधारा (2) के अधीन रद्द कर दिया गया किंतु जो कर का संदाय करने का दायी था तो उचित अधिकारी उपलब्ध तात्विक सामग्री या वह सामग्री, जिसको उसने एकत्रित किया है, को विचार में लेने के पश्चात् और अपनी सर्वोत्तम जानकारी से उक्त व्यक्ति का करेगा तथा वित्त वर्ष, जिससे अभुगातित कर संबंधित है, की वार्षिक विवरणी को प्रस्तुत करने के लिए धारा 44 के अधीन विनिर्दिष्ट तारीख से पांच वर्ष की अवधि के भीतर निर्धारण का आदेश जारी करेगा :

परंतु व्यक्ति को सुने जाने का अवसर प्रदान किए बिना ऐसा कोई निर्धारण आदेश नहीं किया जाएगा।

187. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

188. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

189. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "तीस दिन" प्रतिस्थापित।

190. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।

191. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



64. कतिपय विशेष मामलों में त्वरित निर्धारण—

(1) उचित अधिकारी उसकी जानकारी में किसी व्यक्ति के कर दायित्व को उपदर्शित करने वाले साक्ष्य के आने पर अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त की पूर्व अनुज्ञा से राजस्व के हित का संरक्षण करने के लिए ऐसे व्यक्ति के कर दायित्व का निर्धारण करते हुए निर्धारण आदेश जारी करेगा यदि उसके पास यह विश्वास करने का पर्याप्त आधार हों कि ऐसा करने में कोई विलंब करने से राजस्व के हित पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है :

परंतु यदि कराधेय व्यक्ति, जिससे दायित्व संबंधित है, का अभिनिश्चयन नहीं किया जा सकने और ऐसा दायित्व मालों की प्रदाय से सम्बंधित होने की दशा में ऐसे मालों के प्रभारी व्यक्ति को निर्धारण के दायी कराधेय व्यक्ति समझा जाएगा और वह कर का और इस धारा के अधीन देय अन्य रकम का भुगतान करने का दायी होगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन पारित आदेश की प्राप्ति की तारीख से तीस दिन के भीतर कराधेय व्यक्ति द्वारा किए गए आवेदन पर या स्वयं अपर आयुक्त या संयुक्त आयुक्त यह विचार करता है कि ऐसा आदेश त्रुटिपूर्ण है तो वह ऐसे आदेश को रद्द कर देगा और धारा 73 और धारा 74 [या धारा 74क]¹⁹² में अधिकथित प्रक्रिया का अनुसरण करेगा।

192. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 13

लेखापरीक्षा

65. कर प्राधिकारियों द्वारा लेखापरीक्षा—

(1) आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी साधारण या विशेष आदेश द्वारा किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की ऐसी कालावधि, ऐसी आवृत्ति और ऐसी रीति, जो विहित की जाए, में लेखापरीक्षा कर सकेगा।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के कारबार के स्थान या अपने कार्यालय में लेखापरीक्षा का संचालन कर सकेंगे।

(3) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को लेखापरीक्षा के संचालन से कम से कम पन्द्रह कार्य दिवस पूर्व विहित रीति से सूचित किया जायेगा।

(4) उपधारा (1) के अधीन लेखापरीक्षा को लेखापरीक्षा के आरंभ होने की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर पूरा किया जाएगा :

परंतु जहां आयुक्त का यह समाधान हो जाता है कि ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के संबंध में लेखापरीक्षा तीन मास के भीतर पूरी नहीं की जा सकती है तो वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए अधिकतम छह मास की और अवधि के लिए कालावधि का विस्तार कर सकेगा।

स्पष्टीकरण— इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए “लेखापरीक्षाका आरंभ” से वह तारीख अभिप्रेत है, जिस तारीख को कर प्राधिकारियों द्वारा मांगे गए अभिलेख और दस्तावेज रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उपलब्ध करा दिए जाते हैं या कारबार के स्थान पर, लेखापरीक्षा के वास्तविक आरंभ की तारीख, इनमें से जो भी पश्चात्कर्ती हों।

(5) लेखापरीक्षा के प्रक्रम में प्राधिकृत अधिकारी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से निम्नलिखित की अपेक्षा कर सकेगा,—

(i) उसकी अपेक्षानुसार लेखा बहियों या अन्य दस्तावेजों के सत्यापन के लिए आवश्यक सुविधा प्रदान करना ;

(ii) उसे ऐसी जानकारी, जो वह अपेक्षा करे, प्रस्तुत करने की तथा लेखापरीक्षा के समय पर पूर्ण करने के लिए सहायता प्रदान करने की।

(6) लेखापरीक्षा के पूर्ण होने पर उचित अधिकारी तीस दिन के भीतर उस रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को, जिसके अभिलेखों की लेखापरीक्षा की गई है, निष्कर्षों, उसके अधिकारों और बाध्यताओं तथा ऐसे निष्कर्षों के कारणों से सूचित करेगा।

(7) जहां उपधारा (1) के अधीन संचालित लेखापरीक्षा का परिणाम कर का संदाय न करना का पता लगने या कम कर संदत्त किए जाने या त्रुटिवश प्रतिदाय किए जाने या इनपुट कर प्रत्यय को गलत तरीके से लेने या उपयोग करने के रूप में होता है तो उचित अधिकारी धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁹³ के अधीन कार्रवाई आरंभ करेगा।

66. विशेष लेखापरीक्षा—

(1) यदि संवीक्षा, जांच, अन्वेषण या उसके समक्ष किन्हीं अन्य कार्यवाहियों के प्रक्रम में सहायक आयुक्त की पंक्ति से अन्यून अधिकारी का मामले की प्रकृति और जटिलता तथा राजस्व के हित में यह मत है कि मूल्य की सही रूप से घोषणा नहीं की गई है या लिया गया प्रत्यय सामान्य सीमाओं के भीतर नहीं है तो वह आयुक्त के पूर्व अनुमोदन से ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को लिखित संसूचना द्वारा उसके अभिलेखों,

¹⁹³. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



जिसके अंतर्गत लेखा बहियां भी हैं, की किसी चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखाकार, जैसा कि आयुक्त द्वारा नामनिर्दिष्ट किया जाए, से जांच करवाने और लेखापरीक्षा करवाने का निदेश दे सकेगा।

(2) इस प्रकार नामनिर्दिष्ट चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखाकार नब्बे दिन की कालावधि के भीतर ऐसी लेखापरीक्षा की उसके द्वारा सम्यक रूप से हस्ताक्षरित और प्रमाणित रिपोर्ट जिसमें अन्य विशिष्टियों का वर्णन करते हुए, जैसा कि विनिर्दिष्ट किया जाए, उक्त सहायक आयुक्त को प्रस्तुत करेगा :

परंतु सहायक आयुक्त उसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखाकार द्वारा किए गए आवेदन पर या किसी तात्विक और पर्याप्त कारण से उक्त कालावधि का नब्बे दिन की और कालावधि से विस्तार कर सकेगा।

(3) उपधारा (1) के उपबंध इस बात के होते हुए भी प्रभावी होंगे कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के लेखाओं की लेखापरीक्षा इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के उपबंधों के अधीन की गई है।

(4) रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन विशेष लेखापरीक्षा के आधार एकत्रित किसी सामग्री, जिसका इस अधिनियम या तद्विन बनाए गए नियमों के अधीन उसके विरुद्ध किन्हीं कार्यवाहियों में उपयोग किया जाना प्रस्तावित है, के संबंध में सुने जाने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

(5) उपधारा (1) के अधीन अभिलेखों की जांच और लेखापरीक्षा के खर्च जिसके अंतर्गत चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखाकार का पारिश्रमिक भी है, का आयुक्त द्वारा निर्धारण और भुगतान किया जाएगा तथा ऐसा निर्धारण अंतिम होगा।

(6) जहां उपधारा (1) के अधीन संचालित लेखापरीक्षा का परिणाम कर का संदाय न करना का पता लगने या कम कर संदत्त किए जाने या त्रुटिवश प्रतिदाय किए जाने या इनपुट कर प्रत्यय को गलत तरीके से लेने या उपयोग करने के रूप में होता है तो उचित अधिकारी धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]¹⁹⁴ के अधीन कार्रवाई आरंभ करेगा।

194. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



अध्याय 14

निरीक्षण, तलाशी, अभिग्रहण और गिरफ्तारी

67. निरीक्षण, तलाशी और अभिग्रहण की शक्ति—

(1) जहां संयुक्त आयुक्त की पंक्ति से अन्यून उचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने का कारण है कि—

(क) जहां किसी कराधेय व्यक्ति ने मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय अपने पास रखे गए मालों के स्टॉक के संबंध में किसी संव्यवहार को छिपाया है या इस अधिनियम के अधीन उसकी हकदारी से अधिक इनपुट कर प्रत्यय का दावा किया है या वह कर अपवंचन के लिए इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के किसी उल्लंघन में लिप्त रहा है; या

(ख) मालों के परिवहन के कारबार में लगा हुआ कोई व्यक्ति या किसी भांडागार या गोदाम या किसी अन्य स्थान का स्वामी या प्रचालक ऐसे मालों को रख रहा है जिन पर कर का संदाय नहीं किया गया है या उसने अपने लेखाओं या मालों को ऐसी रीति में रखा है जिससे इस अधिनियम के अधीन देय कर का अपवंचन होने की संभावना है,

तो वह लिखित में राज्यकर के किसी अधिकारी को कराधेय व्यक्ति के कारबार या मालों के परिवहन के कारबार में लगे हुए व्यक्तियों या भांडागार या गोदाम या किसी अन्य स्थान के प्रचालक या स्वामी के किसी स्थान का निरीक्षण करने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

(2) जहां संयुक्त आयुक्त की पंक्ति से अन्यून उचित अधिकारी के पास या तो उपधारा (1) के अधीन किए गए निरीक्षण के अनुसरण में या अन्यथा यह विश्वास करने का कारण है कि कोई माल जो अधिहरण के लिए दायी है या कोई दस्तावेज या बहियां या चीजें, जो उसके मत में इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लिए उपयोगी या सुसंगत होंगी, जिन्हें किसी स्थान पर छिपाकर रखा गया है तो वह राज्य कर के किसी अन्य अधिकारी को तलाशी और अभिग्रहण करने के लिए लिखित में प्राधिकृत कर सकेगा या ऐसे मालों, दस्तावेजों या बहियों या चीजों की तलाशी ले सकेगा और अभिग्रहण कर सकेगा :

परंतु जहां ऐसे मालों को अभिग्रहण करना व्यवहार्य नहीं है तो समुचित अधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी मालों के स्वामी या अभिरक्षक पर एक आदेश तामिल कर सकेगा कि वह ऐसे अधिकारी की पूर्व अनुमति के सिवाय मालों को नहीं हटाएगा, अलग नहीं करेगा या अन्यथा उनसे व्यौहार नहीं करेगा :

परंतु इस प्रकार अभिग्रहण किए गए दस्तावेज या बहियां या चीजें ऐसे अधिकारी द्वारा केवल तब तक प्रतिधारित की जाएंगी जब तक वह उनकी परीक्षा के लिए और इस अधिनियम के अधीन किसी जांच या कार्यवाहियों के लिए आवश्यक हैं।

(3) उपधारा (2) में निर्दिष्ट दस्तावेज या बहियां या चीजें या कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत अन्य दस्तावेज बहियां या चीजें जिन्हें इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों के अधीन सूचना जारी करने के लिए आधार नहीं बनाया गया है, को ऐसे व्यक्ति को उक्त सूचना जारी करने की तारीख से तीस दिन से अनधिक अवधि के भीतर वापस कर दिया जाएगा।

(4) उपधारा (2) के अधीन प्राधिकृत अधिकारी को किसी परिसर के दरवाजे को सील करने की या तोड़ने की या किसी अलमारी, इलैक्ट्रानिकी युक्ति, बाक्स, संदूक, जिसमें व्यक्ति के कोई माल, लेखे, रजिस्टर या दस्तावेजों को छिपाए जाने का संदेह है, जहां ऐसे परिसर, अलमारी, इलैक्ट्रानिकी युक्ति, बाक्स, संदूक तक उसके पहुंच को रोका जाता है, वहां उन्हें तोड़कर खोल सकेगा।

(5) वह व्यक्ति, जिसकी अभिरक्षा से उपधारा (2) के अधीन किन्हीं दस्तावेजों को अभिग्रहण किया गया है, उनकी प्रतियां बनाने या उनसे प्राधिकृत अधिकारी की उपस्थिति में ऐसे स्थान और ऐसे समय जो ऐसा अधिकारी इस निमित्त उपदर्शित करे, सिवाय जहां ऐसी प्रतियां बनाना या ऐसा उद्धरण लेना समुचित अधिकारी के मत में जांच को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा, लेने का हकदार होगा।



(6) उपधारा (2) के अधीन इस प्रकार अभिग्रहण किया गया माल औपबंधिक आधार पर बंधपत्र निष्पादित करने पर और क्रमशः ऐसी रीति और ऐसे मात्रा की प्रतिभूति प्रस्तुत करने पर, जो विहित की जाए, या यथास्थिति, लागू कर, ब्याज और संदेय शास्ति के संदाय पर निर्मुक्त किया जा सकेगा।

(7) जहां उपधारा (2) के अधीन किन्हीं मालों का अभिग्रहण किया गया है और मालों के अभिग्रहण से छह मास की अवधि के भीतर उनके संबंध में कोई सूचना जारी नहीं की गई है तो मालों को उस व्यक्ति को लौटा दिया जाएगा जिसके कब्जे से उनका अभिग्रहण किया गया था :

परंतु पर्याप्त कारण उपदर्शित करने पर छह मास की अवधि का उचित अधिकारी द्वारा अधिकतम छह मास की और अवधि के लिए विस्तार किया जा सकेगा।

(8) सरकार, शीघ्र नष्ट होने या खतरनाक या, समय के साथ मालों के मूल्य में अवक्षयण होने वाली प्रकृति के मालों या मालों के लिए भंडारण स्थान की कमी या किन्हीं अन्य सुसंगत विचारणों को ध्यान में रखते हुए अधिसूचना द्वारा मालों या मालों के ऐसे वर्ग को, जिसका उचित अधिकारी द्वारा ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, उपधारा (2) के अधीन अभिग्रहण के पश्चात्प्रासंभव शीघ्र निपटान किया जाएगा, निर्दिष्ट कर सकेगी।

(9) जहां कोई माल, जो उपधारा (8) के अधीन विनिर्दिष्ट माल है, जिनका उचित अधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी द्वारा उपधारा (2) के अधीन अभिग्रहण किया गया है, वह ऐसे मालों की ऐसी रीति में जो विहित की जाए, एक सूची तैयार करेगा।

(10) तलाशी और अभिग्रहण के संबंध में दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के उपबंध, जहां तक हो सके इस धारा के अधीन तलाशी और अभिग्रहण को इस उपांतरण के अधीन रहते हुए लागू होंगे कि उक्त संहिता की धारा 165 उपधारा (5) में "मजिस्ट्रेट" शब्द, जहां-जहां वह आता है, के स्थान पर "आयुक्त" शब्द प्रतिस्थापित कर दिया गया था।

(11) जहां समुचित अधिकारी के पास यह विश्वास करने के कारण है कि व्यक्ति ने कर का अपवंचन किया है या वह किसी कर के संदाय के अपवंचन का प्रयास कर रहा है, वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए उसके समक्ष प्रस्तुत ऐसे व्यक्ति के लेखाओं, रजिस्टरों या दस्तावेजों का अभिग्रहण कर सकेगा और उनपर इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन अभियोजन के लिए कार्यवाहियों के संबंध में जब तक आवश्यक हो, अभिग्रहण बनाये रखेगा।

(12) आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा मालों या सेवाओं या दोनों के प्रदाय के सम्बन्ध में कर बीजक या प्रदाय का बिल के निर्गमन की जाँच करने के उद्देश्य से उसके कारबार परिसर से माल या सेवाओं या दोनों का क्रय कर सकेगा और ऐसे अधिकारी द्वारा इस प्रकार क्रय किए गए मालों के वापस करने पर कारबार परिसर का प्रभारी व्यक्ति इस प्रकार संदत्त रकम का पूर्व में जारी कर बीजक या बिल को रद्द करने के पश्चात् प्रतिदाय करेगा।

68. संचलन में मालों का निरीक्षण—

(1) सरकार ऐसी रकम से अधिक मूल्य के, जो उसके द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए, मालों के परिवहन करने वालेवाहन के प्रभारी व्यक्ति से ऐसे दस्तावेजों और ऐसी युक्तियों की, जो विहित की जाए, रखे जाने की अपेक्षा कर सकेगी।

(2) उपधारा (1) के अधीन वहन किए जाने वाले अपेक्षित दस्तावेजों के ब्यौरों का ऐसी रीति में विधिमान्यकरण किया जाएगा, जो विहित की जाए।

(3) जहां उपधारा (1) में निर्दिष्ट किसी परिवहन को किसी स्थान पर उचित अधिकारी द्वारा रोक लिया जाता है तो वह उक्त वाहन के प्रभारी व्यक्ति से उक्त उपधाराके अधीनविहित दस्तावेजों और युक्तियों की सत्यापन करने के लिए प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा और उक्त व्यक्ति दस्तावेजों और युक्तियों के प्रस्तुत करने का दायी होगा तथा मालों के निरीक्षण करवाने की भी स्वीकृति देगा।



69. गिरफ्तार करने की शक्ति—

(1) जहां आयुक्त के पास यह विश्वास करने के कारण हों कि किसी व्यक्ति ने धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) या खंड (घ) में विनिर्दिष्ट कोई अपराध किया है जो उक्त धारा की उपधारा (1) के खंड (i) या खंड (ii) या उपधारा (2) के अधीन दंडनीय है तो वह आदेश द्वारा राज्यकर के किसी अधिकारी को ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए प्राधिकृत करेगा।

(2) जहां किसी व्यक्ति को धारा 132 की उपधारा (5) के अधीन विनिर्दिष्ट किसी अपराध के लिए उपधारा (1) के अधीन गिरफ्तार किया जाता है तो व्यक्ति को गिरफ्तार करने के लिए प्राधिकृत अधिकारी, व्यक्ति को गिरफ्तारी के आधार से अवगत करवाएगा और उसे चौबीस घंटों के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

(3) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, —

(क) जहां किसी व्यक्ति को उपधारा (1) के अधीन धारा 132 की उपधारा (4) के अधीन विनिर्दिष्ट किसी अपराध के लिए गिरफ्तार किया जाता है तो उसे जमानत मंजूर की जाएगी या जमानत के व्यतिक्रम की दशा में मजिस्ट्रेट की अभिरक्षा के लिए अग्रेषित किया जाएगा ;

(ख) असंज्ञेय और जमानतीय अपराध की दशा में किसी गिरफ्तार व्यक्ति को जमानत पर या अन्यथा निर्मुक्त करने के लिए किसी उपायुक्त या सहायक आयुक्त के पास वहीं शक्तियां होंगी जो किसी पुलिस स्टेशन के प्रभारी व्यक्ति के पास होती हैं और वह उन्ही उपबंधों के अधीन रहेगा जिनके अधीन किसी पुलिस स्टेशन के प्रभारी व्यक्ति होता है।

70. व्यक्तियों को साक्ष्य देने और दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए समन करने की शक्ति—

(1) इस अधिनियम के अधीन उचित अधिकारी को किसी व्यक्ति को समन करने की, जिसकी उपस्थिति को किसी जांच में वह साक्ष्य देने के लिए या किसी दस्तावेज या किसी वस्तु को प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक समझता है, उसी रीति में शक्ति सन्निहित होगी जैसा कि सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन किसी सिविल न्यायालय को दी गई है।

[(1क) उपधारा (1) के अधीन समन किए गए सभी व्यक्ति या तो व्यक्तिगत रूप से या किसी प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा उपस्थित होने के लिए आबद्धकर होंगे, जैसा ऐसा अधिकारी निदेप दे और इस प्रकार उपस्थित होने वाला व्यक्ति परीक्षा के दौरान सत्य बोलेगा या कथन करेगा या ऐसे दस्तावेज और अन्य वस्तुएं, जो अपेक्षित हों, प्रस्तुत करेगा।]195

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट प्रत्येक ऐसी जांच को भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थान्तर्गत “न्यायिक कार्यवाहियां” समझा जाएगा।

71. कारबार परिसरों तक पहुंच—

(1) संयुक्त आयुक्त से अन्यून उचित अधिकारी द्वारा इस अधिनियम के अधीन प्राधिकृत किसी अधिकारी की, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के कारबार के किसी स्थान तक, लेखाबहियां, दस्तावेजों, कंप्यूटरों, कंप्यूटर प्रोग्रामों, कंप्यूटर साफ्टवेयर, चाहे किसी कंप्यूटर में प्रतिष्ठापित हो या अन्यथा, अपेक्षित अन्य ऐसी चीजों जो ऐसे स्थान पर उपलब्ध हों, लेखापरीक्षा, संवीक्षा, सत्यापन और जांच के लिए जो राजस्व के हितार्थ आवश्यक हों, तक पहुंच होगी।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट स्थान का प्रत्येक प्रभारी व्यक्ति मांग किए जाने पर उपधारा (1) के अधीन प्राधिकृत अधिकारी को या उचित अधिकारी द्वारा तैनात लेखा परीक्षा दल या धारा 66 के अधीन निर्दिष्ट लागत लेखाकार या चार्टर्ड अकाउंटेंट को निम्नलिखित—

195. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



- (i) ऐसे अभिलेख, जिन्हें रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा तैयार किया गया या रखा गया है और उचित अधिकारी को ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, घोषित किया गया है ;
- (ii) कच्चा चिट्ठा या उसका समतुल्य;
- (iii) वार्षिक वित्तीय लेखे, सम्यक् रूप से अंकित, जहां अपेक्षित हो ;
- (iv) कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 148 के अधीन लागत लेखा परीक्षा रिपोर्ट, यदि कोई हो ;
- (v) आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा 44क ख के अधीन आय कर लेखा परीक्षा रिपोर्ट, यदि कोई हो; और
- (vi) कोई अन्य सुसंगत अभिलेख,

अधिकारी या लेखापरीक्षा दल या चार्टर्ड अकाउंटेंट या लागत लेखाकार द्वारा संवीक्षा करने के लिए उस दिन से, जबऐसी मांग की गई थी, पन्द्रह कार्य दिवस से अनधिक अवधि के भीतर या ऐसी और अधिक अवधि, जो उक्त अधिकारी या लेखा परीक्षा दल या चार्टर्ड लेखाकार या लागत लेखाकार द्वारा मंजूर की जाए, उपलब्ध कराएगा।

72. उचित अधिकारियों की सहायता के लिए अधिकारी—

- (1) पुलिस, रेल, सीमाशुल्क और भू-राजस्व के संग्रहण में लगे हुए अधिकारी, जिसके अंतर्गत ग्रामीण अधिकारी हैं, केन्द्रीय कर के अधिकारी और संघ राज्यक्षेत्र कर के अधिकारी, इस अधिनियम के कार्यान्वयन में उचित अधिकारियों की सहायता करेंगे।
- (2) सरकार अधिसूचना के माध्यम से अधिकारियों के किसी अन्य वर्ग को सशक्त करते हुए इस अधिनियम के कार्यान्वयन के लिए उनसे, आयुक्त द्वारा कहे जाने की दशा में, उचित अधिकारियों को सहयोग प्रदान करने की अपेक्षा कर सकेगी।



अध्याय 15

मांग और वसूली

73. कपट या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाने से भिन्न किसी अन्य कारण से [वित्तीय वर्ष 2023-24 तक की अवधि से संबंधित]¹⁹⁶ असंदत्त कर या कम संदत्त करया त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण—

(1) जहां उचित अधिकारी को यह प्रतीत होता है कि कपट या जानबूझ कोई मिथ्या कथन या कर अपवचन के लिए कर तथ्यों को छिपाए जाने से भिन्न किसी कारण से किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या उसका उपयोग किया गया है तो वह कर, जिसका इस प्रकार संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया या उसका उपयोग किया गया है, के लिए प्रभार्य व्यक्ति को कारण बताओ सूचना तामील करेगा कि क्यों न वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के साथ धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज और इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन उदग्रहणीय शास्ति का संदाय करे।

(2) उचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन सूचना, उपधारा (10) में आदेश जारी करने के लिए में विनिर्दिष्ट समय-सीमा से कम से कम तीन मास पूर्व जारी करेगा।

(3) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी कालावधि के लिए कोई सूचना जारी की गई है तो उचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन आने वाली कालावधियों से भिन्न किन्ही कालावाधियों में संदत्त न किए गए कर या कम संदत्त किए गए या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए या गलत तरीके से लिए या उपभोग किये गए इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए एक विवरण कर से प्रभार्य व्यक्ति पर तामील कर सकेगा।

(4) ऐसे व्यक्ति पर ऐसे विवरण की तामील को इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उपधारा (1) के अधीन आने वाली ऐसी कर अवधियों के लिए प्रयुक्त आधार वहीं हैं, जिनका पूर्व सूचना में वर्णन किया गया है, सूचना की तामील समझा जाएगा।

(5) कर से प्रभार्य व्यक्ति, यथास्थिति, उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील या उपधारा (3) के अधीन विवरण की तामील से पूर्व धारा 50 के अधीन उसके द्वारा संदेय ब्याज के साथ कर की रकम का अपने स्वयं के अवधारणा पर या उचित अधिकारी के अवधारणा पर कर का संदाय कर सकेगा और उचित अधिकारी को ऐसे संदाय की लिखित सूचना देगा।

(6) उचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर इस प्रकार संदत्त कर या इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय किसी शास्ति के लिए यथास्थिति, उपधारा (1) के अधीन सूचना या उपधारा (3) के अधीन विवरण तामील नहीं करेगा।

(7) जहां समुचित अधिकारी का यह मत है कि उपधारा (5) के अधीन संदत्त रकम वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है तो वह ऐसी रकम के संबंध में, जो वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम होती है, के लिए उपधारा (1) में यथा उपबंधित सूचना जारी करेगा।

(8) जहां उपधारा (1) या उपधारा (3) के अधीन कर से प्रभार्य व्यक्ति धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज के साथ उक्त कर का कारण बताओ सूचना जारी करने के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो कोई शास्ति संदेय नहीं होगी और उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा कर लिया गया समझा जाएगा।

196. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



(9) समुचित अधिकारीकर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा किए गए अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् कर, ब्याज और कर के दस प्रतिशत के समतुल्य रकम या दस हजार रूपए, जो भी अधिक हो, के बराबर शक्ति निर्धारित करेगा जो ऐसे व्यक्ति द्वारा भुगतये होगा और एक आदेश जारी करेगा।

(10) समुचित अधिकारी उपधारा (9) के अधीन आदेश को उस वित्त वर्ष, जिसके लिए कर संदत्त नहीं किया गया था या कम संदत्त किया गया था या इनपुट कर प्रत्यय गलत लिया गया था या गलत उपयोग किया गया था या त्रुटिवश प्रतिदाय प्राप्त किया गया था, के लिए वार्षिक विवरणी दाखिल करने की तारीख से तीन वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(11) उपधारा (6) या उपधारा (8) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी उपधारा (9) के अधीन शास्ति वहां संदेय होगी जहां स्वतः निर्धारित कर या कर के रूप में एकत्रित किसी रकम को ऐसे कर के संदाय की निर्धारित तारीख से तीस दिन की कालावधि के भीतर संदत्त नहीं किया गया है।

[12] इस धारा के उपबंध वित्तीय वर्ष 2023-24 तक की अवधि से संबंधित कर के निर्धारण हेतु लागू होंगे।¹⁹⁷

74. कपट या तथ्यों का जानबूझकर मिथ्या कथन या छिपाने के कारण से [वित्तीय वर्ष 2023-24 तक की अवधि से संबंधित]¹⁹⁸ असंदत्त कर या कम संदत्त करया त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण—

(1) जहां उचित अधिकारी को यह प्रतीत होता है कि कपट या जानबूझकर कोई मिथ्या कथन या कर अपवंचन के लिए तथ्यों को छिपाए जाने के कारण से किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया गया है या उसका उपयोग किया गया है तो वह कर, जिसका इस प्रकार संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या इनपुट कर प्रत्यय को गलती से लिया या उसका उपयोग किया गया है, के लिए प्रभार्य व्यक्ति को कारण बताओ सूचना तामील करेगा कि क्यों न वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के साथ धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज और सूचना में निर्दिष्ट कर की राशी के समतुल्य राशि के शास्ति का संदाय करे।

(2) उचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन सूचना, उपधारा (10) में आदेश जारी करने के लिए में विनिर्दिष्ट समय-सीमा से कम से कम छहमास पूर्व जारी करेगा।

(3) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी कालावधि के लिए कोई सूचना जारी की गई है तो उचित अधिकारी उपधारा (1) के अधीन आने वाली कालावधियों से भिन्न किन्ही कालावाधियों में संदत्त न किए गए कर या कम संदत्त किए गए या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए या गलत तरीके से लिए या उपभोग किये गए इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरों को अंतर्विष्ट करते हुए एक विवरण कर से प्रभार्य व्यक्ति पर तामील कर सकेगा।

(4) ऐसे व्यक्ति पर उपधारा (3) के अधीन विवरण की तामील को इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उपधारा (1) के अधीन आने वाली ऐसी कर अवधियों के लिए प्रयुक्त आधार, कपट या कोई मिथ्या कथन या कर अपवंचन के लिए जानबूझकर तथ्यों को छिपाए जाने के सिवाय, वहीं हैं, जिनका पूर्व सूचना में वर्णन किया गया है, धारा 93 की उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील समझा जाएगा।

(5) कर से प्रभार्य व्यक्ति उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील से पूर्व धारा 50 के अधीन उसके द्वारा संदेय ब्याज के साथ कर की रकम का अपने स्वयं के अवधारणा पर या उचित अधिकारी के अवधारणा

197. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

198. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



पर कर तथा ऐसे कर पर पंद्रह प्रतिशत के दर से संगणित शास्ति का संदाय कर सकेगा और उचित अधिकारी को ऐसे संदाय की लिखित सूचना देगा।

(6) उचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर इस प्रकार संदत्त कर या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन संदेय किसी शास्ति के लिए उपधारा (1) के अधीन सूचना तामील नहीं करेगा।

(7) जहां समुचित अधिकारी का यह मत है कि उपधारा (5) के अधीन संदत्त रकम वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है तो वह ऐसी रकम के संबंध में, जो वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम होती है, के लिए उपधारा (1) में यथा उपबंधित सूचना जारी करेगा।

(8) जहां उपधारा (1) के अधीन कर से प्रभार्य कोई व्यक्ति धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज के साथ उक्त कर का और ऐसे कर के पच्चीस प्रतिशत के बराबर शास्ति का सूचना जारी करने के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा कर लिया गया समझा जाएगा।

(9) उचित अधिकारी कर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा किए गए अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति से देय कर की रकम, ब्याज और शास्ति का अवधारण करेगा और आदेश जारी करेगा।

(10) समुचित अधिकारी उपधारा (9) के अधीन आदेश को उस वित्त वर्ष, जिसके लिए कर संदत्त नहीं किया गया था या कम संदत्त किया गया था या इनपुट कर प्रत्यय गलत लिया गया था या गलत उपयोग किया गया था या त्रुटिवश प्रतिदाय प्राप्त किया गया था, के लिए वार्षिक विवरणी दाखिल करने की तारीख से पांच वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(11) जहां कोई व्यक्ति, जिस पर उपधारा (9) के अधीन आदेश तामील की गई है, धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज के साथ कर और ऐसे कर के पचास प्रतिशत के समतुल्य शास्ति का आदेश की संसूचना के तीस दिन के भीतर संदाय कर देता है तो ऐसी सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा।

[(12) इस धारा के उपबंध वित्तीय वर्ष 2023-24 तक की अवधि से संबंधित कर के निर्धारण हेतु लागू होंगे]¹⁹⁹

स्पष्टीकरण 1—धारा 73 और इस धारा के प्रयोजनों के लिए—

(i) “उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां” में धारा 132 के अधीन कार्यवाहियां सम्मिलित नहीं होंगी;

(ii) जहां उन्हीं कार्यवाहियों के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी मुख्य व्यक्ति और कुछ अन्य व्यक्तियों को सूचना जारी की जाती है और ऐसी कार्यवाहियों को धारा 73 या धारा 74 के अधीन मुख्य व्यक्ति के विरुद्ध पूरा कर लिया गया है [तो धारा 122 और धारा 125 के]²⁰⁰ अधीन शास्ति का संदाय करने के लिए दायी सभी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा।

[*]201**

199. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

200. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द और अंक “तो धारा 122, धारा 125, धारा 129 और धारा 130 के” प्रतिस्थापित।

201. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व स्पष्टीकरण निम्नलिखित था :-

वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



174क. वित्तीय वर्ष 2024-25 से तथा आगे किसी कारण से असंदत्त या कम संदत्त या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर या गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय का निर्धारण—

(1) जहां समुचित अधिकारी को यह प्रतीत होता है कि किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या कम संदाय किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या जहां इनपुट कर प्रत्यय गलत तरीके से लिया गया है या उपयोग किया गया है, तो वह ऐसे कर से प्रभार्य उस व्यक्ति को, जिसे इस प्रकार संदत्त नहीं किया गया है या जिसे इस प्रकार कम संदत्त किया गया है या जिस व्यक्ति को त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है, या जिसने गलत तरीके से इनपुट कर प्रत्यय लिया है या उपयोग किया है, उससे यह कारण बताने की अपेक्षा करते हुए क्यों न वह धारा 50 के अधीन उस पर संदेय ब्याज के साथ सूचना में विनिर्दिष्ट रकम तथा इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन उद्ग्रहणीय शास्ति का संदाय करे, सूचना की तामील करेगा :

परन्तु कोई सूचना जारी नहीं की जाएगी यदि किसी वित्तीय वर्ष में वह कर एक हजार रुपये से कम है, जिसे संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया है या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है या गलत तरीके से इनपुट कर प्रत्यय लिया है या उपयोग किया है।

(2) समुचित अधिकारी उस वित्तीय वर्ष के लिए, जिसके लिए कर संदत्त नहीं किया गया है। या कम संदत्त किया गया है या गलत तरीके से इनपुट कर प्रत्यय लिया है या उपयोग किया है, वार्षिक विवरणी प्रस्तुत करने के लिए देय तारीख से बयालीस मास के भीतर या त्रुटिवश प्रतिदाय की तारीख से बयालीस मास के भीतर, उपधारा (1) के अधीन सूचना जारी करेगा।

(3) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी अवधि के लिए सूचना जारी की गई है, वहां समुचित अधिकारी कर से प्रभार्य व्यक्ति पर उपधारा (1) के अन्तर्गत आने वाली अवधियों से भिन्न ऐसी कर अवधियों के लिए असंदत्त या कम संदत्त किए गए या त्रुटिवश प्रतिदाय किए गए कर अथवा गलत तरीके से लिए गए या उपयोग किए गए इनपुट कर प्रत्यय के ब्यौरे अंतर्विष्ट करने वाला एक कथन तामील कर सकेगा।

(4) ऐसे कथन की तामील, उपधारा (1) के अधीन ऐसे व्यक्ति पर इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उपधारा (1) के अन्तर्गत आने वाली अवधियों से भिन्न ऐसी कर अवधियों के लिए विश्वास किए गए आधार पूर्ववर्ती सूचना में उल्लिखित आधारों के समान ही हैं, सूचना की तामील समझी जाएगी।

(5) उस मामले में, जहां कर संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है अथवा गलत तरीके से लिया गया या उपयोग किया गया है, वहां शास्ति,

(i) कर अपवंचन के लिए कपट या किसी जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाने के कारणों से भिन्न, किसी कारण से, ऐसे व्यक्ति से देय कर के दस प्रतिशत के समतुल्य या दस हजार रुपये, जो भी उच्चतर हो, होगी ;

(ii) कर अपवंचन के लिए कपट या किसी जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाने के लिए ऐसे व्यक्ति से देय कर के समतुल्य होगी।

(6) समुचित अधिकारी कर से प्रभार्य किसी व्यक्ति द्वारा किए गए अभ्यावेदन यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात्, ऐसे व्यक्ति से देय कर, ब्याज और शास्ति की रकम निर्धारित करेगा तथा आदेश जारी करेगा।

(7) समुचित अधिकारी उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट सूचना को जारी करने की तारीख से बारह मास के भीतर उपधारा (6) के अधीन आदेश जारी करेगा :

स्पष्टीकरण 2 – इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, “छिपाना” पद से ऐसे तथ्यों या जानकारी को घोषित नहीं करना जिन्हें कराधेय व्यक्ति से इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन विवरणी, विवरण, रिपोर्ट या किसी अन्य दस्तावेज में घोषित करने की अपेक्षा है या लिखित में मांगे जाने पर किसी सूचना को उचित अधिकारी को प्रस्तुत करने में असफलता अभिप्रेत होगा।



परन्तु जहां समुचित अधिकारी विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर आदेश जारी करने में असमर्थ है, वहां आयुक्त या आयुक्त द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी जो समुचित अधिकारी से पंक्ति में वरिष्ठ परन्तु राज्य कर संयुक्त आयुक्त की पंक्ति से न्यून न हो, उपधारा (6) के अधीन आदेश जारी करने में विलंब के कारणों को अभिलिखित करके ध्यान में रखते हुए, विनिर्दिष्ट अवधि के अवसान के पूर्व, उक्त अवधि को अधिकतम छह मास की और अवधि तक बढ़ा सकेगा।

(8) जहां कर अपवंचना के लिए कपट या किसी जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाने के कारणों से भिन्न किसी कारण के लिए, जहां कोई कर संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है अथवा गलत तरीके से लिया गया या उपयोग किया गया है, वहां कर से प्रभार्य व्यक्ति, -

(i) उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील के पूर्व, ऐसे कर के स्व-अभिनिश्चय अथवा समुचित अधिकारी द्वारा यथा अभिनिश्चित कर के आधार पर धारा 50 के अधीन ऐसे कर का संदेय ब्याज सहित कर की रकम का संदाय कर सकेगा और ऐसे संदाय के बारे में लिखित में समुचित अधिकारी को सूचित कर सकेगा तथा समुचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन इस प्रकार संदत्त कर या संदेय किसी शास्ति के संबंध में, यथास्थिति, उपधारा (1) के अधीन किसी सूचना या उपधारा (3) के अधीन कथन की तामील नहीं करेगा;

(ii) कारण बताओ सूचना के जारी करने के साठ दिन के भीतर धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज सहित उक्त कर का संदाय कर सकेगा और ऐसा करने पर कोई शास्ति संदेय नहीं होगी तथा उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाएंगी।

(9) जहां कर अपवंचना के लिए कपट या जानबूझकर किए गए मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाने के कारणों से भिन्न किसी कारण के लिए, जहां कोई कर संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया या त्रुटिवश प्रतिदाय किया गया है अथवा गलत तरीके से लिया गया या उपयोग किया गया है, वहां कर से प्रभार्य व्यक्ति,-

(i) उपधारा (1) के अधीन सूचना की तामील के पूर्व, ऐसे कर के स्व-अभिनिश्चय अथवा समुचित अधिकारी द्वारा यथा अभिनिश्चित कर के आधार पर धारा 50 के अधीन ऐसे कर के संदेय ब्याज और ऐसे कर के पन्द्रह प्रतिशत के समतुल्य शास्ति के साथ कर की रकम का संदाय कर सकेगा और ऐसे संदाय के बारे में लिखित में समुचित अधिकारी को सूचित कर सकेगा, तथा समुचित अधिकारी ऐसी सूचना की प्राप्ति पर इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन इस प्रकार संदत्त कर या संदेय किसी शास्ति के संबंध में, उपधारा (1) के अधीन किसी सूचना की तामील नहीं करेगा;

(ii) सूचना के जारी करने के साठ दिन के भीतर धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज और ऐसे कर के पच्चीस प्रतिशत के समतुल्य शास्ति के साथ उक्त कर का संदाय कर सकेगा और ऐसा करने पर उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाएंगी।

(iii) आदेश की संसूचना के साठ दिन के भीतर धारा 50 के अधीन संदेय ब्याज और ऐसे कर के पचास प्रतिशत के समतुल्य शास्ति के साथ उक्त कर का संदाय कर सकेगा, और ऐसा करने पर, उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाएंगी।

(10) जहां समुचित अधिकारी की यह राय है कि जहां उपधारा (8) के खंड (i) या उपधारा (9) के खंड (i) के अधीन संदत्त रकम वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है, वहां ऐसी रकम के संबंध में, जो वास्तविक रूप से संदेय रकम से कम है, उपधारा (1) में यथा उपबंधित सूचना करने के लिए अग्रसर होगा।

(11) उपधारा (8) के खंड (i) या खंड (ii) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, उपधारा (5) के खंड (i) के अधीन वहां शास्ति संदेय होगी, जहां स्व-निर्धारित कर की कोई रकम या कर के रूप में संग्रहीत कोई रकम ऐसे कर के संदाय की देय तारीख से तीस दिनों के अवधि के भीतर संदत्त नहीं की गई है।

(12) वित्तीय वर्ष 2024-25 से तथा आगे कर के निर्धारण के लिए इस धारा के उपबंध लागू होंगे।



स्पष्टीकरण 1 – इस धारा के प्रयोजनों के लिए—

(i) “उक्त सूचना के संबंध में सभी कार्यवाहियां पद के अन्तर्गत धारा 132 के अधीन कार्यवाहियां सम्मिलित नहीं होंगी ;

(ii) जहां उन्हीं कार्यवाहियों के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी मुख्य व्यक्ति, और किन्ही अन्य व्यक्तियों को सूचना जारी की जाती है और मुख्य व्यक्ति के विरुद्ध ऐसी कार्यवाहियां इस धारा के अधीन समाप्त हो गई हैं, वहां धारा 122 और धारा 125 के अधीन शास्ति का संदाय करने के लिए दायी सभी व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाएंगी।

स्पष्टीकरण 2—इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, “छिपाना” पद से ऐसे तथ्यों या जानकारी की घोषणा न करना अभिप्रेत है, जिसके द्वारा कराधेय व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि वह इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन प्रस्तुत की गई विवरणी, विवरण, रिपोर्ट या किसी अन्य दस्तावेज में समुचित अधिकारी द्वारा लिखित में घोषणा करे या पूछे जाने पर कोई जानकारी प्रस्तुत करने की असफलता की घोषणा करे।²⁰²

75. कर अवधारण के संबंध में साधारण उपबंध—

(1) जहां किसी सूचना की तामील या आदेश के जारी करने पर किसी न्यायालय या अपील अधिकरण द्वारा रोक लगा दी जाती है तो ऐसी रोक की अवधि को, यथास्थिति, धारा 73 की उपधारा (2) और उपधारा (10) तथा धारा 74 की उपधारा (2) और उपधारा (10) [या धारा 74क की उपधारा (2) और उपधारा (7)]²⁰³ में विनिर्दिष्ट अवधि की संगणना करने से विवर्जित किया जाएगा।

(2) जहां कोई अपील प्राधिकरण या अपील अधिकरण या न्यायालय का यह निष्कर्ष है कि धारा 74 की उपधारा (1) के अधीन निर्गत सूचना इस कारण से मान्य नहीं है कि कपट या जानबूझकर मिथ्या कथन या कर अपवंचन के लिए तथ्यों को छिपाना उस व्यक्ति के विरुद्ध साबित नहीं होता है जिसको सूचना जारी की गई थी, तो उचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति द्वारा संदेय कर का यह मानते हुए अवधारण करेगा कि धारा 73 की उपधारा (1) के अधीन सूचना जारी की गई थी।

[2क) जहां किसी अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय का यह निष्कर्ष है कि धारा 74क की उपधारा (5) के खंड (ii) के अधीन शास्ति इस कारण से पोषणीय नहीं है कि कर अपवंचन के लिए कपट या जानबूझकर किए गए किसी मिथ्या कथन या तथ्यों को छिपाने के आरोप उस व्यक्ति के विरुद्ध सिद्ध नहीं किए गए हैं, जिसे सूचना जारी की गई थी, ऐसे व्यक्ति द्वारा शास्ति का संदाय धारा 74क की उपधारा (5) के खंड (i) के अधीन होगा।²⁰⁴

(3) जहां अपील प्राधिकरण या अपील अधिकरण या न्यायालय के निदेशों के अनुसरण में किसी आदेश को जारी करने की अपेक्षा है तो ऐसा आदेश उक्त निदेश की संसूचना की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर जारी किया जाएगा।

(4) सुने जाने के अवसर को वहां प्रदान किया जाएगा जहां कर या शास्ति से प्रभार्य व्यक्ति का लिखित अनुरोध प्राप्त होता है या जहां ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध प्रतिकूल निर्णय अपेक्षित है।

(5) उचित अधिकारी यदि कर से प्रभार्य व्यक्ति द्वारा पर्याप्त कारण उपदर्शित किया जाता है तो उक्त व्यक्ति को समय प्रदान करेगा और कारणों को लेखबद्ध करते हुए सुनवाई को स्थगित कर देगा :

²⁰². बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

²⁰³. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

²⁰⁴. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



परंतु ऐसा कोई स्थगन कार्यवाहियों के दौरान किसी व्यक्ति को तीन बार से अधिक प्रदान नहीं किया जाएगा।

- (6) उचित अधिकारी अपने आदेश में सुसंगत तथ्यों तथा निर्णय के आधार का अधिकथन करेगा।
- (7) आदेश में मांग किए गए कर, ब्याज और शास्ति की रकम सूचना में विनिर्दिष्ट रकम से अधिक नहीं होगी और सूचना में विनिर्दिष्ट आधारों के किसी अन्य आधार पर किसी मांग की पुष्टि नहीं की जाएगी।
- (8) जहां अपील प्राधिकरण या अपील अधिकरण या न्यायालय समुचित अधिकारी द्वारा अवधारित कर की रकम को परिवर्तित करता है तो ब्याज और शास्ति की रकम भी इस प्रकार परिवर्तित कर की रकम को विचार में लेते हुए तदनुसार परिवर्तित हो जाएगी।
- (9) कम संदत्त किए गए या संदत्त नहीं किए गए कर पर ब्याज संदेय होगा चाहे कर दायित्व का अवधारण करने वाले आदेश में विनिर्दिष्ट किया गया हो या नहीं।

[10] न्यायनिर्णयन कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाएंगी, यदि आदेश धारा 73 की उपधारा (10) या धारा 74 की उपधारा (10) या धारा 74क की उपधारा (7) में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर जारी नहीं किया जाता है।²⁰⁵

(11) कोई मुद्दा, जिस पर अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय द्वारा अपना विनिश्चय लिया गया है जो किन्हीं अन्य कार्यवाहियों में राजस्व के हित के प्रतिकूल है और अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय के ऐसे विनिश्चय के विरुद्ध कोई अपील लंबित है तो अपील प्राधिकारी और अपील अधिकरण के विनिश्चय की तारीख या अपील अधिकरण और उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख और उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय के विनिश्चय की तारीख के बीच की कालावधि को धारा 73 की उपधारा (10) या धारा 74 की उपधारा (10) में **[या धारा 74क की उपधारा (7) में]²⁰⁶** निर्दिष्ट कालावधि की संगणना करने में वहां विवर्जित किया जाएगा जहां कार्यवाहियां उक्त धाराओं के अधीन कारण बताओ सूचना जारी करने के माध्यम से प्रारंभ की गई हैं।

(12) धारा 73 या धारा 74 **[या धारा 74क]²⁰⁷** में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जहां धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी के अनुसार स्वतः निर्धारित कर की कोई रकम पूर्णतः या अंशतः अभुगतित रहती है या ऐसे कर पर संदेय ब्याज की कोई रकम अभुगतित रहती है तो उसकी धारा 79 के उपबंधों के अधीन वसूली की जाएगी।

[स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए, “स्वनिर्धारित कर” पद में धारा 37 के अधीन प्रस्तुत किए गए ऐसी बहिर्गामी पूर्तियों के ब्यौरों के संबंध में संदेय कर, सम्मिलित होगा किन्तु धारा 39 के अधीन प्रस्तुत विवरणी में सम्मिलित नहीं किया गया है।²⁰⁸

(13) जहां धारा 73 या धारा 74 **[या धारा 74क]²⁰⁹** के अधीन कोई शास्ति अधिरोपित की जाती है तो उसी कृत्य या लोप के लिए उसी व्यक्ति पर इस अधिनियम के अन्य उपबंधों के अधीन कोई शास्ति अधिरोपित नहीं किया जाएगा।

205. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

(10) न्यायनिर्णयन कार्यवाहियों को पूरा हुआ समझा जाएगा यदि धारा 73 की उपधारा (10) में यथाउपबंधित तीन वर्ष के भीतर या धारा 74 की उपधारा (10) में यथाउपबंधित पांच वर्ष के भीतर आदेश जारी नहीं किया जाता है।

206. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

207. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

208. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा अंतःस्थापित।



76. संगृहित किंतु सरकार को संदत्त न किया गया कर—

(1) अपील प्राधिकरण या अपील अधिकरण या न्यायालय के किसी आदेश या निदेश में या इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी प्रत्येक व्यक्ति, जिसने किसी अन्य व्यक्ति से इस अधिनियम के अधीन कर के रूप में किसी रकम का संग्रह किया है और उक्त रकम का सरकार को संदाय नहीं किया है तो वह तुरंत इस बात के होते हुए कि वह हुए प्रदाय, जिनके संबंध में ऐसी रकम का संग्रह किया गया है, कराधेय है या नहीं, उक्त रकम का सरकार को संदाय करेगा।

(2) जहां उपधारा (1) के अधीन किसी रकम का सरकार को संदाय किया जाना अपेक्षित है और जिसका संदाय नहीं किया गया है तो उचित अधिकारी ऐसी रकम का संदाय करने के लिए दायी व्यक्ति को कारण बताओ सूचना जारी करेगा कि सूचना में यथा विनिर्दिष्ट उक्त रकम को उसके द्वारा सरकार को संदाय क्यों नहीं किया जाना चाहिए तथा सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के समतुल्य शास्ति इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन उस पर अधिरोपित क्यों नहीं की जानी चाहिए।

(3) समुचित अधिकारी उस व्यक्ति द्वारा, जिस पर उपधारा (2) के अधीन सूचना की तामील की गई है, के अभ्यावेदन, यदि कोई हो, पर विचार करने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति से देय रकम का निर्धारण करेगा और तत्पश्चात् ऐसा व्यक्ति इस प्रकार अवधारित रकम का संदाय करेगा।

(4) उपधारा (1) में निर्दिष्ट व्यक्ति उपधारा (1) या उपधारा (3) में निर्दिष्ट रकम का संदाय करने के अतिरिक्त उस पर धारा 50 के अधीन विनिर्दिष्ट दर पर उसके द्वारा संगृहित रकम की तारीख से सरकार को ऐसी रकम का संदाय करने की तारीख तक ब्याज का संदाय करने का भी दायी होगा।

(5) वहां सुने जाने का अवसर प्रदान किया जाएगा जहां ऐसे व्यक्ति से, जिसको कारण बताओ सूचना जारी की गई है, लिखित अनुरोध प्राप्त होता है।

(6) समुचित अधिकारी सूचना जारी करने की तारीख से एक वर्ष के भीतर आदेश जारी करेगा।

(7) जहां आदेश जारी करने पर न्यायालय या अपील अधिकरण के किसी आदेश द्वारा रोक लगाई जाती है तो ऐसी रोक की कालावधि को एक वर्ष की कालावधि की संगणना करने में विवर्जित किया जाएगा।

(8) समुचित अधिकारी अपने आदेश में अपने विनिश्चय के सुसंगत कारणों को अधिकथित करेगा।

(9) उपधारा (1) या उपधारा (3) के अधीन सरकार को संदत्त रकम का उपधारा (1) में निर्दिष्ट प्रदायों के संबंध में व्यक्ति द्वारा संदेय कर, यदि कोई हो, के विरुद्ध समायोजन किया जाएगा।

(10) जहां उपधारा (9) के अधीन समायोजन के पश्चात् कोई आधिक्य शेष बचता है तो ऐसे आधिक्य की रकम का या तो निधि में प्रत्यय किया जाएगा या उस व्यक्ति को प्रतिदाय किया जाएगा जिसने ऐसी रकम को चुकाया है।

(11) वह व्यक्ति, जिसने रकम को चुकाया है, धारा 54 के उपबंधों के अनुसार उसका प्रतिदाय करने के लिए आवेदन कर सकेगा।

77. गलती से संगृहित किया गया और केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार को संदत्त किया गया कर—

(1) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने उसके द्वारा राज्यान्तर्गतप्रदाय समझे जाने वाले किसी संव्यवहार पर केन्द्रीय कर और राज्य कर संदत्त किया है किंतु जिसे पश्चात्पूर्ती रूप से अंतर्राज्यिकप्रदाय अभिनिर्धारित किया गया है, को इस प्रकार संदत्त रकम का ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाए, प्रतिदाय किया जाएगा।

209. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



(2) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसने उसके द्वारा अंतर्राज्यकप्रदाय समझे जाने वाले किसी संव्यवहार पर एकीकृत कर संदत्त किया है किन्तु जिसे पश्चात्कर्ती रूप से राज्यान्तर्गतप्रदाय अभिनिर्धारित किया गया है, से, यथास्थिति, संदेय राज्य कर की रकम पर ब्याज का संदाय करने की अपेक्षा नहीं होगी।

78. वसूली कार्यवाहियों का आरंभ किया जाना—

इस अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश के अनुसरण में कराधेय व्यक्ति द्वारा संदेय किसी रकम को ऐसे व्यक्ति द्वारा ऐसे आदेश की तारीख की तारीख से तीन मास की कालावधि के भीतर संदत्त किया जाएगा, जिसके न हो सकने पर वसूली कार्यवाहियां आरंभ की जाएंगी :

परंतु जहां उचित अधिकारीराजस्व हित में ऐसा करना समीचीन समझता है तो वह कारणों को लेखबद्ध करते हुए उक्त कराधेय व्यक्ति से उसके द्वारा ऐसी तीन मास से कम विनिर्दिष्ट कालावधि के भीतर संदाय करने की अपेक्षा कर सकेगा।

79. कर की वसूली—

(1) जहां इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के किन्हीं उपबंधों के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा सरकार को संदेय किसी रकम को संदत्त नहीं किया जाता है तो समुचित अधिकारी निम्नलिखित एक या अधिक ढंगों से रकम को वसूल कर सकेगा अर्थात् :-

(क) समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति को देय किसी रकम को वैसे पैसे से जिस पर उसका स्वामित्व हो और उचित अधिकारी या अन्य किसी विनिर्दिष्ट अधिकारी के नियंत्रण में हो, से इस प्रकार कटौती कर सकेगा या किसी अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी से उस रकम की कटौती करने की अपेक्षा कर सकेगा।

(ख) उचित अधिकारी भुगतये राशि की वसूली या अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी से उस राशि की वसूली की अपेक्षा उस व्यक्ति के मालों जो की उचित या अन्य विनिर्दिष्ट अधिकारी के नियंत्रण में हो, को निरुद्ध और विक्रय करके कर सकेगा।

(ग) (i) उचित अधिकारी, लिखित सूचना के द्वारा, ऐसे किसी अन्य व्यक्ति को जिससे किसी ऐसे व्यक्ति को कोई धन शोध्य है या हो सकता है या ऐसे किसी अन्य व्यक्ति को, जो ऐसे व्यक्ति के लिए या उसके मदे कोई धन धारण करता है या पश्चात्कर्ती रूप में धारण कर सकेगा, निदेश दे सकेगा कि वह सरकारी को, विनिर्दिष्ट रीति से धन शोध्य होने पर या धारण करने पर तुरन्त या सूचना में विनिर्दिष्ट समय के भीतर (जो धन शोध्य होने या धारण करने के पूर्व नहीं हो) उतना धन जितना इस अधिनियम के अधीन उस व्यक्ति से शोध्य राशि चुकाने के लिए पर्याप्त हो, या कुल धन जब वह उक्त रकम के बराबर या उससे कम हो, जमा कर दें;

(ii) प्रत्येक व्यक्ति, जिसे उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी की जाती है ऐसी सूचना का अनुपालन करने के लिए आबद्ध होगा और विशेषतया जहां ऐसी सूचना किसी डाकघर, बैंककारी कंपनी या किसी बीमाकर्ता को जारी की जाती है तो किसी पासबुक, जमा रसीद, पालिसी या किसी अन्य दस्तावेज को किसी प्रविष्टि, पृष्ठांकन या संदाय किए जाने से पूर्व इस बात के होते हुए भी कि तत्प्रतिकूल कोई नियम, पद्धति या अपेक्षा है, प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं होगा ;

(iii) किसी व्यक्ति को, जिसे उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी की गई है, के उसके अनुसरण में सरकार को संदाय करने में असफल रहने की दशा में वह सूचना में विनिर्दिष्ट रकम के संबंध में व्यतिक्रमी समझा जाएगा और उसे इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए सभी नियमों के परिणाम लागू होंगे ;

(iv) उपखंड (i) के अधीन सूचना जारी करने वाला अधिकारी किसी भी समय ऐसी सूचना का संशोधन कर सकेगा या प्रतिसंहरण कर सकेगा या सूचना के अनुसरण में भुगतान के लिए समय का विस्तार कर सकेगा ;

(v) उपखंड (i) के अधीन जारी सूचना की अनुपालन में कोई भुगतान करने वाले किसी व्यक्ति को व्यतिक्रमी व्यक्ति के प्राधिकार के अधीन भुगतान करने वाला समझा जाएगा और ऐसे



भुगतान राशि का सरकार में जमा किए जाने पर ऐसे व्यतिक्रमी व्यक्ति के दायित्व का, रसीद में विनिर्दिष्ट रकम की सीमा तक अच्छा और पर्याप्त निर्वहन समझा जाएगा ;

(vi) व्यतिक्रमी व्यक्ति के किसी दायित्व का उपखंड (i) के अधीन जारी सूचना की तामील के पश्चात् निर्वहन करने वाला कोई व्यक्ति निर्वहन किए गए दायित्व के सीमा तक या व्यतिक्रमी के कर, ब्याज और शास्ति के दायित्व की सीमा तक इनमें से जो भी कम हो, व्यक्तिगत रूप से सरकार के प्रति दायी होगा ;

(vii) जहां किसी व्यक्ति पर उपधारा (1) के अधीन सूचना तामील की गई है वहां सूचना जारी करने वाले अधिकारी के समाधानप्रद रूप में यह साबित हो जाता है कि मांग धन या उसका कोई भाग व्यतिक्रम वाले व्यक्ति, को देय नहीं था, या जिस समय उस पर सूचना तामील की गई थी उस समय ऐसे व्यक्ति के लिए या उसकी ओर से कोई धन उस पर धारित नहीं था, और मांग धन या उसका कोई भाग ऐसे व्यक्ति को देय होने को या ऐसे व्यक्ति के लिए या उसकी ओर से ऐसे व्यक्ति का कोई धन उस पर धारित होने की संभावना नहीं है, तो इस धारा में अंतर्विष्ट किसी बात से ऐसे व्यक्ति द्वारा सरकार को यथास्थिति ऐसा कोई धन या उसके किसी भाग का संदाय करने की अपेक्षा किया जाना नहीं समझा जाएगा;

(घ) समुचित अधिकारी इस निमित्त बनाए जाने वाले नियमों के अनुसार ऐसे व्यक्ति की या उसके नियंत्रणाधीन किसी जंगम या स्थावर संपत्ति का भुगतनार्थ जब्त कर सकेगा और उसे तब तक निरुद्ध कर सकेगा जब तक कि संदेय रकम का भुगतान नहीं कर दिया जाता है और उक्त देय रकम का कोई भाग या जब्त संपत्ति की लागत या संपत्ति को रखने की लागत अगले तीस दिन की कालावधि के पश्चात् भी अभुगतित रहती है तो वह उक्त संपत्ति का विक्रय कर सकेगा तथा ऐसे विक्रय के आगतों से संदेय रकम को चुकाया जाएगा तथा आधिक्य प्राप्त राशि को ऐसे व्यक्ति को दे दिया जाएगा ;

(ङ) समुचित अधिकारी ऐसे व्यक्ति से बकाया रकम को विनिर्दिष्ट करते हुए स्वयं द्वारा हस्ताक्षरित एक प्रमाणपत्र तैयार करेगा और इसे उस जिले के कलेक्टर या सरकार द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति को भेजेगा, जिसमें ऐसे व्यक्ति की संपत्ति है या जहाँ वह निवास करता है या अपना कारबार करता है और उक्त कलेक्टर या उक्त अधिकारी ऐसे प्रमाणपत्र की प्राप्ति पर ऐसे व्यक्तिसे उस प्रमाणपत्र में विनिर्दिष्ट रकम को वसूल करेगा मानो कि वह भू-राजस्व का बकाया था ;

(च) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी उचित अधिकारी समुचित मजिस्ट्रेट के पास एक आवेदन फाइल कर सकेगा और ऐसा मजिस्ट्रेट ऐसे व्यक्ति से उसमें विनिर्दिष्ट रकम को वसूल करने के लिए ऐसे अग्रसर होगा मानो यह उसके द्वारा अधिरोपित कोई जुर्माना था ;

(2) जहां इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों या तद्धीन बनाए गए विनियमोंके अधीन निष्पादित कोई बंधपत्र या लिखत यह उपबंध करता है कि ऐसे लिखत के अधीन बकाया किसी रकम को उपधारा (1) में अधिकथित रीति में वसूल किया जाएगा तो वसूली के किसी अन्य ढंग पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना रकम की उस धारा के उपबंधों के अनुसार वसूली की जाएगी।

(3) जहां कर, ब्याज या शास्ति की कोई रकम इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा सरकार को देय है और जो अभुगतित रहती है तो राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर का समुचित अधिकारी उक्त कर बकाया की वसूली के प्रक्रम में उक्त व्यक्ति से रकम की ऐसी वसूली करेगा मानो वह राज्य कर का बकाया थी और इस प्रकार वसूल की गई रकम का सरकार के खाते में जमा करेगा।

(4) जहां उपधारा (3) के अधीन वसूल की गई रकम केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार के बकाया रकम से कम है तो संबंधित सरकारों के खाते में रकम का जमा प्रत्येक ऐसी सरकार को शोध्य रकम के अनुपात में किया जाएगा।



[स्पष्टीकरण— इस धारा के प्रयोजनों के लिए “व्यक्ति” शब्द में, यथास्थिति, धारा 25 की उपधारा (4) या उपधारा (5) में यथानिर्दिष्ट “विशिष्ट व्यक्ति” सम्मिलित होंगे।]²¹⁰

80. कर और अन्य रकम का किस्तों में संदाय—

किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा फाइल किए गए आवेदन पर आयुक्त कारणों को लेखबद्ध करते हुए भुगतान के लिए समय का विस्तार कर सकेगा या इस अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा किसी विवरणी में स्वतः निर्धारित दायित्व के अनुसार बकाया रकम से भिन्न किसी रकम के भुगतान को धारा 50 के अधीन ब्याज के भुगतान के अधीन रहते हुए और ऐसी शर्तों और परिसीमाओं, जो विहित की जाएं, के अधीन रहते हुए चौबीस से अनधिक मासिक किस्तों में भुगतान करने के लिए अनुमति दे सकेगा :

परंतु जहां किसी नीयत तारीख को किसी एक किस्त के भुगतान में कोई व्यतिक्रम होता है तो ऐसी तारीख को देय शेष राशि बकाया हो जाएगा और तुरंत देय होगा तथा किसी और सूचना की ऐसे व्यक्ति पर तामील किए बिना वसूली का दायी होगा।

81. कतिपय मामलों में संपत्ति अंतरण का शून्य होना—

जहां कोई व्यक्ति, उससे किसी रकम के शोध्य हो जाने के पश्चात् उसकी या उसके कब्जे की किसी संपत्ति पर कोई प्रभार सृजित करता है या उससे विक्रय, बंधक रखने, विनिमय या किसी अन्य विधि से अंतरण चाहे जो भी हो, द्वारा अपने किसी संपत्ति को किसी अन्य व्यक्ति के पक्ष में सरकारी राजस्व पर कपट करने के आशय से करता है तो ऐसा प्रभार या अंतरण उक्त व्यक्ति द्वारा संदेय किसी कर या किसी अन्य राशि के आलोक में अमान्य हो जाएगा:

परंतु यह कि ऐसा प्रभार या अंतरण अमान्य नहीं होगा यदि वह पर्याप्त प्रतिफल के लिए सद्भावपूर्वक किया गया हो या इस अधिनियम के अधीन ऐसी लंबित कार्यवाहियों, के बिना किसी सूचना के आधार पर किया गया हो या ऐसे व्यक्ति द्वारा देय किसी अन्य राशि के लिए किया गया हो या समुचित अधिकारी की पूर्व अनुज्ञा से किया जाता हो।

82. कर का संपत्ति पर पहला प्रभार होना—

तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में तत्प्रतिकूल किसी अन्य बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी, सिवाय दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में अन्यथा उपबंधित के किसी कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कर, ब्याज या शास्ति के लेखे संदेय कोई रकम, जिसके लिए वह सरकार को संदाय करने का दायी है, का ऐसे कराधेय व्यक्ति या अन्य व्यक्ति की संपत्ति पर पहला प्रभार होगा।

83. कतिपय मामलों में राजस्व के संरक्षण के लिए अनंतिम कुर्की —

[(1) जहां अध्याय 12, अध्याय 14 या अध्याय 15 के अधीन किसी कार्यवाही के आरंभ होने के पश्चात्, आयुक्त की यह राय है कि सरकारी राजस्व के हित की संरक्षा करने के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक है, तो वह लिखित आदेश द्वारा, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, धारा 122 की उपधारा (1क) में निर्दिष्ट कराधेय व्यक्ति या किसी व्यक्ति की संपत्ति, जिसके अंतर्गत बैंक खाता भी है, को अनंतिम रूप से कुर्क कर सकेगा।]²¹¹

210. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

211. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(1) जहां धारा 62 या धारा 63 या धारा 64 या धारा 67 या धारा 73 या धारा 74 के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लंबन के दौरान आयुक्त का यह मत है कि सरकारी राजस्व के हित का संरक्षण करने के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक है तो वह लिखित आदेश द्वारा औपबंधिक रूप से ऐसे कराधेय व्यक्ति की संपत्ति, जिसके अंतर्गत बैंक खाता है, की ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, कुर्की कर सकेगा।



(2) ऐसी औपबंधिक कुर्की का उपधारा (1) के अधीन किए गए आदेश की तारीख से एक वर्ष की कालावधि के अवसान पर प्रभाव नहीं होगा।

84. कतिपय वसूली कार्यवाहियों का जारी रहना और विधिमान्यकरण—

जहां इस अधिनियम के अधीन संदेय किसी कर, शास्ति, ब्याज या किसी अन्य रकम (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'सरकारी शोध्य' कहा गया है) के संबंध में किसी कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति को किसी सूचना की तामील की जाती है और ऐसे सरकारी शोध्यों के संबंध में कोई अपील या पुनरीक्षण आवेदन फाइल किया जाता है या कोई अन्य कार्यवाहियां संस्थित की जाती हैं तब—

- (क) जहां ऐसे सरकारी शोध्यों को ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों में बढ़ा दिया जाता है तो आयुक्त कराधेय व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति को उस रकम के संबंध में जिसके द्वारा ऐसे सरकारी शोध्यों को बढ़ा दिया जाता है, की वसूली के लिए दूसरी मांग सूचना जारी करेगा और ऐसे सरकारी शोध्यों के संबंध में कोई वसूली कार्यवाहियां, जो उस पर तामील की गई मांग की सूचना में आती हैं, ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों के निपटान से पूर्व किसी नई मांग सूचना की तामील के बिना उस प्रक्रम से जारी रहेंगी, जिस पर ऐसी कार्यवाहियां ऐसे निपटान के ठीक पूर्व थी;
- (ख) जहां सरकारी शोध्यों को ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों में कम कर दिया जाता है तो, —

- (i) आयुक्त के लिए कराधेय व्यक्ति पर मांग की नई सूचना की तामील करना आवश्यक नहीं होगा ;
- (ii) आयुक्त ऐसी कमी की उसे और समुचित प्राधिकारी को, जिसके पास वसूली कार्यवाहियां लंबित हैं, संसूचना देगा;
- (iii) ऐसी अपील, पुनरीक्षण या अन्य कार्यवाहियों के निपटान से पूर्व उस पर तामील की गई मांग के आधार पर संस्थित कोई वसूली कार्यवाहियां इस प्रकार कम की गई रकम के संबंध में उसी प्रक्रम से, जिस पर जहां वह ऐसे निपटान से ठीक पूर्व थी, जारी रहेंगी।



अध्याय 16

कतिपय मामलों में संदाय करने का दायित्व

85. कारबार के अंतरण की दशा में दायित्व—

(1) जहां कोई कराधेय व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी है, अपने कारबार का पूर्णतया या भागतः विक्रय, उपहार, पट्टा, इजाजत और अनुज्ञप्ति, भाड़ा या किसी अन्य रीति, चाहे जो भी हो, अंतरण करता है तो कराधेय व्यक्ति और वह व्यक्ति, जिसको इस प्रकार कारबार का अंतरण किया गया है, संयुक्त रूप से और पृथक्तः पूर्णतया या ऐसे अंतरण के परिमाण तक कराधेय व्यक्ति से ऐसे अंतरण तक शोधय कर, ब्याज या किसी अन्य शास्ति, चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण ऐसे अंतरण से पूर्व किया गया हो किंतु जो असंदत्त रहती है या जिसका तत्पश्चात् अवधारण किया गया है, के लिए दायी होगा।

(2) जहां उपधारा (1) में निर्दिष्ट अंतरिती ऐसे कारबार को स्वयं के नाम से या किसी अन्य के नाम से चलाता है तो वह ऐसे अंतरण की तारीख से उसके द्वारा प्रदाय किए जाने वाले मालों या सेवाओं या दोनों के लिए कर का संदाय करने और, यदि वह इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति तो विहित समय के भीतर अपने रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में संशोधन के लिए आवेदन करने का दायी होगा।

86. अभिकर्ता और प्रधान व्यक्ति का दायित्व—

जहां कोई अभिकर्ता अपने प्रधान व्यक्ति के निमित्त कराधेय वस्तुओं की प्रदाय करता है या उन्हें प्राप्त करता है तो ऐसा अभिकर्ता और उसका प्रधान व्यक्ति संयुक्त रूप से और पृथक्तः इस अधिनियम के अधीन ऐसे मालों पर संदेय कर का संदाय करने के लिए दायी होंगे।

87. कंपनियों के समामेलन या विलयन की दशा में दायित्व—

(1) जब दो या अधिक कंपनियों का किसी न्यायालय या अधिकरण या अन्यथा के निर्णय के अनुसरण में समामेलन या विलयन होता है और निर्णय का आदेश किए जाने की तारीख के पूर्व से प्रभावी होना है तथा दो या उससे अधिक ऐसी कंपनियों ने एक दूसरे को उस तारीख से प्रारंभ होने वाली अवधि से आदेश के प्रभावी होने की तारीख के बीच मालों या सेवाओं की या दोनों की प्रदाय की है या मालों को या सेवाओं को या दोनों को प्राप्त किया है तब ऐसा प्रदाय और प्राप्ति के संव्यवहारों को संबंधित कंपनियों के प्रदाय या प्राप्ति आवर्त में सम्मिलित किया जाएगा और वह तदनुसार कर का भुगतान करने की दायी होगी।

(2) उक्त आदेश में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए ऐसी दो या अधिक कंपनियों को उक्त आदेश की तारीख तक की अवधि के लिए भिन्न कंपनियां समझा जाएगा और उक्त कंपनियों के रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र को उक्त आदेश की तारीख से रद्द किया जाएगा।

88. परिसमापन के अधीन कंपनियों की दशा में दायित्व—

(1) जब कोई कंपनी को किसी न्यायालय या अधिकरण के आदेशों के अधीन या अन्यथा, समाप्त किया जा रहा है तो कंपनी की किन्हीं परिसंपत्तियों को प्राप्त करने के लिए परिसमापक के रूप में नियुक्त व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् 'परिसमापक' कहा गया है), अपनी नियुक्ति के तीस दिन के भीतर आयुक्त को अपनी नियुक्ति की संसूचना देगा।

(2) आयुक्त ऐसी जांच करने के पश्चात् या ऐसी सूचना मंगाने के पश्चात्, जो वह उचित समझे, उस तारीख से तीन मास के भीतर, जब वह परिसमापक की नियुक्ति की सूचना प्राप्त करता है, परिसमापक को और वह रकम, जो उसके मत में किसी कर, ब्याज या शास्ति, जो तब या तत्पश्चात् कंपनी द्वारा भुगतये है या भुगतये हो जाती है, अधिसूचित करेगा।

(3) जब किसी प्राइवेट कंपनी को समाप्त किया जाता है और इस अधिनियम के अधीन कंपनी पर किसी अवधि के लिए, चाहे परिसमापन के क्रम में या तत्पश्चात् अवधारित कोई कर, ब्याज या शास्ति, जिसको वसूल नहीं किया जा सकता है तो प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अवधि, जिसके लिए कर बकाया है, के दौरान



हर ऐसा व्यक्ति जो कंपनी का निदेशक था, संयुक्त रूप से और पृथक्: ऐसे कर, ब्याज या शास्ति, सिवाय जब वह आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह साबित नहीं कर देता है कि ऐसी न की गई वसूली कंपनी के कार्यों के संबंध में उसकी गंभीर उपेक्षा, दुष्करण या कर्तव्य भंग के कारण नहीं हुई है, भुगतान करने के लिए दायी होगा।

89. प्राइवेट कंपनियों के निदेशकों का दायित्व—

(1) कंपनी अधिनियम, 2013 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी प्राइवेट कंपनी से किसी अवधि के लिए मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय के लिए कोई कर, ब्याज या शास्ति, जिसको वसूल नहीं किया जा सकता है, बकाया है तो प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अवधि, जिसके लिए कर बकाया है, के दौरान प्राइवेट कंपनी का निदेशक था, संयुक्त रूप से और पृथक्: ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का, सिवाय जब वह आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह साबित नहीं कर देता है कि ऐसी न की गई वसूली कंपनी के कार्यों के संबंध में उसकी गंभीर उपेक्षा, दुष्करण या कर्तव्य भंग के कारण नहीं हुई है, भुगतान करने के लिए दायी होगा।

(2) जहां प्राइवेट कंपनी को किसी पब्लिक कंपनी में संपरिवर्तित किया जाता है और किसी अवधि के लिए, जिसके दौरान ऐसी कंपनी, प्राइवेट कंपनी थी, के दौरान मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय के लिए किसी कर, ब्याज या शास्ति की ऐसे संपरिवर्तन से पूर्व वसूली नहीं की जा सकती है तो उपधारा (1) में अंतर्विष्ट कोई बात ऐसे किसी व्यक्ति पर लागू नहीं होगी, जो ऐसी प्राइवेट कंपनी का, ऐसी प्राइवेट कंपनी द्वारा मालों की या सेवाओं की या दोनों की प्रदाय के विरुद्ध किसी कर, ब्याज या शास्ति के संबंध में, निदेशक था :

परंतु इस उपधारा में अंतर्विष्ट कोई बात ऐसे निदेशक पर अधिरोपित वैयक्तिक शास्ति के लिए लागू नहीं होगी।

90. फर्म के भागीदारों का कर का संदाय करने के लिए दायित्व—

तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि या किसी संविदामें तत्प्रतिकूल के होते हुए भी, जहां कोई फर्म इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है तो फर्म और फर्म का प्रत्येक भागीदार ऐसे संदाय के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होगा :

परंतु जहां कोई भागीदार फर्म से सेवानिवृत्त हो जाता है तो वह या फर्म उक्त भागीदार की सेवानिवृत्ति की तारीख को इस निमित्त लिखित सूचना द्वारा आयुक्त को संसूचित करेगा और ऐसा भागीदार अपनी सेवानिवृत्ति की तारीख तक बकाया कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान करने का, चाहे उस तारीख को बकाया निर्धारित की जाए या नहीं, दायी होगा :

परन्तु यह और कि यदि ऐसी कोई सूचना सेवानिवृत्ति की तारीख से एक मास के भीतर नहीं दी जाती है तो पहले परन्तुक के अधीन ऐसे भागीदार का दायित्व उस तारीख तक बना रहेगा जब ऐसी सूचना आयुक्त द्वारा प्राप्त की जाती है।

91. अभिरक्षकों, न्यासियों आदि का दायित्व—

जहां कोई कारबार, जिसके संबंध में इस अधिनियम के अधीन कोई कर, ब्याज या शास्ति संदेय है, को किसी अव्यस्क या किसी अन्य अक्षम व्यक्ति के निमित्त और ऐसे अव्यस्क या अन्य अक्षम व्यक्ति के फायदे के लिए किसी अभिरक्षक, न्यासी या अभिकर्ता द्वारा चलाया जाता है तो ऐसे अभिरक्षक या न्यासी या अभिरक्षक पर कर, ब्याज या शास्ति उसी रूप में और उसी सीमा तक उद्ग्रहित की जाएगी और वसूली जाएगी जैसे कि उसका ऐसे अव्यस्क या अन्य अक्षम व्यक्ति के लिए अवधारण किया जाता और वसूली जाती, यदि वह व्यस्क या सक्षम व्यक्ति होता और जैसे कि वह स्वयं कारबार का संचालन कर रहा था तथा इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

92. प्रतिपाल्य अधिकरण—

जहां किसी कराधेय व्यक्ति की संपदा या उसके किसी भाग जिसके अधीन कोई कारबार है, जिसके संबंध में इस अधिनियम के अधीन कोई कर, ब्याज या शास्तिकराधेय है, किसी प्रतिपाल्य अधिकरण,



महाप्रशासक, शासकीय न्यासी या किसी प्रापक या प्रबंधक (जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति, चाहे किसी भी पदनाम से ज्ञात हो, जो वास्तव में कारबार का प्रबंध करता है), जिसकी नियुक्ति किसी न्यायालय के आदेश के अधीन की गई है, के नियंत्रणाधीन है, कर, ब्याज या शास्तिउस पर उद्ग्रहित की जाएगी और वसूली जाएगी ठीक वैसे जैसे उसका कराधेय व्यक्ति के लिए अवधारण किया जाता और वसूली की जाती, जैसे कि कराधेय व्यक्ति स्वयं कारबार का संचालन कर रहा था तथा इस अधिनियम या तदधीन बनाए गए नियमों के उपबंध तदनुसार लागू होंगे।

93. कतिपय मामलों में कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायित्व के संबंध में विशेष उपबंध—

(1) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन कर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है, तब—

(क) यदि व्यक्ति द्वारा चलाए जाने वाले कारबार को उसकी मृत्यु के बाद उसके विधिक प्रतिनिधि या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा जारी रखा जाता है तो ऐसा विधिक प्रतिनिधि या अन्य व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन ऐसे व्यक्ति बकाया कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान करने के लिए दायी होगा; और

(ख) यदि ऐसे व्यक्ति द्वारा चलाए जाने वाले कारबार को उसकी मृत्यु से पूर्व या उसके पश्चात् जारी नहीं रखा जाता है तो उसके विधिक प्रतिनिधि मृतक की संपदा से उस परिमाण तक, जहाँ तक संपदा ऐसे व्यक्ति के इस अधिनियम के अधीनकर, ब्याज या शास्ति का भुगतान चुकाने में सक्षम है, भुगतान करने के लिए दायी होगा,

चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्तिका अवधारण उसकी मृत्यु से पूर्व किया गया हो किंतु जो उसकी मृत्यु के पश्चात् अभुगतित रहा हो या मृत्यु के बाद या अवधारित किया गया है।

(2) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीनकर, ब्याज या शास्तिका भुगतान करने के लिए दायी है, हिन्दू अविभक्त कुटुंब या व्यक्तियों को समूह का सदस्य है और हिन्दू अविभक्त कुटुंब या व्यक्तियों के समूह का विभिन्न सदस्यों या व्यक्तियों के दलों के बीच संपत्ति का बंटवारा कर दिया गया है तब प्रत्येक सदस्य या सदस्यों का समूह संयुक्त रूप से या पृथक्: इस अधिनियम के अधीनकराधेय व्यक्तिसे बंटवारे के समय तक कर, ब्याज या शास्तिका संदाय करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसेकर, ब्याज या शास्तिका अवधारण बंटवारे से पूर्व किया गया हो, जो बंटवारे के पश्चात् अभुगतित रह गया है या बंटवारे के बाद अवधारित किया गया है।

(3) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीनकर, ब्याज या शास्तिका संदाय करने के लिए दायी है और फर्म का विघटन कर दिया गया है तब प्रत्येक व्यक्ति, जो भागीदार था, संयुक्त रूप से या पृथक्: इस अधिनियम के अधीनफर्म से शोध्य, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसे कर, ब्याज या शास्ति का अवधारण बंटवारे से पूर्व किया गया हो, किंतु बंटवारे के पश्चात् असंदत्त रह गया है या बंटवारे के पश्चात् अवधारित किया गया है।

(4) दिवाला और धन शोधन अक्षमता संहिता, 2016 में उपबंधित के सिवाय, जहां कोई कराधेय व्यक्ति, इस अधिनियम के अधीनकर, ब्याज या शास्ति का संदाय करने के लिए दायी है, —

(क) किसी अव्यस्क का अभिरक्षक है, जिसकी ओर से अभिरक्षक द्वारा कारबार चलाया जाता है ; या

(ख) कोई न्यासी है, जो हितग्राही किसी न्यास के अधीन कारबार का संचालन करता है; ;

तब यदि अभिरक्षा या न्यास को समाप्त कर दिया जाता है, अव्यस्क या हितग्राही कराधेय व्यक्ति से अभिरक्षा या न्यास के समापन तक बकाया कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान करने के लिए दायी होगा चाहे ऐसेकर, ब्याज या शास्ति का अवधारण अभिरक्षा या न्यास के समापन से पूर्व किया गया हो जो अभुगतित रह गया है या समापन के पश्चात् अवधारित किया गया हो।



94. अन्य मामलों में दायित्व—

(1) जहां कराधेय व्यक्ति कोई फर्म या व्यक्तियों का संगम या हिन्दू अविभक्त कुटुंब है और ऐसी फर्म, संगम या कुटुंब ने कारबार करना बंद कर दिया है, —

(क) ऐसी फर्म, संगम या कुटुंब द्वारा ऐसे कारबार को बंद करने की तारीख तक इस अधिनियम के अधीन संदेय कर, ब्याज या शास्ति का निर्धारण ऐसे किया जाएगा मानो कारबार बंद हुआ ही न हो ; और

(ख) प्रत्येक व्यक्ति, जो कारबार को ऐसे बंद करने के समय ऐसी फर्म या ऐसे संगम या कुटुंब का सदस्य था, ऐसा बंद करना होते हुए भी फर्म, संगम या कुटुंब पर अवधारित कर और ब्याज के भुगतान के लिए और अधिरोपित शास्ति का संदाय करने के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होगा, चाहे ऐसे कर और ब्याज का निर्धारण या शास्ति को उससे पूर्व अधिरोपित किया गया है या ऐसा बंद करने के पश्चात् अधिरोपित किया गया है और पूर्वोक्त के अधीन रहते हुए इस अधिनियम के उपबंध जहां तक हो सके ऐसे व्यक्ति या भागीदार या सदस्यों पर ऐसे लागू होंगे मानो वह कराधेय व्यक्ति था।

(2) जहां फर्म या व्यक्तियों के समूह के संगठन में कोई परिवर्तन होता है तो फर्म के भागीदार या समूह के सदस्य, जैसा कि वह पुनर्गठन के पूर्व विद्यमान थे और जैसे कि वह उसके पश्चात् विद्यमान हैं, धारा 90 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसी फर्म या व्यक्तियों से उसके पुनर्गठन की कालावधि से पूर्व बकाया कर, ब्याज या शास्ति का भुगतान करने के लिए संयुक्त रूप से और पृथक्: दायी होंगे।

(3) उपधारा (1) के उपबंध, जहां तक हो सके, कराधेय व्यक्ति, जो विघटित हो गई फर्म या व्यक्तियों का समूह है, को या कराधेय व्यक्ति, जो अविभक्त हिन्दू कुटुंब है, जिसने उसके द्वारा चलाए जाने वाले कारबार के संबंध में विभाजन किया है, को लागू होंगे और तदनुसार उस धारा में बंद करने के प्रतिनिर्देश का ऐसे विघटन या विभाजन के समान लगाया जाएगा।

स्पष्टीकरण—इस अध्याय के प्रयोजनों के लिए—

(i) “सीमित दायित्व भागीदार” जिसे सीमित दायित्व भागीदार अधिनियम, 2008 के उपबंधों के अधीन विरचित और रजिस्ट्रीकृत किया गया है, को भी एक फर्म माना जाएगा ;

(ii) “न्यायालय” से जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय अभिप्रेत है।



अध्याय 17

अग्रिम विनिर्णय

95. परिभाषाएं—

इस अध्याय में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो—

(क) “अग्रिम विनिर्णय” से किसी प्राधिकरण या [अपील प्राधिकरण या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²¹² अपील प्राधिकरण द्वारा किसी आवेदक को धारा 97 की उपधारा (2) या [धारा 100 की उपधारा (1) या धारा 101ग]²¹³ में मालों या सेवाओं या दोनों की प्रदाय, जिसे आवेदक द्वारा किया गया है या किए जाने का प्रस्ताव है, पर विनिर्दिष्ट विषयों या प्रश्नों पर दिया गया अग्रिम विनिश्चय अभिप्रेत है;

(ख) “अपील प्राधिकरण” से धारा 99 के अधीन गठित अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण अभिप्रेत है ;

(ग) “आवेदक” से इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत या रजिस्ट्रीकरण अभिप्राप्त करने की इच्छुक व्यक्ति अभिप्रेत है;

(घ) “आवेदन” से धारा 97 की उपधारा (1) के अधीन प्राधिकरण को किया गया आवेदन अभिप्रेत है;

(ङ) “प्राधिकरण” से धारा 96 के अधीन गठित अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण अभिप्रेत है;

[(च) ‘राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण’ से धारा 101क में निर्दिष्ट राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण अभिप्रेत है।]²¹⁴

96. अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण का गठन—

(1) सरकार अधिसूचना द्वारा बिहार अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण के नाम से ज्ञात एक प्राधिकरण का गठन करेगी :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश से किसी अन्य राज्य में अवस्थित किसी प्राधिकरण को राज्य के लिए प्राधिकरण के रूप में कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सकेगी।

(2) प्राधिकरण, निम्नलिखित से मिलकर बनेगा, —

(i) केन्द्रीय कर के अधिकारियों में से एक सदस्य; और

(ii) राज्यकर के अधिकारियों में से एक सदस्य,

जिन्हें क्रमशः केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किया जाएगा।

(3) सदस्यों की अर्हताएं, नियुक्ति की पद्धति और उनकी सेवा के निबंधन और शर्तें वे होंगी, जो विहित की जाएं।

97. अग्रिम विनिर्णय के लिए आवेदन—

(1) इस अध्याय के अधीन अग्रिम विनिर्णय अभिप्राप्त करने का इच्छुक आवेदक ऐसे प्रपत्र और ऐसी रीति में और ऐसी फीस के साथ, जो विहित की जाए, उन प्रश्नों को अभिलिखित करते हुए, जिन पर अग्रिम विनिर्णय की इच्छा की गई है, एक आवेदन करेगा।

212. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शब्द “अपील प्राधिकरण” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

213. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शब्द, अंक, कोष्ठक और अक्षर “धारा 100 की उपधारा (1)” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

214. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



(2) वह प्रश्न, जिस पर इस अधिनियम के अधीन अग्रिम विनिर्णय की इच्छा की जाती है, निम्नलिखित के संबंध में होगा, -

- (क) किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों का वर्गीकरण ;
- (ख) इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन जारी अधिसूचना का लागू होना ;
- (ग) मालों या सेवाओं या दोनों के प्रदायसमय और मूल्य का अवधारण ;
- (घ) संदत्त या संदत्त समझे गए कर के इनपुट कर प्रत्यय की अनुज्ञेयता ;
- (ङ) किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों पर कर दायित्व का अवधारण ;
- (च) क्या आवेदक से रजिस्ट्रीकृत होने की अपेक्षा है ;
- (छ) क्या आवेदक द्वारा किन्हीं मालों या सेवाओं या दोनों की बावत की गई कोई विशिष्ट कृत्य का परिणाम उन मालों या सेवाओं या दोनों का, इस पद के अर्थान्तागर्त प्रदाय होता है।

98. आवेदन की प्राप्ति की प्रक्रिया-

(1) किसी आवेदन की प्राप्ति पर प्राधिकरण उसकी एक प्रति को संबंधित अधिकारी को अग्रेषित कराएगा और यदि आवश्यक हो तो उससे सुसंगत अभिलेख प्रस्तुत करने की मांग करेगा :

परंतु किसी मामले में जहां प्राधिकारी द्वारा किन्हीं अभिलेखों की मांग की गई है तो ऐसे अभिलेखों को यथासंभव शीघ्र संबंधित अधिकारी को लौटा दिया जाएगा।

(2) प्राधिकारी आवेदन और मांगे गए अभिलेखों की जांच करने के पश्चात् तथा आवेदक या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि और संबंधित अधिकारी या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि को सुने जाने के पश्चात् आदेश द्वारा या तो आवेदन को स्वीकार करेगा या अस्वीकार कर देगा :

परंतु प्राधिकारी वहां आवेदन को मंजूर नहीं करेगा जहां आवेदन में उठाया गया प्रश्न पहले से ही लंबित है या आवेदक के किसी मामले में इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों में उसका विनिश्चय किया जा चुका है :

परंतु यह और कि इस उपधारा के अधीन किसी आवेदन को आवेदक को सुने जाने का अवसर दिए बिना अस्वीकार नहीं किया जाएगा :

परंतु यह भी कि जहां आवेदन को अस्वीकार किया जाता है तो उसके अस्वीकार किए जाने के कारणों को आदेश में विनिर्दिष्ट किया जाएगा।

(3) उपधारा (2) के अधीन किए गए प्रत्येक आदेश की प्रति आवेदक और संबंधित अधिकारी को भेजी जाएगी।

(4) जहां किसी आवेदन को उपधारा (2) के अधीन स्वीकार किया जाता है, ऐसी और सामग्री, जो उसके समक्ष आवेदक द्वारा रखी जाए या प्राधिकारों द्वारा अभिप्राप्त की जाए, की जांच के पश्चात् और आवेदक या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि एवं संबंधित अधिकारी या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात्, प्राधिकारों द्वारा आवेदन में विनिर्दिष्ट प्रश्न पर अग्रिम विनिर्णय की उदघोषणा की जाएगी।

(5) जहां प्राधिकरण के सदस्य ऐसे किसी प्रश्न पर मतैक्य नहीं रखते हैं, जिस पर अग्रिम विनिर्णय की मांग की गई है, वे उस बिन्दु या उन बिन्दुओं को अभिलिखित करेंगे, जिन पर वह मतैक्य नहीं रखते हैं और ऐसे प्रश्न पर सुनवाई और विनिश्चय के लिए अपील प्राधिकरण को निर्दिष्ट करेंगे।

(6) प्राधिकरण आवेदन की प्राप्ति की तारीख से नब्बे दिन के भीतर लिखित में अग्रिम विनिर्णय की घोषणा करेगा।

(7) प्राधिकरण द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय की प्रति, सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित एवं ऐसी रीति में प्रमाणित जैसा की विहित किया जाय, आवेदक, सम्बंधित अधिकारी एवं अधिकारिता रखनेवाले अधिकारी को भेजी जायेगी।



99. अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण का गठन—

(1) सरकार अग्रिम विनिर्णय प्राधिकरण द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करने के लिए अधिसूचना द्वारा बिहार माल और सेवा कर अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण के नाम से ज्ञात एक अपील प्राधिकरण का गठन करेगी :

परंतु सरकार, परिषद् की सिफारिश से किसी अन्य राज्य या संघ राज्यक्षेत्र में अवस्थित किसी अपील प्राधिकरण को राज्य के लिए अपील प्राधिकरण के रूप में कार्य करने के लिए अधिसूचित कर सकेगी।

(2) अपील प्राधिकरण, निम्नलिखित से मिलकर बनेगा,—

(i) बोर्ड द्वारा यथा अभिहित केन्द्रीय कर मुख्य आयुक्त; और

(ii) आवेदक पर अधिकारिता रखने वाला राज्यकर आयुक्त।

100. अपील प्राधिकरण को अपील—

(1) धारा 98 की उपधारा (4) के अधीन उदघोषित अग्रिम विनिर्णय से व्यथित संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाला अधिकारी या आवेदक अपील प्राधिकरण को अपील कर सकेगा।

(2) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील उस तारीख से, जिसको ईप्सित विनिर्णय के विरुद्ध की गई अपील की संबंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाला अधिकारी या आवेदक को संसूचना दिए जाने की तारीख से, से तीस दिन की अवधि के भीतर फाइल की जाएगी :

परंतु अपील प्राधिकारी को यदि यह समाधान हो जाता है कि आवेदक को तीसदिन की उक्त अवधि के भीतर आवेदन करने से पर्याप्त कारणों द्वारा निवारित किया गया था तो वह तीस दिन से अनधिक और अवधि के भीतर उसे प्रस्तुत करना अनुज्ञात कर सकेगा।

(3) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील ऐसे प्रपत्र में, ऐसी फीस के साथ एवं ऐसी रीति में सत्यापन के पश्चात् किया जाएगा, जैसा कि विहित किया जाये।

101. अपील प्राधिकरण के आदेश—

(1) अपील प्राधिकरण अपील या निर्देश के पक्षकारों को सुने जाने का अवसर प्रदान करने के पश्चात् ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जैसा वह अपील किए गए आदेश या निर्दिष्ट आदेश की पुष्टि करने के लिए या उपांतरित करने के लिए उचित समझे।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट आदेश, धारा 100 के अधीन दाखिल या धारा 98 की उपधारा (5) के अधीन निर्देश करने की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के भीतर पारित किया जाएगा।

(3) जहां अपील प्राधिकरण के सदस्य, अपील या निर्देश में किसी बिन्दु या बिन्दुओं पर मतैक्य नहीं रखते हैं तो यह समझा जाएगा कि अपील या निर्देश के अधीन प्रश्न के संबंध में कोई अग्रिम विनिर्णय जारी नहीं किया जा सकता है।

(4) उदघोषित अग्रिम विनिर्णय की प्रति अपील प्राधिकरण के सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित एवं ऐसी रीति से प्रमाणित जैसा की विहित किया जाय, आवेदक, सम्बंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को भेजी जायेगी।

[101क. राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण का गठन—

इस अध्याय के प्रावधानों के अधीन, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 की धारा 101क के अधीन गठित राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण इस अधिनियम के अधीन राष्ट्रीय अग्रिम विनिर्णय अपील प्राधिकरण समझा जायेगा।

101ख. राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण को अपील—

(1) जहां धारा 97 की उपधारा (2) में यथानिर्दिष्ट प्रश्नों के संबंध में, धारा 99 के तहत गठित अपीलीय प्राधिकरण और किसी अन्य राज्य या राज्यों या किसी केन्द्र शासित प्रदेश या केन्द्र शासित प्रदेशों या



दोनों के अपीलीय प्राधिकारी द्वारा धारा 101 की उपधारा (1) के अधीन या धारा 101 की उपधारा (3) के अधीन विरोधाभासी अग्रिम विनिर्णय दिये जाते हैं, वहां आयुक्त द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी या आवेदक, जो धारा 25 में यथाविनिर्दिष्ट सुभिन व्यक्ति है और जो ऐसे अग्रिम विनिर्णय से व्यथित है तो वह राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण को अपील कर सकेगा।

(2) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील, उस तारीख से, जिसको वह विनिर्णय, जिसके विरुद्ध अपील चाही गई है, आवेदकों, संबंधित अधिकारियों और अधिकारिता रखने वाले अधिकारियों को संसूचित किया गया है, तीस दिन की अवधि के भीतर फाईल की जाएगी :

परन्तु आयुक्त द्वारा प्राधिकृत अधिकारी, उस तारीख से, जिसको वह विनिर्णय, जिसके विरुद्ध अपील चाही गई है, संबंधित अधिकारी और अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को संसूचित किया गया है, नब्बे दिन की अवधि के भीतर फाइल कर सकेगा :

परन्तु यह और कि राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि अपीलार्थी को, यथास्थिति, उक्त तीस दिन या नब्बे दिन के भीतर अपील प्रस्तुत करने से पर्याप्त कारण से निवारित किया गया था, तो वह ऐसी अपील को तीस दिन से अनधिक और अवधि के भीतर प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञात कर सकेगा।

स्पष्टीकरण— शंकाओं के निराकरण के लिए यह स्पष्ट किया जाता है कि यथास्थिति तीस दिन या नब्बे दिन की अवधि की गणना, उस तारीख से की जाएगी, जिसको अंतिम विरोधाभासी विनिर्णय को, जिसके विरुद्ध अपील चाही गई है, संसूचित किया गया था।

(3) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील ऐसे प्ररूप में होगी, उसके साथ ऐसी फीस होगी और उसे ऐसी रीति में सत्यापित किया जाएगा, जो विहित की जाए।

101ग. राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण का आदेश—

(1) राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण, आवेदक, आयुक्त द्वारा प्राधिकृत अधिकारी, केंद्रीय कर के सभी प्रधान मुख्य आयुक्त और मुख्य आयुक्त तथा सभी राज्यों के राज्य कर मुख्य आयुक्त और आयुक्त और सभी संघ राज्यक्षेत्रों के संघ राज्यक्षेत्र कर के मुख्य आयुक्त और आयुक्त को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् उस विनिर्णय को, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, पुष्ट या उपांतरित करने वाला ऐसा आदेश पारित करेगा, जो वह ठीक समझे।

(2) यदि राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण के सदस्यों की किसी बिन्दु या बिन्दुओं पर भिन्न राय है, तो उसका विनिश्चय बहुमत की राय के अनुसार किया जाएगा।

(3) उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट आदेश धारा 101ख के अधीन अपील फाइल करने की तारीख से यथासंभव रूप से नब्बे दिन की अवधि के भीतर अवधारित किया जाएगा।

(4) राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण द्वारा सुनाए गए अग्रिम विनिर्णय की प्रति को सदस्यों द्वारा सम्यक् रूप से हस्ताक्षरित और ऐसी रीति में प्रमाणित किया जाएगा, जो विहित की जाए, और उसे सुनाए जाने के पश्चात्, यथास्थिति, आवेदक, आयुक्त द्वारा प्राधिकृत अधिकारी, बोर्ड, सभी राज्यों के राज्य कर के मुख्य आयुक्त और आयुक्त तथा सभी संघ राज्यक्षेत्रों के संघ राज्यक्षेत्र कर के मुख्य आयुक्त को और प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण को भेजा जाएगा।²¹⁵

102. अग्रिम विनिर्णय की परिशुद्धि—

प्राधिकरण या अपीलीय प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²¹⁶ द्वारा [यथास्थिति, धारा 98 या धारा 101 या धारा 101ग]²¹⁷ के अधीन उसके द्वारा पारित किसी आदेश की ऐसी त्रुटियों को अभिलेख पटल

²¹⁵. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

²¹⁶. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



पर स्पष्ट हो, और जो प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²¹⁸ की जानकारी में स्वयं आती है या उसकी जानकारी में सम्बंधित अधिकारी, अधिकारिता रखने वाले अधिकारी, आवेदक [, अपीलार्थी, प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण]²¹⁹ द्वारा लाया जाता है, को आदेशपारित करने की तिथि से छः माह के भीतर संशोधित कर सकेगा :

परंतु ऐसी कोई परिशुद्धि, जिसका प्रभाव कर दायित्व में वृद्धि करने, इनपुट कर प्रत्यय की अनुज्ञेय रकम को कम करने के रूप में होता है को तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि आवेदक या अपीलार्थी को सुने जाने का अवसर प्रदान नहीं कर दिया जाता है।

103. अग्रिम विनिर्णय का लागू होना—

(1) इस अध्याय के अधीन प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण द्वारा उदघोषित अग्रिम विनिर्णय केवल निम्नलिखित पर बाध्यकर होगा—

(क) उस आवेदक पर, जिसने अग्रिम विनिर्णय के लिए धारा 97 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट किसी विषय के संबंध में उसकी अपेक्षा की थी ;

(ख) आवेदक के संबंध में संबंधित अधिकारी या अधिकारिता रखने वाले अधिकारी पर।

[(1क) राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण द्वारा इस अध्याय के अधीन सुनाया गया अग्रिम विनिर्णय निम्नलिखित पर आबद्धकर होगा—

(क) आवेदक, जो सुभिन्न व्यक्ति हैं, जिन्होंने धारा 101ख की उपधारा (1) के अधीन विनिर्णय चाहा है और वे सभी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिनका वही स्थायी खाता संख्यांक है (आय कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी किया गया);

(ख) खंड (क) में निर्दिष्ट आवेदकों और ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिनका आय-कर अधिनियम, 1961 के अधीन जारी किया गया समान स्थायी खाता संख्यांक है, की बाबत संबंधित अधिकारी और अधिकारिता रखने वाले अधिकारी]²²⁰

(2) उपधारा (1) [और उपधारा (1क)]²²¹ में निर्दिष्ट अग्रिम विनिर्णय तबतक बाध्यकर होगा जबतक कि मूल अग्रिम विनिर्णय की समर्थनकारी विधि, तथ्य या परिस्थितियां न बदल गई हों।

104. कतिपय परिस्थितियों में अग्रिम विनिर्णय का शून्य होना—

(1) जहां प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²²² यह पाता है कि धारा 98 की उपधारा (4) के अधीन या धारा 101 की उपधारा (1) के अधीन [या धारा 101ग के अधीन]²²³ उसके द्वारा

217. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शब्द "धारा 98 या धारा 101" प्रतिस्थापित।

218. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

219. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शब्द "या अपीलार्थी" प्रतिस्थापित।

220. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

221. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

222. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

223. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



उदघोषित अग्रिम विनिर्णय को आवेदक या अपीलार्थी द्वारा कपट या तात्विक तथ्यों को छिपाने या तथ्यों के दुर्व्यपदेशन द्वारा अभिप्राप्त किया गया है तो वह आदेश द्वारा ऐसे विनिर्णय को आरंभ से ही शून्य घोषित कर देगा और तत्पश्चात् इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के उपबंध आवेदक या अपीलार्थी पर ऐसे लागू होंगे मानो अग्रिम विनिर्णय कभी हुआ ही नहीं था :

परन्तु यह कि इस उपधारा के अधीन कोई आदेश आवेदक को सुने जाने का अवसर प्रदान किये बगैर पारित नहीं किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—धारा 73 की उपधारा (2) और उपधारा (10) या धारा 74 की उपधारा (2) और उपधारा (10) [या धारा 74क की उपधारा (2) और उपधारा (7)]²²⁴ में विनिर्दिष्ट अवधि की गणना करते समय इस उपधारा के अधीन ऐसे अग्रिम विनिर्णय की तारीख से प्रारंभ होने वाली और आदेश की तारीख को समाप्त होने वाली अवधि को परिवर्जित कर दिया जाएगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन किए गए आदेश की एक प्रति आवेदक, संबंधित अधिकारी और अधिकारिता रखने वाले अधिकारी को भेजी जाएगी।

105. [प्राधिकरण, अपील प्राधिकरण और राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण की शक्तियां]²²⁵—

(1) प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²²⁶ को निम्नलिखित के संबंध में अपनी शक्तियों को प्रयोग करने के लिए सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन सिविल न्यायालय की सभी शक्तियां होंगी, —

(क) खोज और निरीक्षण ;

(ख) किसी व्यक्ति की उपस्थिति का प्रवर्तन और शपथ पर उसकी परीक्षा करना;

(ग) कमीशन जारी करना और लेखा बहियों और अन्य अभिलेखों को प्रस्तुत करने के लिए बाध्य करना ।

(2) प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²²⁷ धारा 195 के प्रयोजनों के लिए एक सिविल न्यायालय समझा जाएगा किन्तु दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 के अध्याय 26 के प्रयोजनों के लिए नहीं, और प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²²⁸ के समक्ष प्रत्येक कार्यवाही भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थात्गत और उसकी धारा 196 के प्रयोजनों के लिए न्यायिक कार्यवाही समझी जाएगी।

106. [प्राधिकरण, अपील प्राधिकरण और राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण की प्रक्रिया]²²⁹ —

प्राधिकरण या अपील प्राधिकरण [या राष्ट्रीय अपील प्राधिकरण]²³⁰ को इस अध्याय के उपबंधों के अधीन अपनी स्वयं की प्रक्रिया विनियमित करने की शक्ति होगी।

224. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

225. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शीर्ष “प्राधिकरण और अपील प्राधिकरण की शक्तियां” प्रतिस्थापित।

226. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

227. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

228. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

229. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा शीर्ष “प्राधिकरण और अपील प्राधिकरण की प्रक्रिया” प्रतिस्थापित।



अध्याय 18

अपील और पुनरीक्षण

107. अपील प्राधिकारी को अपीलें—

(1) इस अधिनियम या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन न्यायनिर्णायक प्राधिकारी द्वारा पारित किसी विनिश्चय या आदेश से व्यथित कोई व्यक्ति उक्त विनिश्चय या आदेश संसूचित किये जाने के तीन मास के भीतर ऐसे अपील प्राधिकारी जैसा कि विहित किया जाय, को अपील कर सकेगा।

(2) जहां किसी कार्यवाही के क्रम में न्यायनिर्णायक प्राधिकारी ने इस अधिनियम या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई विनिश्चय या आदेश पारित किया है वहां आयुक्त उक्त विनिश्चय या आदेश की वैधानिकता या औचित्य के संबंध में स्वयं का समाधान करने के प्रयोजन के लिए स्वप्रेरणा से या केन्द्रीय कर आयुक्त के निवेदन पर ऐसी कार्यवाही के अभिलेख की मांग और परीक्षण कर सकेगा तथा आदेश द्वारा ऐसे बिन्दुओं के अवधारण के लिए जो उक्त विनिश्चय या आदेश से उद्भूत होते हैं, उक्त विनिश्चय या आदेश की संसूचना की तारीख से छह मास के भीतर अपील प्राधिकारी को आवेदन करने के लिए किसी अधीनस्थ अधिकारी को निदेश दे सकेगा जैसा आयुक्त द्वारा अपने आदेश में विनिर्दिष्ट किया जाए।

(3) जहां उपधारा (2) के अधीन आदेश के अनुसरण में प्राधिकृत अधिकारी अपील प्राधिकारी को आवेदन करता है, वहां ऐसे आवेदन को अपील प्राधिकारी द्वारा ऐसे आवेदन से ऐसे निबटा जायेगा मानो यह न्यायनिर्णायक प्राधिकारी के विनिश्चय या आदेश के विरुद्ध की गई अपील हो और ऐसा प्राधिकृत अधिकारी कोई अपीलकर्ता हो तथा इस अधिनियम के अपील से संबंधित उपबंध ऐसे आवेदन पर लागू होंगे।

(4) अपील प्राधिकारी, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि अपीलकर्ता, यथास्थिति, तीन या छह मास की पूर्वोक्त अवधि के भीतर अपील करने से पर्याप्त कारणों से निवारित किया गया था, तो वह उसे एक मास की और अवधि के भीतर प्रस्तुत करना अनुज्ञात करेगा।

(5) इस धारा के अधीन प्रत्येक अपील ऐसे प्रपत्र में होगी और ऐसी रीति में सत्यपित की जाएगी जो विहित किया जाए।

(6) उपधारा (1) के अधीन कोई अपील फाइल नहीं की जाएगी यदि अपीलकर्ता ने—

(क) अक्षेपित आदेश से उद्भूत कोई कर, ब्याज, जुर्माना, फीस और शास्ति का पूर्ण या ऐसे भाग का संदाय नहीं किया हो जैसा उसके द्वारा स्वीकारकिया गया है ; और

(ख) उक्त आदेश, जिसके संबंध में अपील फाइल की गई है, से उद्भूत [अधिकतम [बीस]²³¹ करोड़ रुपए के अधीन रहते हुए,]²³² विवाद में बकाया कर की रकम के दस प्रतिशत के बराबर राशि का संदाय नहीं किया हो।

[परंतु किसी कर की मांग को अंतर्वलित किए बिना शास्ति की मांग करने वाले किसी आदेश के मामले में ऐसे आदेश के विरुद्ध तब तक कोई अपील फाइल नहीं की जाएगी, जब तक अपीलार्थी द्वारा उक्त शास्ति के दस प्रतिशत के बराबर राशि का संदाय न कर दिया गया हो]²³³

230. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।

231. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द "पच्चीस" प्रतिस्थापित।

232. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।



(7) जहां उपधारा (6) के अधीन अपीलकर्ता ने रकम का संदाय कर दिया है, वहां बकाया रकम के लिए वसूली कार्यवाहियां स्थगित समझी जाएंगी।

(8) अपील प्राधिकारी अपीलकर्ता को सुने जाने का अवसर प्रदान करेगा।

(9) अपील प्राधिकारी, यदि उसे अपील सुनवाई की किसी अवस्था पर पर्याप्त कारण दर्शित किया जाए तो पक्षकारों को या उनमें से किसी एक को समय देगा और लिखित में अभिलेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से अपील की सुनवाई को स्थगित रखेगा :

परन्तु यह कि ऐसा कोई स्थगन अपील की सुनवाई के दौरान किसी पक्षकार को तीन बार से अधिक के लिए नहीं दिया जाएगा।

(10) अपील प्राधिकारी अपील की सुनवाई के समय अपीलकर्ता को अपील के आधारों में विनिर्दिष्ट नहीं किए गए अपील के किसी आधार को जोड़ना अनुज्ञात कर सकेगा यदि उसका समाधान हो जाता है कि अपील के आधारों से उस आधार का लोप जानबूझकर या अयुक्तियुक्त नहीं था।

(11) अपील प्राधिकारी ऐसी और जांच करने के पश्चात् जो आवश्यक हो, अपील किये गये आदेश या विनिश्चय को संपुष्ट, उपांतरित या अपास्त करने का आदेश करेगा जो वह उचित समझे, किन्तु उस न्यायनिर्णायक प्राधिकारी को मामला पुनःनिर्दिष्ट नहीं करेगा जिसने ऐसा विनिश्चय या आदेश पारित किया था :

परन्तु अधिहरण के बदले में कोई फीस या शास्ति या जुर्माना बढ़ाने वाला अथवा वर्धित मूल्य के माल का अधिहरण या प्रतिदाय की रकम या इनपुटकर प्रत्यय घटाने वाला कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा यदि अपीलकर्ता को प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने का उचित अवसर नहीं दे दिया गया हो :

परन्तु यह और कि अपील प्राधिकरण की जहां यह राय है कि कोई कर संदत्त नहीं किया गया है या कम संदत्त किया गया है या गलती से प्रतिदाय किया गया है अथवा जहां इनपुट कर प्रत्यय गलत ढंग से प्राप्त किया गया है या उपयोग किया गया है, वहां अपीलकर्ता से ऐसा कर या इनपुट कर प्रत्यय के संदाय की अपेक्षा करने वाला कोई आदेश पारित नहीं किया जाएगा यदि अपीलकर्ता को प्रस्तावित आदेश के विरुद्ध कारण दर्शित करने का नोटिस नहीं दिया गया है और धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]²³⁴ के अधीन विनिर्दिष्टसमय-सीमा के भीतर आदेश पारित किया गया है।

(12) अपील निपटारा करने वाला अपील प्राधिकरण का आदेश लिखित में होगा और अवधारण के बिन्दुओं, उनपर विनिश्चय और ऐसे विनिश्चय के कारणों को लेखापित करेगा।

(13) अपील प्राधिकारी, जहां ऐसा करना संभव हो, प्रत्येक अपील को उसे फाइल किए जाने की तारीख से एक वर्ष के अवधि के भीतर सुनवाई और विनिश्चय करेगा :

परन्तु जहां आदेश जारी किया जाना न्यायालय या अधिकरण के आदेश द्वारा स्थगित किया जाता है, ऐसे स्थगन की अवधि एक वर्ष की अवधि की गणना में अपवर्जित की जाएगी।

(14) अपील के निपटारे पर अपील प्राधिकारी उसके द्वारा पारित आदेश को अपीलकर्ता, प्रत्यर्थी और न्यायनिर्णायक प्राधिकारी को संसूचित करेगा—

233. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व परन्तुक निम्नवत् था :-

परन्तु धारा 129 की उपधारा (3) के अधीन किसी आदेश के विरुद्ध कोई अपील तब तक फाइल नहीं की जाएगी, जब तक शास्ति के पच्चीस प्रतिशत के बराबर राशि का अपीलार्थी द्वारा संदाय न कर दिया गया हो।

234. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



(15) अपील प्राधिकरण द्वारा पारित आदेश की एक प्रति आयुक्त या उसके द्वारा इस निमित्त अभिहित प्राधिकारी को और केन्द्रीय कर अधिकारिता आयुक्त या उसके द्वारा इस निमित्त अभिहित प्राधिकारी को भी भेजी जाएगी।

(16) इस धारा के अधीन पारित प्रत्येक आदेश धारा 108 या धारा 113 या धारा 117 अथवा धारा 118 के उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतिम और पक्षकारों पर बाध्यकारी होगा।

108. पुनरीक्षण प्राधिकारी की शक्तियां—

(1) धारा 121 और उसके अधीन बनाए गए किन्हीं नियमों के उपबंधों के अधीन रहते हुए, पुनरीक्षण प्राधिकारी स्वप्रेरणा से या उसके द्वारा प्राप्त किसी सूचना पर याकेन्द्रीय कर आयुक्त के अनुरोध पर किसी ऐसी कार्यवाही के अभिलेख को मंगा सकेगा और जांच कर सकेगा तथा यदि वह यह मानता है कि उसके किसी अधीनस्थ अधिकारी ने इस अधिनियम या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन कोई विनिश्चय या आदेश पारित किया है, जो त्रुटिपूर्ण है और राजस्व के हितों के प्रतिकूल है तथा अवैध या अनुचित है अथवा उसने कतिपय सारवान् तथ्यों को ध्यान में नहीं रखा है चाहे वे उक्त आदेश के जारी करने के समय उपलब्ध है या नहीं या भारत के नियंत्रण — महालेखापरीक्षक द्वारा की गई के पारिणामिक है, तो वह यदि आवश्यक हो तो ऐसी अवधि के लिए जो वह उचित समझे ऐसे विनिश्चय या आदेश के प्रचालन को स्थगित कर सकेगा और संबंधित व्यक्ति को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् और ऐसी जांच करने के पश्चात् जो आवश्यक हो ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जो वह ठीक और उचित समझे जिसके अन्तर्गत उक्त विनिश्चय या आदेश को वर्धित करना या उपांतरित करना या अपास्त करना भी है।

(2) पुनरीक्षण प्राधिकारी उपधारा (1) के अधीन किसी शक्ति का प्रयोग नहीं करेगा, यदि—

(क) आदेश धारा 107 या धारा 112 या धारा 117 या धारा 118 के अधीन अपील के अध्याधीन है ; या

(ख) धारा 107 की उपधारा (2) के अधीन विनिर्दिष्ट अवधि समाप्त नहीं हुई है या पुनरीक्षित किए जाने वाले विनिश्चय या आदेश को पारित करने के पश्चात् तीन वर्ष से अधिक समय समाप्त हो गया है ; या

(ग) इस धारा के अधीन किसी पूर्वतर अवस्था पर आदेश को पहले ही पुनरीक्षण के लिए लिया जा चुका है ; या

(घ) आदेश उपधारा (1) के अधीन शक्तियों के प्रयोग में पारित किया जा चुका है :

परन्तु यह कि पुनरीक्षण प्राधिकारी उपधारा (1) के अधीन किसी बिन्दु जो कि उपधारा (2) के खंड (क) में विनिर्दिष्ट अपील में उठाया नहीं गया और विनिश्चित नहीं किया गया, पर ऐसा आदेश की तारीख से एक वर्ष की अवधि समाप्त होने के पूर्व या उस उपधारा के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट तीन वर्ष की अवधि समाप्त होने के पूर्व, जो भी पश्चात्कर्ती हो, आदेश पारित कर सकेगा।

(3) उपधारा (1) के अधीन पुनरीक्षण में पारित प्रत्येक आदेश धारा 113 या धारा 117 अथवा धारा 118 के उपबंधों के अधीन रहते हुए अंतिम और पक्षकारों पर बाध्यकारी होगा।

(4) जहां पुनरीक्षण के लिए कार्यवाहियां इस धारा के अधीन नोटिस जारी करने के माध्यम से प्रारंभ की गई हैं और यदि उक्त विनिश्चय या आदेश में कोई ऐसा मुद्दा अन्तरनिहित है जिसमें अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय ने किसी अन्य कार्यवाही में अपना विनिश्चय दिया है और अपील अधिकरण या उच्च न्यायालय के ऐसे विनिश्चय के विरुद्ध उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में कोई अपील लंबित है, अपील अधिकरण के विनिश्चय की तारीख और उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख या उच्च न्यायालय के विनिश्चय की तारीख और उच्चतम न्यायालय के विनिश्चय की तारीख के बीच व्यतीत अवधि उपधारा (2) के खंड (ख) में निर्दिष्ट परिसीमा की अवधि की गणना करने में अपवर्जित कर दी जाएगी।



(5) उपधारा (1) के अधीन जहां आदेश जारी किया जाना न्यायालय या अपील अधिकरण के आदेश द्वारा स्थगित किया जाता है, ऐसे स्थगन की अवधि उपधारा (2) के खंड (ख) में निर्दिष्ट अवधि की परिसीमा की गणना में अपवर्जित कर दी जाएगी।

(6) इस धारा के प्रयोजनों के लिए पद, —

(i) “अभिलेख” में इस अधिनियम के अधीन पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा परीक्षा के समय किसी कार्यवाही से संबंधित उपलब्धसभी अभिलेख सम्मिलित होंगे ;

(ii) “विनिश्चय” में पुनरीक्षण प्राधिकारी से बैंक में न्यून किसी अधिकारी द्वारा दी गई सूचना सम्मिलित होगी।

[109. अपीलीय न्यायाधिकरणों और उनकी पीठों का गठन—

इस अध्याय के प्रावधानों के अध्याधीन, केन्द्रीय माल एवं सेवा कर अधिनियम, 2017 के अन्तर्गत गठित माल एवं सेवा कर न्यायाधिकरण इस अधिनियम के तहत अपीलीय प्राधिकरण या पुनरीक्षण प्राधिकरण द्वारा पारित आदेशों के खिलाफ अपीलों की सुनवाई के लिये अपीलीय न्यायाधिकरण होगा।²³⁵

[110. ***]²³⁶

111. अपील अधिकरण के समक्ष प्रक्रिया—

(1) अपील अधिकरण, अपने समक्ष किसी कार्यवाहियों या अपील को निपटाते समय सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 में अधिकथित प्रक्रिया द्वारा बद्ध नहीं होगा, लेकिन प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों और इस अधिनियम के अन्य उपबंधों तथा उसके अधीन निर्मित नियमों के अध्याधीन द्वारा निर्देशित होगा और अपील अधिकरण को अपनी प्रक्रिया को विनियमित करने की शक्ति होगी।

(2) अपील अधिकरण की इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों के निर्वहन के प्रयोजनों के लिए, शक्ति सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के अधीन सिविल न्यायालय में यथा विहित शक्तियों के समान होगी जो निम्नलिखित मामलों के संबंध में वाद के विचारण के समय होगी, अर्थात्

(क) किसी व्यक्ति को सम्मन करना और उपस्थितिको लागू करना तथा शपथ पर उसका परीक्षण करना ;

(ख) दस्तावेजों की खोज और प्रस्तुत करने की अपेक्षा;

(ग) शपथपत्र पर साक्ष्य प्राप्त करना;

235. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी:—

109. अपील अधिकरण और उसकी न्यायपीठें—

(1) इस अध्याय के उपबंधों के अधीन रहते हुए, केन्द्रीय माल और सेवाकर अधिनियम के अधीनगठित माल और सेवा कर अधिकरण, इस अधिनियम के अधीन अपील प्राधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करने के लिए अपील अधिकरण होगा।

(2) राज्य में अवस्थित राज्यन्यायपीठ और क्षेत्रीय न्यायपीठों का गठन और अधिकारिता, केन्द्रीय माल और सेवाकर अधिनियम की धारा 109 या तदधीन बनाए गए नियमों के अनुसार होगी।

236. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी:—

110. अपील अधिकरण के अध्यक्ष और सदस्य, उनकी अर्हताएं, नियुक्ति, सेवा की शर्तें आदि—

राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय न्यायपीठों के अध्यक्ष और सदस्यों की अर्हताएं, नियुक्ति, वेतन और भत्ते, पदावधि, त्यागपत्र और पद से हटाया जाना केन्द्रीय माल और सेवाकर अधिनियम की धारा 110 के उपबंधों के अनुसार होगा।



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



(घ) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 123 और धारा 124 के उपबंधों के अध्यक्षीन किसी भी कार्यालय से किसी लोक अभिलेख या दस्तावेज या ऐसे किसी अभिलेख या दस्तावेज की प्रति मंगाना;

(ङ) साक्षियों या दस्तावेजों की परीक्षा के लिए कमीशन जारी करना;

(च) चूक की स्थिति में किसी प्रतिवेदन को खारिज करने अथवा एक पक्षीय आदेश से इसका निष्पादन करना;

(छ) किसी अभ्यावेदन को चूक के लिए खारिज करने के आदेश या अपने द्वारा पास किसी एकपक्षीय आदेश को अपास्त करना ; और

(ज) कोई अन्य मामले जो विहित किए जाएं।

(3) अपील अधिकरण द्वारा किया गया कोई आदेश उसी रीति में लागू होगा जैसे न्यायालय द्वारा उसके यहां लंबित किसी वाद में की गई डिक्री हो और यह अपील अधिकरण के लिए विधि सम्मत होगा कि वह अपने आदेशों के निष्पादन के लिए स्थानीय अधिकारिता के ऐसे न्यायालय में भेजे जो—

(क) कंपनी के विरुद्ध आदेश की दशा में जहां कंपनी का रजिस्ट्रीकृत कार्यालय स्थित है ; या

(ख) किसी अन्य व्यक्ति के विरुद्ध आदेश की दशा में जहां संबद्ध व्यक्ति स्वेच्छा से निवास करता है या लाभ के लिए व्यापारिक या व्यक्तिगत रूप से कार्य करता है।

(4) अपील अधिकरण के समक्ष कार्यवाहियां भारतीय दंड संहिता की धारा 193 और धारा 228 के अर्थ में और धारा 196 के प्रयोजनों के लिए न्यायिक कार्यवाहियां समझी जाएंगी और अपील अधिकरण दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 195 और अध्याय 25 के प्रयोजनों के लिए सिविल न्यायालय समझा जाएगा।

112. अपील अधिकरण को अपील—

(1) इस अधिनियम की धारा 107 या धारा 108 के अधीन या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश द्वारा व्यथित कोई व्यक्ति, उस आदेश जिसके विरुद्ध अपील चाही गई है, अपील करने वाले व्यक्ति को संसूचना की तारीख से, [या वह तारीख, जो इस अधिनियम के अधीन अपील अधिकरण के समझ अपील फाइल करने के लिए, परिपद की सिफारिशों पर, सरकार द्वारा अधिसूचित की जाए, जो भी पश्चात्तवर्ती हो]²³⁷ ऐसे आदेश के विरुद्ध तीन मास के भीतर अपील कर सकेगा।

(2) अपील अधिकरण ऐसी किसी अपील को अपने विवेक के अनुसार स्वीकार करने से इन्कार कर सकता है जहां अंतर्वलित कर या इनपुट कर प्रत्यय या कर और इनपुट कर में अंतरकीराशि या ऐसे आदेश द्वारा जुर्माने की रकम या अवधारित शास्ति पचास हजार रूपए से अधिक न हो।

(3) आयुक्त, आदेश की वैधानिकता या औचित्य के संबंध में स्वयं के समाधान करने के प्रयोजन के लिए, स्वप्रेरणा से या केन्द्रीय कर आयुक्त के निवेदन पर, इस अधिनियम या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन अपीलीय अधिकारी या पुनरीक्षण प्राधिकारी द्वारा पारित किसी आदेश के अभिलेख को आदेश के वैधता और औचित्य पर संतुष्ट होने के लिए परीक्षण के लिए मंगा सकेगा और आदेश द्वारा अपने किसी अधीनस्थ अधिकारी को, उक्त आदेश से उदभूत ऐसे बिन्दुओं जिसका उल्लेख आयुक्त अपने आदेश में करेगा के विनिश्चय के लिए, उक्त आदेश पारित होने की तिथि से [वह तारीख, जिसको आदेश पारित किया गया है; या उस तारीख से, जो इस अधिनियम के अधीन अपील अधिकरण के समक्ष

²³⁷. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 01 अगस्त, 2024 से प्रभावी।



अपील फाइल करने के प्रयोजन के लिए, परिपद की सिफारिशों पर सरकार द्वारा अधिसूचित की जाए, जो भी पश्चातवर्ती हो।²³⁸ छहमाह के भीतर अपीलीय अधिकरण में अपील करने का निदेश कर सकेगा।

(4) जहां उपधारा (3) के अधीन आदेश के अनुसरण में प्राधिकृत अधिकारी अपील अधिकरण को आवेदन करता है, तो ऐसा आवेदन अपील अधिकरण इस प्रकार निपटाएगा जैसे वह धारा 107 की उपधारा (11) के अधीन या धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन आदेश के विरुद्ध अपील की गई हो और इस अधिनियम के उपबंध आवेदन को ऐसे लागू होंगे जैसे वे उपधारा (1) के अधीन दाखिल अपील के संबंध में लागू होते हैं।

(5) इस नोटिस की प्राप्ति पर कि इस धारा के अधीन अपील हो चुकी है, पक्षकार जिसके विरुद्ध अपील हुई है किसी अन्य बात के होते हुए भी कि उसने ऐसे आदेश या उसके किसी भाग के विरुद्ध अपील नहीं की है, नोटिस की प्राप्ति के 45 दिन में विहित रीति में सत्यापित प्रतिआक्षेपों का ज्ञापन, आदेश जिसके किसी भाग के विरुद्ध अपील की गई है, फाइल करेगा और ऐसा ज्ञापन अपील अधिकरण द्वारा ऐसे निस्तारित किया जाएगा जैसे यह उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट समय में प्रस्तुत की गई अपील हो।

(6) अपील अधिकरण, उपधारा (1) में निर्दिष्ट अवधि के अवसान के पश्चात् तीन मास में अपील स्वीकार कर सकेगा [या उपधारा (3) में निर्दिष्ट अवधि के अवसान के पश्चात् तीन मास के भीतर आवेदन फाइल करना अनुज्ञात कर सकेगा]²³⁹ या उपधारा (5) में निर्दिष्ट अवधि के अवसान के पश्चात् 45 दिन में प्रतिआक्षेपों का ज्ञापन फाइल करने के लिए अनुमति दे सकेगा यदि यह समाधान हो जाए कि इसको उस अवधि में प्रस्तुत न कर पाने का उपयुक्त कारण था।

(7) अपील अधिकरण को अपील ऐसे प्रपत्र एवं ऐसी रीति में सत्यापित और ऐसी फीस सहित होगीजैसा कि विहित किया जाय।

(8) कोई अपील, उपधारा (1) के अधीन तबतक फाइल नहीं की जाएगी जबतक अपीलार्थी निम्नलिखित संदत्त न कर दे,—

(क) पूर्ण कर की रकम का ऐसा कोई भाग, ब्याज, जुर्माना, फीस और आरोपित आदेश से उत्पन्न शास्ति जैसी उसके द्वारा स्वीकार की गई हो; और

(ख) धारा 107 की उपधारा (6) के अधीन संदत्त रकम के अतिरिक्त विवाद में कर की शेष रकम के [दस प्रतिशत]²⁴⁰ के बराबर राशि [अधिकतम [20 करोड़ रूपये]²⁴¹ के अधीन रहते हुए]²⁴²।

[परंतु किसी कर की मांग को अंतर्वलित किए बिना शास्ति की मांग करने वाले किसी आदेश के मामले में ऐसे आदेश के विरुद्ध तब तक कोई अपील फाइल नहीं की जाएगी, जब तक अपीलार्थी द्वारा धारा 107 की उपधारा (6) के परन्तुक के अधीन संदेय रकम के अतिरिक्त उक्त शास्ति के दस प्रतिशत के बराबर राशि का संदाय न कर दिया गया हो।]²⁴³

238. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 01 अगस्त, 2024 से प्रभावी।

239. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

240. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द "बीस प्रतिशत" प्रतिस्थापित।

241. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द "पचास करोड़ रूपये" प्रतिस्थापित।

242. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

243. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।



(9) जहां अपीलार्थी उपधारा (8) के अनुसार रकम संदत्त कर चुका है वहां शेष रकम की वसूली कार्यवाहियां अपील के निस्तारण तक स्थगित समझी जाएंगी।

(10) अपील अधिकरण के समक्ष—

(क) त्रुटि को ठीक करने या किसी अन्य प्रयोजन के लिए कोई अपील;

(ख) अपील या किसी आवेदन का प्रत्यावर्तन करने हेतु,

प्रत्येक आवेदन ऐसी शुल्क सहित होगा जो विहित किया जाए।

113. अपील अधिकरण के आदेश—

(1) अपीलीय अधिकरण अपील के पक्षकारों को सुने जाने का अवसर देने के पश्चात् विनिश्चय या आदेश जिसके विरुद्ध अपील दायर की गई है के पुष्टिकरण, उपांतरण या अपास्त जैसा ठीक समझे, उस पर आदेश कर सकेगा या अपीलीय प्राधिकरण या पुनरीक्षण प्राधिकरण या मूल न्यायनिर्णयन प्राधिकरण को ऐसे निदेशों, जिनको वह ठीक समझे के साथ वापस नये न्यायनिर्णयन या अतिरिक्त साक्ष्य लेने के पश्चात् यदि आवश्यक हों, विनिश्चय के लिए वापस भेज सकेगा।

(2) अपीलीय अधिकरण, यदि समुचित कारण दिए जाएं तो किसी अपील की सुनवाई की किसी प्रास्थिति पर उनके लिए कारणों को अभिलिखित करते हुए पक्षकारों को समय प्रदान या अपील की सुनवाई स्थगित कर सकेगा :

परंतु यह कि इस प्रकार का स्थगन अपील की सुनवाई के दौरान एक पक्षकार को तीन बार से अधिक नहीं प्रदान किया जाएगा।

(3) अपीलीय अधिकरण, अपने आदेशमें ऐसी कोई त्रुटि जो अपने आप उसे संज्ञान में आती है या आयुक्त या केन्द्रीय कर आयुक्त या अपील के किसी पक्षकार द्वारा संज्ञान में लाई जाती है तो आदेश की तारीख से तीन माह की अवधि में अभिलेख पर किसी प्रत्यक्ष त्रुटि को ठीक करने के लिये उपधारा (1) के अधीन अपने द्वारा पारित आदेश को संशोधित कर सकेगा:

परंतु यह कि ऐसा कोई संशोधन जो करनिर्धारण की वृद्धि या वापसी या

प्रत्ययकी कमी या किसी पक्षकार के दायित्व में अन्यथा वृद्धि करता है, इस अधिनियम के अधीन तब तक नहीं किया जा सकेगा जब तक कि पक्षकार को सुनने का अवसर न प्रदान किया जाए।

(4) अपीलीय अधिकरण जहां तक संभव हो अपील के फाइल होने की तारीख से एक वर्ष की अवधि में प्रत्येक अपील सुने और विनिश्चय करेगा।

(5) अपीलीय अधिकरण इस अधिनियम के अधीन पारित प्रत्येक आदेश की प्रति अपीलीय प्राधिकरण या पुनरीक्षण प्राधिकरण या मूल न्यायनिर्णयन प्राधिकरण यथास्थिति अपीलार्थी और आयुक्त या अधिकारिता रखने वाला केन्द्रीय कर आयुक्त को भेजेगा।

(6) जैसाकि धारा 117 या धारा 118 में उपबधित है, अपीलीय अधिकरण द्वारा किसी अपील पर पारित आदेश अंतिम और पक्षकारों पर बाधकारी होगा।

[114. ***]244

244. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी:—

114. राज्य अध्यक्ष की वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियां—

राज्य अध्यक्ष, राज्य में अपील अधिकरण की राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय पीठों पर ऐसी वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग करेगा, जैसा विहित किया जाए:

परंतु राज्य अध्यक्ष के पास अपनी ऐसी वित्तीय और प्रशासनिक शक्तियों को, जैसावह ठीक समझे, राज्य न्यायपीठ और क्षेत्रीय पीठों के किसी अन्य सदस्य या अन्य अधिकारी को, इस शर्त के अधीन रहते हुए प्रत्यायोजित करने का प्राधिकार



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



115. अपील के दाखिल करने के लिए संदत्त रकम की वापसी पर ब्याज—

जहां अपीलार्थी द्वारा धारा 112 की उपधारा (8) या धारा 107 की उपधारा (6) के अधीन संदत्त रकम को अपीलीय प्राधिकारी या अपील अधिकरण के किसी आदेश के परिणामस्वरूप वापस किया जाना अपेक्षित है तो धारा 56 के अधीन विनिर्दिष्ट ब्याज की दर से ऐसी वापसी के संबंध में रकम के संदाय की तारीख से ऐसे रकम की वापसी की तारीख तक ब्याज का संदाय किया जाएगा।

116. प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा हाजिरी—

(1) ऐसा कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन नियुक्त किसी अधिकारी या अपीलीय प्राधिकारी या अपील अधिकरण के समक्ष इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के संबंध में हाजिर होने के लिए हकदार है या अपेक्षित है, इस धारा के अन्य उपबंधों के अध्यधीन शपथ या कथन पर परीक्षा के लिए व्यक्तिगत रूप से हाजिर होने के लिए इस अधिनियम के अधीन जब उससे अन्यथा अपेक्षित है तो प्राधिकृत प्रतिनिधि के द्वारा हाजिर हो सकेगा।

(2) इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए पद “प्राधिकृत प्रतिनिधि” से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है, जो उपधारा (1) में निर्दिष्ट व्यक्ति द्वारा उसके स्थान पर हाजिर होने के लिए प्राधिकृत व्यक्ति—

(क) उसका रिश्तेदार या नियमित कर्मचारी है ; या

(ख) ऐसा कोई अधिवक्ता जो भारत में किसी न्यायालय में प्रैक्टिस करने का हकदार है और जिसे भारत में किसी न्यायालय के समक्ष प्रैक्टिस करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया है ; या

(ग) कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट, लागत लेखाकार या कंपनी सचिव जो प्रैक्टिस करने का प्रमाण-पत्र रखता है और जिसे प्रैक्टिस करने से प्रतिबंधित नहीं किया गया है; या

(घ) किसी राज्य सरकार या संघ राज्यक्षेत्र या बोर्ड के वाणिज्य कर विभाग का ऐसा सेवानिवृत्त अधिकारी जिसने सरकार के अधीन अपनी सेवा के दौरान समूह 'ख' राजपत्रित अधिकारी की रैंक की पंक्ति से अन्यून के पद पर कम से कम दो वर्ष की अवधि तक की सेवा की हो :

परंतु यह कि ऐसा कोई अधिकारी अपनी सेवानिवृत्ति या पदत्याग की तारीख से एक वर्ष की अवधि के लिए इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के समक्ष हाजिर होने के लिए अधिकारी नहीं होगा या

(ङ) ऐसा कोई व्यक्ति जो संबद्ध रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के लिए माल और सेवा कर प्रैक्टिसकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए प्राधिकृत है।

(3) कोई व्यक्ति—

(क) जो सरकारी सेवा से बर्खास्त या हटाया गया हो ; या

(ख) जो इस अधिनियम, केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम, समेकित माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम या विद्यमान किसी विधि या माल के विक्रय या माल के प्रदाय या सेवाओं या दोनों पर कर लगाने से संबंधित राज्य विधानसभा द्वारा पारित किसी अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों से संबंधित किसी अपराध का दोषसिद्ध हो ; या

(ग) जो विहित प्राधिकारी द्वारा दुर्व्यावहार का दोषी पाया गया हो ;

(घ) जो दिवालिया के रूप में न्यायनिर्णीत हो चुका हो,

उपधारा (1) के अधीन किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए पात्र नहीं होगा—

(i) खंड (क), (ख) और (ग) में निर्दिष्ट व्यक्तियों के मामले में सदैव के लिए; और

होगा कि ऐसा सदस्य या अधिकारी ऐसी प्रत्यायोजित शक्तियों को प्रयोग करते हुए राज्य अध्यक्ष के निदेश, नियंत्रण और पर्यवेक्षण के अधीन कार्य करेगा।



(ii) खंड (घ) में निर्दिष्ट किसी व्यक्ति के मामले में उस अवधि के दौरान जब तक दिवालियापन जारी रहे।

(4) ऐसा कोई व्यक्ति जो केन्द्रीयमाल और सेवा कर अधिनियम या किसी अन्य राज्य के माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम के उपबंधों के अधीन अयोग्य घोषित है इस अधिनियम के अधीन भी अयोग्य समझा जाएगा।

117. उच्च न्यायालय को अपील—

(1) [राज्य पीठों]²⁴⁵ द्वारा पारित किसी आदेश से व्यथित कोई व्यक्ति उच्च न्यायालय में अपील फाइल कर सकेगा और उच्च न्यायालय ऐसी अपील को स्वीकार कर सकेगा यदि उसका यह समाधान हो जाए कि मामले में विधि का कोई सारवान प्रश्न अर्न्तनिहित है।

(2) उपधारा (1) के अधीन कोई अपील उस तारीख से जिसको व्यथित व्यक्ति द्वारा अपीलगत आदेश प्राप्त हुआ है से एक सो अस्सी दिन की अवधि में फाइल की जा सकेगी और यह ऐसे प्रारूप में और ऐसे सत्यापित रीति में होगी जो विहित की जाए :

परंतु यह कि उच्च न्यायालय उक्त अवधि के अवसान के पश्चात् अपील को सुन सकेगा, यदि उसका यह समाधान हो जाए कि ऐसी अवधि में इसको फाइल न कर पाने का समुचित कारण था।

(3) जहां उच्च न्यायालय का समाधान हो जाए कि किसी मामले में विधि का सारवान प्रश्न अर्न्तनिहित है वहां वह उस प्रश्न को विनियमित करेगा और केवल इस प्रकार विनियमित प्रश्न पर अपील की सुनवाई करेगा तथा परिवादी अपील की सुनवाई के दौरान कि मामले में ऐसा प्रश्न अर्न्तनिहित नहीं है पर बहस करने के लिए अनुज्ञेय होंगे :

परंतु इस उपधारा की किसी बात के बारे में यह नहीं समझा जाएगा कि वह अभिलेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से न्यायालय की किसी अपील की, उसके द्वारा विरचित न किए गए विधि के किसी अन्य सारवान प्रश्न पर सुनवाई करने की शक्ति को तब समाप्त करता है या उसका अल्पीकरण करता है यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि मामले में ऐसा प्रश्न अर्न्तनिहित है।

(4) उच्च न्यायालय इस प्रकार विनियमित विधि के प्रश्न का विनिश्चय करेगा और ऐसे निर्णय को उन आधारों सहित जिन पर ऐसा निर्णय आधारित है, प्रदान करेगा और ऐसी लागत लगा सकेगा जो वह ठीक समझे।

(5) उच्च न्यायालय किसी ऐसे वाद को अवधारित कर सकेगा, जो—

(क) [राज्य पीठों]²⁴⁶ द्वारा अवधारित न किया गया हो ; या

(ख) उपधारा (3) में यथानिर्दिष्ट ऐसे विधि के प्रश्न पर विनिश्चय के कारण [राज्य पीठों]²⁴⁷ द्वारा त्रुटिपूर्ण अवधारण किया गया हो।

(6) जहां उच्च न्यायालय के समक्ष कोई अपील फाइल की गई हो, वहां यह उच्च न्यायालय के दो न्यायाधीशों से कम की पीठ द्वारा नहीं सुनी जाएगी और ऐसे न्यायाधीशों यदि हों तो उनके बहुमत के मत के अनुसार विनिश्चय की जाएगी।

(7) जहां ऐसा कोई बहुमत नहीं है, वहां न्यायाधीश विधि के उस बिंदु को बताएंगे जिस पर वे मतांतर रखते हैं और वहां केवल उस बिंदु पर उच्च न्यायालय के एक या अधिक अन्य न्यायाधीशों द्वारा मामले

245. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राज्य पीठ या अपील अधिकरण की क्षेत्रीय पीठों" प्रतिस्थापित।

246. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राज्य पीठ या क्षेत्रीय पीठ" प्रतिस्थापित।

247. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राज्य पीठ या क्षेत्रीय पीठ" प्रतिस्थापित।



को सुना जाएगा और ऐसे न्यायाधीशों, जिन्होंने पहले इस मामले को सुना है, सहित के बहुमत के मत के अनुसार ऐसे बिंदु पर विनिश्चय किया जाएगा।

(8) जहां उच्च न्यायालय ने इस धारा के अधीन फाइल अपील में निर्णय दे दिया है तो ऐसे निर्णय को प्रभाव इसकी सत्यापित प्रतिलिपि के आधार पर किसी पक्ष द्वारा दिया जाएगा।

(9) इस अधिनियम में जैसे पहले अन्यथा उपबंधित किया गया है, सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 के उपबंध, जो उच्च न्यायालय के अपील से संबंधित हैं, इस धारा के अधीन अपील के मामलों में, जहां तक संभव हो लागू होंगे।

118. उच्चतम न्यायालय को अपील—

(1) ऐसी अपील जो उच्चतम न्यायालय में होगी —

(क) [प्रधान पीठ]²⁴⁸ द्वारा पारित किसी आदेश के विरुद्ध ; या

(ख) किसी मामले में धारा 117 के अधीन की गई अपील में उच्च न्यायालय द्वारा पारित किसी निर्णय या आदेश के विरुद्ध, जो स्वतः या व्यथित पक्षकार द्वारा या उसके निमित्त के द्वारा किए गए आवेदन पर निर्णय या आदेश के पारित होने के तुरंत बाद, उच्च न्यायालय द्वारा प्रमाणित किया गया हो कि उच्चतम न्यायालय को अपील करने के लिए उचित मामला है।

(2) सिविल प्रक्रिया संहिता के उपबंध, जो उच्चतम न्यायालय को अपील करने से संबंधित हैं जहां तक संभव हो इस धारा के अधीन अपील के मामलों में उस तरह लागू होंगे जैसे उच्च न्यायालय की डिग्री की अपील के मामले में होते हैं।

(3) जहां उच्च न्यायालय का निर्णय अपील में बदल या उल्ट गया हो वहां उच्च न्यायालय का आदेश उस प्रकार प्रभावी होगा, जैसे उच्च न्यायालय के निर्णय के मामले में धारा 117 में यथा उपबंधित रीति में उच्चतम न्यायालय का आदेश होता है।

119. राशि जो अपील आदि के होने के बाद भी संदत्त किए जाने हैं—

किसी बात के होते हुए भी कि उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय में अपील की गई है, धारा 113 के उपधारा (1) के अधीन अपील अधिकरण की [प्रधान पीठ]²⁴⁹ या धारा 113 की उपधारा (1) के अधीन अपील अधिकरण के [राज्य पीठों]²⁵⁰ या धारा 117 के अधीन उच्च न्यायालय द्वारा यथास्थिति पारित किसी आदेश के परिणामस्वरूप सरकार को दिए जाने वाली राशि इस प्रकार पारित आदेश के अनुसरण में संदेय होगी।

120. कतिपय मामलों में अपील फाइल नहीं की जा सकेगी—

(1) आयुक्तपरिषद् की सिफारिशों पर समय-समय पर जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों से, जैसा ठीक समझे इस अध्याय के उपबंधों के अधीन राज्य कर अधिकारी द्वारा फाइल की जाने वाली अपील या आवेदन के नियमन के प्रयोजन के लिए ऐसी किसी मौद्रिक सीमा को नियत कर सकेगा।

(2) जहां उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों, अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर का अधिकारी इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन पारित किसी विनिश्चय या आदेश के विरुद्ध कोई अपील या आवेदन नहीं फाइल किया गया है, यह राज्य कर के ऐसे अधिकारी को किसी अन्य मामले में

248. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राष्ट्रीय पीठ या अपील अधिकरण की प्रांतीय पीठों" प्रतिस्थापित।

249. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राष्ट्रीय या प्रांतीय पीठों" प्रतिस्थापित।

250. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "राज्य पीठों या क्षेत्रीय पीठों" प्रतिस्थापित।



अर्तनिहित समान या समतुल्य विवादक या विधि के प्रश्न के विरुद्ध अपील या आवेदन फाइल करने से नहीं रोकेगा।

(3) किसी बात के होते हुए भी यह तथ्य कि उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर के अधिकारी द्वारा कोई अपील या आवेदन फाइल नहीं किया गया है, कोई व्यक्ति अपील में या आवेदन में पक्षकार होते हुए भी किसी अपील या आवेदन के फाइल न किए जाने पर विवादित बिंदु पर विनिश्चय से राज्य कर का अधिकारी अवगत था, आशयित नहीं करेगा।

(4) अपील अधिकरण या न्यायालय ऐसी अपील या आवेदन को सुनते समय उपधारा (1) के अधीन जारी आदेशों या अनुदेशों या निदेशों के अनुसरण में राज्य कर के अधिकारी द्वारा अपील या आवेदन फाइल न किए जाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखेगा।

121. अपील न किए जाने वाले विनिश्चय और आदेश—

इस अधिनियम के उपबंधों के विपरीत किसी बात के होते हुए भी राज्य कर के अधिकारी द्वारा लिए गए विनिश्चय या पारित आदेश के विरुद्ध अपील नहीं हो सकेगी, यदि ऐसा लिया गया विनिश्चय या आदेश निम्नलिखित में से किसी एक या अधिक से संबंधित है अर्थात् :-

- (क) आयुक्त या अन्य प्राधिकारी द्वारा ऐसा आदेश जो कार्यवाहियों को एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी को सीधे अंतरित करने में सशक्त हो ; या
- (ख) लेखा पुस्तक रजिस्टर आदि अन्य दस्तावेजों को जब्त करने या रोके रखने से संबंधित कोई आदेश ; या
- (ग) इस अधिनियम के अधीन अभियोजन की मंजूरी देने वाला कोई आदेश ; या
- (घ) धारा 80 के अधीन पारित कोई आदेश।



अध्याय 19

अपराध एवं शास्तियां

122. कतिपय अपराधों के लिए शास्ति—

(1) जहां कोई कराधेय व्यक्ति जो—

(i) किसी बीजक के जारी किए बिना किसी माल या सेवा या दोनों का प्रदाय करता है या ऐसे किसी प्रदाय के लिए झूठा या गलत बीजक जारी करता है;

(ii) इस अधिनियम के उपबंधों या तदधीन बनाए गए नियमों के उल्लंघन में माल या सेवा या दोनों के प्रदाय के बिना बीजक या बिल जारी करता है ;

(iii) कर के रूप में किसी रकम का संग्रह कर उसको सरकार को संदाय करने में तीन मास से परे, उस तारीख से जब ऐसा संदाय देय था, असफल रहता है;

(iv) इस अधिनियम के उपबंधों के विपरीत किसी कर का संग्रह करता है लेकिन उसको सरकार को संदाय करने में तीन मास से परे, उस तारीख सेजब ऐसा संदाय देय था, करने में असफल रहता है ;

(v) धारा 51 की उपधारा (1) की उपबंधों के अनुसार कर कटौती में असफल रहता है या उक्त उपनियम के अधीन कटौती की अपेक्षित रकम से कम रकम की कटौती करता है या उपधारा (2) के अधीन सरकार को इस कटौती की गई रकम को कर के रूप में संदाय करने में असफल रहता है ;

(vi) धारा 52 की उपधारा (1) की उपबंधों के अनुसार कर कटौती में असफल रहता है या उक्त उपनियम के अधीन कटौती की अपेक्षित रकम से कम रकम की कटौती करता है या धारा 52 की उपधारा (3) के अधीन सरकार को इस कटौती की गई रकम को कर के रूप में संदाय करने में असफल रहता है.;

(vii) इस अधिनियम के उपबंधों या तदधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के विपरीत चाहे पूर्णतः या आंशिक रूप से माल या सेवाओं या दोनों की वास्तविक रसीद के बिना इनपुट कर प्रत्यय को लेता या उपभोग करता है ;

(viii) इस अधिनियम के अधीन कर की वापसी कपटपूर्ण तरीके से प्राप्त करता है;

(ix) धारा 20 या उसके अधीन बनाए गए नियमों के विपरीत इनपुट कर प्रत्यय प्राप्त करता है या बांटता है;

(x) इस अधिनियम के अधीन देय कर के संदाय से बचने के आशय से वित्तीय अभिलेखों को बदलता है या झूठलाता है या फर्जी लेखाओं या दस्तावेजों या किसी झूठी सूचना या विवरणी प्रस्तुत करता है;

(xi) इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत होने के लिए दायी तो है लेकिन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने में असफल रहता है;

(xii) रजिस्ट्रीकरण का आवेदन करते समय या उसके बाद रजिस्ट्रीकरण के विवरण के संबंध में गलत सूचना देता है ;

(xiii) इस अधिनियम के अधीन अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने से किसी अधिकारी को रोकता है या प्रवारित करता है ;

(xiv) इस निमित्त यथा विनिर्दिष्ट दस्तावेजों के बिना कराधेय किसी माल का परिवहन करता है ;

(xv) इस अधिनियम के अधीन कर के अपवंचन के लिए अपने आवर्तको छिपाता है;

(xvi) इस अधिनियम के या तदधीन बने नियमों के उपबंधों के अनुसरण में लेखा पुस्तकों और अन्य दस्तावेजों को बनाए रखने या प्रतिधारित करने में असफल रहता है;



(xvii) इस अधिनियम के या तद्वीन बने नियमों के उपबंधों के अनुसरण में किसी अधिकारी द्वारा मांगी गई सूचना या दस्तावेजों को प्रस्तुत करने में असफल रहता है या इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के दौरान झूठी सूचना या दस्तावेजों को प्रस्तुत करता है ;

(xviii) ऐसे किसी माल का प्रदाय, परिवहन या भंडारण करता है जिसके लिए उसको विश्वास करने का पर्याप्त कारण है कि ये इस अधिनियम के अधीन प्रतिहरण के लिए दायी हैं;

(xix) अन्य रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के रजिस्ट्रीकरण संख्यांक का प्रयोग द्वारा किसी बीजक या दस्तावेज को जारी करता है

(xx) किसी सारभूत साक्ष्य या दस्तावेज से छेड़छाड़ करता है या नष्ट करता है ;

(xxi) किसी माल को निष्पादित या छेड़छाड़ करता है जो इस अधिनियम के अधीन रोका, जब्त या कुर्क किया हुआ था,

दस हजार रूपए या अपवंचित कर या धारा 51 के अधीन कटौती न किए गए कर या कम कटौती किए गए कर या कटौती किए गए परंतु सरकार को संदेय नहीं किए गए कर या धारा 52 के अधीन संगृहीत नहीं किए गए कर या कम संगृहीत या संग्रहीत परंतु सरकार को संदत्त नहीं किए गए कर या इनपुट कर प्रत्यय पर लिए गए या अनियमित रूप से वितरित या पारित या कपटपूर्ण ढंग से दावा की गई वापसी के समतुल्य रकम, जो भी उच्चतर हो, को शास्ति के रूप में संदाय करने के लिए दायी होगा।

[(1क) कोई व्यक्ति, जो उपधारा (1) के खंड (i) या खंड (ii) या खंड (vii) या खंड (ix) के अन्तर्गत आने वाले संव्यवहार के फायदे का प्रतिधारण करता है और जिसके अनुरोध पर ऐसा संव्यवहार किया जाता है, अपवंचित कर या उपभोग किए गए या संक्रांत इनपुट कर प्रत्यय के बराबर रकम की शास्ति का दायी होगा]²⁵¹

[(1ख) [कोई इलैक्ट्रॉनिक वाणिज्य प्रचालक, जो धारा 52 के अधीन स्रोत पर कर संग्रहण के लिए दायी है,]²⁵² जो—

(i) इस अधिनियम के अधीन जारी अधिसूचना द्वारा रजिस्ट्रीकरण से छूट प्राप्त व्यक्ति से भिन्न किसी अरजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को इसके माध्यम से माल या सेवाओं या दोनों की पूर्ति करने के लिए अनुज्ञात करता है :

(ii) इसके माध्यम से किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा माल या सेवाओं या दोनों की अंतर्राज्यिक पूर्ति अनुज्ञात करता है, जो ऐसी अंतर्राज्यिक पूर्ति करने के लिए पात्र नहीं है; या

(iii) इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण प्राप्त करने से छूट प्राप्त व्यक्ति द्वारा इसके माध्यम से की गई माल की किसी जावक पूर्ति के सही ब्यौरे धारा 52 की उपधारा (4) के अधीन प्रस्तुत किए जाने वाले विवरण में प्रस्तुत करने में विफल रहता है,

तो वह दस हजार रूपए या अंतर्वलित कर की रकम, यदि ऐसी पूर्ति धारा 10 के अधीन कर संदाय करने वाले व्यक्ति से भिन्न किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा की गई होती, के समतुल्य रकम, जो भी उच्चतर हो, की शास्ति का संदाय करने का दायी होगा]²⁵³

(2) ऐसा कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो किसी माल का प्रदाय या सेवाओं या दोनों का प्रदाय करता है जिन पर उसने कोई कर नहीं दिया है या कम संदत्त किया है या त्रुटिपूर्ण ढंग से वापस लिया या जहां इनपुट कर प्रत्यय गलत रूप से लिया है या प्रयोग किया है,—

251. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा अंतःस्थापित।

252. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा शब्द “कोई इलैक्ट्रॉनिक वाणिज्य प्रचालक” प्रतिस्थापित।

253. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



(क) कपट या जानबूझकर मिथ्या अभिकथन या कर अपवंचना के लिए तथ्यों को छुपाया जाने से भिन्न कारण की दशा में वह दस हजार रूपए या शोध्य कर का दस प्रतिशत जो उच्चतर हो, की शास्ति के लिए दायी होगा।

(ख) कपट या जानबूझ कर मिथ्या अभिकथन या कर अपवंचना के लिए तथ्यों को छुपाया जाने केदशा में वह दस हजार रूपए या ऐसे व्यक्ति पर शोध्य कर के समतुल्य राशी, जो उच्चतर हो, के शास्ति कादायी होगा।

(3) कोई व्यक्ति जो—

(क) उपधारा (1) के खंड (i) से खंड (xxi) में विनिर्दिष्ट अपराधों में से किसी के लिए सहायता या दुष्प्रेरण करता है;

(ख) किसी ऐसे माल का कब्जा प्राप्त करता है या उसके परिवहन को हटाने, जमा करने, रखने, छिपाने, प्रदाय करने या विक्रय या अन्य किसी रीति में किसी प्रकार अपने को संबद्ध करता है, जिसके विषय में यह जानता है या विश्वास करने का कारण रखता है कि वह इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के अधीन प्रतिहरण के लिए दायी है;

(ग) किसी ऐसे माल को प्राप्त करता है या इसके प्रदाय से किसी प्रकार संबद्ध रहता है या किसी अन्य रीति में सेवा के किसी प्रदाय को करता है जिसके लिए वह जानता है या विश्वास करने का कारण रखता है कियह इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के किसी उपबंध के उल्लंघन में है;

(घ) किसी जांच में साक्ष्य या दस्तावेज को प्रस्तुत करने के लिए हाजिरी हेतु सम्मन के जारी होने पर राज्य कर के अधिकारी के समक्ष हाजिर होने में असफल रहता है;

(ङ) इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के अनुसरण में बीजक को जारी करने में असफल रहता है या अपनी लेखा पुस्तकों में बीजक के प्रविष्टि करने में असमर्थ रहता है;

ऐसी शास्ति के लिए दायी होगा जो पच्चीस हजार रूपए तक हो सकेगी।

[122क. माल के विनिर्माण में प्रयुक्त कतिपय मशीनों को विशेष प्रक्रिया के अनुसार रजिस्टर करने में असफलता के लिए शास्ति—

(1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए, जहां कोई व्यक्ति, जो किसी ऐसे माल के विनिर्माण में लगा है, जिसके संबंध में धारा 148 के अधीन मशीनों के रजिस्ट्रीकरण के संबंध में कोई विशेष प्रक्रिया अधिसूचित की गई है, उक्त विशेष प्रक्रिया के उल्लंघन में कार्य करता है, तो वह किसी ऐसी शास्ति के अतिरिक्त, जो अध्याय 15 के अधीन या इस अध्याय के अन्य उपबंधों के अधीन उसके द्वारा संदत्त की गई है या संदेय है, प्रत्येक ऐसी मशीन के लिए, जो ऐसे रजिस्ट्रीकृत नहीं है, एक लाख रूपये की रकम के बराबर किसी शास्ति के लिए दायी होगा।

(2) प्रत्येक ऐसी मशीन, जो ऐसे रजिस्ट्रीकृत नहीं है, उपधारा (1) के अधीन शास्ति के अतिरिक्त, अभिग्रहण और अधिहरण के लिए दायी होगी :

परन्तु ऐसी मशीन का अधिहरण नहीं किया जाएगा, जहाँ,—

(क) इस प्रकार अधिरोपित शास्ति का संदाय कर दिया गया है, और

(ख) ऐसी मशीन का रजिस्ट्रीकरण, शास्ति के आदेश की संसूचना की प्राप्ति से तीन दिन के भीतर, विशेष प्रक्रिया के अनुसार किया गया है।²⁵⁴

254. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 15 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 736 पटना : दिनांक : 06 अगस्त, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



122ख. खोज और अनुसरण क्रियाविधि के अनुपालन में असफल होने पर शास्ति। –

इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां अधिनियम की धारा 148क की उपधारा (1) के खंड (ख) में निर्दिष्ट कोई व्यक्ति उक्त धारा के उपबंधों के उल्लंघन में कृत्य करता है, तो वह अध्याय 15 के अधीन या इस अध्याय के उपबंधों के अधीन किसी शास्ति के अतिरिक्त एक लाख रूपए की रकम के समतुल्य या ऐसे माल पर संदेय कर की दस प्रतिशत रकम, जो भी उच्चतर हो, की शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।²⁵⁵

123. सूचना विवरणी देने में असफल रहने पर शास्ति—

यदि कोई व्यक्ति जिससे धारा 150 के अधीन सूचना के अधीन सूचना विवरणी देना अपेक्षित है, वह उसकी उपधारा (3) के अधीन जारी नोटिस में विनिर्दिष्ट सूचना विवरणी देने में असफल रहता है तो उचित अधिकारी निदेश दे सकता है कि ऐसा व्यक्ति ऐसी अवधि के प्रत्येक दिन जिसके लिए वह ऐसी विवरणी देने में असफल रहता है, के लिए सौ रूपए की शास्ति के लिए दायी होगा :

परंतु यह कि इस धारा के अधीन अधिरोपित शास्ति पांच हजार से अधिक नहीं होगी।

124. आंकड़े देने में असमर्थ रहने पर जुर्माना—

यदि किसी व्यक्ति से धारा 151 के अधीन सूचना या विवरणी देना अपेक्षित है, —

(क) इस धारा के अधीन यथा अपेक्षित ऐसी सूचना या विवरणी देने में बिना युक्तियुक्त कारण देने में असमर्थ रहता है, या

(ख) कोई सूचना या विवरणी जिसे वह जानता है कि असत्य है, को जानबूझ कर प्रस्तुत करता है,

वह ऐसे जुर्माने से जो दस हजार तक हो सकेगा और अपराध जारी रहने की दशा में जो प्रथम दिन के पश्चात प्रत्येक दिन जिस के दौरान अपराध जारी रहती है, पच्चीस हजार की अधिकतम सीमा के अध्यक्षीन एक सौ रूपए प्रतिदिन के जुर्माने से दंडनीय होगा।

125. साधारण शास्ति—

कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित किन्हीं नियमों के किसी उपबंध जिसके लिए इस अधिनियम में पृथक रूप से कोई शास्ति नहीं है, का उल्लंघन करता है, ऐसी शास्ति के लिए दायी होगा जो पच्चीस हजार रूपए तक हो सकेगी।

126. शास्ति से संबंधित साधारण विधाएं—

(1) इस अधिनियम के अधीन कोई अधिकारी कर विनियमन या प्रक्रियात्मक अपेक्षाओं के छोटे भंग और विशेषतः दस्तावेजीकरण में कोई लोप या गलती जिसे आसानी से शुद्ध किया जा सकता है तथा जो बिना कपटपूर्ण आशय या समग्र लापरवाही के किए गए हैं, के लिए कोई शास्ति अधिरोपित नहीं करेगा।

स्पष्टीकरण—इस उपधारा के प्रयोजन के लिए—

(क) कोई भंग जिसमें पांच हजार रूपए से कम का कर अंतर्वलित है, “छोटा भंग” माना जाएगा;

(ख) दस्तावेजीकरण में कोई लोप या गलती आसानी से शुद्ध की जा सकने वाली तब मानी जा सकेगी जब वह अभिलेख पर कोई प्रत्यक्ष त्रुटि है।

(2) इस अधिनियम के अधीन अधिरोपित शास्ति तथ्यों पर और प्रत्येक मामले की परिस्थितियों पर निर्भर होगी तथा यह भंग के परिमाण और गंभीरता के अनुपात में होगी।

(3) किसी व्यक्ति पर बिना उसे सुनवाई का अवसर दिए शास्ति अधिरोपित नहीं की जाएगी।

²⁵⁵. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।



(4) इस अधिनियम के अधीन कोई अधिकारी किसी विधि, विनियम या प्रक्रियात्मक अपेक्षा के भंग के आदेश में शास्ति अधिरोपित करते समय भंग की प्रकृति और लागू विधि, विनियम या प्रक्रियाएं जिनके अधीन विनिर्दिष्ट भंग के लिए शास्ति की रकम, विनिर्दिष्ट करेगा।

(5) जब कोई व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन अधिकारी द्वारा भंग की खोज से पहले विधि, विनियम या प्रक्रियात्मक अपेक्षाओं के भंग की परिस्थितियां इस अधिनियम के अधीन किसी अधिकारी को स्वेच्छया प्रकट कर देता है तो समुचित अधिकारी उस व्यक्ति के लिए शास्ति की गणना करते समय इस तथ्य पर न्यूनकारी घटक के रूप में विचार करेगा।

(6) इस धारा के उपबंध ऐसे मामलों में लागू नहीं होंगे जहां शास्ति इस अधिनियम के अधीन नीयत राशि या नियत प्रतिशत के रूप में विनिर्दिष्ट है।

127. कतिपय मामलों में शास्ति अधिरोपित करने की शक्ति—

जहां समुचित अधिकारी का यह मत है कि व्यक्ति शास्ति के लिए दायी है और वह धारा 62 या धारा 63 या धारा 64 या धारा 73 या धारा 74 [या धारा 74क]²⁵⁶ या धारा 129 या धारा 130 के अधीन किसी कार्यवाही में नहीं आती है तो वह ऐसे व्यक्ति को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् ऐसी शास्ति उदगृहीत करने का आदेश जारी कर सकेगा।

128. शास्ति या शुल्क या दोनों के अधित्यजन करने की शक्ति—

सरकार, अधिसूचना द्वारा कर दाता के ऐसे वर्ग के लिए धारा 122 या धारा 123 या धारा 125 में निर्दिष्ट किसी शास्ति या धारा 47 में निर्दिष्ट किसी विलंब शुल्क का भाग में या पूर्णतः और परिषद् की सिफारिश पर उसमें यथा विनिर्दिष्ट ऐसी न्यूनीकरण परिस्थितियों के अधीन अधित्यजन कर सकेगी।

[128क. कतिपय कर अवधियों के लिए, धारा 73 के अधीन की गयी मांगों से संबंधित ब्याज या शास्ति या दोनों का अधित्यजन।

(1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, जहां किसी व्यक्ति द्वारा निम्नलिखित के अनुसार कर से प्रभार्य कर की कोई रकम संदेय है, —

(क) धारा 73 की उपधारा (1) के अधीन जारी सूचना या धारा 73 की उपधारा (3) के अधीन जारी कथन और जहां धारा 73 की उपधारा (9) अधीन कोई आदेश जारी नहीं किया गया है; या

(ख) धारा 73 की उपधारा (9) के अधीन पारित आदेश और जहां धारा 107 की उपधारा (11) या धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन कोई आदेश पारित नहीं किया गया है; या

(ग) धारा 107 की उपधारा (11) या धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन पारित आदेश, जहां धारा 113 की उपधारा (1) के अधीन कोई आदेश पारित नहीं किया गया है,

1 जुलाई, 2017 से 31 मार्च, 2020 की अवधि या उसके भाग से संबंधित है, और उक्त व्यक्ति, परिषद् की सिफारिशों पर सरकार द्वारा अधिसूचित की जाने वाली तारीख को या उसके पूर्व, यथास्थिति, खंड (क), खंड (ख) या खंड (ग) में निर्दिष्ट सूचना या कथन या आदेश के अनुसार संदेय कर की पूरी रकम का संदाय करता है, धारा 50 के अधीन कोई ब्याज और इस अधिनियम के अधीन कोई शास्ति संदेय नहीं होगी और यथास्थिति, उक्त सूचना या आदेश या कथन के संबंध में सभी कार्यवाहियां ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, समाप्त हुई समझी जाएंगी :

परन्तु जहां धारा 74 की उपधारा (1) के अधीन कोई सूचना जारी की गई है और धारा 75 की उपधारा (2) के उपबंधों के अनुसार अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के निदेश के अनुसरण में, समुचित अधिकारी द्वारा कोई आदेश पारित किया जाता है या पारित किया जाना अपेक्षित है,

²⁵⁶. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।



यथास्थिति, उक्त सूचना या आदेश, इस उपधारा के खंड (क) या खंड (ख) में निर्दिष्ट सूचना या आदेश माना जाएगा :

परन्तु यह और कि उन मामलों में, जहां आवेदन धारा 107 की उपधारा (3) या धारा 112 की उपधारा (3) के अधीन फाइल किया जाता है या धारा 117 की उपधारा (1) के अधीन या धारा 118 की उपधारा (1) के अधीन राज्य कर के किसी अधिकारी द्वारा अपील फाइल की जाती है या जहां खंड (ख) या खंड (ग) में निर्दिष्ट आदेश के विरुद्ध या पहले परन्तुक में निर्दिष्ट अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के निदेशों के विरुद्ध धारा 108 की उपधारा (1) के अधीन कोई कार्यवाहियां आरंभ की जाती हैं, वहां इस उपधारा के अधीन कार्यवाहियों की समाप्ति इस शर्त के अधीन होगी कि उक्त व्यक्ति उक्त आदेश की तारीख से तीन मास के भीतर, यथास्थिति, अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय या पुनरीक्षण प्राधिकारी के आदेश के अनुसार संदेय कर की अतिरिक्त रकम, यदि कोई हो, का संदाय करता है;

परन्तु यह भी कि जहां ऐसा ब्याज और शास्ति पहले ही संदत्त कर दी गई है, उसका कोई प्रतिदाय उपलब्ध नहीं होगा।

(2) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट कोई बात, त्रुटिवश प्रतिदाय के मद्दे किसी व्यक्ति के द्वारा किसी रकम के संबंध में लागू नहीं होगी।

(3) उपधारा (1) की कोई बात उन मामलों के संबंध में लागू नहीं होगी, जहां, यथास्थिति, अपील प्राधिकारी या अपील अधिकरण या न्यायालय के समक्ष उक्त व्यक्ति द्वारा फाइल की गई कोई अपील या रिट याचिका लंबित है, और उक्त व्यक्ति द्वारा उपधारा (1) के अधीन अधिसूचित तारीख को या उसके पूर्व वापस नहीं ली गई है।

(4) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट कोई रकम संदत्त की गई है और उक्त उपधारा के अधीन कार्यवाहियां समाप्त हुई समझी जाती हैं, वहां धारा 107 की उपधारा (1) या धारा 112 की उपधारा (1) के अधीन कोई अपील, यथास्थिति, उपधारा (1) के खंड (ख) और खंड (ग) में निर्दिष्ट किसी आदेश के विरुद्ध नहीं होगी।²⁵⁷

129. अभिरक्षा, अभिग्रहण और माल की निर्मुक्ति तथा अभिवहन में प्रवहण—

(1) इस अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी जहां कोई व्यक्ति किसी माल का परिवहन या माल का भंडारण करता है जब वे अभिवहन में इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के उल्लंघन में हैं, जबऐसेसभी माल और अभिवहन में उक्त माल को ले जाने के लिए परिवहन के साधनों के रूप में प्रयुक्त साधन और ऐसे माल से संबंधित दस्तावेज और अभिवहन, अभिरक्षा में लेने या अभिग्रहण के लिए दायी होगा तथा अभिरक्षा या अभिग्रहण निर्मुक्त हो सकेगा —

[क) ऐसे माल पर संदेय कर के दो सौ प्रतिशत के बराबर शास्ति के संदाय पर और छूट प्राप्त माल की दशा में, माल के मूल्य के दो प्रतिशत के बराबर की कोई रकम या पच्चीस हजार रुपए, जो भी कम हो, के संदाय पर निर्मुक्त किया जाएगा, जहां माल का स्वामी ऐसी शास्ति के संदाय के लिए आगे आता है:

(ख) माल के मूल्य के पचास प्रतिशत के बराबर शास्ति या ऐसे माल पर संदेय कर का दो सौ प्रतिशत के संदाय पर, जो भी अधिक हो और छूट प्राप्त माल की दशा में, ऐसे माल के मूल्य के पांच प्रतिशत के बराबर की कोई रकम या पच्चीस हजार रुपए, जो भी कम हो, के संदाय पर निर्मुक्त किया जाएगा, जहां माल का स्वामी ऐसी शास्ति के संदाय के लिए आगे नहीं आता है।²⁵⁸

257. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

258. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्नलिखित थे :-



(ग) ऐसे प्ररूप और रीति जो विहित की जाएं, में खंड (क) या खंड (ख) के अधीन संदेय रकम के समतुल्य प्रतिभूति को देने पर :

परंतु यह कि इस प्रकार का माल या अभिवहन माल का परिवहन करने के लिए व्यक्ति पर अभिरक्षा या अभिग्रहण के आदेश के तामील कराए बिना अभिरक्षा में या अभिग्रहण में नहीं लिया जाएगा।

[***]259

[(3) माल या वाहनों को निरुद्ध या उनका अभिग्रहण करने वाला समुचित अधिकारी, यथास्थिति, निरोध या अभिग्रहण किए जाने के सात दिन के भीतर संदेय शास्ति को विनिर्दिष्ट करते हुए नोटिस जारी करेगा और तत्पश्चात् उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) के अधीन शास्ति के संदाय के लिए ऐसी नोटिस की तामील की तारीख से सात दिन की अवधि के भीतर आदेश पारित करेगा।]260

(4) बिना संबद्ध व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए [शास्ति]261 उपधारा (3) के अधीन अवधारित नहीं की जाएगी।

(5) उपधारा (1) में निर्दिष्ट रकम के संदाय पर उपधारा (3) में विनिर्दिष्ट नोटिस की बाबत सभी कार्यवाहियां समाप्त समझी जाएंगी।

[(6) जहां किसी माल का परिवहन करने वाला व्यक्ति या ऐसे माल का स्वामी उपधारा (3) के अधीन पारित आदेश की प्रति प्राप्त होने की तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर, उपधारा (1) में यथाउपबधित शास्ति की रकम का संदाय करने में असफल रहता है, तो इस प्रकार निरुद्ध या अभिगृहीत माल या वाहन, उपधारा (3) के अधीन शास्ति की वसूली के लिए ऐसी रीति और ऐसे समय के भीतर, जिसे विहित किया जाए, विक्रय किए जाने या अन्यथा निपटाए जाने का दायी होगा :

परंतु परिवहनकर्ता द्वारा उपधारा (3) के अधीन शास्ति के संदाय पर या एक लाख रूपए, इनमें से जो भी कम हो, का संदाय किए जाने पर वाहन को निर्मुक्त किया जाएगा :

परंतु यह और कि जहां निरुद्ध या अभिगृहीत किया गया माल नष्ट होने वाला या परिसंकटमय प्रकृति का है या समय के साथ उसके मूल्य में ह्रास की संभावना है, वहां पन्द्रह दिन की उक्त अवधि समुचित अधिकारी द्वारा, ऐसे समय के लिए जो वह ठीक समझे, कम की जा सकेगी।]262

(क) ऐसे कराधेयमाल की दशा में पर संदेय कर के एक सौ प्रतिशत के बराबर शास्ति के संदाय पर और छूट प्राप्त माल की दशा में माल के मूल्य के दो प्रतिशत के बराबर रकम या पच्चीस हजार रूपए जो कम हो, के संदाय पर जहां माल का मालिक ऐसे कर और शास्ति के संदाय के लिए आगे आता है;

(ख) देय कर के और उस पर संदत्त कर रकम द्वारा कम करके माल के मूल्य का पचास प्रतिशत के बराबर शास्ति और छूट प्राप्त माल की दशा में माल के मूल्य के पांच प्रतिशत के बराबर रकम या पच्चीस हजार रूपए जो कम हो, के संदाय पर जहां माल का मालिक ऐसे कर और शास्ति के संदाय के लिए आगे नहीं आता है;

259. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(2) धारा 67 की उपधारा (6) के उपबंध माल की अभिरक्षा और अभिग्रहण और प्रवहण के लिए यथा आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

260. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(3) माल या प्रवहण को स्तंभित या जब्त करने वाला उचित अधिकारी कर और संदेय शास्ति को विनिर्दिष्ट करते हुए नोटिस जारी करेगा और उसके पश्चात् खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) के अधीन संदेय कर और शास्ति के लिए एक आदेश पारित करेगा।

261. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द "कर, ब्याज या शास्ति" प्रतिस्थापित।

262. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-



130. माल या प्रवहरण की जब्ती और शास्ति का उद्ग्रहण—

(1) [जहाँ]²⁶³ व्यक्ति—

(i) इस अधिनियम के उपबंधों या उसके अधीन निर्मित नियमों के किसी उल्लंघन में माल का प्रदाय या प्राप्ति, कर संदाय के अपवंचन के आशय से करता है ; या

(ii) किसी माल के लिए लेखा नहीं रखता है जिस पर वह उस अधिनियम के अधीन कर संदाय के लिए दायी है ; या

(iii) रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन किए बिना इस अधिनियम के अधीन कर योग्य किसी माल का प्रदाय ; या

(iv) इस अधिनियम के किन्हीं उपबंधों या तद्धीन बने नियमों का उल्लंघन, कर संदाय के अपवंचन के आशय से करता है ; या

(v) इस अधिनियम के उपबंधों के उल्लंघन में माल को ढोने के लिए परिवहन के रूप में किसी प्रवहण का प्रयोग करता है जब तक कि प्रवहण का मालिक यह सिद्ध न कर दे कि उसका या उसके ऐजेंट की बिना जानकारी या गठजोड़ के यह कार्य हुआ है,

तब ऐसा सभी माल या प्रवहण जब्ती के लिए दायी होगा और वह व्यक्ति धारा 122 के अधीन शास्ति के लिए दायी होगा।

(2) जब कभी किसी माल या प्रवहण की जब्ती इस अधिनियम द्वारा प्राधिकृत है तो उसको न्यायनिर्णयन करने वाला अधिकारी माल के स्वामी को प्रतिग्रहण के बदले ऐसा जुर्माना जो उक्त अधिकारी ठीक समझे, संदाय करने का विकल्प दे सकेगा :

परंतु यह कि ऐसा जुर्माना प्रतिग्राहित माल पर प्रभारित कर घटाने के पश्चात् उसके बाजार मूल्य से अधिकनहीं होगा :

परंतु यह और कि ऐसा जुर्माना और उद्ग्रहणीय शास्ति [ऐसे माल पर संदेय कर के एक सौ प्रतिशत के बराबर शास्ति]²⁶⁴ से कम नहीं होगा :

परंतु यह भी कि जहां माल को ढोने या भाड़े पर यात्रियों को ढोने में प्रयुक्त किसी प्रवहण का प्रतिग्रहण किया जाता हो तो ऐसा प्रवहण के मालिक को जब्त प्रवहण के स्थान पर उसमें परिवहन किए माल पर संदेय कर के बराबर जुर्माना संदेय करने का विकल्प किया जा सकेगा।

[***]²⁶⁵

(6) जहां किसी माल का परिवहन करने वाला व्यक्ति या माल का स्वामी उपधारा (1) में यथा उपबंधित कर और शास्ति की रकम का संदाय करने में ऐसी अभिरक्षा या अभिग्रहण के चौदह दिन* के भीतर असफल रहता है तो अन्य कार्यवाहियां धारा 130 की शर्तों के अनुसार आरंभ की जाएंगी :

परंतु यह कि जहां अभिरक्षा या अभिग्रहण का माल शीघ्र नष्ट होने योग्य या खतरनाक या समय के साथ मूल्य में ह्रास की प्रकृति का है तो उक्त चौदह दिन* की अवधि उचित अधिकारी द्वारा कम की जा सकेगी।

* बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द "सात दिन" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

263. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द "इस अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी यदि कोई" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

264. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द, अंक और कोष्ठक "धारा 129 की उपधारा (1) के अधीन उद्ग्रहणीय शास्ति की रकम" के स्थान पर प्रतिस्थापित।



(4) माल या प्रवहण की जब्ती या शास्ति का अधिरोपण का आदेश उस व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए बिना नहीं जारी किया जाएगा।

(5) जहां इस अधिनियम के अधीन किसी माल या प्रवहण को जब्त कर लिया गया है वहां ऐसे माल या प्रवहण का स्वामित्व सरकार में निहित हो जाएगा।

(6) प्रवहण के न्यायनिर्णयन का समुचित अधिकारी जब्त वस्तुओं का कब्जा लेगा और धारण करेगा तथा प्रत्येक पुलिस अधिकारी ऐसे समुचित अधिकारी की अपेक्षा पर ऐसा कब्जा लेने और धारण करने में उसको सहयोग करेगा।

(7) समुचित अधिकारी स्वयं के समाधान के पश्चात्कि जब्त माल या प्रवहण इस अधिनियम के अधीन किसी अन्य कार्यवाहियों में अपेक्षित नहीं है और प्रवहण के स्थान पर जुर्माना देने के लिए तीन मास से अनधिक युक्तियुक्त समय देने के पश्चात् ऐसे माल या प्रवहण का निस्तारण करेगा और उसके विक्रय राशि सरकार को जमा करेगा।

131. जब्ती या शास्ति अन्य दंडों से व्यतिरेक नहीं करेगा—

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना इस अधिनियम और तद्धीन निर्मित नियमों के उपबंधों के अधीन की गई प्रवहण या अधिरोपित शास्ति किसी अन्य दंड जो उससे प्रभावित व्यक्ति को इस अधिनियम या प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन दायी है, के दंड का व्यतिरेक नहीं करेगा।

132. कतिपय अपराधों के लिए दंड—

(1) [जो कोई निम्नलिखित अपराधों में से किसी अपराध को करेगा या किसी अपराध को करवाएगा और उससे उद्भूत फायदों का प्रतिधारण करेगा]²⁶⁶ अर्थात्—

(क) इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उल्लंघन में किसी बीजक को जारी किए बिना किसी माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय अपवंचन के आशय से करता है:

(ख) इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के उल्लंघन में इनपुटकर प्रत्यय के प्रयोग या उपभोग या कर की वापसी के लिए माल या सेवा या दोनों का प्रदाय बीजक या बिल जारी किये बिना करना;

[ग) खंड (ख) में निर्दिष्ट ऐसे बीजक या बिल का उपयोग करके इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग करता है या किसी बीजक या बिल के बिना कपट से इनपुट कर प्रत्यय का उपयोग करता है;]²⁶⁷

(घ) कोई रकम कर के रूप में संगृहीत करता है किन्तु उसे उस तारीख से जिसको ऐसा संदाय देय हो जाता है, तीन मास की अवधि के पश्चात् तक सरकार को संदाय करने में असफल होता है ;

265. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्नलिखित थी :-

(3) जहां उपधारा (2) के अधीन किसीमाल या प्रवहण के प्रवहण के बदले कोई शास्ति अधिरोपित की गयी है वहां ऐसे माल या प्रवहण का स्वामी या उपधारा (1) में निर्दिष्ट व्यक्ति, इसके अतिरिक्त ऐसे माल या प्रवहण की बाबत कर, शास्ति और इन्हीं प्रभारों के लिए दायी होगा।

266. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द “ जो निम्नलिखित में से किसी दंड को कारित करता है,” के स्थान पर प्रतिस्थापित।

267. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :-

(ग) खंड (ख) में निर्दिष्ट बीजक या बिल में प्रयोग से इनपुट कर प्रत्यय प्राप्त करता है



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



(ड) कर अपवंचन, [***]268 कपट से वापसी प्राप्त करना और जहां ऐसा अपराध खंड (क) से (घ) में नहीं आता;

(च) इस अधिनियम के अधीन शोध कर के संदाय से अपवंचन के आशय से या तो वित्तीय अभिलेखों को बदलता है या झूठलाता है या झूठे लेखा या दस्तावेज प्रस्तुत करता है या किसी झूठी सूचना को प्रस्तुत करता है;

[***]269

(ज) किसी माल जिसे वह जानता है या विश्वास करने का कारण रखता है कि वह इस अधिनियम या तद्विनिर्मित नियमों को जब्त करने के लिए दायी है, उसका कब्जा अर्जित करता है या परिवहन में स्वयं को किसी माध्यम से संबद्ध करता है, हटाता है या जमा करता है, रखता है, छिपाता है, प्रदाय करता है या क्रय करता है या किसी अन्य रीति में उनका संव्यवहार करता है;

(झ) किसी माल को प्राप्त करता है या किसी अन्य प्रकार से उसके प्रदाय से संबद्ध रहता है या किसी अन्य रीति में सेवा प्रदाय में लगा रहता है जिसको वह जानते हुए करता है या विश्वास करने का कारण रखता है कि इस अधिनियम या तद्विनिर्मित नियमों के उपबंधों के उल्लंघन में है ;

[***]270

[***]271

(ठ) इस धारा के [खंड (क) से खंड (च) और खंड (ज) तथा खंड (झ)]²⁷² में निर्दिष्ट अपराधों में से किसी के कारित करने का प्रयास करता है या दुष्प्रेरण करता है,

दंडनीय होगा—

(i) जहां कर अपवंचन की रकम या गलत रूप से ली गई या प्रयोग की जा चुकी इनपुट के प्रत्यय की रकम या वापस प्राप्त की गई रकम पांच सौ लाख रूपए से अधिक हो, ऐसे कारावास से जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा और जुर्माना सहित ;

(ii) जहां कर अपवंचन की रकम या गलत रूप से ली गई या प्रयोग की जा चुकी इनपुट के प्रत्यय की रकम या वापस प्राप्त की गई रकम दो सौ लाख रूपए से अधिक है लेकिन पांच सौ लाख रूपए से अनधिक है तो ऐसे कारावास से जो तीन वर्ष तक हो सकेगा और जुर्माना सहित;

268. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "कपट से इनपुट कर प्रत्यय की प्राप्ति या" विलोपित।

269. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खंड निम्न प्रकार था :—

(छ) इस अधिनियम के अधीन किसी अधिकारी को उसके कर्तव्यों के निर्वहन से रोकता है या प्रवारित करता है;

270. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खंड निम्न प्रकार था :—

(ज) किसी सारभूत साक्ष्य या दस्तावेज से छेड़छाड़ करता है या नष्ट करता है

271. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खंड निम्न प्रकार था :—

(ट) किसी सूचना का प्रदाय करने में असफल रहता है जिसे उसे इस अधिनियम में या तद्विनिर्मित नियमों के उपबंधों के अधीन प्रदाय के लिए वह अपेक्षित है (बिना युक्तियुक्त विश्वास सहित, जिसे सिद्ध करने का भार जो उस पर है कि उसके द्वारा प्रदाय की गई सूचना सत्य है) या झूठी सूचना देता है, ; या

272. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द "खंड (क) से खंड (ट)" प्रतिस्थापित।



(iii) [खंड (ख) में विनिर्दिष्ट किसी अपराध की दशा में, जहां कर अपवंचन]²⁷³ की रकम या गलत रूप से ली गई या प्रयोग की जा चुकी इनपुट के प्रत्यय की रकम या वापस प्राप्त की गई रकम एक सौ लाख रूपए से अधिक लेकिन दो सौ लाख रूपए से अनधिक है तो ऐसे कारावास से जो एक वर्ष तक हो सकेगा और जुर्माना सहित;

(iv) खंड (घ) [***]²⁷⁴ में विनिर्दिष्ट किसी अपराध को करता है या अपराध को करने के लिए दुष्प्रेरण करता है तो वह ऐसे कारावास से जो छह मास तक हो सकेगा या जुर्माना सहित या दोनों से दंडनीय होगा।

(2) यदि कोई व्यक्ति जो इस धारा के अधीन अपराध का दोषसिद्ध है तथा पुनः इस धारा के अधीन दोषसिद्ध होता है तो वह दूसरे और प्रत्येक पश्चात्तवर्ती अपराध के लिए ऐसे कारावास से जो पांच वर्ष तक का हो सकेगा और जुर्माना सहित,

(3) उपधारा (1) के खंड (i), (ii) और (iii) और उपधारा (2) में निर्दिष्ट कारावास विशेष और उचित कारण जिन्हें न्यायालय के निर्णय में अभिलिखित की गई है की अनुपस्थिति में छह मास से कम अवधि का नहीं होगा।

(4) दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए इस अधिनियम के अधीन सभी अपराध उपधारा (5) में निर्दिष्ट अपराधों के सिवाय असंज्ञेय और जमानतीय होगा।

(5) उपधारा (1) के खंड (क) या खंड (ख) या खंड (ग) या खंड (घ) में विनिर्दिष्ट और उस उपधारा के खंड (i) के अधीन दंडनीय अपराध संज्ञेय और गैर जमानतीय होगा।

(6) कोई व्यक्ति आयुक्त की पूर्व अनुमति बिना इस धारा के अधीन किसी अपराध के लिए अभियोजित नहीं किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए पद “कर” में अपवंचित कर की रकम या गलत रूप से रखी गई इनपुट कर प्रत्यय की रकम या प्रयुक्त की गई इनपुट कर प्रत्यय की रकम या इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन गलत रूप से ली गई कर वापसी की रकम जो इस अधिनियम अथवा केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम तथा माल और सेवा कर (राज्यों को प्रतिकर) अधिनियम के अधीन उदगृहीत उपकर सम्मिलित है।

133. अधिकारियों और कतिपय अन्य व्यक्तियों का दायित्व—

(1) जहां कोई व्यक्ति जो धारा 151 के अधीन सांख्यिकियों के संग्रहण या समेकन या उनके कंप्यूटरीकरण या यदि धारा 150 की उपधारा (1) के अधीन विनिर्दिष्ट सूचना तक पहुंच के लिए राज्य कर का कोई अधिकारी लगा हुआ है या समान पोर्टल पर सेवा के उपबंधों के संबंध में लगा कोई व्यक्ति या यदि समान पोर्टल या अभिकर्ता जानबूझकर इस अधिनियम अध्याधीन निर्मित नियमों के अधीन किसी विवरणी के अंश उक्त धाराओं के अधीन उसके कर्तव्यों के निष्पादन से अन्यथा या इस अधिनियम के अधीन या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य अधिनियम के अधीन किसी अपराध के अभियोजन के प्रयोजन के लिए वह ऐसे कारावास से जो छह मास तक का होगा या जुर्माने से जो पच्चीस हजार रूपए तक हो सकेगा या दोनों से दंडनीय होगा।

(2) कोई व्यक्ति,—

(क) जो सरकारी सेवक है, इस धारा के अधीन किसी अपराध के लिए सरकार की बिना पूर्व अनुमति के अभियोजित नहीं किया जा सकेगा;

²⁷³. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द “जहां कर अपवंचन” प्रतिस्थापित।

²⁷⁴. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द “या खंड (छ) या खंड (ज)” विलोपित।



(ख) जो सरकारी सेवक नहीं है, इस धारा के अधीन अपराध के लिए आयुक्त की बिना पूर्व अनुमति के अभियोजित नहीं किया जा सकेगा।

134. अपराध का संज्ञान—

न्यायालय इस अधिनियम या तद्धीन निर्मित नियमों के अधीन दंडनीय किसी अपराध या संज्ञान बिना आयुक्त की पूर्व अनुमति के नहीं लेगा और प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट से कम का न्यायालय अपराध का विचारण नहीं करेगा।

135. आपराधिक मानसिक दशा का अनुमान—

इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध का अभियोजन जो आपराधिक मानसिक दशा अभियुक्त के भाग पर अपेक्षित है, न्यायालय ऐसी मानसिक दशा की विद्यमानता को अनुमान लगाएगा लेकिन अभियुक्त के लिए यह तथ्य सिद्ध करने के लिए यह बचाव होगा कि वह इस अभियोजन में अपराध के रूप में आरोपित कार्य की बाबत इस मानसिक स्थिति का नहीं था।

स्पष्टीकरण—

- (i) "आपराधिक मानसिक दशा" पद में आशय, उद्देश्य, तथ्य का ज्ञान और उसमें विश्वास या विश्वास करने का कारण, एक तथ्य सम्मिलित है;
- (ii) एक सिद्ध किया हुआ तथ्य केवल तब कहा जाएगा जब न्यायालय इस पर बिना युक्तयुक्त संदेय के विश्वास करता है और जब इसकी विद्यमानता केवल संभाव्यता की प्राथमिकता द्वारा स्थापित नहीं है।

136. कतिपय परिस्थितियों के अधीन कथनो की सुसंगतता—

इस अधिनियम के अधीन किसी जांच या कार्यवाहियों के दौरान धारा 70 के अधीन जारी किसी सम्मन के संदर्भ में हाजिर व्यक्ति द्वारा किया और हस्ताक्षरित कथन इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के लिए किसी अभियोजन में सिद्ध करने के प्रयोजन के लिए सुसंगत होगा, जिसमें तथ्य की सत्यता जिसमें होगा —

- (क) जब कोई व्यक्ति जिसने कथन किया था जिसकी मृत्यु हो गयी है या नहीं मिल पा रहा है या साक्ष्य देने में अक्षम है या विरोधी पक्ष द्वारा दूर रखा गया है या जिसकी बिना बिलम्ब के प्राप्त उपस्थिति नहीं की जा सकती है, मामले की परिस्थितियों के अधीन न्यायालय अनौचित्यपूर्ण मानेगा ; या
- (ख) जब किसी व्यक्ति जिसने कथन किया है और न्यायालय के समक्ष मामले में साक्षी के रूप में उसका परीक्षण किया गया है और न्यायालय का मत है कि मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कथन को न्यायहित में साक्ष्य के रूप में स्वीकार किया जाएगा।

137. कंपनियों द्वारा अपराध—

(1) जहां कोई अपराध, किसी कंपनी द्वारा किया गया है, वहां ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो उस अपराध के लिए जाने के समय उस कंपनी के कारबार के संचालन के लिए उस कंपनी का प्रभारी और उसके प्रति उत्तरदायी था और साथ ही वह कंपनी भी, ऐसे अपराध के दोषी समझे जाएंगे और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही किए जाने और दंडित किए जाने के भागी होंगे :

(2) उपधारा (1) में किसी बात के होते हुए भी, जहां इस अधिनियम के अधीन दंडनीय कोई अपराध, किसी कंपनी द्वारा किया गया है और यह साबित हो जाता है कि वह अपराध कंपनी के किसी निदेशक, प्रबंधक, सचिव या अन्य अधिकारी की सहमति या मिलीभगत मौनानुकूलता लापरवाही से किया गया है या उस अपराध का किया जाना उसकी किसी उपेक्षा के कारण माना जा सकता है, वहां ऐसा निदेशक, प्रबंधक, सचिव या अन्य अधिकारी भी उस अपराध का दोषी समझा जाएगा और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही किए जाने और दंडित किए जाने का भागी होगा।



(3) जहां इस अधिनियम के अधीन कोई दंडनीय अपराध किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा किसी भागीदारी फर्म या किसी सीमित दायित्व भागीदारी या किसी हिन्दू अविभक्त परिवार या किसी न्यास के भागीदार या कर्ता या प्रबंध, न्यासी होने के कारण किया जाता है, उक्त अपराध का दोषी समझा जाएगा और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही के लिए किए जाने के अधीन दायी होंगे। ऐसे व्यक्तियों पर उपधारा (2) के उपबंध आवश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

(4) इस धारा की कोई बात किसी ऐसे व्यक्ति को दंड का भागी नहीं बनाएगी यदि वह यह साबित कर देता है कि अपराध उसकी जानकारी के बिना किया गया था या उसने ऐसे अपराध के रोकथाम लिए सम्यक् तत्परता बरती थी।

स्पष्टीकरण – इस धारा के प्रयोजनों के लिए, –

(i) “कंपनी” से कोई निगमित निकाय अभिप्रेत है और इसके अंतर्गत फर्म या व्यष्टियों का अन्य समूह है ; और

(ii) फर्म के संबंध में, “निदेशक” से उस फर्म का भागीदार अभिप्रेत है।

138. अपराधों का प्रशमन—

(1) इस अधिनियम के अधीन कोई अपराध या तो अभियोजन के संस्थित करने या उसके पश्चात् अपराध के अभियुक्त व्यक्ति द्वारा, यथास्थिति, केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार को ऐसे प्रशमन रकम को ऐसी रीति से संदाय पर, जो विहित की जाए, आयुक्त द्वारा प्रशमन होगा :

परंतु इस धारा की कोई बात निम्नलिखित लागू नहीं होगी—

[क] किसी व्यक्ति, जिसे धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (क) से खंड (च), खंड (ज) और खंड (झ) तथा खंड (ठ) में विनिर्दिष्ट अपराधों में से किन्हीं के संबंध में शमन के लिए एक बार अनुज्ञात किया गया है;]²⁷⁵

[***]²⁷⁶

[ग] कोई व्यक्ति, जो धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (ख) के अधीन कोई अपराध करने का अभियुक्त रहा है ;]²⁷⁷

(घ) कोई व्यक्ति जो किसी न्यायालय द्वारा इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के लिए दोषसिद्ध हो चुका है ;

[***]²⁷⁸

275. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :-

(क) कोई व्यक्ति जो धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (क) से खंड (च) में विनिर्दिष्ट किसी अपराध के संदर्भ में प्रशमित होने के लिए अनुज्ञात किया गया था और खंड (ठ) में विनिर्दिष्ट अपराध जिससे उक्त उपधारा के खंड (क) से खंड (च) में विनिर्दिष्ट अपराध से संबंधित है ;

276. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :-

(ख) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम या किसी राज्य माल और सेवा कर अधिनियम या संघ राज्यक्षेत्र माल और सेवा कर अधिनियम या एकीकृत माल और सेवा कर अधिनियम के उपबंधों के अधीन के अधीन एक करोड़ रूपए से अधिक मूल्य के प्रदाय के संबंध में, खंड (क) से भिन्न किसी अपराध के संबंध में एक बार प्रशमन के लिए अनुज्ञात किया गया था ;

277. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :-

(ग) कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध को करने का अभियुक्त है, जो तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन भी कोई अपराध है;



(च) कोई अन्य व्यक्तियों या अपराधों का वर्ग जो विनिर्दिष्ट किया जाए : परंतु यह और कि इस धारा के उपबंधों के अधीन कोई प्रशमन अनुज्ञात होगा जो किसी अन्य विधि के अधीन संस्थित कार्रवाईयों, यदि कोई हों, पर प्रभाव नहीं डालता :

परंतु यह और भी कि ऐसे अपराधों में केवल अंतर्वलित कर, ब्याज और शास्ति का संदाय करने के पश्चात् प्रशमन अनुज्ञात होगा।

(2) इस धारा के अधीन अपराधों के प्रशमन के लिए [अंतर्वलित कर के पच्चीस प्रतिशत और अधिकतम रकम अंतर्वलित कर के सौ प्रतिशत से अनधिक]²⁷⁹ विहित की जा सकेगी।

(3) आयुक्त द्वारा अवधारित ऐसे प्रशमन रकम के संदाय पर अभियुक्त व्यक्ति के विरुद्ध इस अधिनियम के उसी अपराध के लिए संस्थित नहीं होंगी और किसी अन्य दांडिक कार्यवाहियां, यदि उक्त अपराध के संबंध में पहले से ही संस्थित है, समाप्त हो जाएगी।

278. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व खंड निम्नलिखित था :—

(ड) कोई व्यक्ति जो धारा 132 की उपधारा (1) के खंड (छ) या खंड (ज) या खंड (ट) में विनिर्दिष्ट कोई अपराध कारित करने के लिए अभियुक्त है ; और

279. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा शब्द “न्यूनतम रकम अंतर्वलित करके पचास प्रतिशत या दस हजार रूपए इनमें से जो भी अधिकतम हों, और अधिकतम रकम तीस हजार रूपए से अन्यून या कर के एक सौ पचास प्रतिशत, इनमें से जो भी अधिक हों,” प्रतिस्थापित।



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



अध्याय 20

संक्रमणकालीन उपबंध

139. विद्यमान करदाताओं का प्रवर्जन—

(1) नियत दिन से ही विद्यमान विधियों में से किसी के अधीन रजिस्ट्रीकृत और विधिमान्य स्थायी खाता संख्यांक रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए अनंतिम आधार पर ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी होगा, जिसे जब तक कि उपधारा (2) के अधीन अंतिम प्रमाणपत्र द्वारा प्रतिस्थापित नहीं कर दिया जाता, रद्दकरण के लिए दायी होगा यदि इस प्रकार विहित शर्तों का अनुपालन नहीं किया जाता है।

(2) रजिस्ट्रीकरण का अंतिम प्रमाणपत्र ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में तथा ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए जो विहित की जाए, प्रदान किया जाएगा।

(3) उपधारा (1) के अधीन किसी व्यक्ति को जारी रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी किया गया नहीं समझा जाएगा यदि उक्त रजिस्ट्रीकरण ऐसे व्यक्ति द्वारा फाइल किए गए किसी आवेदन के अनुसरण में निरस्त होता है कि वह धारा 22 या धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं था।

140. निवेश प्रतिदेय कर के लिए संक्रमणकालीन व्यवस्थाएं—

(1) धारा 10 के अधीन कर संदाय का विकल्प देने वाले किसी व्यक्ति से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, विद्यमान विधि के अधीन उसके द्वारा प्रस्तुत किए जाने के लिए नियत दिन से ठीक पूर्ववर्ती दिन को समाप्त होने वाली अवधि से संबंधित विवरणी में, [ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए]²⁸⁰ मूल्यवर्धित कर और प्रवेश कर की रकम, यदि कोई हो, के प्रत्यय को अपने इलैक्ट्रॉनिकजमा खाते में अग्रणीत करने का हकदार होगा :

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति निम्नलिखित परिस्थितियों में इनपुट कर प्रत्यय लेने हेतु अनुज्ञात नहीं होगा, अर्थात् :-

(i) जहां जमा की उक्त रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुटकर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय नहीं है; या

(ii) जहां वह नियत दिन के तत्काल पूर्व छह मास की अवधि के लिए विद्यमान विधि के अधीन अपेक्षित सभी विवरणी को नहीं देता है; या

(iii) जहां जमा की उक्त रकम सरकार द्वारा अधिसूचित विमुक्ति अधिसूचना के अधीन निर्मित एवम मंजूर से सम्बंधित हों :

परंतु यह और कि उक्त प्रत्यय की उतनी रकम, जो केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 धारा 3, धारा 5 की उपधारा (3), धारा 6, धारा 6क या धारा 8 की उपधारा (8) से संबंधित किसी ऐसे दावे के कारण है, जिसे केन्द्रीय विक्रय कर (रजिस्ट्रीकरण और आवर्त) नियम, 1957 के नियम 12 में विहित रीति और अवधि के भीतर सिद्ध नहीं किया गया है, इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में जमा किए जाने की पात्र नहीं होगी :

परंतु यह भी कि दूसरे परंतुक में विनिर्दिष्ट प्रत्यय की समतुल्य रकम का उस समय विद्यमान विधि के अधीन प्रतिदाय किया जाएगा जब उक्त दावों को केन्द्रीय विक्रय कर (रजिस्ट्रीकरण और आवर्त) नियम, 1957 के नियम 12 में विहित रीति में सिद्ध कर दिया जाता है।

(2) धारा 10 के अधीन संदेय कर का विकल्प देने वाले व्यक्ति से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति पूंजी माल के संबंध में अनुपभुक्त इनपुटकर प्रत्यय की जमा अपने इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में लेने का, जो

280. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "विहित की जाने वाली रीति में" प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।



विद्यमान विधि के अधीन नीयत तारीख के ठीक पूर्ववर्ती के दिन को समाप्त होने वाली अवधि के लिए दाखिल विवरणी में अग्रनीत नहीं है, [ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए]²⁸¹ लेने के लिए हकदार होगा :

परंतु रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विद्यमान विधि के अधीन इनपुटकर प्रत्यय के रूप में अनुज्ञेय उक्त राशी को जब तक प्रत्यय करने के लिए अनुज्ञात नहीं होगा जब तक कि इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय कर के रूप में भी अनुज्ञेय है।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए “अनुपभुक्त इनपुट कर प्रत्यय” पद से वह रकम अभिप्रेत है जो कि पूंजीगत मालों की बावत विद्यमान विधि के अधीन करधे व्यक्ति को अनुमान्य इनपुट कर प्रत्यय की रकम में से कराधेय व्यक्ति द्वारा उपभुक्त इनपुट कर प्रत्यय के घटाने के पश्चात शेष रहती है;

(3) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो विद्यमान विधि के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी नहीं था या जो किसी विद्यमान विधि के अधीन ऐसे छूट प्राप्त या करमुक्त मालों या ऐसे मालों, जिन पर राज्य में उनके विक्रय के प्रथम बिन्दु पर कर लगाया गया है और जिनके पश्चातवर्ती विक्रय राज्य में कर के अधधीन नहीं है, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, के विक्रय में लगा है, किंतु जो इस अधिनियम के अधीन कर के दायी हैं (या जहां व्यक्ति मालों के विक्रय के समय इनपुट कर प्रत्यय के लिए हकदार था), अपने इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खातों में स्टॉक में धारित इनपुटों और स्टॉक में धारित अर्ध-निर्मित माल या निर्मित मालों में अंतर्विष्ट इनपुटों के संबंध में [नियत दिन पर, ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए],²⁸² को मूल्य वर्धित कर और प्रवेश कर, यदि कोई हो, के प्रत्यय के लिए निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए, हकदार होगा, अर्थात्:—

- (i) इस अधिनियम के अधीन कराधेय प्रदाय करने के लिए ऐसे इनपुट या मालों के उपयोग या कराधेय प्रदाय करने के लिए उपयोग के आशयित है ;
- (ii) इस अधिनियम के अधीन उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसे इनपुटकर प्रत्यय केलिए पात्र होगा ;
- (iii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति अपने कब्जे में बीजक या ऐसे अन्य विहित दस्तावेज, जो ऐसे इनपुटों के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन कर के संदाय के साक्ष्य स्वरूप है, रखता है;
- (iv) ऐसे बीजक या विहित दस्तावेज नियत दिन के तत्काल पूर्ववर्ती बारह मासों से पूर्वतर जारी नहीं किए गए थे ;

परंतु जहां किसी विनिर्माता या सेवाओं के प्रदाता से भिन्न कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इनपुटों के संबंध में कर के संदाय का साक्ष्य कोई बीजक या कोई अन्य दस्तावेज नहीं रखता है तब ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ऐसी शर्तों, सीमाओं और सुरक्षा उपायों के अधीन रहते हुए जो विहित की जाए, जिसके अंतर्गत उक्त कराधेय व्यक्ति ऐसी प्रत्यय के लाभ मूल्य की कमी के द्वारा प्राप्तकर्ता को हस्तांतरित करे, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, ऐसी दर पर प्रत्यय का अनुज्ञात होगा।

(4) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जो विद्यमान विधि के अधीन ऐसे कराधेय मालों के साथ-साथ छूट प्राप्त मालों या कर मुक्त मालों, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, किंतु जो इस अधिनियम के अधीन कर के दायी हैं, के विनिर्माण में लगा है, अपने इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में लेने का हकदार होगा, —

- (क) उपधारा (1) के उपबंधों के अनुसरण में उसके द्वारा विद्यमान विधि के अधीन दी गई किसी विवरणी में अग्रनीत मूल्यवर्धित कर और प्रवेश कर, यदि कोई हो, के जमा की रकम ; और

281. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द “ऐसी विहित रीति में” प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।।

282. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द “नियत दिन” प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।।



(ख) उपधारा (3) के उपबंधों के अनुसरण में ऐसे छूटप्राप्त मालों या करमुक्त मालों, चाहे किसी भी नाम से ज्ञात हों, के संबंध में नियत दिन को स्टाक में रखे गए इनपुटों और अर्ध-निर्मित या तैयार मालों में अंतर्विष्ट इनपुटों के संबंध में मूल्यवर्धित कर और प्रवेश कर, यदि कोई हो, के प्रत्यय की रकम।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति नियत दिन को या उसके पश्चात् प्राप्त इनपुटों के संबंध में अपने इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में मूल्यवर्धित कर और प्रवेश कर, यदि कोई हो, की जमा को लेने का हकदार होगा, किंतु जिसके संबंध में कर का संदाय [विद्यमान विधि के अधीन ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, पूर्तिकार द्वारा]²⁸³ किया गया है, इस शर्त के अधीन रहते हुए कि उसके बीजक या किसी अन्य कर संदाय संबंधी दस्तावेज को, नियत दिन से तीस दिन की अवधि के भीतर ऐसे व्यक्ति की लेखा बहियों में लेखबद्ध किया गया था :

परंतु तीस दिन की अवधि पर्याप्त कारण दर्शित करने पर और तीस दिन की अधिक अवधि आयुक्त द्वारा विस्तारित होगी :

परंतु यह और कि उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस उपधारा के अधीन जमा के संबंध में ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, विवरण देगा।

(6) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जो या तो किसी नियत दर पर कर का संदाय करता था या विद्यमान विधि के अधीन संदाय योग्य करके बदले में नियत रकम का संदाय करता था, निम्नलिखित शर्तों के अधीन रहते हुए [ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में, जो विहित की जाए]²⁸⁴ अपने स्टाक में निवेशों, अर्ध-निर्मित या निर्मित मालों में अंतर्विष्ट निवेशों की बावत मूल्य वर्द्धित कर का प्रत्यय अपने इलैक्ट्रॉनिक प्रत्यय खाते में लेने का हकदार होगा, अर्थात्:-

(i) इस अधिनियम के अधीन ऐसे निवेश या मालों का प्रयोग कराधेय प्रदाय करने या ऐसे प्रदाय करने के लिए आशयित है ;

(ii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति धारा 10 के अधीन कर संदाय नहीं करता है ;

(iii) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन ऐसे निवेशों पर इनपुट कर प्रत्यय के लिए पात्र है ;

(iv) उक्त रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के निवेश के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन कर के संदाय के साक्ष्य के रूप में बीजक या अन्य विहित दस्तावेज कब्जे में है; और

(v) ऐसे बीजक और अन्य विहित दस्तावेज नियत तारीख के तत्काल पूर्व बारह मास से पूर्व जारी नहीं किए गए थे।

(7) उपधारा (3), उपधारा (4) और उपधारा (6) के अधीन प्रत्यय की रकम ऐसी रीति में प्रगणित होगी, जो विहित की जाए।

141. फुटकर काम के संबंध में संक्रमणकालीन उपबंध-

(1) नियत दिन से पूर्व विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में, जहां कोई इनपुट, कारबार के एक स्थान पर प्राप्त होता है और उसे उसी रूप में आगे और प्रसंस्करण, जांच, मरम्मत, पुनर्नुकूलन या किसी अन्य प्रयोजन के लिए या किसी कर्मकार को आंशिक रूप से प्रसंस्करण के पश्चात् प्रेषित कर दिया जाता है और ऐसे इनपुटों को उक्त स्थान पर नियत दिन को या उसके पश्चात् वापस भेजा जाता है तो उस

²⁸³. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "विद्यमान विधि के अधीन प्रदाता द्वारा" प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।।

²⁸⁴. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "नियत दिन को" प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।।



समय कोई कर संदेय नहीं होगा, यदि ऐसे इनपुटों को फुटकर काम के पूरा होने के पश्चात् या अन्यथा नियत दिन से छह मास के भीतर उक्त स्थान पर वापस भेज दिया जाता है :

परन्तु छह मास की अवधि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर दो मास से अनधिक की अतिरिक्त अवधि के लिए आयुक्त द्वारा बढ़ायी जा सकेगी :

परन्तु यह और कि यदि ऐसा निवेश छह मास की अवधि के भीतर या विस्तारित अवधि के भीतर वापस नहीं लौटाया जाता है तो इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खण्ड (क) के उपबन्धों के अनुसार वसूल किये जाने का दायी होगा।

(2) जहां कोई अर्द्ध तैयार माल कारबार के किसी स्थान से नियत दिन से पूर्व विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसार कतिपय विनिर्माणकारी प्रक्रियाएँ करने के लिए किसी अन्य परिसर को प्रेषित किया गया था और ऐसा माल (जिसे इसके पश्चात् इस उपधारा में 'उक्त माल' कहा गया है) नियत दिन को या उसके पश्चात् उक्त स्थान को वापिस लौटाया जाता है तो कोई कर संदेय नहीं होगा यदि उक्त माल, विनिर्माणकारी प्रक्रियाएँ करने या अन्यथा के पश्चात् नियत दिन से छह मास के भीतर उक्त स्थान को लौटा दिया जाता है :

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छहमास की अवधि को दो मास से अनधिक अवधि तक बढ़ाने के लिए आयुक्त द्वारा विस्तार किया जाएगा:

परन्तु यह और कि यदि उक्त माल को इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस नहीं किया जाता है, तो इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खंड (क) के उपबंधों के अनुसरण में वसूल करने के लिए दायी होगा :

परन्तु यह भी कि मालों को प्रेषित करने वाला व्यक्ति, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतरनिर्यात के लिए कर के संदाय के बिना अथवाभारत में करके संदाय पर प्रदाय करने के प्रयोजन के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के परिसरों में उक्त मालों को अंतरित कर सकेगा।

(3) (जहां कारबार के स्थान सेपरिक्षण कराए जाने या अन्य प्रक्रिया के लिए कर के बिना संदाय के विद्यमान विधि के अनुसरण में नियत तारीख के पूर्व रजिस्ट्रीकृत अथवा अरजिस्ट्रीकृत किसी अन्य परिसर में हटा दिया गया था और ऐसे माल उक्त स्थान पर नियत तारीख के पूर्व अथवा पश्चात् वापस किया जाता है, कोई कर संदेय नहीं होगा यदि उक्त माल परीक्षण के अधीन अथवा किसी अन्य प्रक्रिया से नियुक्त तारीख से छह मास के भीतर उक्त स्थान पर वापस किया जाता है :

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छहमास की अवधि को आयुक्त द्वारा दो मास से अनधिकअवधि के लिए विस्तारित किया जाएगा:

परन्तु यह और कि यदि उक्त माल को इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस नहीं किया जाता है, इनपुट कर प्रत्यय धारा 142 की उपधारा (8) के खंड (क) के उपबंधों के अनुसरण में वसूल करने के लिए दायी होगा:

परन्तु यह भी कि मालों को प्रेषित करने वाला व्यक्ति, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतरनिर्यात के लिए कर के संदाय के बिना अथवाभारत में करके संदाय पर प्रदाय करने के प्रयोजन के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के परिसरों में उक्त मालों को अंतरित कर सकेगा।

(4) उपधारा (1), उपधारा (2) और उपधारा (3) के अधीन कर उस समय संदेय नहीं होगा, यदि विनिर्माता और कार्य-कर्मकार यथा विनिर्दिष्ट समय के भीतर और उस प्ररूप और रीति में नियत तारीख को विनिर्माता की ओर से कार्य कर्मकार द्वारा स्टाक में रखे माल अथवा आगत के ब्यौरे में घोषणा करे।

142 प्रकीर्ण संक्रमण कालीन उपबंध—

(1) जहां किसी माल पर कोई कर, यदि कोई है, उसके विक्रय के समय पर विद्यमान विधि के अधीन देय किया गया था, जो नियत तारीख से छह मास पूर्व के समय का नहीं हो, नियत तारीख के पश्चात्



कारबार के स्थान पर वापस किया जाता है, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति विद्यमान विधि के अधीन देय कर के वापस किए जाने के लिए पात्र होगा जहां ऐसा माल नियत तारीख से छह मास की अवधि के भीतर कारबार के उक्त स्थान के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के अलावा किसी व्यक्ति को वापस किया जाता है तथा ऐसे माल का उचित अधिकारी द्वारा संतोषजनक रूप में पहचान योग्य है।

परन्तु यह कि उक्त माल रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा वापस किया जाता है, ऐसे माल की वापसी प्रदाय समझी जाएगी।

(2) (क) जहां नियत तारीख से पूर्व में किसी करार के अनुसरण में, किसी माल अथवा सेवा या दोनों की कीमत नियत तारीख कोअथवा इसके पश्चात् उससे पूर्व ऊपर की ओर पुनरीक्षित की जाती है, ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को ऐसे कीमत में ऐसे पुनरीक्षण होने के 30 दिन की अवधि के भीतर जैसा विहित किया जाए ऐसी विशिष्टियों में अंतर्विष्ट अनुपूरक बीजक अथवा डेबिट नोट जारी किया जायेगा तथा इस अधिनियम के उद्देश्य के लिए ऐसे अनुपूरक बीजक अथवा डेबिट नोट को इस अधिनियम के अधीन की गई बाहरी प्रदाय के संबंध में जारी किया समझा जाएगा।

(ख) जहां नियत तारीख से पूर्व में किसी करार के अनुसरण में, किसी माल अथवा सेवा या दोनों की कीमत नियत तारीख कोअथवा इसके पश्चात् नीचे की ओर पुनरीक्षित की जाती है, ऐसे रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को, जिसने मालों का विक्रय किया था, ऐसे कीमत में ऐसे पुनरीक्षण की 30 दिन की अवधि के भीतर जैसा विहित किया जाए ऐसी विशिष्टियों में अंतर्विष्ट क्रेडिट नोट निर्गत करेगा तथा इस अधिनियम के उद्देश्य के लिए ऐसे अनुपूरक क्रेडिट नोट को इस नियम के अधीन की गई जावक प्रदाय के संबंध में जारी किया समझा जाएगा:

परन्तु यह कि रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को केवल क्रेडिट नोट के जारी किए जाने पर दायी उसके कर को कम करने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा यदि क्रेडिट नोट के पाने पर दायी करके ऐसे कम करने के लिए तत्स्थानी उसका इनपुट कर प्रत्यय घट जाता है।

(3) नियत तारीख के पूर्व, को या पश्चात विद्यमान विधि के अधीन भुगताये गए किसी निवेश कर प्रत्यय, कर, ब्याज अथवा कोई अन्य रकम के प्रतिदाय हेतु किसी व्यक्ति के द्वारा फाइल किए गए प्रतिदाय के लिए प्रत्येक दावा विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निष्पादित किया जायेगा और उसके लिए प्रोदभूत की गई पारिणामिक किसी रकम को विद्यमान विधि के अधीन अंतर्विष्ट नगद संदेय किया जाएगा:

परन्तु यह कि जहां इनपुट कर प्रत्यय की रकम के प्रतिदाय के लिए कोई दावा पूर्णरूप से अथवा भागतः अस्वीकार किया जाता है, इस प्रकार अस्वीकृत रकम व्यपगत हो जाएगी:

परन्तु यह कि कोई प्रतिदाय दावा इनपुट कर प्रत्यय की रकम का अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत तारीख को उक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(4) नियत तारीख के पूर्व या पश्चात निर्यात किए गए किसी माल या सेवा के संबंध में विद्यमान विधि के अधीन संदेय कर के प्रतिदाय हेतु नियत तारीख के पश्चात् फाइल किए गए प्रतिदाय हेतु प्रत्येक दावा, विद्यमान विधि के अनुसरण में निराकृत किया जाएगा:

परन्तु यह कि जहां इनपुट करप्रत्यय के प्रतिदाय के लिए कोई दावा पूर्णरूप से अथवा भागतः अस्वीकार किया जाता है, इस प्रकार अस्वीकृत रकम व्यपगत हो जाएगी :

परन्तु यह कि कोई प्रतिदाय दावा इनपुट कर प्रत्यय की रकम पर अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत तारीख कोउक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(5) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी नियत दिन से पूर्व उलट दिए गए इनपुट कर प्रत्यय की कोई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर के प्रत्यय के रूप में स्वीकार्य नहीं होगी।

(6) (क) इनपुट कर प्रत्यय के संबंध मेंप्रत्येक अपील, पुनरीक्षण, पुनःविलोकन अथवा निदेश की विद्यमान विधि के अधीन कोई कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख के पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो का निष्पादन विद्यमान विधि के अनुसार किया जायेगा तथा दावा करने वाले के लिए स्वीकार की गई पायी जाने वाली



प्रत्यय की कोई रकम का विद्यमान विधि के अधीन अंतर्विष्ट नगद प्रतिदाय किया जाएगा और वह रकम जो अस्वीकार की जाएगी यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी;

परन्तु यह कि इनपुट करप्रत्यय की रकम का कोई प्रतिदाय अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जहां नियत तारीख को उक्त रकम के अतिशेष को इस अधिनियम के अधीन अग्रेषित किया गया है।

(ख) इनपुट कर प्रत्यय के वसूली के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनरीक्षण अथवा निदेश की विद्यमान विधि के अधीन कोई कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख के पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निराकृत की जाएगी तथा यदि कोई प्रत्यय की रकम ऐसी अपील, पुनरीक्षण या निदेश के परिणाम के रूप में वसूल योग्य है उसी रूप में विद्यमान विधि के अधीन जब तक वसूल ना कर ली गई हो, इस अधिनियम के अधीन कर के किसी बकाया के रूप में वसूल की जाएगी और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(7) (क) आउटपुट कर के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनर्विलोकन अथवा निदेश की विद्यमान विधि के अधीन कोई कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख के पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निराकृत की जाएगी तथा यदि कोई रकम ऐसी अपील, पुनरीक्षण या निदेश के परिणाम के रूप में वसूल योग्य है उसी रूप में विद्यमान विधि के अधीन जब तक वसूल ना कर ली गई हो, इस अधिनियम के अधीन कर के किसी बकाया के रूप में वसूल की जाने वाली और इस प्रकार वसूल की गई रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(ख) आउटपुट कर के संबंध में प्रत्येक अपील, पुनरीक्षण अथवा निदेश की विद्यमान विधि के अधीन कोई कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, विद्यमान विधि के उपबंधों के अनुसरण में निराकृत की जाएगी तथा यदि कोई रकम ऐसी अपील, पुनरीक्षण या निदेश के परिणाम के रूप में कोई दावाकृत रकम स्वीकार योग्य पाई जाती है विद्यमान विधि के अधीन नगद प्रतिदाय किया जाएगा और अस्वीकार की गई रकम, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(8) (क) जहां विद्यमान विधि के अधीन संस्थित किसी निर्धारण अथवा न्यायानिर्णयन की कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, के अधीन कोई कर, लाभ जुर्माना अथवा शास्ति की रकम व्यक्ति से वसूल योग्य हो, इस अधिनियम के अधीन करके बकाया की तरह वसूली जाएगी यदि विद्यमान विधि के अधीन वसूल न कर लिया गया तथा इस प्रकार वसूली योग्य रकम इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(ख) जहां विद्यमान विधि के अधीन संस्थित किसी निर्धारण अथवा न्यायानिर्णयन की कार्यवाही चाहे वह नियत तारीख पश्चात् अथवा पूर्व की गई हो, के अधीन कोई कर, लाभ जुर्माना अथवा शास्ति की रकम व्यक्ति प्रतिदाय योग्य हो, विद्यमान विधि के अधीन नकद प्रतिदाय की जाएगी तथा अस्वीकृत राशि, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(9) (क) जहां कोई विवरणी विद्यमान विधि के अधीन दाखिल की गई हो, नियत तारीख के पश्चात्पुनरीक्षित की जाती है, और यदि ऐसे पुनरीक्षण के अनुसरण में कोई रकम वसूल योग्य पायी जाती है अथवा इनपुट कर प्रत्यय की रकम अनुज्ञेय नहीं पायी जाती है, तो विद्यमान विधि के अधीन बकाया कर की वसूली, इस अधिनियम के अधीन बकाया कर के रूप में की जाएगी, यदि विद्यमान विधि के अधीन वसूली नहीं गयी है तो, तथा अस्वीकृत राशी, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।

(ख) जहां कोई विवरणी विद्यमान विधि के अधीन दाखिल की गई हो, नियत तारीख के पश्चात परन्तु विद्यमान विधि में पुनरीक्षण हेतु निर्दिष्ट समय सीमा के अधीन, पुनरीक्षित की जाती है, और यदि ऐसे पुनरीक्षण के अनुसरण में कोई रकम किसी कराधेय व्यक्ति को वापसी योग्य पायी जाती है अथवा इनपुट कर प्रत्यय की रकम अनुज्ञेय पायी जाती है, तो उकता राशी विद्यमान विधि के अधीन वापस की जाएगी तथा अस्वीकृत राशी, यदि कोई हो, इस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के रूप में स्वीकार नहीं की जाएगी।



(10) इस अध्याय में यथा उपबंधित के सिवाय नियत तारीख के पूर्व की गई किसी संविदा के अनुसरण में नियत तारीख के पश्चात् माल या सेवा अथवा दोनो का प्रदाय इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर के लिए दायी होगा।

(11) (क) धारा 12 में अंतर्विष्ट होते हुए भी, इस अधिनियम के अधीन मालपर कोई कर उस सीमा तक देय नहीं होगा जिस सीमा तक वह कर बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2005 के अधीन उक्त माल पर उद्ग्रहीत किया गया था।

(ख) धारा 13 में अंतर्विष्ट होते हुए भी, इस अधिनियम के अधीन सेवा पर कोई कर उस सीमा तक देय नहीं होगा जिस सीमा तक वह वित्त अधिनियम, 1994 के अध्याय 5 के अधीन उक्त सेवाओं पर उद्ग्रहीत किया गया था।

(ग) जहां बिहार मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2005 और वित्त अधिनियम, 1994 के अध्याय 5 के अधीन दोनो के अधीन किसी आपूर्ति पर कर देय था, इस अधिनियम के अधीन कर उद्ग्रहीत किया जाएगा तथा कर योग्य व्यक्ति नियत तारीख के पश्चात् किए गए प्रदायों के विस्तारतक विद्यमान विधि के अधीन मूल्य वर्धित कर या सेवा कर को प्रत्यय के रूप में लेने का हकदार होगा तथा ऐसे प्रत्यय की उस रीति में जैसी विहित की जाए गणना की जाएगी।

(12) जहां कोई माल नियत तारीख के पूर्व छह मास से पूर्व अनधिक अवधि के अनुमोदन के आधार पर भेजा जाता है, और क्रेता द्वारा अस्वीकृत किया जाता है या अनुमोदित नहीं किया जाता है और नियत तारीख के पश्चात् अथवा उस तारीख को विक्रेता को वापस किया जाता है, उस पर कोई कर नहीं देय होगा यदि ऐसा माल नियत तारीख से छहमासकी अवधि के भीतर वापस किया जाता है:

परन्तु यह कि पर्याप्त कारण दर्शाए जाने पर छह मास की अवधि को दो मास से अनधिक अवधि तक बढ़ाने के लिए आयुक्त द्वारा विस्तार किया जाएगा:

परन्तु यह और कि माल वापस करने वाले व्यक्ति द्वारा कर देय होगा यदि ऐसा माल इस अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी होता है तथा इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस नहीं किया जाता है:

परन्तु यह भी कि कर किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा संदेय किया जाएगा जिसने अनुमोदन के आधार पर माल को भेजा है यदि ऐसा माल इस अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी है, तथा इस उपधारा में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर वापस किया नहीं जाता है।

(13) जहां प्रदायकर्ता ने ऐसे माल का कोई विक्रय किया है जिस के संबंध में बिहार मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2005 के अधीन स्रोत पर कर की कटौती करना अपेक्षित था और नियत तारीख के पूर्व बीजक भी जारी किया गया है, धारा 51 के अधीन स्रोत पर कटौतीकर्ता के द्वारा किसी कर की कटौती नहीं की जाएगी जहां उक्त प्रदायकर्ता को संदाय नियत तारीख को या इसके पश्चात् किया जाता है।

(14) जहां प्रधान के कोई माल या पूंजी माल नियत दिन को अभिकर्ता के परिसरों में रखे हैं, वहां अभिकर्ता निम्नलिखित शर्तों को पूरा किए जाने के अधीन रहते हुए ऐसे मालों पर संदत्त कर का प्रत्यय लेने के लिए हकदार होगा, अर्थात्—

(i) अभिकर्ता इस अधिनियम के अधीन एक रजिस्ट्रीकृत कराधेय व्यक्ति है ;

(ii) प्रधान और अभिकर्ता, दोनों ही नियत दिन से ठीक पूर्ववर्ती तारीख को ऐसे अभिकर्ता के पास रखे मालों या पूंजी मालों के स्टॉक के ब्यौरों की घोषणा ऐसे प्ररूप और रीति में तथा ऐसे समय के भीतर करते हैं, जो इस निमित्त विहित किया जाए;

(iii) ऐसे मालों या पूंजी मालों के लिए बीजक नियत दिन से ठीक पूर्व के बारह मासों की अवधि से पूर्व जारी नहीं किए गए थे; और

(iv) प्रधान ने या तो ऐसे, —

(क) मालों या;



(ख) पूंजी मालों,

के संबंध में या तो इनपुट कर प्रत्यय को वापस कर दिया है या उसका फायदा नहीं लिया है या ऐसे प्रत्यय का फायदा ले लेने के पश्चात् उसे, उसके द्वारा लिए गए फायदे की सीमा तक वापस लौटा दिया है।

स्पष्टीकरण—इस अध्याय के प्रयोजनों के लिए “पूंजी माल पद का वही अर्थ होगा, जो उसका बिहारमूल्यवर्धित कर अधिनियम 2005 में है।



अध्याय 21

प्रकीर्ण

143. छुटपुट कार्य की प्रक्रिया—

(1) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति (इसके पश्चात् इस धारा में “प्रधान” के रूप में निवेशित किया गया है), ऐसी शर्तों के अधीन जो विहित की जाए और सूचना के अधीन छुटपुट कार्य के लिए छुटपुट कार्य को बिना कर के संदाय के कोई इनपुट अथवा पूंजीमाल भेज सकता है तथा पश्चात्कर्ती रूप में अन्य छुटपुट कार्य को भेज सकता है, और—

(क) छुटपुट कार्य के पूरा हो जाने के पश्चात् अथवा निवेश या सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों या औजारों से भिन्न पूंजीगत मालकर के संदाय के बिना, उसके किसी भी कारबार के स्थान से उनके भेजे जाने के क्रमशः एक वर्ष और तीन वर्ष के भीतर, वापस लाएगा;

(ख) छुटपुट कार्य के पूरा हो जाने के पश्चात् इनपुट निवेश या सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों से भिन्न पूंजी गत माल पर कर संदाय पर भारत के भीतर अथवा निर्यात के लिए कर संदाय अथवा बिना संदाय, जैसी स्थिति हो, कर के संदाय पर छुटपुट कर्मकार के कारबार के उसके किसी स्थान को उनके भेजे जाने के क्रमशः एक वर्ष और तीन वर्ष के भीतर, आप्रदाय करेगा:

परन्तु यह कि प्रधान खंड (ख) के निबंधनों में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से माल की आपूर्ति निम्न दशा के सिवाय तब तक नहीं करेगा जब तक उक्त प्रधान द्वारा उस स्थान को कारबार के अतिरिक्त स्थान के रूप में की घोषणा नहीं करता है,

(i) जहां छुटपुट कर्मकार धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है ; अथवा

(ii) जहां प्रधान ऐसे माल की आप्रदाय में लगा हुआ है जैसा कि आयुक्त द्वारा अधिसूचित किया गया है।

[परन्तु यह और कि पर्याप्त हेतुक दर्शित किए जाने पर, एक वर्ष और तीन वर्ष की अवधि को, आयुक्त द्वारा क्रमशः एक वर्ष और दो वर्ष से अनधिक की अवधि के लिए आगे और बढ़ाया जा सकेगा।]²⁸⁵

(2) आगत अथवा पूंजीगत माल के लिए लेखाओं का ध्यान रखने का उत्तरदायित्व प्रधान पर होगी।

(3) जहां छुटपुट कार्य हेतु भेजा गया निवेश उपधारा (1) के खंड (क) के अनुसरण में छुटपुट कार्यों से भिन्न कार्य के पूरा होने के पश्चात् प्रधान द्वारा वापस नहीं लिया जाता है अथवा उसके बाहर भेजे जाने के एक वर्ष की अवधि के भीतर उपधारा (1) के खंड (ख) के अनुसरण में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से आप्रदाय नहीं की जाती है, तो यह समझा जाएगा कि ऐसे इनपुट की छुटपुट कर्मकार के लिए प्रधान द्वारा आप्रदाय की गई थी उस दिन जब उक्त इनपुट बाहर भेजे गए थे।

(4) जहां छुटपुट कार्य हेतु भेजे गए सांचा और रूपदा, जुगतों और फिक्सचरों या औजारों से भिन्न पूंजी माल उपधारा (1) के खंड (क) के अनुसरण में प्रधान द्वारा वापस नहीं लिया जाता है अथवा उसके बाहर भेजे जाने की तीन वर्ष की अवधि के भीतर उपधारा (1) के खंड (ख) के अनुसरण में छुटपुट कर्मकार के कारबार के स्थान से आप्रदाय नहीं की जाती है, तो यह समझा जाएगा कि ऐसे पूंजी माल छुटपुट कर्मकार के लिए प्रधान द्वारा आप्रदाय की गई थी उस दिन जब उक्त पूंजी माल बाहर भेजे गए थे।

(5) उपधारा (1) और उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, किसी अपशिष्ट और छुटपुट कार्य के दौरान उत्पादित स्क्रैप पर के संदाय पर कारबार के उसके स्थान से सीधे छुटपुट कर्मकार के द्वारा आप्रदाय की जा सकती है, यदि ऐसा छुटपुट कर्मकार रजिस्ट्रीकृत है अथवा यदि छुटपुट कर्मकार रजिस्ट्रीकृत नहीं है तो प्रधान द्वारा आपूर्ति जाएगी।

²⁸⁵. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।



स्पष्टीकरण—छुटपुट कार्य के उद्देश्य हेतु इनपुट में प्रधान या किसी छुटपुट कर्मकार द्वारा इनपुट पर लाए गए किसी उपाय या कार्रवाई से उद्भूत होने वाले मध्यवर्ती माल सम्मिलित है।

144. कतिपय मामलों में दस्तावेजों के लिए उपधारणा छूट प्राप्त करना—

जहां कोई दस्तावेज—

- (i) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत किया जाता है ; अथवा
- (ii) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी व्यक्ति की अभिरक्षा अथवा नियंत्रण से अभिग्रण किया गया है ; अथवा
- (iii) इस अधिनियम अथवा तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी कार्यवाही के क्रम में भारत के बाहर किसी स्थान से प्राप्त किया गया है,

और ऐसा दस्तावेज उसके अथवा किसी अन्य व्यक्ति जिसने उससे संयुक्त होने का प्रयास किया हो, के विरुद्ध न्यायालय—

(क) ऐसे व्यक्ति द्वारा जब तक प्रतिकूल साबित नहीं कर दिया जाता है, उपधारणा की जाएगी।

(i) ऐसे दस्तावेज की अंतर्वस्तु की सत्यता;

(ii) यह कि हस्ताक्षर और ऐसे दस्तावेज का प्रत्येक अन्य भाग जिसका तात्पर्य किसी विशिष्ट व्यक्ति के द्वारा हस्तलिखित हो अथवा जिसे न्यायालय ने उचित कारणों के लिए हस्ताक्षर कराया हो अथवा किसी विशेष व्यक्ति के द्वारा हस्तलिखित किया गया हो और ऐसे क्रियान्वित या अभिप्रमाणित दस्तावेज की दशा में इस प्रकार उसका तात्पर्य क्रियान्वित या अभिप्रमाणन किया गया हो;

(ख) यह होते हुए भी कि यह सम्यक्तः स्टांपित नहीं है, में दस्तावेज स्वीकार करेगा, यदि ऐसा दस्तावेज साक्ष्य में गृहीत है।

145. दस्तावेज के रूप में और साक्ष्य के रूप में दस्तावेजों और कम्प्यूटर प्रिंट आउट की माइक्रो फिल्म, प्रतिकृति प्रतियों की ग्राह्यता—

(1) तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए —

(क) ऐसे माइक्रोफिल्म में लगी हुई छाया या छायाओं के पुनर्उत्पादन या दस्तावेजों की माइक्रोफिल्म (चाहे वह बड़ी हो अथवा नहीं) ; या

(ख) किसी दस्तावेज की प्रतिकृति प्रति ; या

(ग) किसी दस्तावेज में अन्तर्विष्ट कोई विवरण और जिसमें किसी कम्प्यूटर द्वारा जनित कोई मुद्रित सामग्री भी शामिल है, ऐसी शर्तों के अधीन जो विहित की जाए ; या

(घ) किसी युक्ति या संचार माध्यम में इलैक्ट्रॉनिक रूप से भंडारित कोई सूचना जिसमें ऐसी सूचना की हार्डप्रतियां भी शामिल है,

को इस अधिनियम और उसके अधीन बनाये गये नियमों के प्रयोजन के लिए एक दस्तावेज के रूप में समझा जाएगा और उसके अधीन किसी कार्रवाई में, किसी और सबूत या मूल दस्तावेज के प्रस्तुतीकरण के बिना ही ऐसे ग्राह्य होगा जैसे मूल दस्तावेज की कोई विषय वस्तु के साक्ष्य के रूप में या उसमें कथित कोई तथ या साक्ष्य के रूप में ग्राह्य हो।

(2) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाने गये नियमों के अधीन किसी कार्यवाही में, जहां इस धारा के आधार पर साक्ष्य में कथन करने की अपेक्षा की गयी है, कोई ऐसा प्रमाण पत्र—

(क) जो ऐसे दस्तावेज को परिलक्षित करता है जिसमें कथन अन्तर्विष्ट है और उस रीति का वर्णन करता है जिसमें इसे लिया गया है;



(ख) जो उस दस्तावेज को बनाने में शामिल किसी युक्ति की ऐसी विशिष्टियों को देता है जो यह प्रदर्शित करने के प्रयोजन के लिए समुचित हो कि दस्तावेज को किसी कम्प्यूटर द्वारा बनाया गया था,

प्रमाणपत्र में कथित किसी मामले का साक्ष्य होगा और इस उपधारा से प्रयोजन हेतु यह इसका कथन करने वाले व्यक्ति की पूरी जानकारी और विश्वास से कहा गया कथन होने के मामले में पर्याप्त होगा।

146. सामान्य पोर्टल—

सरकार, परिषद्की सिफारिशों पर प्रसुविधा हेतु रजिस्ट्रीकरण, कर के संदाय, विवरणी के प्रस्तुतीकरण, एकीकृत कर की संगणना और समाधान, इलैक्ट्रॉनिक वे बिल और ऐसे प्रयोजनों के लिए जो विहित किए जाए के लिए सामान्य माल और सेवा कर इलैक्ट्रॉनिक पोर्टल को अधिसूचित कर सकेगी।

147. निर्यात समझा जाना—

सरकार, परिषद्की सिफारिशों पर जहां प्रदाय किया गया माल भारत नहीं छोड़ता है और ऐसी प्रदाय के लिए संदाय भारतीय रुपए या संपरिवर्तनीय विदेशी मुद्रा में प्राप्त हो गया है, यदि ऐसा माल भारत में विनिर्मित किया गया है, कतिपय माल की प्रदाय को निर्यात के रूप में समझा जाना अधिसूचित कर सकेगी।

148. कतिपय प्रक्रियाओं के लिए विशेष पद्धति—

सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर और ऐसी शर्तों और सुरक्षा के अधीन जो विहित किए जाए, रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों के कतिपय वर्गों द्वारा अनुसरण की जाने वाली विशेष पद्धति को अधिसूचित कर सकेगी, जिसमें रजिस्ट्रीकरण से संबंधित, विवरणी का प्रस्तुतीकरण, कर का संदाय और ऐसे कराधेय व्यक्तियों का प्रशासन भी शामिल है।

[148क. कतिपय मामलों के लिए खोज और अनुसरण क्रियाविधि —

(1) सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, —

(क) माल ;

(ख) व्यक्ति या व्यक्तियों का वर्ग, जो ऐसे माल को रखता है या उसमें व्यवहार करता है, को, जिन्हें इस धारा के उपबंध लागू होंगे, विनिर्दिष्ट कर सकेगी।

(2) सरकार, उपधारा (1) के खंड (क) में निर्दिष्ट माल के संबंध में, —

(क) ऐसे व्यक्तियों के माध्यम से, जो विहित किए जाएं, विशिष्ट पहचान चिह्नांकन चिपकाने में तथा इलेक्ट्रॉनिक भंडारण और उसमें अंतर्विष्ट सूचना तक पहुंच को समर्थ बनाने के लिए, किसी प्रणाली का उपबंध कर सकेगी य

(ख) ऐसे माल के लिए किसी विशिष्ट पहचान चिह्नांकन को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिसके अंतर्गत उसमें अभिलिखित की जाने वाली जानकारी भी है।

(3) उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट व्यक्ति—

(क) उक्त माल या उसके पैकेजों पर ऐसी सूचना को अंतर्विष्ट करते हुए और ऐसी रीति में, कोई विशिष्ट पहचान चिह्नांकन चिपकाएगा ;

(ख) ऐसे समय के भीतर ऐसी जानकारी और ब्यौरे प्रस्तुत करेगा, ऐसे प्ररूप और रीति में, ऐसे अभिलेख या दस्तावेज रखेगा ;

(ग) ऐसे माल, जिसके अंतर्गत पहचान, क्षमता, प्रचालन की अवधि और अन्य ब्यौरे या सूचना भी सम्मिलित हैं, के विनिर्माण के कारबार के स्थान में संस्थापित मशीनरी के ब्यौरे ऐसे समय के भीतर और ऐसे प्ररूप तथा ऐसी रीति में प्रस्तुत करेगा ;



(घ) उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्रणाली के संबंध में, ऐसी रकम का संदाय करेगा, जो विहित की जाए।²⁸⁶

149. माल और सेवाकर अनुपालन रेटिंग—

- (1) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार अनुपालन के उसके अभिलेख पर आधारित सरकार द्वारा एक माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग समानुदेशित कर सकेगी।
- (2) माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग गणना को ऐसे मानकों के आधार पर जो विहित किए जाए, अवधारित किया जा सकेगा।
- (3) माल और सेवा कर अनुपालन रेटिंग गणना को अवधारित अन्तरालों पर अद्यतन किया जा सकेगा और रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को सूचित किया जा सकेगा तथा ऐसी रीति जो विहित की जाए पब्लिक डोमेन में भी रखी जा सकेगी।

150. सूचना विवरणी प्रस्तुत करने की बाध्यता।

(1) कोई व्यक्ति—

- (क) कोई कराधेय व्यक्ति होने के कारण ; या
- (ख) कोई स्थानीय प्राधिकारी या अन्य सार्वजनिक निकाय या संगम होने के कारण ; या
- (ग) वर्द्धित कर या विक्रय कर या राज्य उत्पाद कर के संग्रहण के लिए उत्तरदायी राज्य सरकार का कोई प्राधिकारी या उत्पाद शुल्क या सीमा शुल्क के संग्रहण के लिए उत्तरदायी केन्द्र सरकार का कोई प्राधिकारी होने के कारण ; या
- (घ) आय कर अधिनियम, 1961 के उपबंधों के अधीन नियुक्त कोई आयकर प्राधिकारी होने के कारण ; या
- (ङ) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 45क के खंड (क) के अर्थ के अंतर्गत कोई बैंकिंग कंपनी होने के कारण ; या
- (च) कोई राज्य विद्युत बोर्ड या विद्युत अधिनियम, 2003 के अधीन कोई विद्युत वितरण या पारेषण अनुज्ञप्तिधारक या केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार द्वारा ऐसे कृत्यों से न्यस्त कोई इकाई, होने के कारण ; या
- (छ) रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 की धारा 6 के अधीन नियुक्त रजिस्ट्रार या उपरजिस्ट्रार होने के कारण ; या
- (ज) कंपनी अधिनियम, 2013 के अर्थान्तर्गत कोई रजिस्ट्रार होने के कारण ; या
- (झ) मोटर यान अधिनियम, 1988 के अधीन मोटर यान का रजिस्ट्रीकरण करने को सशक्त रजिस्ट्रीकरण प्राधिकारी होने के कारण ; या
- (ञ) भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 की धारा 3 के खण्ड (ग) में निर्दिष्ट कोई समाहर्ता होने के कारण ; या
- (ट) प्रतिभूति संविदा (विनियम) अधिनियम, 1956 की धारा 2 के खंड (च) में निर्दिष्ट मान्यता प्राप्त स्टाक एक्सचेंज होने के कारण ; या
- (ठ) निक्षेपागार अधिनियम, 1996 की धारा 2 की उपधारा (1) के खंड (ङ) में निर्दिष्ट निक्षेपागार होने के कारण ; या

286. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।



(ड) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 3 के अधीन यथागठित भारतीय रिजर्व बैंक का कोई अधिकारी होने के कारण ; या

(ढ) कंपनी अधिनियम, 2013 के अधीन कोई रजिस्टर्ड कंपनी, माल और सेवा कर नेटवर्क होने के कारण ; या

(ण) धारा 25 की उपधारा (9) के अधीन किसी व्यक्ति को प्रदान किया गया विशिष्ट पहचान संख्या प्रदत्त व्यक्ति होने के कारण ; या

(त) सरकार द्वारा परिषद् की सिफारिशों पर, यथाविनिर्दिष्ट कोई अन्य व्यक्ति, जो, तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन, रजिस्ट्रीकरण या लेखा विवरण या का अभिलेख कोई आवधिक विवरणी या कर संदाय और माल या सेवा या दोनों के संव्यवहार के अन्य ब्यौरे को अंतर्विष्ट करने वाले दस्तावेज या किसी बैंक खाता या विद्युत खपत से संबंधित संव्यवहार या माल या संपत्ति का क्रय-विक्रय या आदान प्रदान के संव्यवहार या किसी संपत्ति या सम्पत्ति में अधिकार या हित के अभिलेख के अनुरक्षण के लिए उत्तरदायी है ऐसी अवधि, ऐसे समय के भीतर ऐसे प्ररूप और रीति में, और ऐसे प्राधिकारी या अभिकरण के समक्ष जो विहित की जाए एक सूचना विवरणी दाखिल करेगा।

(2) जहां आयुक्त या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी, सूचना विवरणी में दी गई सूचना को त्रुटिपूर्ण समझता है, वह सूचना विवरणी भरने वाले उस व्यक्ति को ऐसी त्रुटि प्रज्ञापित करेगा और उसको ऐसे प्रज्ञापन की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर, या उसकी ओर से किए गए आवेदन पर ऐसी अग्रसारित अवधि के भीतर, त्रुटि के परिशोधन करने का एक अवसर देगा, और यदि त्रुटि का परिशोधन उक्त तीस दिन की अवधि या अग्रसारित अवधि के भीतर नहीं किया गया है तो, इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंधों में अंतर्विष्ट किसी बाते के होते हुए भी, ऐसी सूचना विवरणी भरी हुई नहीं समझी जाएगी और इस अधिनियम के उपबंध लागू होंगे।

(3) जहां कोई व्यक्ति, जिससे सूचना विवरणी दिया जाना अपेक्षित है उसे वह उपधारा (1) या उपधारा (2) में विनिर्दिष्ट समय के भीतर नहीं देता है, तो उक्त प्राधिकारी उसे नोटिस परिदान की तारीख से नब्बे दिनों की अनधिक अवधि के भीतर ऐसी सूचना विवरणी देने की अपेक्षा का नोटिस दे सकेगा और ऐसा व्यक्ति सूचना विवरणी देगा।

[151. सूचना मांगने की शक्ति—

आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई व्यक्ति, आदेश द्वारा, किसी व्यक्ति को ऐसे समय के भीतर, ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति में, जिसे उसमें विनिर्दिष्ट किया जाए, इस अधिनियम के संबंध में व्यवहृत किसी मामले के संबंध में, कोई सूचना प्रस्तुत करने का निदेश दे सकेगा।²⁸⁷

152. सूचना के प्रकटन पर वर्जन—

(1) धारा 150 या धारा 151 के प्रयोजनों के लिए दी गई किसी भी बात की बावत ^[***]²⁸⁸ सूचना, अनुरूप या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि की लिखित सहमति के बिना ऐसी रीति से प्रकाशित की जाएगी

287. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा प्रतिस्थापित। प्रतिस्थापन से पूर्व धारा निम्न प्रकार थी :-

151. सांख्यिकी संग्रहण की शक्ति—

(1) आयुक्त यदि यह समझता है कि ऐसा किया जाना आवश्यक है, अधिसूचना द्वारा, या इस अधिनियम से संबंधित किसी मामले के सिलसिले में सांख्यिकी का संग्रहण करने को निदेश दे सकेगा।

(2) ऐसी अधिसूचना जारी करने पर आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई व्यक्ति, संबंधित व्यक्ति से यथा विहित, ऐसे प्ररूप और रीति में उन सांख्यिकियों के संग्रहण से संबंधित किसी मामले के संबंध में, ऐसी सूचना या विवरणी देने के लिए अपेक्षा कर सकेगा।

288. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द "किसी व्यक्ति विवरणी या उसके भाग की" विलोपित।



कि ऐसी विशिष्टियाँ किसी खास व्यक्ति के पहचान के प्रति निर्दिष्ट न हो और ऐसी सूचना [संबंधित व्यक्ति को सुनवाई का अवसर दिए बिना]²⁸⁹ इस अधिनियम के अधीन किसी प्रक्रियाओं के प्रयोजन के लिए उपयोग में नहीं लाई जाएगी।

[***]290

(3) इस धारा की कोई बात व्यक्ति के किसी वर्ग या संव्यवहार के किसी वर्ग से संबंधित किसी सूचना के प्रकाशन पर लागू नहीं होगी, यदि आयुक्त की राय में ऐसी सूचना का प्रकाशन लोकहित में वांछनीय है।

153. किसी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त करना—

सहायक आयुक्त की पंक्ति से अन्युन कोई अधिकारी, मामले की प्रकृति और जटिलता तथा राजस्व के हित के संबंध को ध्यान में रखते हुए, उसके समक्ष संविधा, जांच अन्वेषण या किसी अन्य कार्यवाही के किसी भी स्तर पर किसी भी विशेषज्ञ से सहायता प्राप्त कर सकेगा।

154. नमूनों को प्राप्त करने की शक्ति—

आयुक्त या उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अधिकारी, जहां वह ऐसा करना आवश्यक समझे, किसी कराधेय व्यक्ति के कब्जे से माल के नमूने ले सकेगा, और इस प्रकार लिए गए किसी भी नमूने की रसीद उपलब्ध कराएगा।

155. सबूत का भार—

जहां कोई व्यक्ति यह दावा करता है कि वह उस अधिनियम के अधीन इनपुट कर प्रत्यय के लिए पात्र है, ऐसे दावे को साबित करने का भार ऐसे व्यक्ति पर होगा।

156. व्यक्ति लोक सेवक समझा जाएगा—

इस अधिनियम के अधीन कृत्यों का निर्वहन करने वाले सभी व्यक्ति भारतीय दंड संहिता की धारा 21 के अर्थान्तर्गत आने वाले लोक सेवक समझे जाएंगे।

157. इस अधिनियम के अधीन की गई कार्रवाई का संरक्षण—

(1) इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन सदभाव में की गई या किये जाने को आशयित कोई कृत्य के लिए अपील अधिकरण के अध्यक्ष, राज्य अध्यक्ष, सदस्यों, अधिकारियों या अन्य कर्मचारियों या उक्त अपील अधिकरण द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य व्यक्ति के विरुद्ध कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं की जाएगी।

(2) इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन सदभाव में की गई या किये जाने को आशयित कोई कृत्य के लिए इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत किसी अधिकारी के विरुद्ध कोई वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाहियां नहीं की जाएगी।

158. लोक सेवक द्वारा सूचना का प्रकट किया जाना—

(1) इस अधिनियम, के अनुसरण में किए गए किसी कथन, दी गई विवरणी या पेश किए गए लेखाओं या दस्तावेजों या इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के अनुक्रम में दिए गए साक्ष्य के अभिलेख में

289. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा शब्द अंतःस्थापित।

290. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा विलोपित। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

(2) इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य अधिनियम के अधीन अभियोजन के प्रयोजन को छोड़कर, कोई व्यक्ति जो कि इस अधिनियम के अधीन सांख्यिकी संग्रहण में या इस अधिनियम के प्रयोजन के लिए संकलन या उसके कंप्यूटरीकरण में नहीं लगा हुआ है, को, धारा 151 में निर्दिष्ट कोई सूचना या कोई व्यक्ति विवरणी को देखने या उस तक उस तक पहुँचने की अनुमति होगी।



(किसी दंडिक न्यायालय के समक्ष कार्यवाही से भिन्न) या इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही से संबंधित या किसी अभिलेख में, उपधारा (3) में यथाउपबंधित के सिवाय, प्रकट नहीं करेगा।

(2) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (1872 का 1) में किसी बात के होते हुए भी, उपधारा (3) में यथाउपबंधित के सिवाय कोई न्यायालय किसी इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत किसी अधिकारी से उसके समक्ष उपधारा (1) में निर्दिष्ट किन्हीं विशिष्टियों को प्रस्तुत करने या उनकी बावत उसके समक्ष साक्ष्य देने की अपेक्षा करने का हकदार होगा।

(3) इस धारा की कोई बात, —

(क) भारतीय दंड संहिता या भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 या तत्समय प्रवृत्त अन्य विधि के अधीन किसी अभियोजन के प्रयोजन के लिए किसी विवरण, विवरणी, लेखाओं, दस्तावेजों, साक्ष्य, शपथपत्र या अभिसाक्ष्य के संबंध में ; या

(ख) इस अधिनियम के उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के प्रयोजन के लिए, केन्द्रीय सरकार को या राज्य सरकार को या इस अधिनियम के कार्यान्वयन में कार्यकारी कोई व्यक्ति को ; या

(ग) ऐसी विशिष्टियाँ जिनके प्रकटन का कारण इस अधिनियम के अधीन विधि पूर्ण कार्य द्वारा किसी नोटिस के तामिल या किसी मांग की वसूली के लिए कोई कार्यवाही हो, के संबंध में ; या

(घ) किसी भी वाद या कार्यवाहियों में एक सिविल न्यायालय जिसके लिए इस अधिनियम के अधीन सरकार या कोई प्राधिकारी, एक पक्षकार है जो कि इस अधिनियम या तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि के अधीन किसी कार्यवाहियों में उठने वाले किसी मामले से संबंधित है, इसके अधीन किसी भी शक्ति का प्रयोग करने के लिए ऐसा कोई प्राधिकारी को प्राधिकृत करता है, के संबंध में ; या

(ङ) इस अधिनियम द्वारा कर प्राप्ति या अधिरोपित कर के प्रतिदायक लेखापरीक्षा के प्रयोजन से नियुक्त किसी अधिकारी को ; या

(च) तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन जाँच अधिकारी के रूप में नियुक्त या प्राधिकृत किसी अधिकारी को इस अधिनियम के अधीन नियुक्त या प्राधिकृत किसी अधिकारी के आचरण के जाँच हेतु संगत ; या

(छ) केन्द्रीय या किसी राज्य सरकार के किसी अधिकारी को किसी कर या शुल्क के अधिरोपण या वसूली हेतु समर्थ बनाने के प्रयोजन के लिए ; या

(ज) ऐसी विशिष्टियाँ जिनके प्रकटन का कारण तत्समय प्रवृत्त अन्य किसी विधि के अधीन कोई लोक सेवक या कोई अन्य कानूनी प्राधिकारी द्वारा उसकी या उसकी शक्तियों के विधिपूर्ण प्रयोग में ; या

(झ) किसी पेशारत अधिवक्ता, कर व्यवसायी, पेशारत लागत लेखाकार, पेशारत चार्टर्ड अकाउंटेंट, पेशारत कंपनी सचिव के विरुद्ध इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के सम्बन्ध में दुराचरण के अभियोग की जाँच हेतु विधि व्यवसाय, लागत लेखाकार, चार्टर्ड अकाउंटेंट या कंपनी सचिव के पेशा में लगे हुए सदस्यों के विरुद्ध कार्यवाई करने हेतु सशक्त किसी प्राधिकारी को सुसंगत किसी तथ्य का प्रकटन; या

(ञ) नियुक्त किसी अभिकरण को डाटा प्रविष्टि या स्वचालित प्रणाली के प्रयोजन के लिए या संचालन, उन्नत करने या किसी स्वचालित प्रणाली के अनुरक्षण के प्रयोजन के लिए जहां ऐसे अभिकरण पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए को छोड़ ऐसी विशिष्टियों के प्रयोग या प्रकट नहीं करने की संविदा आबद्ध है ; या

(ट) तत्समय प्रवृत्त अन्य किसी विधि के प्रयोजन के लिए यथा आवश्यक सरकार के किसी अधिकारी को ; और

(ठ) कराधेय व्यक्तियों के या संव्यवहारों के किसी वर्ग से सम्बंधित प्रकाशन हेतु कोई सूचना, यदि आयुक्त की राय में ऐसी सूचना का प्रकाशन लोक हित में है, किन्हीं विशिष्टियों के प्रकटन को लागू नहीं होगी।



158क. कराधेय व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना को सम्मति के आधार पर साझा करना—

(1) धारा 133, धारा 152 और धारा 158 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित ब्यौरों को, उपधारा (2) के उपबंधों के अधीन रहते हुए तथा, परिपद की सिफारिशों पर ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए, जो विहित की जाएं, सामान्य पोर्टल द्वारा सरकार द्वारा अधिसूचित ऐसी अन्य प्रणालियों के साथ, साझा किया जा सकेगा, अर्थात्:—

(क) धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन में प्रस्तुत या धारा 39 या धारा 44 के अधीन दाखिल की गई विवरणी में प्रस्तुत की गयी विशिष्टियाँ;

(ख) बीजक के सृजन के लिए सामान्य पोर्टल पर अपलोड की गई विशिष्टियाँ, धारा 37 के अधीन प्रस्तुत जावक पूर्तियों के ब्यौरे और धारा 68 के अधीन दस्तावेजों के सृजन के लिए सामान्य पोर्टल पर अपलोड की गई विशिष्टियाँ;

(ग) ऐसे अन्य ब्यौरे, जो विहित किए जाएं।

(2) उपधारा (1) के अधीन ब्यौरों को साझा करने के प्रयोजनों के लिए, —

(क) उपधारा (1) के खंड (क), खंड (ख) और खंड (ग) के अधीन प्रस्तुत ब्यौरों के संबंध में पूर्तिकर्ता की सहमति और

(ख) उपधारा (1) के खंड (ख) के अधीन और उपधारा (1) के खंड (ग) के अधीन प्रस्तुत ब्यौरों के संबंध में प्राप्तिकर्ता की सहमति केवल जहां ऐसे ब्यौरों के अंतर्गत प्राप्तिकर्ता की पहचान संबंधी जानकारी भी है,

ऐसे प्ररूप और रीति में अभिप्राप्त की जाएगी, जो विहित की जाए।

(3) तत्समय प्रवृत्त किसी विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, इस धारा के अधीन साझा की गई जानकारी के पारिणामिक उद्भूत होने वाले किसी दायित्व के संबंध में सरकार या सामान्य पोर्टल के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी तथा सुसंगत पूर्ति पर या सुसंगत विवरणी के अनुसार कर संदाय करने के दायित्व पर कोई प्रभाव नहीं होगा।²⁹¹

159. कतिपय मामलों में व्यक्ति के विषय में सूचना का प्रकाशन—

(1) यदि आयुक्त, या उसकी ओर से इस संबंध में उसके द्वारा प्राधिकृत कोई अन्य अधिकारी की यह राय है कि किसी व्यक्ति का नाम और ऐसे व्यक्ति के संबंध में इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाहियों या अभियोजन से संबंधित कोई अन्य विशिष्टियाँ का प्रकाशन लोकहित में आवश्यक या समीचीन है तो वह, ऐसी रीति में ऐसे नाम और विशिष्टियाँ का प्रकाशन कर सकेगा।

(2) इस अधिनियम के अधीन कोई शास्ति अधिरोपित करने के संबंध में इस धारा के अधीन कोई प्रकाशन नहीं किया जाएगा जब तक अपील प्राधिकारी को कोई अपील प्रस्तुत करने के लिए धारा 107 के अधीन समय का अवसान कोई अपील प्रस्तुत किए बिना हो जाता है या कोई अपील यदि प्रस्तुत की जाती है, का निपटारा नहीं हो जाता है।

स्पष्टीकरण—यथास्थिति, फर्म, कंपनी या व्यक्तियों का संगम, फर्म के भागीदारों, कंपनी के निदेशकों, प्रबंधकीय अभिकर्ताओं, सचिवों और कोषाध्यक्षों या प्रबंधकों का नाम या सदस्यों का संगम की दशा में, सदस्यों का नाम प्रकाशित किया जा सकेगा, यदि आयुक्त या उसकी ओर से उसके द्वारा प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी की राय में मामले की परिस्थिति में ऐसा करना न्यायोचित हो।

²⁹¹. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 12 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 604 पटना : दिनांक : 25 जुलाई, 2023 द्वारा अंतःस्थापित।



160. कतिपय बिन्दुओं पर निर्धारण कार्यवाहियां आदि का अविधिमाम्य न किया जाना—

(1) इस अधिनियम के किसी उपबंधों के अनुसरण में किए गए, प्रतिग्रहण किए गए बनाए गए, जारी किया गया, आरंभ किया गया या कथित रूप में किए गए, प्रतिग्रहण किए गए प्रतिग्रहण किए गए बनाए गए, जारी किया गया, आरंभ किया गया कोई निर्धारण पुनःनिर्धारण, न्यायनिर्णयन, पुनःर्विलोकन, पुनरीक्षण, अपील, परिशोधन, नोटिस, समन या की गई अन्य कार्यवाहियां बनाए गए, जारी किया गया, आरंभ किया गया उसमें किसी गलती, त्रुटि या लोप होने के कारण अविधिमाम्य नहीं होगा या समझा जाएगा, यदि ऐसे निर्धारण, पुनःनिर्धारण, न्यायनिर्णयन, पुनःर्विलोकन, पुनरीक्षण, अपील, परिशोधन, नोटिस, समन या अन्य कार्यवाहियां इस अधिनियम या विद्यमान किसी विधि के सार एवं प्रभाव की दृष्टि से आशय, प्रयोजन और अपेक्षा के अनुरूप हो।

(2) किसी नोटिस, आदेश या संचार की तामिल, प्रश्नगत नहीं किया जाएगा, यदि यथास्थिति, नोटिस, आदेश या संचार के अनुसरण में उस व्यक्ति द्वारा पहले ही कार्यवाही की गयी है जिसके नाम उसे जारी किया गया है, या जहां ऐसे तामिल कार्यवाही या पूर्व के कार्यवाही के प्रारंभ करने, चालु करने या पूर्ण करने में प्रश्नगत नहीं किया गया है।

161. अभिलेख पर प्रकट त्रुटि का परिशोधन—

धारा 160 के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंधों में अंतर्विष्ट किसी अन्य बातों के होते हुए भी, कोई प्राधिकारी, जो किसी पारित या जारी कोई विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज में, यथास्थिति, ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र था कोई अन्य दस्तावेज के जारी होने की तारीख से तीन मास की अवधि के दौरान ऐसे किसी त्रुटि का परिशोधन कर सकेगा जिसमें ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य दस्तावेज में त्रुटि अभिलेख को देखने से ही प्रकट होता है, और जो उसके स्वप्नेरणा से या इस अधिनियम या केन्द्रीय माल और सेवा कर अधिनियम के अधीन नियुक्त कोई अधिकारी या प्रभावित व्यक्ति द्वारा उसके संज्ञान में लाई जाती है, परंतु यह कि ऐसा परिशोधन ऐसे विनिश्चय या आदेश या नोटिस या प्रमाणपत्र या अन्य कोई दस्तावेज के जारी होने की तारीख से छह मास की अवधि के पश्चात् नहीं किया जाएगा :

परंतु यह और कि उक्त छह मास की अवधि दुर्घटनावश किसी चूक या लोप से उदभूत मात्र लिपिकीय या अंकगणितीय त्रुटि के परिशोधन के मामले में लागु नहीं होगी, संशोधन के स्वरूप में शुद्धता की गई हो :

परंतु यह भी जहां कोई व्यक्ति ऐसे परिशोधन से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है, वहां परिशोधन करने वाले प्राधिकारी द्वारा नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत का पालन किया जायेगा।

162. सिविल न्यायालय की अधिकारिता पर वर्जन—

धारा 117 और 118 में यथाउपबंधित के सिवाय कोई सिविल न्यायालय को इस अधिनियम के अधीन किये गए या तात्प्रयित किसी कृत्य से उदभूत किसी प्रश्न से निपटने या विनिश्चित करने की अधिकारिता नहीं होगी।

163. फीस उदग्रहण—

जहां कहीं किसी आदेश या दस्तावेज की प्रति आवेदन पर किसी व्यक्ति को उपलब्ध कराई जाती है, वहां यथाविहित फीस संदत्त की जाएगी।

164. नियमों को बनाने की सरकार की शक्ति—

(1) सरकार, परिषद् की सिफारिशो पर, अधिसूचना द्वारा इस अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के लिए नियम बना सकेगी।

(2) उपधारा (1) के उपबंधों के सामान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, सरकार, ऐसे सभी या किसी मामले के लिए नियम बना सकेगी जिन्हें विहित करने की अपेक्षा इस अधिनियम द्वारा की गयी है या जिनकी बावत नियम प्रावधान किये जाते हैं।



(3) इस धारा द्वारा प्रदत्त नियम बनाने की शक्ति में उन्हें या उनमें से किन्हीं को इस अधिनियम के उपबंधों की प्रवर्तित होने की तारीख के पश्चात किसी तारीख में भूतलक्षी प्रभाव देने की शक्ति सम्मिलित होगी।

(4) उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन बनाए गए किसी नियम द्वारा उसके उल्लंघन पर दस हजार से अनाधिक शास्ति लगाए जाने का उपबंध किया जा सकेगा।

165. विनियम बनाने की शक्ति—

सरकार, इस अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के लिए इस अधिनियम तथा इसके अधीन बनाए गए नियमों से संगत विनियम, अधिसूचना द्वारा बना सकेगी।

166. नियमों, विनियमों और अधिसूचनाओं का रखा जाना—

इस अधिनियम के अधीन सरकार द्वारा बनाया गया प्रत्येक नियम, सरकार द्वारा बनाया गया प्रत्येक विनियम तथा जारी की गई प्रत्येक अधिसूचना, बनाये या जारी किए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र राज्य विधान — मंडल के प्रत्येक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए, जो एक सत्र में अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकती है, रखा जाएगा और यदि उस सत्र या उन आनुक्रमिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन, यथास्थिति, उस नियम या विनियम या अधिसूचना में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं या दोनों सदन इस बात से सहमत हो जाएं कि वह नियम या विनियम या अधिसूचना नहीं बनाई या नहीं जारी की जानी चाहिए तो, यथास्थिति ऐसा नियम या विनियम या ऐसी अधिसूचना, तत्पश्चात्, यथास्थिति, केवल ऐसे परिवर्तित रूप में प्रभावी होगी या उसका कोई प्रभाव नहीं होगा, तथापि, उस नियम या विनियम या अधिसूचना के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

167. शक्तियों का प्रत्यायोजन—

आयुक्त, अधिसूचना द्वारा ऐसी शर्तों, यदि हों तो, के अधीन रहते हुए, जैसा अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किया जाए, इस अधिनियम के अधीन किसी प्राधिकारी या अधिकारी द्वारा प्रयोग की जाने वाली कोई शक्ति, ऐसी अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किसी और प्राधिकरणी या अधिकारी द्वारा भी प्रयोग करने का निदेश कर सकेगा।

168. अनुदेशों या निदेशों को जारी करने की शक्ति—

आयुक्त, यदि इस अधिनियम के कार्यान्वयन में समरूपता के प्रयोजन के लिए ऐसा करना आवश्यक या समीचीन समझे, राज्य कर अधिकारियों को उसके द्वारा उचित समझा जाने वाला आदेश, अनुदेश या निदेश जारी कर सकेगा और इस अधिनियम के कार्यान्वयन में नियोजित सभी ऐसे अधिकारी और सभी अन्य व्यक्ति ऐसे आदेशों, अनुदेशों या निदेशों का अनुसरण और पालन करेंगे।

[168क. विशेष परिस्थितियों में समय—सीमा के विस्तार हेतु सरकार की शक्तियाँ—

(1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुये भी, सरकार, परिपद की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, वैसे कार्यों, जिन्हें अप्रत्याशित घटना के कारण पूरा नहीं किया जा सकता है या अनुपालन नहीं किया जा सकता है, की बावत इस अधिनियम के अधीन निर्दिष्ट, या विहित या अधिसूचित समय—सीमा का विस्तार कर सकेगी।

(2) उप—धारा (1) के तहत अधिसूचना जारी करने की शक्ति में, इस अधिनियम के प्रवृत्त होने की तारीख के पश्चात किसी तारीख से, उक्त अधिसूचना को भूतलक्षी प्रभाव देने की शक्ति सम्मिलित होगी।



स्पष्टीकरण इस धारा के प्रयोजनों के लिए, "अप्रत्याशित घटना" पद का अर्थ युद्ध, महामारी, बाढ़, सुखा, आग, चक्रवात, भूकम्प या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा या इस अधिनियम के प्रावधानों को लागू करने में प्रभाव डालने वाला अन्यथा कोई कारण होगा।²⁹²

169. कतिपय मामलों में नोटिस की तामील –

(1) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या अन्य संसूचना को निम्नलिखित किन्हीं पद्धतियों द्वारा तामील की जाएगी, अर्थात्:-

(क) प्रेषिती या कराधेय व्यक्ति को या उसके प्रबंधक या प्राधिकृत प्रतिनिधि या ऐसा कोई अधिवक्ता या कर व्यवसायी जिसके पास कराधेय व्यक्ति की ओर से कार्यवाहियों में पेश होने का प्राधिकार है या कारबार के संबंध में उसके द्वारा नियमित रूप से नियोजित व्यक्ति को या कराधेय व्यक्ति के साथ रह रहे परिवार के किसी व्यस्क सदस्य को सीधे देकर या सुपुर्द करके या संदेशवाहक, जिसके अंतर्गत कुरियर भी है, के द्वारा; या

(ख) जिसके लिए आशयित है उस व्यक्ति या उसके प्राधिकृत प्रतिनिधि, यदि कोई हो, को उसके कारबार या निवास के अंतिम ज्ञात स्थान पर अभिस्वीकृत देय रजिस्ट्रीकृत डाक या स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा; या

(ग) रजिस्ट्रीकरण के समय या समय-समय पर यथासंशोधित उसके ई-मेल पते पर संसूचना भेजने के द्वारा; या

(घ) सामान्य पोर्टल पर उपलब्ध करवाने के द्वारा; या

(ङ) वह इलाका जहां, कराधेय व्यक्ति या वह व्यक्ति जिसे यह जारी किया गया है, इससे पहले रहता था, कारबार करता था या अभिलाभ के लिए वैयक्तिक तौर पर कार्य करता था में प्रचालित समाचारपत्र में प्रकाशन द्वारा; या

(च) यदि उपर्युक्त कोई ढंग व्यवहारिक नहीं है, तो उसके निवास या कारबार के अंतिम ज्ञात स्थान पर किसी सहज दृश्य जगह चिपकाने के द्वारा और यदि किसी कारणवश ऐसी पद्धति भी व्यवहारिक नहीं होती है तो ऐसा विनिश्चय या आदेश या समन या नोटिस जारी करने वाले अधिकारी या प्राधिकरण के कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर चिपकाने के द्वारा।

(2) प्रत्येक विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या किसी संसूचना की उसी तारीख को तामील हुई समझी जाएगी जिस पर इसे सुपुर्द किया गया या प्रकाशित किया गया या उपधारा (1) में उपबंधित रीति से एक प्रति वहां चिपकाई गई।

(3) जब ऐसे विनिश्चय, आदेश, समन, नोटिस या किसी, संसूचना को रजिस्ट्रीकृत डाक या स्पीड पोस्ट द्वारा भेजा गया, तो ऐसी डाक के पहुंचने में सामान्यतः लगने वाली अवधि के समाप्ति पर प्रेषिती द्वारा प्राप्त किया गया समझा जाएगा जब तक कि प्रतिकूल साबित नहीं होता।

170. कर का पूर्णांकन आदि-

इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कर की रकम, ब्याज, शास्ति, जुर्माना या कोई अन्य संदेय रकम और प्रतिदाय की रकम या कोई अन्य देय रकम निकटतम रूपए के लिए पूर्णांकित होगी और इस प्रयोजन के लिए जहां ऐसी रकम जिसमें रूपए का एक भाग पैसे के रूप में है, तब यदि ऐसा भाग पचास पैसे या उससे अधिक है, तो एक रूपए तक बढ़ाया जाएगा और यदि ऐसा भाग पचास पैसे से कम है तो इस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा।

²⁹². बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 481 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 31 मार्च, 2020 से प्रभावी।



171. मुनाफाखोरी निरोध उपाय—

(1) किसी माल या सेवाओं पर कर की दर में किसी कमी या इनपुट कर प्रत्यय के फायदे को मूल्यों में सम्मेल्य कमी के तौर पर प्राप्तकर्ता को दे दी जाएगी।

(2) केन्द्रीय सरकार यह परीक्षण करने के लिए कि क्या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा उम्मुक्त इनपुट कर प्रत्यय या कर दर में कमी से वास्तव में परिणामतः माल और सेवाओं या उसके द्वारा प्रदाय किए गए दोनों के मूल्यों में सम्मेल्य कमी हुई है, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा प्राधिकरण का गठन या उस समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन, किसी विद्यमान प्राधिकरण को सशक्त कर सकेगी।

[परन्तु सरकार, परिषद् की सिफारिशों पर, अधिसूचना द्वारा, उस तारीख को विनिर्दिष्ट कर सकेगी, जिससे उक्त प्राधिकारी इस बारे में परीक्षा के लिए कोई अनुरोध स्वीकार नहीं करेगा कि क्या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा लिए गए इनपुट कर प्रत्ययों या कर की दर में कमी वास्तव में उसके द्वारा पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों की कीमत में आनुपातिक कमी के समरूप है।

स्पष्टीकरण 1—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए, 'परीक्षा के लिए अनुरोध से इस बारे में कि क्या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा लिए गए इनपुट कर प्रत्ययों या कर की दर में कमी से वास्तव में उसके द्वारा पूर्ति किए गए माल या सेवाओं या दोनों की कीमत में आनुपातिक कमी हुई है, परीक्षा का अनुरोध करने के लिए आवेदक द्वारा फाइल किया गया लिखित आवेदन अभिप्रेत है;

स्पष्टीकरण 2— इस धारा के प्रयोजनों के लिए, "प्राधिकारी" पद के अन्तर्गत "अपील अधिकरण" सम्मिलित होगा।²⁹³

(3) उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्राधिकरण ऐसी शक्तियों का प्रयोग और ऐसे कृत्यों का निर्वहन कर सकेगा जो विहित की जाय।

[(3क) जहां उक्त उपधारा की अपेक्षानुसार जांच करने के पश्चात् उपधारा (2) में निर्दिष्ट प्राधिकरण इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति ने उपधारा (1) के अधीन मुनाफाखोरी की है, वहां ऐसा व्यक्ति इस प्रकार मुनाफाखोरी की गई रकम के दस प्रतिशत के बराबर शास्ति का संदाय करने का दायी होगा :

परन्तु ऐसी कोई शास्ति उद्ग्रहणीय नहीं होगी यदि मुनाफाखोरी की रकम को प्राधिकरण द्वारा आदेश पारित किए जाने की तारीख से तीस दिन के भीतर जमा करा दिया गया है।

स्पष्टीकरण— इस धारा के प्रयोजनों के लिए " मुनाफाखोरी" पद से ऐसी रकम अभिप्रेत है, जिसे माल या सेवा या दोनों के प्रदाय पर कर की दर में कमी का फायदा या इनपुट कर प्रत्यय का फायदा माल या सेवा या दोनों की कीमत में कमी की अनुरूपता के माध्यम से प्राप्तकर्ता को नहीं देने के कारण अवधारित किया गया है।²⁹⁴

172. कठिनाइयों को दूर करना—

(1) यदि इस अधिनियम के उपबंधों को प्रभावी करने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो सरकार परिषद् की सिफारिशों पर, शासकीय राजपत्र में प्रकाशित कोई साधारण या कोई विशेष आदेश कर या उसके अधीन बनाए गए नियमों या विनियमों से संगत ऐसे उपबंध कर सकेगी, जो उस कठिनाई को दूर करने के लिए उसे आवश्यक या समीचीन प्रतीत हो:

²⁹³. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

²⁹⁴. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित।



परंतु ऐसा कोई आदेश इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख से [पाँच वर्षों]²⁹⁵ की अवधि की समाप्ति के पश्चात् नहीं किया जाएगा।

(2) इस धारा के अधीन किया गया प्रत्येक आदेश किए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, राज्य विधान मंडल के समक्ष रखा जाएगा।

173. निरसन—

इस अधिनियम में यथा उपबंधित के सिवाय, एवं धारा 174 के शर्तों के अधीन, इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख से ही निम्नलिखित अधिनियमों का निरसन किया जाता है, अर्थात् :—

(क) संविधान की सातवीं अनुसूची की राज्य सूची की प्रविष्टि 54 में सम्मिलित मालों के सिवाय, बिहार मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2005 ;

(ख) बिहार स्थानीय क्षेत्र में उपभोग, व्यवहार अथवा बिक्रय हेतु मालों के प्रवेश पर कर, अधिनियम, 1993 ;

(ग) बिहार होटल विलासिता कर अधिनियम, 1988 ;

(घ) बिहार मनोरंजन कर अधिनियम, 1948 ;

(ङ) बिहार विज्ञापन कर अधिनियम, 2007 ;

(जिन्हें इसमें इसके पश्चात् निरसित अधिनियम कहा गया है)।

174. व्यावृत्ति—

(1) धारा 173 में निर्दिष्ट अधिनियमों का निरसन, धारा 173 में उल्लिखित विस्तार तक—

(क) ऐसे निरसन के समय किसी भी प्रवृत्त या विद्यमान को पुनः प्रवर्तित नहीं करेगा या

(ख) पूर्व प्रचालित निरसित अधिनियम और आदेश या उसके अधीन सम्यक् रूप से किए गए या भुक्ती गई किसी बात को प्रभावित नहीं करेगा ; या

(ग) ऐसे निरसित के अधीन निरसित अधिनियम या आदेश किसी अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता, या अर्जित, प्रोदभूत या उपगत दायित्व को नहीं करेगा :

परंतु यह कि किसी अधिसूचना के द्वारा विनिवेश पर प्रोत्साहन के रूप में अनुदत्त कोई कर छूट, विशेषाधिकार के रूप में जारी नहीं रहेगी, यदि नियत दिन पर या उसके पश्चात् उक्त अधिसूचना विखंडित हो जाती है

(घ) किसी कर, अधिभार, शास्ति, ब्याज जो देय हैं या देय हो सकते हैं या कोई समपहरण या निरसित अधिनियमों के उपबंधों के खिलाफ किए गए किसी अपराध के संबंध में उपगत या दिए गए दंड को प्रभावित नहीं करेगा ;

(ङ) किसी अन्वेषण, जांच, निर्धारण कार्यवाही, न्यायनिर्णयन और अन्य कोई विधिक कार्यवाही या बकायों की वसूली या यथापूर्वोक्त किसी कर, अधिभार, शास्ति, जुर्माना, ब्याज, अधिकार, विशेषाधिकार, बाध्यता, दायित्व, समपहरण या दंड के संबंध में उपचार और किसी ऐसे अन्वेषण, जांच, निर्धारण कार्यवाही, न्यायनिर्णयन और अन्य विधिक कार्यवाहियों या बकायों की वसूली या उपचार को संस्थित, जारी या प्रवर्तित कर सकेगा और किसी ऐसे कर, अधिभार, शास्ति, जुर्माना, ब्याज, समपहरण या दंड उद्गृहित या अधिरोपित हो सकेगा जैसे कि इन अधिनियम को इस प्रकार निरसित नहीं किया गया है, को प्रभावित नहीं करेगा ;

295. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द "तीन वर्ष" प्रतिस्थापित।



(च) कार्यवाहियां, जिसके अंतर्गत जिनका संबंध किसी अपील, पुनर्विलोकन या निर्देश जिन्हे नियत दिन से पूर्व या उस दिन पर या उसके पश्चात् उक्त निरसित अधिनियम के अधीन संस्थित किया गया है और ऐसी कार्यवाहियां उक्त निरसित अधिनियम के अधीन जारी रहेंगी जैसे कि यह अधिनियम प्रवृत्त नहीं हुआ हो और उक्त अधिनियम को निरसित नहीं किया गया है, को प्रभावित नहीं करेगा।

[(1क) उपधारा (1) में अंतर्विष्ट किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी

(क) उपधारा (1) के खंड (ग) के प्रावधान वाणिज्य कर विभाग, बिहार सरकार, पटना द्वारा जारी अधिसूचना सं० एस० ओ० 391, दिनांक 10 नवम्बर, 2011 पर लागू नहीं होंगे, और

(ख) वाणिज्य-कर विभाग, बिहार सरकार, पटना द्वारा जारी अधिसूचना सं० एस०ओ० 391, दिनांक 10 नवम्बर, 2011 की वैधता दिनांक 30 जून, 2017 तक विस्तारित की जाती है।²⁹⁶

(2) निरसन के प्रभाव के संदर्भ में बिहार एवं उड़ीसा साधारण खंड अधिनियम, 1917 की धारा 8 के साधारण उपयोजन पर प्रतिकूल प्रभाव या प्रभावित करने के लिए उपधारा (1) और (2) में निर्दिष्ट विशिष्ट विषयों के उल्लेख को नहीं रखा जाएगा।

296. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2019 (बिहार अधिनियम संख्या 21 सन् 2019) अधिसूचना संख्या 1329 पटना : दिनांक : 12 दिसम्बर, 2019 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावित।



अनुसूची 1

[धारा 7 देखें]

प्रतिफल के बिना किये गए क्रियाकलाप जिन्हें प्रदाय माना जायेगा यदि बिना विचार के किया

1. कारबार आस्तियों का स्थाई अंतरण या निपटान, जहां ऐसी आस्तियों पर इनपुट कर प्रत्यय का उपभोग किया गया है।
2. धारा 25 में यथाविनिर्दिष्ट संबंधित व्यक्तियों या सुभिन्न व्यक्तियों के बीच माल या सेवाओं या दोनों का प्रदाय जहाँ ऐसा प्रदाय कारबार के अनुक्रम या अग्रसारण में किया गया है :
परंतु यह कि किसी नियोजक द्वारा किसी कर्मचारी को एक वित्तीय वर्ष में पचास हजार रुपयों से अनधिक मूल्य के दिए गए भेंट को माल या सेवा या दोनों का प्रदाय नहीं माना जाएगा।
3. माल का प्रदाय—
(क) जो किसी मालिक द्वारा उसके अभिकर्ता को किया गया है, जहां अभिकर्ता मालिक की ओर से ऐसे माल का प्रदाय करने का वचन देता है।
(ख) जो किसी अभिकर्ता द्वारा उसके मालिक को किया गया है, जहां अभिकर्ता मालिक की ओर से ऐसे माल को प्राप्त करने का वचन देता है।
4. कारबार के अग्रसारण या अनुक्रम में, [व्यक्ति]²⁹⁷ द्वारा भारत से बाहर उससे संबंधित व्यक्ति या किसी अन्य स्थापना से सेवाओं का आयात।

297. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा "कराधेय व्यक्ति" के स्थान पर प्रतिस्थापित।



अनुसूची 2

[धारा 7 देखें]

क्रियाकलापों [या संव्यवहार]²⁹⁸ को माल के प्रदाय या सेवाओं के प्रदाय के रूप में माना जाना

1. अंतरण –

- (क) माल में हक का कोई अंतरण, माल का प्रदाय है ;
- (ख) उसके हक के अंतरण के बिना, माल में अधिकार या माल में अविभाजित हिस्से का कोई अंतरण, सेवाओं का प्रदाय है ;
- (ग) माल में हक का अंतरण जो किसी ऐसे करार के अधीन हुआ है जो अनुबंध करता है कि माल में संपत्ति का हस्तांतरण प्रतिफल के संदाय पर भविष्य की तारीख में होगी, माल का प्रदाय है।

2. भूमि और भवन –

- (क) कोई पट्टा, कास्तकारी, सुखाचार, भूमि के आधिपत्य की अनुज्ञप्ति, सेवाओं का प्रदाय है;
- (ख) किसी भवन, जिसके अंतर्गत कारबार या वाणिज्य के लिए वाणिज्यिक, औद्योगिक या आवासीय परिसर है, को पूर्णतः या अंशतः किसी पट्टा या किराए पर देना, सेवाओं का प्रदाय है।

3. व्यवहार या प्रक्रिया—

कोई व्यवहार या प्रक्रिया जो अन्य व्यक्ति के माल पर लागू की जाती है, सेवाओं का प्रदाय है।

(4) कारबार आस्तियों का अंतरण –

- (क) जहाँ व्यवसाय चलानेवाले किसी व्यक्ति या उसके निदेश पर कारबार की आस्तियों के भाग किसी माल का [***]²⁹⁹, इस प्रकार अंतरण या निपटाव कि उक्त माल ऐसी आस्तियों का भाग न रहे, की दशा में ऐसा अंतरण या निपटाव उस व्यक्ति द्वारा माल का प्रदाय है ;
- (ख) जहाँ व्यवसाय चलानेवाले किसी व्यक्ति या उसके निदेश पर व्यवसाय के प्रयोजनार्थ प्रयुक्त या धारित किसी माल का कोई निजी उपयोग किये जाने या, व्यवसाय से भिन्न किसी प्रयोजन के लिए, [***]³⁰⁰, किसी अन्य व्यक्ति को उपलब्ध कराये जाने की दशा में ऐसा उपयोग या उपलब्ध कराया जाना, सेवाओं का प्रदाय है;
- (ग) जहाँ कोई व्यक्ति कराधेय व्यक्ति के रूप में प्रविरत हो जाता है, कोई माल जो उसके द्वारा चलाए जा रहे कारबार की आस्तियों का हिस्सा है, उसके कराधेय व्यक्ति के रूप में प्रविरत होने से तुरंत पूर्व उसके कारबार के अनुक्रम या अग्रसारण में उसके द्वारा प्रदाय किया गया समझा जाएगा, यदि :-

- (i) कारबार का अंतरण अन्य व्यक्ति को चालू समुत्थान के रूप में नहीं होता है ; या

298. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा शब्द अंतःस्थापित।

299. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द “ प्रतिफल हेतु या अन्यथा” विलोपित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।

300. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2020 (बिहार अधिनियम संख्या 09 सन् 2020) अधिसूचना संख्या 479 पटना : दिनांक : 10 अगस्त, 2020 द्वारा शब्द “ प्रतिफल हेतु या अन्यथा” विलोपित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी।



(ii) कारबार ऐसे व्यक्ति प्रतिनिधि द्वारा नहीं चलाया जाता है जिसे कराधेय व्यक्ति समझा जाए।

(5) सेवाओं का प्रदाय—

निम्नलिखित को सेवा का प्रदाय माना जाएगा, अर्थात्:—

(क) स्थावर संपत्ति को किराए पर देना ;

(ख) जहाँ सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी समापन प्रमाण पत्र, जहाँ अपेक्षित हो, के जारी होने या इसके प्रथम आधिपत्य, जो भी पहले हो, के पश्चात संपूर्ण प्रतिफल प्राप्त होता है के सिवाय, पुर्णतः या अंशतः किसी क्रेता को बिक्रय हेतु आशयित किसी परिसर या भवन समेत किसी परिसर, भवन, सिविल संरचना या उसके किसी भाग का संनिर्माण।

स्पष्टीकरण — इस खंड के प्रयोजनों के लिए—

(1) अभिव्यक्ति “सक्षम प्राधिकारी” से सरकार या तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन समापन प्रमाणपत्र जारी करने के लिए प्राधिकृत कोई प्राधिकरण और ऐसे प्राधिकरण की ओर से ऐसा प्रमाणपत्र गैर अपेक्षित होने की दशा में, निम्नलिखित किन्हीं में से, अर्थात्:—

(i) वास्तुविद् अधिनियम, 1972 के अधीन गठित वास्तुविद् परिषद् के साथ रजिस्ट्रीकृत कोई वास्तुविद् ; या

(ii) इंजिनियरी संस्थान (भारत) के साथ रजिस्ट्रीकृत कोई चार्टर्ड इंजिनियर;

(iii) क्रमशः शहर या कस्बा या गांव का स्थानीय निकाय या विकास या योजना प्राधिकरण का कोई अनुज्ञप्त सर्वेक्षक ;

(2) अभिव्यक्ति “सन्निर्माण” जिसके अंतर्गत किसी विद्यमान सिविल संरचना में अतिरिक्त निर्माण, परिवर्तन, प्रतिस्थापन या पुनः प्रतिरूपण, है

(ग) किसी बौद्धिक संपत्ति अधिकार के उपयोग या उपभोग की अनुमति देना या अस्थायी अंतरण करना ;

(घ) सूचना प्रौद्योगिकी सॉफ्टवेयर का विकास, डिजाइन, प्रोग्रामिंग, क्रमादेशन, अनुकूलन, उन्नति, वृद्धि, क्रियान्वयन ;

(ङ) किसी कार्य से विरत होने की बाध्यता को मंजूरी देना या किसी कार्य या किसी स्थिति को सहन करना या किसी कार्य का करना ; और

(च) किसी प्रयोजन के लिए नकद, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए (चाहे किसी विनिर्दिष्ट अविधि के लिए हो या नहीं) किसी माल को उपयोग करने के अधिकार का कोई अंतरण।

6. संयुक्त प्रदाय—

निम्नलिखित संयुक्त प्रदायों को सेवाओं का प्रदाय माना जाएगा, अर्थात्:—

(क) धारा 2 के खंड (119) में यथा परिभाषित कार्य संविदा ; और

(ख) ऐसे माल का, जो मानव उपभोग के लिए खाद्य या कोई अन्य वस्तु है या किसी पेय (मानव उपभोग हेतु मादक शराब के अतिरिक्त) किसी सेवा के रूप में या उसके भाग रूप में या किसी अन्य रीति से, कोई भी हो, कोई प्रदाय, जहां ऐसा प्रदाय या सेवा नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए है।



[***]301

301. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2021 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2021) अधिसूचना संख्या 673 पटना : दिनांक : 09 अगस्त, 2021 द्वारा विलोपित एवं दिनांक 01 जुलाई, 2017 से प्रभावी। विलोपन से पूर्व उपधारा निम्न प्रकार थी :-

7. माल का प्रदाय—

निम्नलिखित को माल के प्रदाय के रूप में माना जाएगा, अर्थात् :-

किसी अनिगमित संगम या व्यक्तियों के निकाय द्वारा उसके किसी सदस्य को नकद, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए माल का प्रदाय।



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित



अनुसूची 3

[धारा 7 देखें]

क्रियाकलाप या संव्यवहार जिन्हें न तो माल का प्रदाय माना जाएगा न ही सेवाओं का प्रदाय माना जायेगा

1. किसी कर्मचारी द्वारा अपने नियोजन के संबंध में या उसके अनुक्रम में नियोजक को दी गयी सेवाएं।
2. तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन स्थापित किसी न्यायालय या अधिकरण द्वारा दी गयी सेवाएं।
3. (क) संसद सदस्यों, राज्य विधानसभा के सदस्यों, पंचायतों के सदस्यों, नगरपालिकाओं के सदस्यों और अन्य स्थानीय प्राधिकरणों के सदस्यों द्वारा पालन किए गए कृत्य

(ख) संविधान के उपबंधों के अनुसरण में किसी पद को धारण किए हुए किसी व्यक्ति द्वारा उस हैसियत में पालन किए गए कर्तव्य ; या

(ग) केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकरण द्वारा स्थापित किसी निकाय में किसी व्यक्ति द्वारा अध्यक्ष या किसी सदस्य या निदेशक के रूप में दी गयी सेवाएं और जिसे इस खंड के प्रारंभ से पूर्व किसी कर्मचारी के रूप में न समझा गया हो।

4. अंतिम संस्कार, दफनाना, शवदाहगृह या मुर्दाघर, जिसके अंतर्गत मृतक के परिवहन, की सेवाएं।
5. भूमि का विक्रय और अनुसूची-2 के पैरा 5 के खंड (ख) के अध्याधीन, भवन का विक्रय।
6. [विनिर्दिष्ट अनुयोज्य दावों]³⁰² के अतिरिक्त अनुयोज्य दावे।

[7. भारत के बाहर किसी स्थान से, भारत के बाहर किसी अन्य स्थान पर माल का, ऐसे माल का भारत में प्रवेश किए बिना, प्रदाय।

8. (क) घरेलू उपभोग के लिए अनुमति प्रदान किए जाने से पूर्व किसी व्यक्ति को भांडागार में रखे गए माल का प्रदाय।

[(कक) किसी व्यक्ति को या घरेलू टैरिफ क्षेत्र को निर्यात के लिए निकासी से पूर्व विशेष आर्थिक जोन में या किसी मुफ्त व्यापार भांडागारण क्षेत्र में भांडागार में रखे गए माल की पूर्ति]³⁰³

(ख) परेषिति द्वारा किसी अन्य व्यक्ति को माल का, भारत से बाहर अवस्थित मूल पत्तन से प्रेषण किए जाने के पश्चात् किंतु घरेलू उपभोग के लिए अनुमति दिए जाने से पूर्व, माल के मालिकाना हक के दस्तावेज में पृष्ठांकन द्वारा माल का प्रदाय।] ³⁰⁴

[9 इस शर्त के अधीन रहते हुए कि मुख्य बीमाकर्ता, बीमा किए गए व्यक्ति द्वारा संदत्त प्रीमियम की संपूर्ण रकम पर केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ राज्यक्षेत्र कर और एकीकृत कर का संदाय करता है, सह बीमा करारों में बीमा किए गए व्यक्ति को मुख्य बीमाकर्ता और सह – बीमाकर्ता द्वारा संयुक्त रूप से पूर्ति की गई बीमा सेवाओं के लिए मुख्य बीमाकर्ता द्वारा सह-बीमाकर्ता को सह-बीमा प्रीमियम के प्रभाजन का क्रियाकलाप।

10. इस शर्त के अधीन रहते हुए कि पुनः बीमाकर्ता, बीमा किए गए व्यक्ति द्वारा उक्त अध्यापित कमीशन या पुनःबीमा कमीशन सहित संदत्त पुनः बीमा प्रीमियम की संपूर्ण रकम पर केन्द्रीय कर, राज्य कर, संघ

302. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2023 (बिहार अधिनियम संख्या 16 सन् 2023) अधिसूचना संख्या 968 पटना : दिनांक : 17 नवम्बर, 2023 द्वारा शब्द "लाटरी, दांव और द्यूत" प्रतिस्थापित।

303. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित।

304. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।



राज्यक्षेत्र कर और एकीकृत कर का संदाय करता है, बीमाकर्ता द्वारा पुनः बीमाकर्ता को सेवाएं, जिसके लिए अध्यापित कमीशन या पुनः बीमा कमी कमीशन पुनः बीमाकर्ता को बीमाकर्ता द्वारा संदत्त पुनः बीमा प्रीमियम से कटौती किया जाता है ॥³⁰⁵

स्पष्टीकरण [1]³⁰⁶— कंडिका 2 के प्रयोजन के लिए शब्द “न्यायालय” के अंतर्गत जिला न्यायालय, उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय है।

[स्पष्टीकरण 2— [पैरा 8 के खंड (क) के प्रयोजनों के लिए]³⁰⁷, “भांडागार में रखे गए माल” पद का वही अर्थ होगा, जो सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का केन्द्रीय अधिनियम, 52) में उसका है ॥³⁰⁸

[स्पष्टीकरण 3 — पैरा 8 के खंड (क क) के प्रयोजनों के लिए, “विशेष आर्थिक जोन”, “मुक्त व्यापार भांडागार क्षेत्र” पदों के वही अर्थ होंगे, जो विशेष आर्थिक जोन अधिनियम, 2005 की धारा 2 में उनके हैं ॥³⁰⁹

बिहार – राज्यपाल के आदेश से,
सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा,
सरकार के सचिव।

8 मई 2017

सं० एल० जी०-01-12 / 2017 / 94 / लेज – बिहार विधान मंडल द्वारा यथापारित और महामहिम राज्यपाल द्वारा दिनांक 3 मई 2017 को अनुमत बिहार माल और सेवा कर अधिनियम, 2017 का निम्नलिखित अंग्रेजी अनुवाद बिहार राज्यपाल के प्राधिकार से इसके द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद- 348 के खंड (3) के अधीन उक्त अधिनियम का अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जायेगा।

बिहार – राज्यपाल के आदेश से,
सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा,
सरकार के सचिव।

.....

305. बिहार माल और सेवा कर (द्वितीय संशोधन) अधिनियम, 2024 (बिहार अधिनियम संख्या 22 सन् 2024) अधिसूचना संख्या 1160 पटना : दिनांक : 09 दिसम्बर, 2024 द्वारा अंतःस्थापित।

306. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा स्पष्टीकरण को स्पष्टीकरण 1 किया गया।

307. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा शब्द एवं अंक “पैरा 8 के प्रयोजनों के लिए” प्रतिस्थापित एवं दिनांक 01.07.2017 से प्रभावी।

308. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2018 (बिहार अधिनियम संख्या 14 सन् 2018) अधिसूचना संख्या 1039 पटना : दिनांक : 10 दिसम्बर, 2018 द्वारा अंतःस्थापित।

309. बिहार माल और सेवा कर (संशोधन) अधिनियम, 2025 (बिहार अधिनियम संख्या 07 सन् 2025) अधिसूचना संख्या 1338 पटना : दिनांक : 12 अगस्त, 2025 द्वारा अंतःस्थापित एवं दिनांक 01.07.2017 से प्रभावी।



वाणिज्य कर विभाग, बिहार द्वारा नेशनल लॉ बुक पब्लिकेशन्स, गाजियाबाद के सहयोग से संकलित

